226
सेठिकातं

तंत्र-विद्या

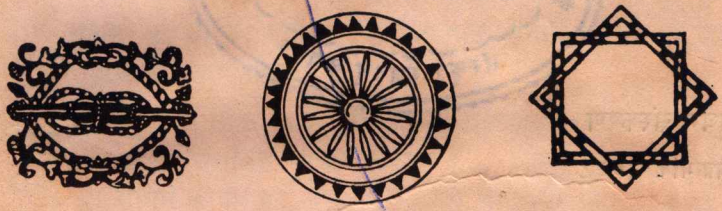

लेखक

करणीदान सेठिया

प्रथम संस्करण

मूल्य : १०० रुपये

प्रकाशक
सेठिया ब्रदर्स,
९, आरमेनियन स्ट्रीट,
कलकत्ता - ७००००१

226
सेठि/क/तं

प्रथम संस्करण
विक्रमांक २०३८

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

मुद्रक
नया संसार प्रेस,
भदैनी, वाराणसी

दृष्टिपात

☐ तंत्र एक विज्ञान है, इसकी सत्यता का जीता जागता प्रमाण है इसका प्राचीन विपुल साहित्य।

☐ विज्ञान औषधि के रूप में वनस्पतियों, पशु-पक्षियों व खनिज पदार्थों आदि को शारीरिक व्याधियों में, भौतिक सुखों में "प्रयोग सत्य" मानता है और तंत्र प्रकृति से प्राप्त वस्तुओं के सहयोग से देश, काल, भाव व मंत्र ऊर्जा से उनकी शक्तियों को गुणित कर इच्छित कार्यों को सफल बनाने, अपने अनुकूल बनाने व अन्य सिद्धियों में "प्रयोग सत्य" मानता है।

☐ तंत्र द्वारा भौतिक अभिसिद्धियों और एषणाओं से सम्बद्ध भोगमय जीवन का संयमित उपभोग करते हुए, अध्यात्म की ओर बढ़ना ही मानव जीवन का पूर्ण लक्ष्य होना चाहिए।

☐ स्व कल्याण एवं पर कल्याण की भावना से किये गये तांत्रिक प्रयोग से मनुष्य के इहलोक व परलोक दोनों सुधर जाते हैं।

☐ पर पीड़न पाप है और परोपकार पुण्य है। पाप का फल बुरा मिलता है और पुण्य का फल अच्छा। यह कभी नहीं भूलना चाहिए।

☐ तंत्र में अपवित्र कुछ नहीं होता। इस मार्ग की श्रेष्ठतम अवस्था होती है घृणा रहिता।

☐ अविश्वास, अश्रद्धा, घृणा और हिचकिचाहट, सफलता का वरण कभी नहीं होने देती।

☐ मारण, उच्चाटन व विद्वेषण आदि अभिचार कर्म हैं, अत्यन्त निकृष्ट। प्रायोगिक व्यक्ति कष्ट उठाता है तो प्रयोग करने वाला भी सुख की नींद नहीं सो सकता। यह ध्रुव सत्य हैं।

☐ दृढ़ आत्मविश्वास के साथ की हुई साधना कभी निष्फल नही होती।

●

चेतावनी

* परपीड़न पाप है और परोपकार पुण्य है। इसी दृष्टिकोण को लेकर यह पुस्तक लिखी गई है।

* इस पुस्तक के प्रयोगों के आधार पर कोई भी व्यक्ति किसी का अनिष्ट करने का प्रयत्न करता है तो उसके लिए लेखक, सम्पादक या प्रकाशक किसी भी स्थिति में उत्तरदायी नहीं हैं।

* सभी प्रयोग व मंत्र प्रामाणिक ग्रंथों, पुरानी पड़तों व विज्ञ व्यक्तियों से लेकर दिए गए हैं। इसकी सफलता या असफलता साधक पर निर्भर है। उसके लिए भी लेखक, सम्पादक या प्रकाशक उत्तरदायी नहीं हैं।

समर्पण

श्रीमती भतुदेवी सेठिया

जन्म संवत्–१९५३ पौष कृष्णा १०

परम पूजनीया मां को, जिसकी विश्ववात्सल्यमयी सत्ता की कोख में भगवान भी जन्म लेते हैं, गोद में पलते हैं। जिस स्नेह प्रतिमा माँ की कोख से मैंने जन्म लिया, गोद में पला, जिसके असीम प्यार से तन-मन विकसित हुआ, जिसका ऋण अपने तन, मन, धन-रोम रोम में सदैव अर्पित रखते हुए भी नहीं चुकाया जा सकता, उसके पुण्य चरणों में सादर समर्पित—

करणीदान सेठिया

तंत्र-विद्या

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
दो शब्द	१-३
प्रस्तुति	४-२०
तंत्र प्रयोग	२१-३०
विधि क्रम	२३
हवन कुण्ड	२३
हवन सामग्रियां	२४
अनुष्ठान लग्न	२४
चिच्छक	२५
मूल ग्रहण विधि	२६
दीपनादि प्रकार यंत्र	२८
ऋतुओं के नाम	२९
दिशा चक्र	२९
आसन	३०
शान्ति तंत्र	३१-७८
ज्वर नाशक तंत्र	३३
एकांतर ज्वर	३३
तिजारी ज्वर	३३
चौथिया ज्वार	३३
रात्रि ज्वर	३३
शीत ज्वर	३३
साधारण ज्वर	३४
महा ज्वर	३४
विषम ज्वर	३४
सन्निपात ज्वर	३४
मलेरिया ज्वर	३४
भूत ज्वर	३४
सर्व ज्वर	३४
शीतपारी ज्वर	३५
सर्व ारी ज्वर	३५
शिशु कष्ट निवारण तंत्र	३५
नज न लगे	३५
दाँ पीड़ा	३५
पी दस्त	३६
अठ रा रोग	३६
हिचकी	३६
अपस्मार	३६
मृगी	३६
आमाशय	३६
खाँसी	३६
फोता छिटकना	३६
निद्रा भय	३६
बुरे स्वप्न	३६
रोने पर	३७
प्रसूती कष्ट निवारण तंत्र	३७
रोग निवारण तंत्र	३९
संग्रहणी	३९
दस्त	३९
पेट दर्द	३९
धरण	३९
वायुगोला	४०
पत्थरी	४०
आंधाशीशी	४०
सिर शूल	४०
दांत पीड़ा	४०
खांसी	४०
हिचकी	४१
निद्रा	४१
मोटापा	४१
फीलपांव	४१
तिल्ली	४१
बवासीर	४१
स्वप्नदोष	४२
मृर्गी	४२
नकसीर	४२
पागलपन	४२
स्मरण शक्ति	४२
मानसिक शक्ति	४३
चित्तभ्रम	४३
ज्ञान वृद्धि	४३
बुरे स्वप्न	४३
हिस्टीरिया	४३

विषय	पृष्ठ
हंसी	१३७
मासिक धर्म	१३८
भया	१३८
वस्तुकीड़ा	१३८
मकान भंग	१३९
पत्थर	१३९
अद्भुत कष्ट कारक	१३९
कल्प तंत्र	**१४१-१६४**
रुद्राक्षकल्प	१४१
अपामार्ग	१४९
रक्तगुंजा कल्प	१५०
हत्थाजोड़ी कल्प	१५२
बन्दा नक्षत्र कल्प	१५४
नक्षत्र कल्प	१५७
नक्षत्र कल्प (अशुभ)	१६०
मनुष्य-पशु-पक्षी तंत्र	**१६५-१८८**
मनुष्य	१६७
औरत	१६९
सिंह	१७१
बाघ	१७२
हाथी	१७२
घोड़ा	१७३
खच्चर	१७४
कुत्ता	१७५
गदहा	१७५
ऊंट	१७७
भेड़	१७७
बकरी	१७८
बिल्ली	१७८
गीदड़	१७९
मृग	१७९
खरगोश	१८०
लंगूर	१८०
गाय	१८१
मयूर	१८२
कौआ	१८२
चिड़ी	१८३
चमगाद	१८३

विषय	पृष्ठ
कबुतर	१८३
हुदहुद	१८४
बाज	१८५
मेढ़क	१८५
अजाबील	१८५
उल्लू	१८६
साधना तंत्र	१८९
छिन्नमस्ता	१९१
लक्ष्मी	१९२
वार्ताली	१९३
कर्ण-पिशाचिनी	१९३
उच्छिष्ट चंडालिनी	१९४
स्वप्न साधना	१९५
लीलपरी	१९६
विरहना पीर	१९७
मुहम्मदा पीर	१९८
दिकपाल	१९८
वश्य	२००
षट्चक्र	२००
निराकार	२०२
वीर	२०३
छायापुरुष	२०३
पुतली	२०४
शव साधना	२०९
पिशाच	२१२
वृक्षप्रेत	२१२
कलवा	२१३
श्मशानप्रेत	२१३
भस्मी	२१५
कज्जल	२१६
धुल	२१६
तेल	२१७
सिंदूर	२१९
कार्य जानकारी	२१९
शक्तिक्षीण	२२०
अघोर	२२०
विलक्षण साधनाएं	२२१-२३६
अद्भुत वस्तुएं	२३७-२४८

दो शब्द

एक ऐसे जैन घराने में मेरा जन्म हुआ, जिसका पुश्तैनी धन्धा है–कपड़े ब्यापार। शायद पूर्व जन्म के संस्कारों की प्रबलता से मुझे इस विषय के ा लगाव हुआ होगा। चार साल पहले "मंत्र विद्या" के प्रकाशन के बाद ज मैं एक बार फिर आपके सामने "तंत्र विद्या" को लेकर प्रस्तुत हूँ। तक लेखन कोई मेरा पेशा नहीं है और न मैं कोई तान्त्रिक हूँ। किसी का ट दूर करने की असाधारणता भी मुझमें नहीं। मेरे सम्बन्ध में किसी प्रकार भ्रम रखने से आपको निराशा होगी। मानव जीवन को सुखी बनाने के ए हमारे पूर्वाचार्यों ने जो उपचार बताये हैं उनकी विधि बताने तक ही ो क्षमता है।

जैन आचार्यों ने आयुर्वेद, राजनीति, कला, ज्योतिष, मंत्र, तन्त्र व अध्यात्म दि सभी क्षेत्रों में अपनी लेखनी का प्रयोग किया है। गार्हस्थ्य जीवन को कर प्रसिद्ध सन्त नर्बुद्धाचार्य ने पूरा का पूरा कोकशास्त्र ही लिख डाला जो मणिलाल साराभाई नबाब, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित हो चुका है।

मेरी पहली पुस्तक 'मंत्र विद्या' को पाठकों ने बेहद पसन्द किया, उसकी ा हार्दिक प्रसन्नता है। अवश्य ही उससे मुझे आत्म तुष्टि भी हुई है और ी कारण मैं इस पुस्तक को लिखने के लिए प्रेरित हुआ।

तंत्र का नाम आते ही लोग चौंक जाते हैं। पुरानी पीढ़ी के मेरे एक ुर्ग श्री शुभकरण जी नाहटा ने मुझे परामर्श दिया कि ऐसे उग्र प्रयोगों प्रकाश में मत लाओ। ऐसे लोगों के हाथों में कुल्हाड़ी मत दो जिनसे कभी किसी का अनिष्ट होना नितान्त सम्भव है। परन्तु कई साथियों का ग्रह था कि अनिष्ट की आशंका से वैज्ञानिक यदि अणु की खोज नहीं करते आज विज्ञान चन्द्रमा पर नहीं पहुंचता। जहाँ अनिष्ट की आशंका है ाँ भविष्य सुख की कल्पना भी है।

तंत्र मारण, मोहन, परकाया प्रवेश और काम सिद्धि की साधना बतलाते इन भूमियों से ऊपर उठने की प्रेरणा देता है। अक्षय आनन्द और ात्म भाव की सिद्धि तन्त्र का प्रतिपाद्य विषय है।

दो शब्द

एक ऐसे जैन घराने में मेरा जन्म हुआ, जिसका पुश्तैनी धन्धा है–कपड़े का व्यापार। शायद पूर्व जन्म के संस्कारों की प्रबलता से मुझे इस विषय के प्रति लगाव हुआ होगा। चार साल पहले "मंत्र विद्या" के प्रकाशन के बाद आज मैं एक बार फिर आपके सामने "तंत्र विद्या" को लेकर प्रस्तुत हूँ। पुस्तक लेखन कोई मेरा पेशा नहीं है और न मैं कोई तान्त्रिक हूँ। किसी का कष्ट दूर करने की असाधारणता भी मुझमें नहीं। मेरे सम्बन्ध में किसी प्रकार का भ्रम रखने से आपको निराशा होगी। मानव जीवन को सुखी बनाने के लिए हमारे पूर्वाचार्यों ने जो उपचार बताये हैं उनकी विधि बताने तक ही मेरी क्षमता है।

जैन आचार्यों ने आयुर्वेद, राजनीति, कला, ज्योतिष, मंत्र, तन्त्र व अध्यात्म आदि सभी क्षेत्रों में अपनी लेखनी का प्रयोग किया है। गार्हस्थ्य जीवन को लेकर प्रसिद्ध सन्त नर्बुद्धाचार्य ने पूरा का पूरा कोकशास्त्र ही लिख डाला था जो मणिलाल साराभाई नबाब, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित हो चुका है।

मेरी पहली पुस्तक 'मंत्र विद्या' को पाठकों ने बेहद पसन्द किया, उसकी मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। अवश्य ही उससे मुझे आत्म तुष्टि भी हुई है और इसी कारण मैं इस पुस्तक को लिखने के लिए प्रेरित हुआ।

तंत्र का नाम आते ही लोग चौंक जाते हैं। पुरानी पीढ़ी के मेरे एक बुजुर्ग श्री शुभकरण जी नाहटा ने मुझे परामर्श दिया कि ऐसे उग्र प्रयोगों को प्रकाश में मत लाओ। ऐसे लोगों के हाथों में कुल्हाड़ी मत दो जिनसे कभी भी किसी का अनिष्ट होना नितान्त सम्भव है। परन्तु कई साथियों का आग्रह था कि अनिष्ट की आशंका से वैज्ञानिक यदि अणु की खोज नहीं करते तो आज विज्ञान चन्द्रमा पर नहीं पहुंचता। जहाँ अनिष्ट की आशंका है वहाँ भविष्य सुख की कल्पना भी है।

तंत्र मारण, मोहन, परकाया प्रवेश और काम सिद्धि की साधना बतलाते हुए इन भूमियों से ऊपर उठने की प्रेरणा देता है। अक्षय आनन्द और पूर्णात्म भाव की सिद्धि तन्त्र का प्रतिपाद्य विषय है।

सोचने के पक्ष अलग-अलग हैं। तर्क में मैं नहीं जानाचाहता। भारतीय दर्शन में बुद्धि का एक साधारण स्थान है और तर्क बुद्धि का विलास है। विनम्रता पूर्वक मैं तो यही निवेदन करूँगा कि सधे हुए भोगमय जीवन का संयमित उपभोग करते हुए व्यक्ति के अध्यात्म की ओर बढ़ने में हमें इससे सहयोग मिलता है, तो ग्राह्य है।

पुस्तक आपके हाथ में है, प्रयोग आप पर निर्भर है। श्रद्धा व विश्वास के साथ किये हुए कार्य में निश्चित सफलता मिलती है। यह एक तकनीकी कर्म है। एक नहीं तो दूसरा, दूसरा नहीं तो तीसरा, प्रयोग अवश्य सफल होगा। पूर्णता के लिये विज्ञ गुरु की आवश्यकता है। सामान्य प्रयोग किये जा सकते हैं।

भारत का यह विज्ञान इतना गम्भीर व विशाल है कि इसका पूरा ज्ञान प्राप्त करना सम्भव प्रतीत नहीं होता। यह गम्भीर अध्यात्म-विज्ञान है, बाजीगरी नहीं। प्रयोगों को देने में मेरा केवल जन हितकारी दृष्टिकोण है। सफलता प्राप्त होने पर शक्ति प्रदर्शन करना भूल है। किसी का अनिष्ट करना मूर्खता है। परोपकार के लिए किये जाने वाले कार्य में प्रकृति भी सहयोग करती है।

तन्त्र शास्त्र के अपने मंत्र भी होते हैं। कहीं कहीं तांत्रिक प्रयोगों में मन्त्रों का प्रयोग नहीं भी हुआ करता है। फिर भी मन्त्र का प्रयोग उसकी शक्ति को गुणित कर देता है, उसको पूर्णरूप से जागृत कर देता है। जिस तरह विज्ञान मानता है कि वनस्पतियों व पशुओं के पास मधुर संगीत ध्वनियाँ की जावें तो वे अच्छी फलती-फूलती हैं, पशु ज्यादा दूध देते हैं। उनको दुत्कारा जाय, उनके सामने क्रोध प्रदर्शित किया जाय तो वे मुरझा जाते हैं, भयभीत रहते हैं। वैसे ही मन्त्रों के द्वारा उनकी शक्ति बढ़ाई जाती है-जिससे वे तुरन्त फलदायी कार्य कर सकें।

मैंने इस पुस्तक में अपामार्ग कल्प, रक्तगुन्जा कल्प, रुद्राक्ष कल्प व हाथा-जोड़ी कल्प—ये चार वनस्पतियों के ही कल्प दिए हैं—इसके लिए पाठकों से मैं निवेदन करूँगा कि पूर्व प्रकाशित मेरी पुस्तक 'मन्त्र विद्या' में वनस्पतियों के करीब चौदह कल्प दिये हैं उनको अवश्य देखें। वे तन्त्र शास्त्र की अमूल्य निधि हैं।

अपामार्ग कल्प, उस पुस्तक में नहीं है। रुद्राक्ष कल्प, रक्तगुन्जा कल्प, हाथा-जोड़ी कल्प व नक्षत्र कल्प हैं, पर विशद रूप देने के हेतु यहाँ फिर प्रस्तुत किये हैं।

खाने के, आंखों में अंजन आदि के अनेक प्रयोग आपको इस पुस्तक में मिलेंगे। उसके लिए मेरी आपसे सलाह है कि एक बार योग्य वैद्य से परामर्श करने के बाद ही ऐसे प्रयोग करने चाहिए और यदि कोई विज्ञ तंत्रवेत्ता गुरु का सान्निध्य मिल जावे तो सोने में सुहागा है।

"मन्त्र विद्या" पुस्तक जब मैंने लिखी थी तब मैं मन्त्र व उसके सामान्य विधि-विधानों को बताने तक ही सीमित रहा था। इस बार भी मैंने सीधे तांत्रिक प्रयोग एवं उसकी सामान्य प्रक्रियाओं को ही बताया है। इस शास्त्र के जटिल क्रिया-काण्डों एवं इसके दर्शन शास्त्र के विवेचन में मैं नहीं गया हूं।

मूलतः इसमें भी एकाग्रता, श्रद्धा, समय व वस्तु की प्रधानता की ओर ध्यान रखना अत्यन्त जरूरी है। इस ओर हम यदि पूर्णतया ध्यान रखते हैं तो मेरे विश्वास के अनुसार कोई कारण नहीं कि प्रयोग सफ़ल न हों। विज्ञ व्यक्तियों के ऐसे-ऐसे अनुभूत प्रयोग मैंने इसमें दिये हैं, जिनकी सत्यता पर कम से कम मुझे तो तनिक भी सन्देह नहीं है। फिर भी सफलता-असफलता के प्रति प्रकाशक व लेखक किसी प्रकार से उत्तरदायी नहीं हैं।

मुझे पुरानी पड़तों, गुटकों, पूज्य यतियों व सहृदय विज्ञ व्यक्तियों से जो भी इस तरह के प्रयोग मिले, मैंने इसमें दे दिये हैं। उन ग्रन्थों की सूची भी मैंने इसमें दे दी है, जिन्हें देखने का मुझे सुअवसर प्राप्त हुआ।

मुझे हार्दिक विश्वास है कि मेरी "मंत्र विद्या" पुस्तक की तरह ही आप इस "तंत्र विद्या" को भी बेहद पसन्द करेंगे।

पुस्तक के अध्ययन– अवलोकनोपरांत ज्ञात भूलों की सूचनाओं, प्रयोगों के परिणामों, विधियों में संशोधनों तथा मौलिक सुझावों एवं स्रोत–ग्रन्थों सम्बन्धी विशिष्ट मार्ग-दर्शन के लिए मैं विज्ञ सुधी जनों तथा सहृदय पाठकों के प्रति सदैव हार्दिक आभारी रहूँगा।

पुस्तक के प्रस्तुतीकरण एवं प्रकाशन में मेरे प्रमुख स्रोत रहे मेरे अभिन्न सम्बन्धी श्रीमान् छोट्टलालजी नाहटा, सरदार शहर निवासी, जिनका उत्साह मुझे निरन्तर बल प्रदान करता रहा। मैं उनके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

ग्रन्थ की पांडुलिपि के संपादन में मेरे अभिन्न मित्र पं० शंकरलाल जी पारीक का मुझे मूल्यवान सहयोग प्राप्त हुआ, एतदर्थ मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ।

—करणीदान सेठिया

प्रस्तुति

तंत्र शब्द अनेकार्थी है। प्रमुखवांद, सिद्धान्त या शास्त्र के रूप में इसका प्रयोग हुआ है। विद्वानों ने तंत्र शब्द की व्याख्या में दो आशयों को मुख्यत: केन्द्र में रखा है। एक इसे ज्ञान के मार्ग-दर्शक के रूप में व्याख्यात करता है, दूसरा दृष्टिकोण मोक्षपरक हैं। इसलिए तंत्र की चरम सिद्धि उस ज्ञान की बोधिका है, जिससे जन्म-मरण के बन्धन से उन्मुक्त होकर जीव, सत्-चित्-आनन्दमय बन जाय, सिद्धत्त्व प्राप्त कर ले। धर्म विशेष संबद्धता को लेकर इसका विभाजन करें तो वह जैन तन्त्र, बौद्ध तन्त्र और ब्राह्मण तंत्र इन तीन भागों में विभक्त होता है।

जैन तंत्र

△

जैनों के समवायांग ग्रन्थ से ज्ञात होता है कि जैन आचार्यों के चार कुलों में एक विद्याधर कुल था। विद्याओं के धारक विद्याधर कहलाते थे। वसुदेव हिण्डी से ज्ञात होता है कि नागराज ने गन्धर्व और पन्नगों को ४८ हजार विद्याएँ दीं। विद्यानुवाद में १५ वस्तुएं ली गईं। लब्धि तप द्वारा प्राप्त होती है। स्त्री देवता-धिष्ठित विद्या जपादि साध्य तथा पुरुष देवताधिष्ठित मन्त्र-पाठ साध्य माने गए हैं।

निशीथ सूत्र में नमस्कार–मंत्र की साधना पर बल दिया गया है। ठाणांग सूत्र में अष्ट मंगल का वर्णन आया है। पश्चम चरित्र, वसुदेव हिण्डी, त्रिशष्टि-शलाका पुरुष चरित आदि ग्रन्थों में विद्याओं का वर्णन है। सूरि मंत्र एवं कतिपय विद्याओं का उल्लेख भी इन ग्रन्थों में है।

दूसरी शती ई० में समन्त-भद्र द्वारा स्वयंभू स्तोत्र, तीसरी शती ई० में मानदेव द्वारा शान्तिस्तव, चौथी शती ई० में सिद्धसेन द्वारा महावीर स्तुति, पांचवी शती ई० में पूज्यपाद द्वारा-शान्त्यष्टक, छठी शती ई० में द्वितीय भद्रबाहु द्वारा उवसग्गहर स्तोत्र, सातवीं शती ई० में मानतुंग द्वारा भक्तामर स्तोत्र। उसी समय में धनन्जय द्वारा विशापहर स्तोत्र, नवीं शती ई० में नन्दिषेण द्वारा अजित शान्तिस्तव, ग्यारहवीं शती ई० में मल्लिषेण द्वारा ऋषिमंडल स्तोत्र, वादिराज

प्रथम द्वारा एकीभाव स्तोत्र, बारहवीं शती ई० में कुमुदचन्द्र द्वारा कल्याणमंदिर स्तोत्र, वादिराज द्वितीय द्वारा नवग्रह स्तोत्र, आशाधर द्वारा सरस्वती स्तोत्र, द्राविड़गण के मुनि इन्द्रनन्दी द्वारा दशवीं शती में ज्वालामालिनी कल्प, सिंहतिलक सूरि द्वारा "मंत्रराज रहस्य" और तंत्र लीलावती, मल्लिषेण सूरी द्वारा बारहवीं शती में भैरव पद्मावती कल्प व मुनि सुकुमार सेन द्वारा विद्यानुशासन की, धर्मघोष सूरि द्वारा चिन्तामणि कल्प व सागर चन्द्र सूरि द्वारा मंत्राधिराज कल्प की रचना हुई।

ये चमत्कारी मंत्रपूत स्तोत्र ग्रंथ हैं। इनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गई है। ये उत्तम भक्ति काव्य होते हुए भी मंत्र शक्ति से परिपूर्ण हैं। ये मंत्र–गर्भ-स्तोत्र अद्भुत एवं महत्वपूर्ण हैं।

नवकार मंत्र कल्प, लोगस्सकल्प, णमुत्थुणं कल्प, ह्रींकार कल्प, विजय पहुत कल्प, वर्द्धमान कल्प, सिद्धशान्ति कल्प, चन्द्र प्रज्ञप्ति विद्या कल्प, विद्यानुशासन व रहस्य कल्पद्रुम आदि उत्तम रचनाएं हैं। तंत्र-साहित्य में इनका महत्वपूर्ण योगदान है।

चौथी व पांचवी शती से सरस्वती स्तोत्रों की रचनाएँ मिलती हैं और १० वीं व ११ वीं शती से–चक्रेश्वरी, अम्बिका, पद्मावती आदि के स्तोत्र रचे जाने लगे। जैसे बौद्धों में तारा, वैष्णवों में काली, दुर्गा, चण्डी आदि का महत्वपूर्ण स्थान है उसी तरह जैनों में पद्मावती, चक्रेश्वरी व अम्बिका आदि का स्थान है। जैनों में ये विशिष्ट प्रभाववाली देवियाँ मानी गई हैं।

८५० ई० पू० भगवान पार्श्वनाथ के समय मूलतः तीन परम्पराए चल रही थीं— वैदिक, तापस व भौतिकवादी। तापस प्रायः मंत्र, यंत्र, तंत्र, पंचाग्नि तप, हठयोग आदि से जनता को अपनी ओर आकर्षित करते रहते थे। पार्श्वनाथ ने उस समय ध्यान-योग को ही ज्यादा महत्व दिया जिसमें आत्म-कल्याण प्रमुख था। पूर्व संस्कारवश धीरे-धीरे साधु-परम्परा में मंत्र-तंत्र को भी पूरा आश्रय प्राप्त हुआ और अनेक उपासनाएं एवं क्रियाकाण्ड प्रचलित हुए। पंच नमस्कार की परम्परा तो पुरानी चली आ रही थी परन्तु समय-समय पर अन्य क्रियाएं भी चालू हो गईं और नमस्कार मंत्र के आगे बीजाक्षरों को लगाकर रोग-उपद्रव आदि के लिए नमस्कार-मंत्र का उपयोग चमत्कारपूर्ण कामों में भी होने लगा।

जैन सम्प्रदाय में वाम-मार्गियों की तरह की शक्ति पूजा का आश्रय कभी नहीं लिया गया। इस तरह का मार्ग जैन परम्परा में किसी ने नहीं अपनाया।

हालांकि आचार्य हेमचन्द्र के योगशास्त्र नामक ग्रन्थ में पदस्थ नामक पद्धति में अन्य मतों के षट्चक्र वेधनी पद्धति के अन्तर्गत वर्णमयी देवता के प्रसंग में जो कथ्य आया है उसमें मातृका ध्यान का वर्णन अत्यन्त रोचक है। अनेक मंत्र परम्परा की शक्ति युक्त आत्म-स्वरूप की भावनाओं का विधानहै। पद्मावती देवी की उपासना बौद्धों की तारा देवी के समान ही है। जैन विद्वानों ने सारस्वत-कल्प को मान्यता दी है। सरस्वती आदि विद्या देवियों के नाम प्रसिद्ध हैं। इस तरह की शक्ति-पूजा जैनों में अवश्य चालू हुई परन्तु इनमें बौद्धों के बज्रयान, वैदिकोंके वामाचार जैसा सम्प्रदाय कभी नहीं चला।

आराध्य देवी की शक्ति का एक जगह केन्द्रीकरण जहाँ हो, वह यंत्र कहलाता है। जैन सम्प्रदाय में यंत्र की परम्परा भी खूब चली और उनके यंत्रों की प्रतिष्ठा में चार चांद लगे। कहते हैं कि देवेन्द्रगणि के 'कोष्ठकचिंता-मणि' नामक ग्रन्थ में बहुत समीचीन रूप से वर्णन किया गया था परन्तु आज वह ग्रन्थ मूल रूप से प्राप्त नहीं है, पर उसकी टीकाएं मिल जाती हैं।

जैन सम्प्रदाय में पन्द्रहिया, बीसा, तीसा, चौंतीसिया, पैंसठिया आदि व त्रिकोण, षट्कोण, त्रिवर्त, अर्धवृत्त, हस्ताकर स्त्रीशस्त्रकृतिमूलक, पुरुषाकृति वाले, अनेक यंत्रों की अति आश्चर्यजनक भव्य रचना हुई। ऋषि मंडल यंत्र, नमस्कार चक्र, विजय यंत्र, सर्वतोभद्रयंत्र, विजय पताका, अर्जुन पताका, रावण पताका, हस्ती यंत्र, अश्व यंत्र, शनि यंत्र जैसे प्रसिद्ध यंत्रों की रचना हुई। बिहार में आज भी विजय राजयंत्र, विजय पताका, सर्वतो भद्रयंत्र का प्रचलन जगह-जगह मिल जायेगा।

इस तरह यत्रों की स्थापना के साथ उनका पूरा विधि-विधान-जैसे किस मंडल में है, कौन इष्ट देव है, उनकी पूजा, हवन, तर्पण, मार्जन, दान, पुष्प समर्पण की विधि क्या है, उसके लिए शारदातिलक, रूद्रयामल, वामकेश्वर तंत्र, ताण्डव तंत्र, आदि ग्रन्थों की रचना हुई, तो उसी तरह जैनों में भी आर्ष विधानुशासन, तंत्र प्रकाश, कोष्ठक चिंतामणि, पंचनमस्कृति, दीपक, ऋषिमंडल, यंत्र विधान आदि सुन्दर ग्रन्थों की रचना हुई। इसी तरह तंत्र साधना में भी जैन सम्प्रदाय का योग महत्वपूर्ण है। नागार्जुन का कक्षपुटी ग्रन्थ एक अद्भुत रचना है। नागार्जुन ने पादलिप्तसूरि से आकाशगामिनी विद्या को प्राप्त किया था। जैन आचार्यों ने इसमें किसी भी तरह की कमी नहीं रखी। आज उसका प्रतिफल है कि हमें श्वेतार्क, श्वेतगुंजा, मयूरशिखा, सहदेवी, शंखपुष्पी आदि वृक्षों की मूल का रोग-दोष, व्यापार वृद्धि, द्रव्यलाभ, इच्छित कार्य सिद्धि

व सुख प्रसव, सन्तान प्राप्ति, काकबन्ध्यादि दोष निवारण जैसे कल्प हमें मिलते हैं, जिसका विवेचन विद्यानुशासन में विस्तार से मिलता है।

एक तरफ हमें तंत्र-यंत्र-मंत्र की साधना मिलती है तो तंत्र की दूसरी तरफ कर्णपिशाचिनी, उच्छिष्ट चांडालिनी, ज्वाला मालिनी, अंबिका देवी के कल्प भी मिलते हैं और मिलते हैं दर्पण, नख, दीप, जल, खड्ग, कज्जल आदि अवतार प्रयोग।

इस तरह से इस सम्प्रदाय में अनेक ग्रन्थों की रचना हुई है जो तंत्र-मंत्र साहित्य की अमूल्य निधि है।

ब्राह्मण तंत्र

△

मूलतः ब्राह्मण तंत्र की तीन शाखाएँ हैं—वैष्णव, शैव व शाक्त तंत्र। इन सभी में प्रचुर मात्रा में साहित्य का सृजन हुआ है। व्यवहार में वैष्णव तंत्र को 'संहिता' कहते हैं, शैव तंत्र को आगम कहते हैं व शाक्त तंत्र को तंत्र की संज्ञा देते हैं। वैष्णव तंत्र साहित्य में धर्म-दर्शन-वर्णाश्रम, मंत्र, यंत्र व योग के विधानों की प्रमुखता है। ईश्वर संहिता, पौष्कर संहिता, व ज्ञानामृत संहिता आदि प्रमुख रचनाएं हैं। ज्ञानामृत सार संहिता, नारद पंचरात्र के नाम से प्रकाशित है।

शैव तंत्र का साहित्य भी विशाल है। इसमें सिद्धान्त शैव, वीर शैव, जंगम शैव, रौद्र, पाशुपत, कापालिक, वाम, भैरव आदि अवान्तर भेद हैं। इनमें १० सात्विक आगम, १८ रौद्रागम, तथा ६४ भैरवागम प्रधान रूप से हैं। वैष्णवागमों की अपेक्षा शैवागमों ने पर्याप्त विस्तार पाया है। इसी में शाक्त सिद्धान्तों का मिश्रण होने से अनेक शाखायें फैल गईं। शैवागमों-उपागमों की चर्चा पाण्डिचेरी से प्रकाशित रौरवागम में देखनी चाहिए। अजितागम में भी इस विषय पर विचार किया गया है। इसी विषय में ग्रंथ-मूलावतार तंत्र व स्वच्छन्द तंत्र और कार्मिक तंत्र आदि हैं। डा० प्रबोध चन्द्र बागची ने तंत्रों के तीन विभाग बतलाये हैं—स्रोत विभाग, पीठ विभाग, व आम्नाय विभाग। इसमें स्रोत विभाग शैवों का, पीठ विभाग-भैरव व कौल मार्गियों का व आम्नाय विभाग शाक्तों का है।

शाक्त तंत्र का विस्तार सबसे ज्यादा है। समस्त वाङ्मय ही शिव-शक्त्यात्मक है, इसके विभिन्न रूप और उपासना के विविध प्रकारों के कारण इसके साहित्य का परिमाण बताना कठिन है। कुछ तंत्र ग्रन्थों को तीन भागों में बांटा गया है और उसी के अनुसार प्रयोग करने को कहा गया है। वे भाग हैं—रथक्रान्त, विष्णुक्रांत, व अश्वक्रान्त (इनके ग्रन्थों की सूची पुस्तक के अन्त में दे दी गई है)। इन मतों व ग्रन्थों के प्रतिपादन में आचार्यों ने अनेक तंत्र ग्रन्थों की रचना की है। वामकेश्वर तंत्र, प्रपंचसार, परशुराम कल्पसूत्र आदि प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। कतिपय पूजा पद्धतियाँ, स्तोत्र आदि से भी पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। बौद्धों के सहजयान सम्प्रदाय के ८४ सिद्ध जो सहज सुख का अनुभव ही साधनात्मक जोवन का चरम प्राप्तव्य मानते थे भी एक प्रकार से तांत्रिक साधक ही थे। सभी सिद्ध ध्यानयोग और हठयोग के भी साधक थे। तांत्रिकों के आचार-विचार से इनका कोई विशेष मतभेद नहीं था। वैष्णव चक्र में माँ, बेटी, पुत्रवधू को मात्र नारी प्रतीक के रूप में उपस्थित होने की अनुमति है, परन्तु इन महिलाओं के साथ संभोग का आदेश नहीं है-पर ये सहजयानी बौद्ध इसे भी स्वीकरणीय मानते हैं। इसी तरह सिद्ध अनंगवज्र जो नाथ सम्प्रदाय के चौरासी सिद्धों में से एक हैं, अपने ग्रन्थ 'प्रज्ञोपायविनिश्चय' में लिखा है—"मुक्ति चाहने वाले साधक प्रज्ञापारमिता का सेवन करें। यह प्रज्ञापारमिता स्त्री के रूप में सर्वत्र सुलभ है।" सिद्ध अनंगवज्र के शिष्य राजा इन्द्रभूति ने "ज्ञानसिद्धि" में कहा है—

"तीन लोकों में मिलने वाले प्राणियों का वध करना चाहिए, दूसरे के धन का अपहरण करना चाहिए, झूठ बोलना चाहिए। जिन कार्यों से अन्य व्यक्ति बहुत समय तक नरकवास करने के अधिकारी होते हैं, योगी उनसे मुक्त होता है। जो साधक भक्ष्य-अभक्ष्य का कोई विचार नहीं करता, पेय-अपेय का कोई भेद नहीं मानता, गम्य और अगम्य का कोई विचार नहीं करता, वही योगी होता है।

मत्स्येन्द्रनाथ व गोरक्षनाथ की अपूर्व सिद्धियों से संसार परिचित है। इस सम्प्रदाय के सिद्धों में इतनी शक्ति आ गई थी कि भावनायें व पदार्थ उनसे विलुप्त नहीं रहते थे। इन्होंने अपनी साधना विधि निश्चित की और सरल व सुगम प्रयोग बताये। इनके मंत्रों को शाबर मंत्र कहते हैं। इन मंत्रों में बीजाक्षर नहीं हैं-संस्कृत शब्द नहीं हैं और न बोलने में और लय में कठिनाई ही है। साधारण बोलचाल की भाषा में निर्मित इन मंत्रों की शक्ति असीम है।

ध्यान योग ही मूल आधार है और भक्ति ज्ञान पर ही सारा काम होता है। शाबर मंत्रों में सिद्धि देने वाले महात्माओं का उल्लेख तंत्र ग्रन्थों में निम्नलिखित है—

नागार्जुनो जडभरतो, हरिश्चन्द्रस्तृतीयकः।
सत्यनाथो भीमनाथो, गोरक्षश्चयटिस्तथा॥
अवघटश्चैव वैरागाः कंथाधारि जलंधरो।
मार्ग प्रवर्तकाह्येते, तद्वच्च मत्यार्जुनः॥
एतदुक्तं शावराणां, मन्त्राणां सिद्धिदायकाः।

नागार्जुन, जडभरत, हरिश्चन्द्र, सत्यनाथ, भीमनाथ, आचार्य गोरक्षनाथ, अवघटनाथ वैरागी, कंथाधारी जलन्धर और मत्यार्जुन ये मार्ग प्रवर्तक हैं- शाबर मंत्रों में सिद्धि देने वाले हैं।

मुक्ति क्या है। हमें कोई मुक्ति देता नहीं है। मुक्ति के क्षेत्र में प्रवेश की आज्ञा आचार्य अवश्य देते हैं, परन्तु मुक्त तो व्यक्ति स्वयं होता है। मुक्ति का स्वरूप है आत्मबोध। तंत्र सीधा मुक्ति का ज्ञान नहीं कराता। वह पहले अवरोधों का ज्ञान कराता है फिर उनको पार करने का मार्ग बतलाता है।

मार्ग अलग-अलग हैं। वाम मार्ग, दक्षिण मार्ग। दक्षिण मार्ग एक रास्ते से मुक्ति की ओर अग्रसर कराता है, वाममार्ग दूसरे रास्ते से, पर केन्द्र बिन्दु तो एक ही है। तांत्रिक आचार्यों का मत है कि तंत्र मार्ग शक्ति और शिव का, कर्म और ज्ञान का, स्त्री और पुरुष का, उपासना और आनन्द का संगम है। यह बहुत ही कठिन मार्ग है। कुलार्णव तंत्र में कहा है:-

कौलाचाराः मुरमकठिनः योगिनामप्यगम्यः

(कौलमार्ग बहुत ही कठिन है। इसमें पारंगत होना इन्द्रियों के लिए भी गम्य है)। काली तंत्र में कहा है:-

मद्यं मांसंच मीनं च मुद्रा मैथुन मे वच।
एते पंच मकाराः स्यु मोक्षदाः हि कलौयुगे॥

(इस काल में मद्य, मांस, मछली, मुद्रा और मैथुन इन पांचों की साधना मोक्ष की ओर ले जाती है)।

महानिर्वाण तंत्र में कहा है :—

पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा यावत् पतति भूतले।
पुनरुत्थाय वै पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥

(शराब पिये, पीता रहे, बारबार पिये, जबतक साधक जमीन पर न गिर पड़े, तब तक पीता रहे। वह उठे और उठकर पुनः पिये। इसके बाद वह पुनर्जन्म के बन्धन से मुक्त हो जाता है)। भैरवी चक्र में जाति, वर्ण व वर्ग आदि का भेद-भाव नहीं किया जाता। कुलार्णव तंत्र में लिखा है :-

प्रवृत्ते भैरवी चक्रे सर्व वर्णाः द्विजातयः।
निवृत्ते भैरवी चक्र सर्वे वर्णाः पृथक् पृथक्॥

(भैरवी चक्र आरम्भ होने पर सभी वर्णों के लोग द्विजाति के बराबर हो जाते हैं और भैरवी चक्र समाप्त होने के बाद सभी वर्ण फिर अलग-अलग हो जाते हैं)।

व्यक्ति की योग्यता के सम्बन्ध में 'निर्वाण तंत्र' में लिखा है :-

नात्राधिकारः सर्वेषां ब्रह्म ज्ञान साधकान् विना।
परब्रह्मो पासकाः ये ब्रह्मज्ञाः ब्रह्मतत्पराः॥
शुद्धान्तः करणाः शान्ताः सर्वप्राणिहिते रताः।
निर्विकाराः निर्विकल्पाः दयाशीलाः दृढ़व्रताः॥
सत्य संकल्पकाः ब्राह्मास्त एवा त्राधिकारिणः॥

(चक्र में सम्मिलित होने का अधिकार हर एक को नहीं है। जो ब्रह्म को जानने वाला साधक है, उसके सिवाय इसमें कोई शामिल नहीं हो सकता। जो ब्रह्म के उपासक हैं, जो ब्रह्म को जानते हैं, जो ब्रह्म को पाने के लिए तत्पर हैं, जिनके मन शुद्ध हैं, जो शान्त चित्त हैं, जो सब प्राणियों की भलाई में लगे रहते हैं, जो विकारों से रहित हैं, जो विकल्प से रहित हैं जो दयावान हैं, जो प्रण पर दृढ़ रहने वाले हैं, जो सच्चे संकल्प वाले हैं, जो अपने को ब्रह्ममय मानते हैं, वे ही तांत्रिक चक्र में भाग लेने के अधिकारी हैं)।

वामाचारियों पर आचरण भ्रष्ट होने का और मदिरा के नशे में धुत्त होकर रमण करने का जो आक्षेप लगाया जाता है वह भूल के कारण कोई भी साधक पीता मदिरा ही है परन्तु उस मदिरा में मादक भावना रखकर नहीं। ऐसी भावना रखने वाले को दीक्षा नहीं दी जाती। वह वीर भाव व दिव्य भाव से किया जाता है। दिव्य भाव साधना की उच्चतम भूमि है। दिव्य भाव परमहंस की स्थिति होती है। क्रोध, मान, माया, लोभ आदि विकारों का पूर्ण परित्याग करना पड़ता है। विषय सुखों से ऊपर उठकर दिव्य भाव को प्राप्त करना पड़ता है। प्राणियों के हित साधन का व्रत आधार भूमि है,

ऐसे व्यक्ति के लिए दिशा, काल, तिथि व मुहूर्त का महत्व नहीं होता। वह कभी शिष्ट को तरह आचरण करता है कभी भ्रष्ट की तरह। उसके लिए कीचड़ व चन्दन, महल व श्मशान, सोना व मिट्टी, शत्रु व मित्र में कोई अन्तर नहीं होता। यह है दिव्य भाव। इस स्थिति में वस्तुतः संसार का कोई अर्थ नहीं रहता। योगी इसे निग्रह के द्वारा प्राप्त करते हैं। भक्त सर्वात्म भाव से समर्पण करके, ज्ञानी तत्वार्थ समझकर और तांत्रिक इनमें रहते हुए इनसे ऊपर उठकर।

दिव्य भाव में पंचमकारों का अर्थ ही बदल जाता है। पूजा उपकरणों के रूप में पंचमकारों की मान्यता विलक्षण खोज है। यह भोग में योग बुद्धि रखने की दुरूह साधना है। व्यक्ति को स्त्री सम्पर्क को शिवा और शिव के संयोग के रूप में मानकर साधना करना कितना कठिन कार्य है।

बौद्ध तंत्र

△

सम्राट अशोक के समय ई० पू० २५१ में बौद्ध सम्प्रदाय की तृतीय संगीति पाटलिपुत्र में बुलाई गई। मोग्गलिपुत्त तिस्स ने उस समय अनेक भिक्षुओं को संघ से बहिष्कृत कर दिया था। इन निष्कासित भिक्षुओं ने अपना आसन नालंदा के पास ही कहीं जमाया था। चतुर्थ संगीति ७८ ई० के आसपास सम्राट कनिष्क ने बुलाई थी। कनिष्क के समय तक महायान पूर्ण विकसित हो चुका था। हर्ष के बाद नालंदा विद्यापीठ हीनयान विरोधी संप्रदाय का केन्द्र बना। विज्ञानवाद का उत्कर्ष भी वहीं हुआ। बुद्ध का स्थान देव परक हो चला था। धीरे-धीरे बुद्ध के महापरिनिर्वाण के लगभग ५०० वर्षों बाद महायान पूर्ण प्रतिष्ठित हो गया। महायान बौद्ध धर्म में मैत्रेयनाथ और असंग (चतुर्थ व पंचम ईस्वी शताब्दी) के काल में तांत्रिक विचारों का प्रवेश हो गया था। छठीं शताब्दी के पूर्व के समय में मंत्रों और धारणियों का बहुत प्रचार था। हालांकि मंत्र, यंत्र, मंडल, मुद्रा, शक्ति, तत्व, पंचमकार आदि तांत्रिक तत्व महायान में बीज रूप में पहले ही प्रविष्ट हो चुके थे।

वज्रयान की साधना गुरु-शिष्य परम्परा में २०० वर्ष पूर्व से जीवित रही है और उसका खुले आम प्रचार करने वाले आचार्य-सातवीं शताब्दी

के बाद हुए। इस प्रकार लगभग ४०० ई० से ७०० ई० तक के तीन सौ वर्षों में तांत्रिक साधना गुप्त रूप से गुरू-शिष्य परंपरा में ही जीवित रही। इसके बाद अनेक ऐसे सिद्धाचार्य हुए, जिन लोगों ने इस साधना को जन-साधारण में प्रचलित करना आरम्भ कर दिया। महायान के अंतिम चरण (लगभग ४ थी-५ वीं शताब्दी) में मंत्रों का प्रचार होने तक लगभग ३०० वर्षों तक पंचमकारों की साधना गुप्त रूप से गुप्त-शिष्य दीक्षित मंडलियों में जीवित रही। इस यान से वज्रयान और फिर उससे कालचक्र यान और सहजयान का विकास हुआ। बौद्ध सहजयान का अंतिम समय लगभग १२ वीं शताब्दी माना गया है। वज्रयान के अन्तर्गत नाथमत भी विकसित हुआ था। वज्रयान का प्रवाह काल ७वीं से १० वीं शताब्दी तक था। गुप्त रूप से ३०० वर्षों तक तांत्रिक साधना जीवित रहने के बाद से, ८४ सिद्ध पुरूषों के उपदेशों, रहस्य गीतों और उनके शिष्यों से वह जनसाधारण मे प्रचारित की गई। अधिकतर ये महासिद्ध ईसा की सातवीं, आठवीं और नवीं शताब्दी में हुए थे और इन शताब्दियों में ही वज्र यान ने विपुल प्रसार पाया। बौद्धमत में शक्ति साधना प्रवर्तित करने वाले ग्रन्थ मंजुश्री मूल कल्प और गुह्य समाजतंत्र है। इस वज्रयानी साधना के तंत्र का वाम मार्ग सम्पूर्ण भारत में फैल गया। नालंदा के बौद्ध विहार ने तांत्रिक साधना के प्रसार में बहुत अधिक कार्य किया। वहां के बौद्ध भिक्षु आचार्यों ने चीन, मंगोलिया, लंका, वर्मा, तिब्बत, इंडोनेशिया, कांबोज, भूटान, सिक्किम आदि देशों में तांत्रिक साधना का प्रसार किया।

मंगोलिया के राजकुमार काउण्ट आसेण्डोबस्की ने अपनी पुस्तक Beasts Men and Cods में वज्रयानी बौद्धों की अलौकिक सिद्धियों का वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है कि आकाश में उड़ जाना, बिना आग दीपक जलाना, काले पत्थर से भविष्य जानना, उन लोगों के लिए बहुत सामान्य बात थी।

नवीं से ग्यारहवीं शती तक बौद्ध तंत्रों का चीनी व तिब्बती भाषा में अनुवाद होता रहा। आचार्य शान्ति रक्षित व पद्म सम्भव बौद्ध तंत्र विद्या के महान ज्ञाता थे। इन्हीं आचार्यों ने तिब्बत में जाकर "वसम-यस-अचिन्ता" जैसे महाविहार की स्थापना की। आचार्य श्री सिंह व आचार्य हुंकार ने विदेश से आए अनेक लोगों को तंत्र का ज्ञान दिया था। इस तरह समस्त उत्तर पूर्वी सीमान्त "मणिपद्मेंहुम्" की ध्वनि से गूंज गया।

सिद्धों का काल ८ वीं शताब्दी से १२ वीं शताब्दी के बीच है। तांत्रिक बौद्ध साधना का काल ८४ बौद्ध सिद्ध पुरूषों का विस्तार काल माना जा सकता है। शक्ति साधना प्रवर्तित करने वाले मूल ग्रंथ मंजुश्री मूलकल्प, व गुह्य समाज तन्त्र का रचना काल भी प्रायः ७वीं से १०वीं ईस्वी शताब्दी है।

जिस प्रकार हिन्दू तंत्रों में दक्षिणाचार और वामाचार नामक दो विभाग स्वीकृत किये गये हैं उसी प्रकार बौद्ध तन्त्रों में क्रिया तन्त्र और चर्या तन्त्र को दक्षिणाचार में तथा योग तन्त्र और अनुयोग तंत्र को वामाचार में माना गया है। दक्षिणाचार में पूर्ण कठोर ब्रह्मचर्य, नियमित भोजन, नियमित पान आदि की प्रधानता होती है। जब साधक इस आचार में पूर्ण कुशल हो जाता है, तभी वामाचार में दीक्षित होने का अधिकारी होता है। इस वामाचार में वामा या शक्ति या नारी को आचार साधना का अनिवार्य उपकरण माना जाता है।

योग तन्त्र में नारी को आवश्यक साधन के रूप में व्यवहृत किया जाता है। अनुत्तर योग तन्त्र यान की साधना, इस क्रम में, भावप्रधान साधना मालूम होती है। दक्षिणाचार बाह्य साधना है। शरीर को नियंत्रित करने का कार्य उस साधना में किया जाता हैं। ७वीं शताब्दी के पूर्व जिस प्रकार की साधना प्रचलित थी, दक्षिणाचार की थी। उस समय क्रियातन्त्र और चर्यातंत्र पर ही विशेष ध्यान दिया जाता था। ७वीं-८वीं शताब्दी के ग्रंथ वामाचार की पंचमकार समन्वित साधना की ओर संकेत करते हैं। सातवीं शताब्दी से उत्तरार्ध या आठवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध से लेकर ग्यारहवीं, बारहवीं शताब्दी तक निश्चित रूप से वज्रयान के संस्कृत ग्रंथ विपुल मात्रा में लिखे गए। किन्तु मुसलमानों द्वारा उच्छिन्न किये जाने पर ८४ सिद्धों के अनेक ग्रंथ तिब्बती भाषा में अनूदित रूप में तथा नेपाल में मूल रूप में तांत्रिक बौद्ध धर्म की सुरक्षा के साथ ही सुरक्षित रहे।

इन तन्त्र ग्रन्थों के लेखक सातवीं शताब्दी से लेकर बारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक के अन्तर्गत हैं। तांत्रिक असंग, नागार्जुन (७वीं शताब्दी) इन्द्रभूति (लगभग ६८७–७१७ ई०) पद्मवज्र (इंद्रभूति के समकालीन) लक्ष्मीकरां (इन्द्रभूति की समकालीन) सहजयोगिनी चिंता (७६१ ई० लगभग) रत्नाकर गुप्त, पंडित अवधूत, अद्वयवज्र, सरहपाद, रत्नाकर शान्ति, श्रीधर आदि हैं। इन्द्रभूति की ज्ञान सिद्धि, पद्मवज्र की गुह्य सिद्धि, लक्ष्मीकरां की अद्वैत सिद्धि, इन्द्रभूति के गुरू अनंगवज्र की प्रज्ञोपाय विनिश्चय सिद्धि, विमल प्रभा का कालचक्र तंत्र, श्रीसम्पुट (योगिनीतंत्र) मूलतंत्र, पंचक्रम सेकोद्देश आदि उच्चकोटि के तांत्रिक ग्रन्थ हैं।

गुह्य समाजतंत्र तथा गुह्य सिद्धि साधनात्मक ग्रंथ है। इसमें दो प्रकार की सिद्धियाँ बताई गई हैं–सामान्य सिद्धि तथा उत्तम सिद्धि। सामान्य सिद्धि में अंतर्द्धान, अणिमा, लघिमा आदि की गणना की गई है। बोधि प्राप्ति उत्तम सिद्धि के अन्तर्गत है। बुद्धत्व प्राप्ति षडंगयोग में पूर्ण अभ्यस्त हो जाने के बाद ही संभव है। शरीर को कष्ट देने वाले कठोर नियमों के आचार को गुह्य समाज स्वीकार नहीं करता। उसका मत है स्वैच्छया भोग से सरलतापूर्वक बोधि प्राप्ति संभव है। प्राचीनकाल में हीनयान और महायान दोनों के अनुसार अनेक जन्मों मे बोधि सम्भव थी किन्तु गुह्य समाज अपनी साधना से इसे इसी जन्म में सरलतापूर्वक प्राप्त कराने का दावा करता है। वे कहते हैं बिना शक्ति के अन्य किसी माध्यम से बुद्धत्व की प्राप्ति असम्भव है। इसलिए साधना के लिए शक्ति को बार-बार आवश्यक ठहराया गया है। मद्य, मांस, मैथुन, मत्स्य की खुली छूट है। आदर की निरर्थक वस्तुओं के लिए इस समाज में तनिक भी स्थान नहीं है। उसकी दृष्टि में पवित्र ग्रन्थ-पाठ, मण्डल निर्माण, रत्न पूजा आदि कार्य निरर्थक हैं।

गुह्य समाजतंत्र की दृष्टि में योगी के लिए सामाजिक नियम और मर्यादाएं व्यवहार्य नहीं हैं। वह उनका उल्लंघन कर सकता है। उसे असत्य भाषण, जीवहिंसा, परद्रव्य हरण, नारि सेवनादि कार्य स्वतंत्र होकर करना चाहिए। इसी का वज्र मार्ग कहा गया है।

इन ग्रन्थों के शक्ति देवता-अचल, टक्कीराज, नीलदंड, देवियाँ-लोचना, तारा, पांडरा, मामकी आदि यक्षिणियाँ-नट, नटी, भट्ट, रेवती, मेखला आदि हैं।

ऊपर जिन सिद्धों का वर्णन आया है उन चौरासी सिद्धों के नामों की तीन सूचियाँ प्राप्त होती हैं। हठयोग प्रदीपिका, वर्ण रत्नाकर में वर्णित व तीसरी सूची राहुल जी द्वारा सस्क्य विहार (तिब्बत) से प्राप्त। ८४ सिद्धों और ९ नाथों के विषय में जितना वर्णन मिलता है, उससे स्पष्ट होता है कि जिन लोगों ने नाथ साहित्य एवं सम्प्रदाय का विवेचन करना अपना लक्ष्य समझा है उन लोगों ने नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तकों और प्रचारकों को बौद्धमत से सर्वथा पृथक माना है परन्तु इस तथ्य को भी प्रायः सभी विद्वानों ने स्वीकार किया है कि उस समय के जितने भी तांत्रिक प्रभावापन्न आस्तिक-नास्तिक सम्प्रदाय थे, उन सभी में साधनात्मक और वैयक्तिक आदान-प्रदान होता था।

११ वीं शताब्दी तक तांत्रिक शैव तथा बौद्ध साधना में पर्याप्त आदान-प्रदान होने लगा था। अद्वयवज्र के संग्रह से स्पष्ट होता है कि बौद्धों ने शैवों या हिन्दू तांत्रिकों की साधना प्रणाली और शब्दावली को ग्रहण कर लिया था। इसी प्रकार कौल ज्ञान निर्णय के विवेचन से भी इसी निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि तांत्रिक शैवों ने भी तांत्रिक बौद्धों की शब्दावली और साधना प्रणाली को ग्रहण कर लिया था। गोरक्षनाथ की अपेक्षा मत्स्येन्द्रनाथ की कौल साधना प्रणाली बौद्धों के लिए अधिक सरल और ग्राह्य थी। उनकी कौल साधना तांत्रिक बौद्ध साधना से अधिक मिलती जुलती थी। दूसरे मुसलमानों के आक्रमण तथा शंकर के अद्वैतवादियों के उच्छेद कार्य से रक्षा पाने के लिए, साथ ही शैवों के उग्र विरोध को नम्र बनाने के लिए मत्स्येन्द्र को बौद्ध के रूप में ग्रहण करने में उन्हें तनिक भी कठिनाई नहीं हुई।

यही कारण है कि मत्स्येन्द्र, बौद्धों और शैवों में समान रूप से मान्य हैं। इस अनुमान से, नाथमत तांत्रिक बौद्धमत का ही एक उपमत है।

इन चौरासी सिद्धों के नामों की प्राप्त तीनों सूचियां पुस्तक के अन्त में दे दी गई हैं। हठयोग प्रदीपिका ३० नामों की सूची है। वर्णरत्नाकर में ७७ नामों की सूची है। तिब्बत से प्राप्त राहुल जी की सूची में ८४ सिद्धों के नाम हैं।

हठयोग प्रदीपिका में तीसरा नाम शाबरानंद का तथा तिब्बती सूची में पांचवां नाम शबरपा का आता है। कई विद्वानों का मत है कि ये शाबर-नाथ जी ही शाबर मंत्रों के जनक थे। सहजयान की साधना प्रणाली के अनुरूप यह कल्पना ठीक ही मालूम देती है।

ऐसा मालूम होता है कि मत्स्येन्द्रनाथ व गोरक्षनाथ शुद्ध हठयोगी साधक थे, परन्तु मत्स्येन्द्रनाथ के दो पक्ष सामने आते हैं - गोरक्षनाथ को जब शिष्य बनाया था तब उन्हें शुद्ध हठयोग की साधना प्रणाली की शिक्षा दी गई थी, परन्तु कामरूप देश की यात्रा में मत्स्येन्द्रनाथ ने कौल योगिनी मत यानी सिद्ध कौल मत का प्रचार किया था—जो बौद्ध धर्म के सहजयान के काफी निकट था। यह कौल साधना-प्रणाली, हठयोग साधना-प्रणाली से पूर्णतया भिन्न थी। मीनानाथ, गोरक्षनाथ, कपाली, कान्ह, चर्पटी और शबर ये छहों हठयोगी सिद्ध थे। इनमें भी कपाली और चर्पटी रसेश्वर सिद्ध थे।

इन चौरासी (८४) सिद्धों का अधिक से अधिक विस्तार काल लगभग ६३३ ई० से १२०० ई० माना गया है।

मुस्लिम तंत्र

△

मुस्लिम सम्प्रदाय का धर्म ग्रन्थ कुरान मंत्र उपासना का आदेश नहीं देता है, केवल अल्लाह से दुआ माँगने के सिवा किसी मंत्र का रूप कुरान की आयत नहीं है। नाथ सम्प्रदाय के शाबर मंत्रों की तरह इनमें भी शाबर मंत्रों की बहुलता है। इनमें भी महम्मदा पीर की आन ली जाती है और बिस्मिल्लाह के नाम की आन के साथ-कुरान की आयत या शाबरी विधि से शब्द संयोजन करके मंत्र का गठन कर लिया जाता है। इन मुसलमानी मंत्रों में रहस्यपूर्ण कुछ भी नहीं है। साधारण बोलचाल की भाषा में ही सब कुछ कहा जाता है। इनमें पीर की सौगन्ध ली ही नहीं जाती बल्कि उसे सौगन्ध दिलाई भी जाती है। इनकी वर्ण योजना अटपटी अवश्य लगती है पर ये साधारण कार्य के लिए सुगम उपाय हैं। ऐसा देखने में आया है कि मुसलमानी मंत्र इस काल में बहुत सरलता से सिद्ध हो जाते हैं। ब्राह्मण तन्त्र में यक्षिणी साधना विधि मिलती है उसी तरह से इनमें परी व वीर साधना का विधान आता है। इनके तंत्रों में ८४ पुतलियों का वर्णन आता है। ये प्रेत-बाधा निवारण आदि में अक्सर काम में ली जाती हैं जो बहुत ही कारगर साबित होती हैं।

तंत्र मत के अनुसार यंत्र-तंत्र-मंत्र का ज्ञान हुए बिना किसी भी कार्य में सिद्धि प्राप्त करना असम्भव है। जैसे यंत्र हैं दूरवीक्षण (Telescope), उसे केन्द्रीभूत (Focus) करना है तंत्र, और मन स्थिर करके उसमें देखना है मंत्र वैसे ही चक्षु है यंत्र, उसका केन्द्र है तंत्र। चक्षु और उसके केन्द्र में प्राण शक्ति को संचारित करना और उस केन्द्र में मन स्थिर करके तत्वोपलब्धि करना है उनका मंत्र। यह यंत्र-तंत्र-मंत्र मुद्रा क्रिया का अंग विशेष है। मुद्रा के द्वारा कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत होती है अर्थात् स्थान विशेष में, तत्व विशेष में, शक्ति विशेष में, देवता विशेष प्रकाशित होते हैं। जिनके द्वारा देवता की प्रीति, देवता की अनुभूति साधित होती है उसका नाम मुद्रा है। मुद्रा केवल हाथ की उंगलियों में सीमित नहीं है, इसका प्रमाण है महामुद्रा, योनिमुद्रा आदि। देह और चित्त का एक-एक भाव में अवस्थान एक-एक तत्वानुभूति के, एक-एक देवता के साक्षात्कार के अनुकूल है। देह समष्टि रूप से एक ही है, किन्तु इसके भिन्न-भिन्न अवयव भिन्न-भिन्न कार्य के यंत्र विशेष हैं। यंत्र हमारे देहस्थ विशेषतः मेरूदंडस्थ विभिन्न चक्र विशेष हैं। प्रत्येक चक्र में बीजाकार रूप में साधन राज्य के अनेक तत्व छिपे हुए हैं। तंत्र वह प्रणाली है जिसके अवलम्बन

के द्वारा हम यंत्रों के भीतर गुप्त शक्ति को प्रकट कर नाना प्रकार की अलौकिक शक्ति की सहायता से अनेक गूढ़ रहस्यों को जान सकते हैं।

मूलाधार से सहस्रार तक सात चक्रों का उल्लेख है "ॐभूः" उच्चारण कर मूलाधार से, "ॐभूवः" स्वाधिष्ठान से, "ॐ स्वः" मणिपुर से, "ॐमहः" अनाहत से, "ॐजनः" विशुद्धाख्य से, "ॐ तपः" आज्ञाचक्र से, "ॐसत्यम्" उच्चारण कर छह चक्र भेदकर हम सहस्रार में पहुँचते हैं। सहस्रार को वैसे चक्रों में नहीं माना जाता। मनुष्य-देह में सुषुप्त रूप में कुण्डलिनी शक्ति विद्यमान है। यह सुप्त शक्ति जाग्रत होकर क्रमशः ऊपर की ओर उठती रहती है। इस क्रमिक उत्थान के काल से मनुष्य के विकास का परिपन्थी सारा विकल्प ज्ञान उपशमित होता है।

चक्र के बाद चक्र के भेद का यही उद्देश्य है। कुण्डलिनी के प्रबुद्ध होने से चित् शक्ति अपना संवित रूप मात्र प्रकाश करती है। वह बहुत ही प्रबल अग्नि स्वरूप है। इसी को चिदग्नि कहते हैं। यह शक्ति गुरु कृपा, ईश्वर कृपा, काल का परिपाक, पुरुष कार अथवा और किसी कारण से जाग्रत होती है। मूलाधार से स्वाधिष्ठान तक "अन्नमय", स्वाधिष्ठान से मणिपुर तक "प्राणमय" मणिपुर से अनाहत तक "मनोमय" अनाहत से विशुद्धाख्य तक "विज्ञानमय" और विशुद्धाख्य से आज्ञा चक्र तक "आनन्दमय" कोष का स्थान है। उसके ऊपर की भूमि को कोशातीत कहा जाता है। अन्नमय कोष तमः प्रधान स्थूल देह की प्राणमय मनोमय-विज्ञानमय कोष रज प्रधान सूक्ष्म देह की, आनन्दमय कोष सत्व प्रधान कारण देह की अवस्था और आज्ञाचक्र के ऊपर तथा सहस्रार (निर्गुण अवस्था) के नीचे तक विशुद्ध सत्वमय अवस्था कही जा सकती है। मूलाधार से सहस्रार तक एवं सहस्रार से मूलाधार तक एक विद्युत स्रोत यातायात करता रहता है। इस स्रोत की गति को अनुभव करना ही स्रोतापन्न-होना है। मूलधार में अग्नि बिम्ब, अनाहत में सूर्य बिम्ब और विशुद्ध चक्र में चन्द्र बिम्ब का दर्शन होता है। सहस्रार को चक्र नहीं कहा जाता क्योंकि यहाँ जीव स्व-स्वरूप में निमज्जित, सामरस्य में विभोर रहता है—यह अद्वैत भूमि है।

यह कुण्डलिनीवाद वेदानुकूल दर्शन शास्त्र में नहीं अपनाया गया है और न पातञ्जल योग शास्त्र में कुण्डलिनी का कोई उल्लेख है। बौद्ध और जैन ग्रंथों में भी स्पष्ट रूप से कुण्डलिनी की कोई आलोचना नहीं है। कहते हैं यह तंत्र का निजस्व है, कोई कहते हैं, यह और इस सम्बन्ध की वर्णोपासना-प्रणाली

भारत में बाहर से आई है। हठयोग और अक्षर-उपासना जब चालू हुई, तभी इसकी प्रधानता कायम हुई। मत्स्येन्द्रनाथ, गोरक्षनाथ आदि हठ मार्ग प्रवर्तक आचार्य कहते हैं कि मूलाधार में सोई हुई कुण्डलिनी शक्ति के उद्‌बुद्ध किये बिना कर्म, ज्ञान या भक्ति कोई भी मुक्ति के उपाय-रूप में परिणत नहीं हो सकती। जो कर्म, ज्ञान या भक्ति कुण्डलिनी-शक्ति के जागरण में सहायता करती है, वही कर्म योग, ज्ञानयोग और भक्ति योग पद के वाच्य हैं। इसके बिना कर्म आदि व्यर्थ का प्रयास है। कुण्डलिनी के निद्रा भंग के बिना आत्मा या परमात्मा में स्थिति पाना सम्भव नहीं।

कविराज गोपीनाथ जी कहते हैं—कुण्डलिनी के नहीं जगने से परम लक्ष्य की प्राप्ति की बात तो दूर, महापथ पर भी चलना सम्भव नहीं होता। मनुष्य जीवन का यही प्रकृत उद्‌देश्य है। सिर्फ खण्ड कैवल्य प्राप्त करके जन्म मृत्यु के भँवर से ऊपर स्थान पाना, मनुष्य के लक्ष्य की प्राप्ति नहीं है। अपनी सोई भगवत्ता जबतक पूरी तरह जग नहीं जाती, तब तक मनुष्य जीवन की वास्तविक सफलता कहाँ? कुण्डलिनी के जगे बिना चित्त और अचित् का द्वन्द नहीं मिट सकता। विवेक ज्ञान के पथ पर आरूढ़ होने का एक सोपान मात्र है। शक्ति की साधना के बिना शिव भाव की प्राप्ति असम्भव है और कुण्डलिनी के जागरण बिना शक्ति साधना का कोई अंग ही वश में नहीं आता।

जिस किसी भी प्रणाली द्वारा योग मार्ग में अग्रसर होने पर भी फलावस्था एक ही प्रकार की उदित होती है। इस अवस्था में कर्मों का शेष होता है, अहंकार की निवृत्ति होती है, देहात्म भाव हट जाता है तथा अप्राकृत स्वरूप में स्थिति होती है। इस अवस्था से पार होने पर ही यथार्थ उपासना का कार्य हो सकता है।

सूर्य विज्ञान, चन्द्र विज्ञान, नक्षत्र विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, वायु विज्ञान, शब्द विज्ञान आदि भारत के महर्षियों की अथक खोज का परिणाम है। परमहंस विशुद्धानन्द जी महाराज सूर्य विज्ञान के परम ज्ञाता थे। वे सूर्य की रश्मियों से चाहे जिस वस्तु का निर्माण कर सकते थे। जब उनका अंग सिकुड़ता था तो शरीर के रोम कूपों से रत्न कण निकल पड़ते थे। वे योगियों की प्रसिद्ध भूमि ज्ञानगञ्ज से योग एवं विज्ञान में पारंगत होकर आये थे जहाँ योग, विज्ञान आदि का समीचीन शिक्षण मिलता है, पर वहाँ पहुँचना—परम भाग्यशाली को ही सम्भव है। कहते हैं अब तक केवल बारह व्यक्ति वहाँ तक पहुँच पाये हैं

वे भी उन योगियों को कृपा दृष्टि होने पर ही। हजारों-हजारों साल की उम्र के महायोगी सदेह अभी भी वहाँ उपस्थित हैं।

यह है महान भारत भूमि, पवित्र भूमि, जिसका कण-कण महान साधकों की ऊर्जा से ओत-प्रोत है-जिसमें काशी के समान महान स्थान हैं-इस देश के लोग उस स्थान पर मृत्यु की कामना करते हैं-तो क्यों। उसका भी अपना एक महत्व है, उस स्थान पर की मृत्यु क्यों ऊर्ध्वगामी है यह उसका अपना माहात्म्य है। मृत्यु के समय प्रत्येक मनुष्य का लिंग शरीर स्थूल शरीर से अलग होकर अपने कर्म-संस्कारों के अनुसार गति प्राप्त करता है। जब तब स्थूल शरीर से सूक्ष्म (लिंग) शरीर अलग नहीं होता तब तक यह गति आरम्भ नहीं होती। मृत्यु के बाद ही सूक्ष्म शरीर में गति दिखलाई पड़ती है। इस गति की विचित्रता-कर्म वैचित्र्य के अनुसार ही होती है। ऊर्ध्वगति, अधोगति तथा तिर्यगति और प्रत्येक गति के असंख्यों-अवान्तर भेद अन्तर प्रकार के जटिल कर्म-संस्कारों के कारण ही हुआ करते हैं। परन्तु काशी क्षेत्र में जब मृत्यु के समय वह सूक्ष्म शरीर अन्नमय कोष से पृथक होता है तब वह अपने को एक तीव्र ऊर्ध्वगामी आकर्षण के मध्य देखता है और इस आकर्षण के प्रभाव से वह लिंग-देह क्रमशः ऊर्ध्वगामी होता है। जैन सम्प्रदाय के सम्मेद शिखर को भी ऐसा ही स्थान माना जाता है, जहाँ उनके २४ में से २० अवतारों का निर्वाण हुआ है। परन्तु कई लोग काशी के सिवाय अन्यान्य स्थानों में मृत्यु काल में लिंग की ऐसी गति नहीं होती मानते हैं, परन्तु यह सभी मानते हैं कि जिनको सम्यक् बोधि ज्ञान हो गया है, उनकी मृत्यु कहीं भी क्यों न हो, उनका लिंग-शरीर ज्ञान के प्रभाव से स्वभावतः ही ऊर्ध्वगामी होता है।

मृत्यु -लेकिन मृत्यु के बाद फिर क्या होता है? इसाई व मुस्लिम दर्शन मानता है कि मृत्यु के बाद कुछ नहीं है। परन्तु जैन, बौद्ध एवं वैदिक दर्शन कहता है कि मृत्यु के बाद आत्मा अपने कर्म संस्कारों के कारण गति प्राप्त करती है। पुनर्जन्म भी होता है--एक जन्म में मनुष्य देह में है तो दूसरे जन्म में--पशु-पक्षी व वनस्पतियों में भी जन्म धारण कर सकता है। जैन व बौद्ध कहते हैं कि मनुष्य स्वयं के द्वारा अर्जित कर्मों के कारण सुख, दुःख, स्वर्ग व नरक प्राप्त करता है। वैदिक दर्शन कहता है कि एक और सत्ता है जो मनुष्य के द्वारा किये हुए कर्मों के अनुसार उसको गति देती है और वह सत्ता है ईश्वर, लेकिन यह सभी स्वीकार करते हैं कि कर्म तो मनुष्य स्वयं ही करता है। कर्म-फल से कोई भी रक्षा नहीं करता है वह भोग तो जीव आत्मा को

भोगना ही पड़ेगा। जो जीव पाप व अधर्म करके जीवन बिताते हैं और उसी के द्वारा उपार्जित धन से आनन्द करते हैं–उनको पृथ्वी पर शाश्वत शान्ति नहीं मिल सकती। इसीको नरक-यंत्रणा कहते हैं। लोग सोचते हैं कि मृत्यु ही मनुष्य की शान्ति है। ये लोग शोक-ताप पाकर मृत्यु की ही कामना करते हैं। समझते हैं कि मृत्यु के बाद सब दुःख दूर हो जायगा। परन्तु मृत्यु के बाद क्या है ? सो जानते नहीं। तंत्र एक ऐसी धारा है जो अवरोधों का ज्ञान कराती है–कर्म युद्गलों का नाश कर आत्मा को निर्मल बना देती है, और जब आत्मा निर्मल हो जाती है---महामाया के प्रभाव से मुक्त हो जाती है--शोक उनको कष्ट नहीं दे सकता। उनके प्राण में शान्ति भर जाती है। ये आत्मायें मुक्त हो जाती है।

यह है तंत्र का इतिहास। इसके माध्यम से लाखों मनुष्यों ने दुःखों से मुक्ति पाई है। सुख-सुविधायें प्राप्त की हैं और किया है पारलौकिक सुधार। इस कारण भारत के इस विज्ञान को इसके साहित्य को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

—लेखक

तंत्र-प्रयोग

पूर्व सावधानियाँ, विधिक्रम उपक्रम : एक परिचय

△

तंत्र का सम्बन्ध विज्ञान से है। इसमें ऐसी रासायनिक वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है, जिनसे एक चमत्कारपूर्ण स्थिति पैदा की जा सके।

इस विद्या में षट्कर्मों की प्रसिद्धि है। ये हैं शान्ति, वश्य, स्तंभन, उच्चाटन, मारण व विद्वेषण। इन तांत्रिक षट्कर्मों में मोहन व आकर्षण कर्म, वश्य कर्म के ही भाग माने गए हैं।

तांत्रिक कार्यों के लिए, उसके मंत्रों की साधना करनी होती है, अथवा जिन द्रव्यों को लाना होता है या प्रयोग करना होता है उस अनुष्ठान का आरम्भ करने के पहले वार, नक्षत्र, तिथि, माला, आसन, मुद्रा व हवन आदि सभी का अलग-अलग विधान तय है, जैसे : वशीकरण कर्म में दिशा–उत्तर, काल–दिन के बारह बजे से पहले, मुद्रा–सरोज, आसन–स्वस्तिक, माला–मूंगे की, पुष्प–लाल, आदि। इस तरह सभी बातों पर पूरा विचार कर अनुष्ठान आरम्भ किया जाता है। ज्योतिष ग्रन्थों में या मेरे द्वारा लिखित 'मंत्र विद्या' पुस्तक में इस तरह का पूरा विधि-विधान मिल जाएगा। यहां फिर उनको दोहराना पुस्तक का कलेवर बढ़ाना होगा। यहाँ केवल कुछ एक बातों पर विचार करना है, यथा—

हवन कुण्ड

△

१. वश्य, आकर्षण, मारण कर्म–में तिकोना कुण्ड होता है। गहराई एक हाथ, कटणी का विस्तार व ऊँचाई पांच अंगुल बताई गई है। वश्य व आकर्षण कर्म में लकड़ी की लम्बाई बारह अंगुल व मारण कर्म में आठ अंगुल मानी गई है।

२. विद्वेषण व उच्चाटन कर्म में गोल-कुण्ड होता है। गहराई एक हाथ, कटणी का विस्तार व ऊँचाई चार अंगुल बताई गई है। इसमें लकड़ी की लम्बाई आठ अंगुल मानी गई है।

३. शान्तिकर्म, पौष्टिक कर्म व स्तंभन कर्म–में चौकोर कुण्ड होता है। गहराई एक हाथ, कटणी का विस्तार व ऊंचाई तीन अंगुल बताई गई है। इसमें लकड़ी की लम्बाई बारह अंगुल मानी गई है।

हवन सामग्रियाँ

△

शांतिकर्म–इसमें दूध, तिल, घृत, पीपल की लकड़ियाँ व आम की लकड़ी से हवन किया जाता है।

स्तंभन कर्म–बेलपत्र, चमेली के फूल, काले तिल, चन्दन का चूरा, जौ, कमलगट्टा, दही, घृत व अन्न आदि से हवन किया जाता है।

आकर्षण कर्म–चिरौंजी और बेल पत्र का हवन किया जाता है।

वशीकरण कर्म–राई और नमक का हवन किया जाता है।

उच्चाटन कर्म–कौए के पंखों का हवन किया जाता है।

मारण कर्म–लहू में मिले हुए विष का हवन किया जाता है।

अनुष्ठान आरम्भ करने के समय लग्न

△

मेष

धन-धान्य का देने वाला माना गया है।

वृष

साधक का विनाश करने वाला माना गया है।

मिथुन

सन्तति नाश करने वाला माना गया है।

कर्क

सर्व सिद्धि दाता माना गया है।

सिंह

बुद्धि नाशक माना गया है।

कन्या

लक्ष्मी प्रदान करने वाला माना गया है।

तुला

सर्व सिद्धिकर माना गया है।

वृश्चिक
स्वर्ण लाभ देने वाला माना गया है।

धनु
सम्मान नाश करने वाला माना गया है।

मकर
पुण्यप्रद माना गया है।

वृम्भ
धन समृद्धि करने वाला माना गया है।

मीन
दुःखदायी माना गया है।

होम करने वाला स्नान कर, नूतन वस्त्र पहन कर, सकली करण क्रिया से शरीर व मन को शुद्ध कर फिर होम क्रिया प्रारम्भ करे। जल चन्दनादि अष्ट द्रव्यों से मंत्र जपता हुआ अग्नि की पूजा करे। फिर दूध, घृत व गुड़ सहित एक लकड़ी को अपने हाथ से होम कुण्ड में रखे, फिर अग्नि स्थापन कर पहले घृत की आहुतियाँ स्तोत्र, श्लोक पढ़ता हुआ दे। पीछे लकड़ियों को रख कर आहुति द्रव्यों को मिलाकर जाप का मंत्र बोलता हुआ आहुतियाँ दे। लकड़ियों की संख्या १०८ कही गई है।

पिच्छक

△

मंत्र द्वारा झाड़ने की प्रक्रिया अपने यहाँ प्रचलित है। फूंक मारना, पानी के छींटें देना, सरसों व राई उतारना, लाल मिर्च व गुग्गुल की धूप देना व पक्षियों के पंख को झाड़ने में प्रयोग करते हैं।

ब्रह्मयामल तंत्र में पिच्छक बनाने का विधान निम्न रूप से है।

षड़िवं शत्या चतुः षष्ट्या शतेनाष्टोत्तरेणवा।
मयूरोलूक – पक्षाणां तम्मानं ग्रन्थि पिच्छिक॥
ग्रहणे मुक्ति पर्यन्तं रक्त सूत्रेण वेष्टयेत्।
इष्ट मंत्र जपेत् सत्यं सिद्धं रणेऽरिनाशनम्॥

२६, ६४ या १०८ मयूर या उल्लू के पंखों को लेकर उनका गुच्छा तैयार करें और उस पर लाल डोरा (मौली) बांधें। फिर सूर्य अथवा चन्द्र ग्रहण में आरम्भ से अन्त तक इष्ट मंत्र का जप करता रहे और लाल डोरे से गांठ लगाकर पिच्छक तैयार करे। ऐसे सिद्ध पिच्छक के द्वारा अनेक कार्य सिद्ध होते हैं। देवता के स्थान पर ऐसे पिच्छाक रहते हैं। जैन दिगम्बर साधुओं का मयूर पिच्छक प्रसिद्ध है।

अनेक वस्तुएँ ऐसी हैं जिनका यहाँ वर्णन किया जा सकता है किन्तु विस्तार भय से संक्षिप्त निर्देशन ही किया गया है।

तंत्र दिशा की ओर अग्रसर होने वाले प्रत्येक साधक ऐसे ही तांत्रिक कर्म करें जिनसे रोग-शोक से ग्रस्त व्यक्ति सुखी हो सके--लोक—कल्याण की ही भावना होनी चाहिए। शुद्ध सेवा भावना से किये कार्य में प्रकृति भी सफलता प्रदान करने में सहयोग करती है।

मूल (जड़) ग्रहण विधि

△

तांत्रिक प्रयोगों में जड़, पत्ते, फूल, फल व बन्दा आदि काम में लाये जाते हैं। जहाँ तांत्रिक प्रयोगों के लिए वनस्पतियों को लाना है, वहाँ सीधे यों ही उखाड़ कर लाने से पूरी तरह बात नहीं बनती। नियत समय पर विधि पूर्वक लायी गई वनस्पति ही शक्ति सम्पन्न होती है।

सफल प्रयोग के लिए निम्नरूप से वनस्पति को लाना चाहिए। जिस दिन वृक्ष की मूल लानी है उसके पहले दिन एक समय भोजन करें, स्त्री प्रसंग न करें। उस दिन वृक्ष को न्योता देने के लिए शुद्ध, पवित्र होकर निमन्त्रण दे आवें। भक्तिभाव पूर्वक उस वृक्ष के पास उत्तर या पूर्व की ओर मुंह करके बैठ जाएं। पहले अपने इष्ट देव को प्रणाम करे, फिर वृक्ष को प्रणाम कर "मम कार्य सिद्धि कुरू कुरू स्वाहा" इस मंत्र का २१ बार जप करें। चावल चढ़ाएं, मोली बांध दें, तिलक कर दें तथा कहें कि मैं कार्य के लिए कल प्रातः आपको लेने आऊँगा, आप अपनी पूर्ण शक्ति सहित तैयार रहें और मेरा यह निमंत्रण स्वीकार करें।

दूसरे दिन प्रातःकाल सूर्योदय से पहले स्नानादि से निवृत्त हो अपने इष्ट की पूजा करें फिर उस आमंत्रित वृक्ष के पास जाकर वृक्ष की जड़ में उच्चारण करें–

वेतालश्च पिशाचाश्च राक्षसाश्च सरीसृपाः ।
अपसर्पन्तु वे सर्वे वृक्षादस्माच्छिवाज्ञया ॥

यह मंत्र पढ़कर अभिमंत्रित करें । फिर हाथ जोड़कर कहें :—

नमस्ते मृत सम्भूते बलवीर्य-विवर्धिनी ।
बलमायुश्च मेदेहिपापान मां त्राहिदूरतः ॥

इस मंत्र से नमस्कार करें ।

फिर यह मंत्र बोलते हुआ धरती खोदें :

येन त्वां खनते ब्रह्मा येन त्वां खनते भृगुः ।
येन हीन्द्रोऽथवरुणो येन त्वां पचक्रमे ॥
तेनांह खनयिष्यामि मन्त्रपूतेन पाणिना ।
मा पाते मा निपतिते ते तेजोह्यन्यथा भवेत् ॥
अत्रेव तिष्ठ कल्याणि ! मम कार्यकरी भव ।
मम कार्य कृते सिद्धे ! ततः स्वर्गगमिष्यसि ॥

इस मन्त्र से "ॐ ह्रीं चण्डे हुँ फट् स्वाहा" जड़ उखाड़ लेवें । जड़ को काटते समय "ॐ ह्रीं क्षौं फट् स्वाहा" इस मन्त्र का जप करें । जिन वृक्षों का बन्दा लाना हो तो बन्दा लेते समय कहें—

"ॐ वनदण्डे महादण्डाय स्वाहा तथा शुद्री कपाल मालिनी स्वाहा" इस मंत्र को सात बार जप करके बन्दा ग्रहण करे ।

फिर घर आकर उस दिन उसको रखना है तो शुद्ध कपड़े में लपेट कर ऊँचे स्थान पर रख दें जहाँ किसी का हाथ नहीं लगे । फिर आवश्यकता के समय पंचामृत से स्नान कराएं और गाय के घृत से धूप देकर रेशमी वस्त्र या लाल-काले डोरे से लपेट कर धारण करें ।

इस प्रकार धारण करने से इच्छित कार्य में अवश्य सफलता प्राप्त होती है ।

वृक्ष के पंचांग आदि कब लेने चाहिए इसके लिए तन्त्र शास्त्र बतलाता है कि अपने समय और वर्षा में वृक्ष बलवान रहा करते हैं । जड़ सूख जाने पर आधा बल रहता है । ग्रीष्म, वर्षा व शरद ऋतु में सम्पूर्णता रहा करती है । फल व बीज जब आते हैं तब लेने चाहिए । वन के वृक्ष रात में और जल के वृक्ष दिन में बली होते हैं । स्वाभाविक है, बलवान वृक्ष ही शक्तिशाली व उपयोगी होता है ।

दीपनादि प्रकार-यंत्र

△

कार्य नाम	वशीकरण	शान्ति	स्तम्भन	मारण	उच्चाटन	विद्वेषण	आकर्षण	पौष्टिक
समय	पूर्वाह्न	अर्धरात्रि	पूर्वाह्न	सायंकाल	अपराह्न	मध्याह्न	पूर्वाह्न	प्रभात
ऋतु	वसन्त	शरद्	वसन्त	शिशिर	वर्षा	ग्रीष्म	वसन्त	हेमन्त
अंगुली	अनामिका	मध्यमा	तर्जनी	तर्जनी	तर्जनी	तर्जनी	कनिष्ठा	मध्यमा
मुद्रा	सरोजमुद्रा	ज्ञानमुद्रा	शंखमुद्रा	वज्रासनमुद्रा	पल्लवमुद्रा	पल्लवमुद्रा	अंकुशमुद्रा	ज्ञानमुद्रा
हस्त	वामहस्त	दक्षिण	दक्षिण	दक्षिण	दक्षिण	दक्षिण	दक्षिण	दक्षिण
आसन	स्वस्तिकासन	पद्मासन	वज्रासन	भद्रासन	कुक्कुटासन	कुक्कुटासन	दंडासन	पद्मासन
ध्यानवर्ण	रक्त	चन्द्रकान्त	पीत	कृष्ण	धूम्र	धूम्र	अरुण	चन्द्रकान्त
तत्वध्यान	जल	जल	पृथ्वी	व्योम	वायु	वायु	अग्नि	पृथ्वी
माला	प्रवाल	स्फटिक	सुवर्ण	पुत्रजीवक	पुत्रजीवक	पुत्रजीवक	प्रवाल	मुक्ता
पल्लव	वषट्	स्वाहा	घे घे	घे घे	फट्	हुं	वौषट	स्वाहा
जपदिशा	उत्तर	पश्चिम	पूर्व	ईशान	वायव्य	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य
पुष्प	लाल	सफेद	पीत	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	लाल	सफेद

ऋतुओं के नाम

△

तन्त्र शास्त्र के अनुसार दिन रात में भी छहों ऋतु भुक्त होती हैं, जैसेः– उषाकाल पौ फटने तक हेमन्त, दोपहर पहले वसन्त, मध्याह्न में ग्रीष्म, तीसरे पहर में वर्षा, सूर्यास्त से पहले व बाद के समय में शिशिर और रात में शरद ऋतु मानी जाती है।

दिशा-चक्र

△

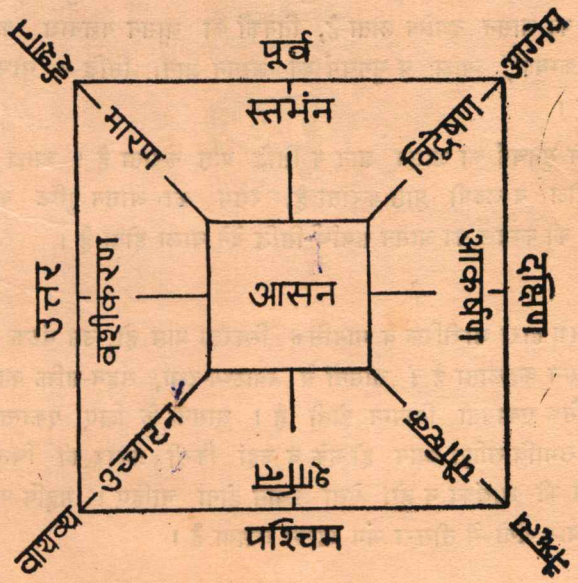

किसी भी मन्त्र की साधना के समय किस ओर मुंहकर बैठना है, यह उपरोक्त दिशाचक्र से ध्यान कर बैठना चाहिए।

आसन

पत्थर या शिला पर बिना कोई आसन बिछाये जप कभी नही करना चाहिए। सबसे अच्छा यह है कि काठ के पट्टे पर ऊनी वस्त्र, कम्बल या मृगचर्म बिछाकर उस पर बैठ कर जप करना चाहिए। यदि काठ की पट्टी उपलब्ध न हो तो ऊनी वस्त्र या मृगचर्म बिछा कर उस पर बैठकर जप करना चाहिए।

मंत्र-विशारदों की मान्यता है कि-बांस का आसन व्याधि व दरिद्रता देता है, पत्थर का आसन बीमारी लाता है, धरती का आसन दुःखानुभव कराता है, काष्ठ का आसन दुर्भाग्य लाता है, तिनकों का आसन यशनाश कराता है कपास, कम्बल, व्याघ्र व मृगचर्म का आसन ज्ञान, सिद्धि व सौभाग्य प्राप्त कराता है।

काले मृगचर्म का आसन ज्ञान व सिद्धि प्राप्त कराता है। व्याघ्र चर्म का आसन मोक्ष व लक्ष्मी प्राप्त कराता है, रेशम का आसन पुष्टि कराता है, कई रंगो की कम्बल का आसन सर्वार्थ-सिद्धि देने वाला होता है।

विशेष

जिसके द्वारा शारीरिक व मानसिक स्थिरता प्राप्त हो, उस बैठक में स्थिर होना आसन कहलाता है। आसनों से स्वास्थ्य-रक्षा, सहन-शक्ति का विकास व मानसिक एकाग्रता निष्पन्न होती है। आसनों के लिए एकान्त, अनुकूल संयोग, समाधि-सहित ध्यान हो सके व जहां किसी प्रकार की चिन्ता व भय प्राप्त होने की आशंका न हो, ऐसा स्थान होना चाहिए। महर्षि पतंजलि ने योग के आठ अंगो में तीसरा अंग आसन बताया है।

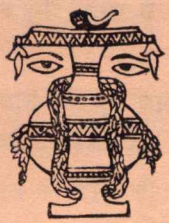

शान्ति-तंत्र

जिसके द्वारा रोग, ग्रह पीड़ा,
उपसर्ग शान्ति एवं भय-शमन हो,
उसे शान्ति कर्म कहते हैं।

ज्वर-नाशक तंत्र

△

पाठकों से निवेदन है कि ज्वर नाशक प्रयोग में जितनी वनस्पतियों के मूल का प्रयोग दिया है–उनके मूल को रवि पुष्य नक्षत्र में–मूल लाने की विधि के अनुसार ही लाना चाहिए।

१. एकांतर ज्वर: श्वेतार्क मूल पुरुष की दांई व स्त्री की बांई भुजा पर बांधने से एकांतर ज्वर दूर होता है।

२. ,, ,, मयूर शिखा के पौधे को लाकर लाल डोरे में लपेटकर कमर में बांधने से एकान्तर ज्वर दूर होता है।

३. तिजारी ज्वर: सांप की केंचुली कमर में बांध देने से तिजारी ज्वर दूर होता है।

४. ,, ,, श्वेत अपामार्ग की मूल लाल कपड़े से हाथ में बांध देने से तिजारी ज्वर दूर होता है।

५. ,, ,, नील की मूल को रोगी की लम्बाई के बराबर लाल डोरा लेकर मूल पर लपेटकर रोगी की कमर व कान में बांधने से तिजारी ज्वर दूर होता है।

६. ,, ,, छोटी दुधी की मूल पुरुष दांई व स्त्री की बांई भुजा पर बांधे तो तिजारी ज्वर दूर होता है।

७. चौथिया ज्वर: भांगरे की मूल सूत में लपेटकर सिर में बांधने से चौथिया ज्वर दूर होता है।

८. ,, ,, रविवार के दिन गिरगिट की पूंछ भुजा या शिखा में बांधने से चौथिया ज्वर दूर होता है।

९. रात्रि ज्वर: मकोय की मूल कान में बांधने से रात्रि ज्वर दूर होता है।

१०. ,, ,, भांगरे की मूल कान में बांधने से रात्रि ज्वर दूर होता है।

११. ,, ,, रात–रतुवा पत्थर की अंगूठी बनाकर या ऐसे ही बांध दे तो रात्रि ज्वर दूर होता है।

१२. शीत ज्वर: शनिवार के दिन बबुरा की मूल सफेद सूत में लपेटकर भुजा पर बांध देने से शीत ज्वर दूर होता है।

१३. शीत ज्वर: श्वेत कनेर की मूल दांई भुजा में बांधने से शीत ज्वर दूर होता है।

१४. साधारण ज्वर: सोंठ को गले में लटकाने से साधारण ज्वर दूर होता है।

१५. ,, ,, पीपल के छिलके की दातौन करने से साधारण ज्वर दूर होता है।

१६. महा ज्वर: नारियल की मूल गले में बांधने से महाज्वर दूर होता है।

१७. ,, ,, कटेरी (वृहस्पति) की मूल मस्तक में बांधने से महा ज्वर दूर होता है।

१८. विषम ज्वर: श्वेत कनेर की मूल दांए कान पर बांधने से विषम ज्वर दूर होता है।

१९. ,, ,, चौलाई की मूल सिर में बांधने से विषम ज्वर दूर हो जाता है।

२०. ,, ,, अपामार्ग मूल को डोरे के सात आंटे लगाकर हाथ में बांधने से विषम ज्वर दूर होता है।

२१. सन्निपात ज्वर: अश्विनी नक्षत्र में निर्गुण्डी की छाल तथा फूलों की गोली बनाकर बकरे के बालों के साथ भुजा पर बांधने से सन्निपात ज्वर दूर होता है।

२२. मलेरिया ज्वर: मंगलवार के दिन छिपकली की पूंछ काले कपड़े में लपेटकर हाथ में बांधने से मलेरिया ज्वर दूर होता है।

२३. भूत ज्वर : हुल–हुल की मूल कान में डालने से भूत ज्वर उतर जाता है।

२४. ,, ,, अपामार्ग की मूल हाथ में बांधने से भूत ज्वर उतर जाता है।

२५. ,, ,, लाल पलाश की मूल हाथ में बांधने से भूत ज्वर व अन्य ज्वर भी दूर होते हैं।

२६. सर्व ज्वर : निर्गुंडी तथा सहदेई की मूल कमर में बांधने से सभी प्रकार का ज्वर दूर होता है।

२७. ,, ,, मूसाकानी को मूल हाथ में बांधने से सभी प्रकार का ज्वर दूर होता है।

२८. सर्व ज्वर : श्वेतार्क को मूल कान में बांधने से सभी प्रकार का ज्वर दूर होता है।

२९. ,, ,, सहदेवी को जटा की तरह मस्तक पर बांधने से ज्वर दूर होता है।

३०. ,, ,, पीपल के पत्ते पर केशर से नमस्कार महामंत्र लिखकर हाथ में बांध देने से सर्व प्रकार का पाली का ज्वर दूर होता है।

३१. शीतपारी ज्वर : मंगलवार या रविवार के दिन सात गांठ लहसुन को पीसकर काले कपड़े पर रखकर रोगी के पांव के अंगूठे से बांध दें। तीन घंटे बीत जाने पर उस अंगूठे से खोल कर चौराहे पर फेंक देने से शीत ज्वर की पारी रुक जाती है।

३२. सर्व पारी ज्वर आदि : अरलू की लकड़ी का प्याला बनाकर उस प्याले में रात भर पानी भरा रखकर सवेरे उस पानी को पीने से एकांतर, तिजारी, चौथीया व मलेरिया आदि ज्वर दूर होते हैं। अरलू को अरडूसा भी कहते हैं।

शिशु कष्ट निवारण तंत्र

△

छोटे बच्चों के शीघ्र नजर लग जाती है। दांत तकलीफ से आते हैं, और भी कई प्रकार के रोग हो जाते हैं। तंत्र में इस पर जो प्रयोग बतलाये गए हैं वे निम्न रूप से हैं :—

१. नजर न लगे : श्वेतार्क मूल का यंत्र बनाकर गले में बांध दें तो नजर नहीं लगेगी।

२. ,, ,, पपीते का यंत्र बनाकर गले में बाँध देने से नजर नहीं लगेगी।

३. दांत पर : सरेस के बीजों की माला बनाकर गले में डाल दें तो दांत आसानी से आएंगे।

४. दांत पर : छछुन्दर का होंठ काटकर गले में लटका देने से दांत आसानी से आते हैं।

५. ,, ,, संभालू की मूल गले में बांधने से दांत आसानी से आते हैं।

६. ,, ,, सीपियों की माला गले में पहना देने से दांत आसानी से आते हैं।

७. ,, ,, हाथ व पांव में लोहे या तांबे का कड़ा पहना देने से दांत आसानी से आते हैं और नजर भी नहीं लगती।

८. पीले दस्त पर : पत्थर चूर की मूल को लाल डोरे में या तांबे के यंत्र में गले में बांधने से हरे-पीले दस्त का रोग दूर होता है।

९. अठरा रोग : चन्द्र ग्रहण को कंडयारी की मूल चांदी के यंत्र में डालकर गले में बांधने से अठरा रोग का भय नहीं रहता।

१०. हिचकी : एक अरेठा गले में बांध देने से हिचकी रोग दूर हो जायेगा।

११. अपस्मार : भेड़िये के दांत को गले में बांध देने से अपस्मार रोग दूर होता है।

१२. ,, : चूहे के होंठ को यंत्र में मढ़वाकर गले में बाँधने से अपस्मार रोग दूर होता है।

१३. मृगी : अकरकरा को सूत में बांधकर गले में लटका देने से मृगी का रोग दूर होता है।

१४. आमाशय : काले रंग के कुत्ते का एक बाल व अकरकरा गले में बांध देने से आमाशय का रोग दूर होता है।

१५. खांसी : कपड़े की थैली में कौए की विष्ठा बांधकर रविवार को गले में लटकाने से खांसी में लाभ होता है। अन्य दिन लटकाई जायगी तो बालक का कौआ उठ जायगा।

१६. फोता छिटकना: पूर्व दिशा की संभालू की मूल गले में बांधने से फोतों का छिटकना दूर होता है व दांत भी आसानी से आते हैं।

१७. निद्रा भय : मूंगे का यंत्र बनाकर गले में लटका दें तो निद्रा के समय भय नहीं लगेगा।

१८. बुरे स्वप्न :- फिटकिरी का एक टुकड़ा बच्चे के सिरहाने रख दें तो रात की निद्रा में बुरे स्वप्न से चौंकेगा नहीं।

१९. रोने पर : खरीया मिट्टी का यंत्र बनाकर गले में लटका दें तो बच्चे का अधिक रोना बन्द हो जायेगा।

२०. ,, ,, : रविवार या मंगलवार को नीलकंठ का पंख लाकर चारपाई में खोंस दिया जाय तो अधिक रोना बन्द हो जायगा।

२१. ,, ,, : जो बच्चा रात दिन रोता है उसकी एक चादर के किनारे "बाण कहिनो आवियो, किण दिशी किध्या पिआण, भैरव मुन्दे मुन्दिया उग्यो भाण बिहाण" इस मंत्र को लिखकर बच्चे को ओढ़ा दें तो रोता बच्चा चुप हो जायगा।

प्रसूति कष्ट निवारण तंत्र

△

प्रसूति के समय स्त्रियों को अत्यन्त कष्ट होता है। समय पर शल्य क्रिया द्वारा सन्तान उत्पत्ति होती है। तंत्र में भी कई प्रयोग प्रसूति कष्ट निवारणके मिलते हैं जो निम्न रूप से हैं:-

१. अरड़सा की मूल को कच्चे सूत की सात तारों से बांधकर स्त्री की कमर में बांध दे तो सुखपूर्वक प्रसव होता है।

२. श्वेत चोटले की मूल उत्तर दिशा की ओर मुंह कर लावे और स्त्री की कमर में बांध दे तो सुख पूर्वक प्रसव होता है।

३. प्रसूति के समय चुम्बक पत्थर स्त्री के हाथ में दें तो सुख पूर्वक प्रसव होता है।

४. कंडयारी की मूल का प्रसूति के समय स्त्री की नाभि पर लेप करे तो सुख पूर्वक प्रसव होता है।

५. लाल कपड़े में नमक बांधकर स्त्री की बाई तरफ बांधे तो सुख पूर्वक प्रसव होता है।

६. नर व मादा चोटले की मूल प्रसूति के समय स्त्री की कमर में बांध दे तो सुख पूर्वक प्रसव होता है।

७. संभालू की मूल प्रसूति के समय स्त्री की कमर में बांध दे तो सुख पूर्वक प्रसव होता है।

८. ऊँट कटारा की तीन अंगुल की मूल प्रसूति के समय स्त्री के सर के बालों में रख दे तो सुख पूर्वक प्रसव होता है।

९. श्वेत सोंठ की मूल को प्रसूति के समय गुप्तांग में रखे तो सुखपूर्वक सन्तान होती है।

१०. अपामार्ग की मूल चार अंगुल की प्रसूति के समय गुप्तांग में रखे तो सुख पूर्वक सन्तान होती है।

११. पुनर्नवा की मूल का चूर्ण गुप्तांग में रख देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।

१२. नीम की मूल स्त्री की कमर में बांध दे तो सुखपूर्वक प्रसव होता है।

१३. केले की मूल या हुलहुल की मूल स्त्री के हाथ में बांध देने से सुख पूर्वक प्रसव होता हैं।

१४. कलिहारी की मूल को रेशम के धागे में लपेटकर स्त्री के बायें हाथ में बांध देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।

१५. चकमक पत्थर कपड़े में बांध कर स्त्री की रान में बांध देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।

१६. बांस की मूल स्त्री के कमर में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

१७. स्त्री के नितम्बों पर सर्प की केंचुली बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

१८. सरपंखा की मूल स्त्री कमर में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

१९. बारहसिंगे के सींग को स्त्री के स्तन के समीप बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

२०. गुंजा की मूल के सात टुकड़े व सात पत्ते स्त्री की कमर में बांध देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।

२१. धतूरे की मूल स्त्री की कमर में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है, अधूरा गर्भ नहीं गिरता।

२२. जीवित सर्प के दांत को स्त्री के गले में लटका देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

२३. अरडूसा को पीसकर नाभि में लेप करने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

२४. पुरुष के सिर के बालों की गुण्डी बनाकर उसे अग्नि पर रखकर धूनी देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

नोटः-

प्रत्येक मूल विधि पूर्वक रवि पुष्य नक्षत्र में ही लानी चाहिए।

सन्तान होने के बाद-मूल व लेप आदि को अपने स्थान से तुरन्त हटा देना, चाहिए नहीं तो कभी-कभी गर्भाशय भी बाहर आ जाता है।

रोग-निवारण-तंत्र

△

संग्रहणी पर तंत्र

गेहुंअन सर्प की केंचुली को कपड़े की थैली में सीकर पेड़ू के ऊपर बांधने से संग्रहणी के रोग में लाभ होता है।

दस्तों पर तंत्र

सहदेई की मूल के सात टुकड़े करके लाल डोरे में लपेटकर कमर में बांधने से अतिसार दूर होता है।

पेट दर्द पर तंत्र

कपूर को नमस्कार महामंत्र से अभिमंत्रित कर खिला देने से पेट दर्द शान्त हो जाता है।

धरण पर तंत्र

१. लाजवन्ती की मूल शनिवार को लाकर छल्ला बनाकर कमर में बांधे तो धरण ठिकाने आये।

२. भिंडी की मूल धरण पर थोड़े समय तक रखने से धरण अपने स्थान पर आ जाती है।

३. शनिवार की सुबह शंखाहुली को हल्दी चावल से न्यौत आये, फिर जाकर सात प्रदक्षिणा देकर सूर्य की ओर मुंह कर दूध डाले, फिर मूल खोद कर लाए। रोगी की कमर में बांध देने से धरण अपने स्थान पर आ जाती है।

वायु गोला पर तंत्र

नाव से एक कांटा लाए, उसमें घोड़े की नाल मिलाकर एक कड़ा बनाये। धूप दीप कर कड़ा हाथ में पहनने से वायु गोला का रोग दूर होता है।

पथरी रोग पर तंत्र

दायें हाथ की मध्यमा अंगुली में लोहे की अंगूठी धारण करने से पथरी रोग का कष्ट दूर होता है।

आंधा शीशी रोग पर तंत्र

१. आंधा शीशी दर्द का रोगी प्रातःकाल दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके अपने हाथ में गुड़ की डली लेकर उसे दांत से काटकर चौराहे पर फेंक दे तो आंधा शीशी का दर्द दूर हो जाता है।

२. श्वेत गुंजा मूल घिसकर सूंघे, या कान में बांध दे तो आंधा शीशी का दर्द दूर होता है।

३. रविवार या मंगल के दिन "अधकपारी" नामक लकड़ी को डोरे में गूंथकर बायें कान में पहनने से आंधा शीशी का दर्द दूर होता है। ठीक होने पर चौराहे पर फेंक दें।

सिरशूल पर तंत्र

१. काक जंघा की मूल को मस्तक पर रखकर सोने से मस्तक की व्यथा दूर हो जाती है।

२. द्रोणपुष्पी की मूल को मस्तक पर बांधने से मस्तक रोग दूर होता है।

३. मजीठ की गांठ मस्तक पर बांधने से सिर शूल दूर होता है।

दांत पीड़ा पर तंत्र

१. श्वेत गुन्जा मूल कान में बांधने से दांत पोड़ा दूर होती है।

२. सेंहुड़ की मूल दांतों के नीचे दबाने से सब कीड़े निकल जाते हैं।

३. छोटे बालक के गिरे हुए दांत को ताबीज में मढ़वाकर पास में रखने से दांत का दर्द दूर होता है।

खांसी पर तंत्र

लज्जालू की मूल गले में बाँधने से खांसी दूर होती है।

हिचकी पर तंत्र

१. हिचकी के रोगी के मुँह पर अचानक ठंडे पानी के छींटे मारने से हिचकी बन्द हो जाती है।

२. हिचकी के रोगी को किसी बात से अचानक भयभीत कर देने से हिचकी बन्द हो जाती है।

निद्रा पर तंत्र

१. केंचुवे की मूल पीसकर जिसके मस्तक पर डाल दी जाय उसको निद्रा बहुत आएगी।

२. श्वेतगुन्जा का मूल मस्तक के नीचे रखे तो निद्रा बहुत आएगी।

मोटापा दूर तन्त्र

रांगे की अंगूठी मध्यमा अंगुली में पहनने से मोटापा दूर होता है।

फील पांव रोग पर तंत्र

उत्तर दिशा के आक की मूल रविवार को लाएं। लाल डोरे में लपेट कर फील पांव पर बांध दें तो रोग दूर हो जाता है।

तिल्ली रोग पर तंत्र

१. प्याज की माला कण्ठ में पहनने से तिल्ली का रोग शान्त होता है।

२. नागफनी की मूल की माला पहनने से तिल्ली का रोग शीघ्र दूर होता है।

बवासीर पर तंत्र

१. काले धतूरे की मूल लगभग छह मासा लेकर कमर में बांधे तो बवासीर मिटे।

२. सर्प की केंचुल मस्से के नीचे रखने से बवासीर का कष्ट दूर होता है।

३. गेंडे के खाल की अँगूठी बनाकर पहनने से बवासीर रोग शान्त होता है।

४. कार्तिक मास में जंगली सूरन खोद लें उसकी चकतियाँ बनाकर सुखा लें। आवश्यकता पड़ने पर काले डोरे में गूँथ कर कमर में बांधें तो मस्से धीरे-धीरे सूख जाते हैं।

स्वप्न दोष पर तंत्र

१. अपनी माँ का नाम एक कागज पर लिखकर मस्तक के नीचे रखकर सो जाएं तो स्वप्न दोष नहीं होगा।

२. काले धतूरे की मूल लगभग छह मासा का टुकड़ा कमर में बांध कर रखने से स्वप्न दोष की बीमारी मिटती है।

३. "मो नो रोती ताँ काँ ली ओं गो मिली" यह मंत्र एक कागज पर लिखकर कमर में बांधकर तीन बार बोल कर सो जाएं तो स्वप्न-दोष नहीं होगा।

मृगी रोग पर तंत्र

१. रेशम के धागे में २१ जायफल गूंथकर भुजा अथवा कंठ में धारण करने से मृगी रोग जल्दी दूर हो जाता है।

२. भेड़िया की विष्ठा और हड्डी पास में रखने से मृगी नहीं आती।

३. सूअर के नाखून की अंगूठी बनाकर मंगलवार के दिन दाहिने हांथ की छोटी अंगुली में पहनने से मृगी रोग शान्त हो जाता है।

४. गाय के बांये सींग की अंगूठी बनाकर मंगलवार के दिन दाहिने हांथ की छोटी अंगुली में पहनने से मृगी रोग शान्त हो जाता है।

५. असली हींग करीब १० ग्राम की डली एक कपड़े में सीकर गले में पहनने से मृगी रोग शान्त होता है।

नकसीर पर तंत्र

दायें नाक में खून बहे तो बायें पैर की व बायें नाक में खून बहे तो दायें, पैर की छोटी अंगुली में कसकर एक डोरी बांध दें तो खून बहना रुक जायेगा।

पागलपन पर तंत्र

बिच्छू का डंक, कौवे का नाखून और कुत्ते का नाखून इन सबको ऊँट के चर्म में बाँधकर इसका यंत्र बनाकर पागल के गले में डालने से उसका पागलपन दूर होता है।

स्मरण शक्ति पर तंत्र

सूर्य या चन्द्रग्रहण के दिन स्नान कर पूर्व दिशा की ओर से सरपंखा या लोध की मूल लाए। उसका यंत्र बनाकर गले में डालने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।

मानसिक शक्ति पर तंत्र

रक्त वर्ण के अकीक का नगीना पास में रखने से मानसिक शक्ति बढ़ती है।

चित्त भ्रम पर तंत्र

संगेयशब के नगीने का यंत्र बनाकर गले में पहने तो हौल उठना यानि चित्त भ्रम दूर होता है।

ज्ञान बुद्धि पर तंत्र

१. कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुर्दशी को संखाहुली न्यौत आवे। जब हस्त नक्षत्र आए तब पूरा पंचांग उखाड़ कर लाए। उसको कूट पीसकर गोली बना ले। श्रावण मास में उस गोली को जो मनुष्य खायेगा उसकी बुद्धि बहुत बढ़ेगी।

२. माघ कृष्ण अष्टमी को जब पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हो उस दिन अर्ध रात्रि को जिह्वा पर केसर से "ॐ ह्रीं" लिखे तो बुद्धि बहुत बढ़ेगी।

बुरे स्वप्न पर तंत्र

जिस बच्चे को भयानक स्वप्न आते हों, उसके सिरहाने फिटकरी रख देने से बुरे स्वप्न आने बन्द हो जायेंगे।

हिस्टीरिया रोग पर तंत्र

भेड़ की जूं को कम्बल के रोएं में लपेटकर तांबे के ताबीज में डालकर पहनने से हिस्टीरिया दूर होता है।

प्रदर रोग पर तंत्र

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में उत्तर दिशा की ओर वाले स्थान से "व्याघ्र नखी" की मूल लाए। इसे स्त्री की कमर में बांध देने से प्रदर रोग दूर हो जाता है।

मासिक व पेड़ू रोग पर तंत्र

मासिक की खराबी के कारण स्त्री के पेड़ू में दर्द रहता हो तो उसे रात्रि में कमर में मूंज की रस्सी बांधकर सो जाना चाहिए तथा प्रातः काल उसे खोलकर चौराहे पर फेंक देनी चाहिए। इससे पेड़ू का दर्द व मासिक की खराबी दूर होती है।

रजस्वला होने का तंत्र

१. रविवार के दिन कौए की चोंच लाए। धूप देकर गुप्तांग में रखे तो खून चालू हो, फिर धोकर मुंह में रखे तो खून बन्द हो।

२. ज्येष्ठा नक्षत्र में अरडूसे की मूल लाकर उसे धूप देकर स्त्री की कमर में बांध देने से स्त्री तीस दिन के भीतर रजस्वला हो जाती है।

३. करियारी कन्द, अपामार्ग और इन्द्रायन की मूल का चूर्ण कर पोटली बनाकर गुप्तांग में रखने से स्त्री रजस्वला हो जाती है।

४. रविवार के दिन कौए की चोंच लाकर धूनी दे और उससे पृथ्वी पर एक लकीर खींच दे। जो स्त्री उस लकीर को लांघ जाएगी तो उसका आजार बन्द टूट जाएगा। उसी चोंच को धोकर उसका पानी पिलाने से रक्त स्राव बन्द हो जाएगा।

गर्भपात व स्राव पर तंत्र

१. रवि पुष्य नक्षत्र में धतूरे का मूल लाए, कुंवारी कन्या के हाथ से कते सूत से गले में बाँधे तो गर्भपात हो जाता है।

२. तीन धारी डण्डा, थूहर के दूध को ललाट, कण्ठ व मस्तक में लगाने से गर्भपात हो जाता है।

३. ऊँट कटारा की मूल को पानी में पीसकर पेट पर लेप करने से गर्भपात हो जाता है।

४. घोड़े की लीद का गुप्तांग में धुंआ देने से गर्भपात हो जाता है।

५. कड़वी तुम्बी को बीज सहित पानी में पीसकर गुप्तांग में लेप करने से गर्भस्राव हो जाता है।

६. एरण्ड के पत्ते का डण्ठल बारह अंगुल की नाप से लेकर तने वाला भाग गुप्तांग में रखने से गर्भस्राव हो जाता है।

पुत्र होने का तन्त्र

१. कबूतर की बींठ व सुहागा समभाग लेकर, पीसकर शिश्न पर लेपकर सहवास करे तो पुत्र हो।

२. रविवार के दिन भगवान पार्श्वनाथ के मन्दिर में पति-पत्नी दोनों जाएं। भगवान की मूर्ति के पीछे की तरफ जाकर उल्टा सान्थिया दीवाल

पर केसर से लिखे, किसी से बोले नहीं। नियमपूर्वक खड़े होकर लिखे, फिर भगवान की मूर्ति के सम्मुख आकर नमस्कार कर, मौन घर आ जाए तो उसके पुत्र होगा।

पुत्र से पुत्री होने का तन्त्र

१. नींबू वृक्ष की मूल चावल के पानी से औरत को पिलावे तो जिसके पुत्र ही पुत्र होते हों, उसके पुत्री होगी।

भूख व प्यास न लगने का तन्त्र

१. आंवला, अपामार्ग, कमल का बीज और तुलसी की मूल इन सबको एक साथ पीसकर गोली बना लें। प्रतिदिन प्रातः एक गोली खाकर ऊपर से गाय का दूध पीने से भूख प्यास दूर हो जाती है।

२. कमल के बीज और चावल को बकरी के दूध में पीसकर घृत मिलाकर फिर खीर बनाकर खाएं तो चार दिन तक भूख नहीं लगेगी।

३. गिरगिट की आँत व करंज के बीज को पीसकर गोली बनावे। इस गोली को त्रिलोह के ताबीज में बन्द करके मुँह में रखने से भूख प्यास नहीं लगेगी।

४. बकरी के दूध में ताल मखाने के बीज, भांगरे के बीज और पान की मूल मिलाकर, खीर बनाकर प्रातः काल खाने से कई दिन तक भूख प्यास नहीं लगेगी।

५. भैंस के दूध तथा घृत में अपामार्ग के बीजों को पकाकर, खीर बनाकर खाने से महीने भर तक भूख नहीं लगेगी।

६. उमरी के पके हुए फल को तेल में मिलाकर, अंकोल की छाल अथवा फल के साथ खाने से महीने भर तक भूख नहीं लगेगी।

७ पुठकन्डा को चावलों की खोर में पकाकर खाने से कई दिन भूख नहीं लगती।

८. रविवार के दिन अग्नि पर हांड़ी चढ़ाकर गाय के दूध में लट जीरा के चावल पकाकर खीर बनाए। फिर उसमें अपामार्ग डालकर गुग्गुल की धूनी दें, फिर चना और गुड़ को उसके साथ मिलाकर उस हांड़ी के मुँह को इस तरह बन्द करे कि उसके भीतर पानी न जा सके। फिर संकल्प करके उस हाड़ी को बहते हुए पानी के भीतर गढ़ा खोदकर

गाड़ दे। जितने दिन की अवधि का संकल्प होगा, उतने दिन तक भूख नहीं लगेगी। अवधि बीत जाने पर उक्त हांड़ी को निकालकर उसमें खीर खाये तो फिर भूख नहीं लगेगी।

भोजन झट्ट तन्त्र

१. गिरगिट का होठ लाकर शिखा में बाँधकर भोजन करें तो बीस गुना अधिक खायेंगे।

२. बहेड़े के वृक्ष को शनिवार की संन्ध्या को न्यौते। रविवार सुबह उसके पत्ते लाकर पाँव के नीचे दबाकर भोजन करे तो बीस-पच्चीस आदमियों का भोजन अकेला कर ले या दाहिने हाथ में बाँधकर भोजन करे तो बीस गुना अधिक खाये।

३. बहेड़ा का पत्ता व सफेद कुत्ते का दाँत, इन दोनों को कमर में बाँधकर भोजन करे तो बहुत अधिक खाये।

४. शिरष वृक्ष को सन्ध्या को न्यौते, दूसरे दिन प्रात: काल उसके फूल लाए, माला बनाकर मस्तक पर धारण कर भोजन करे तो बहुत अधिक खाए।

५. भूरे कुत्ते के दाँत व किसी वृक्ष का पत्ता जो ऊपर की ओर जाता हो, उसको लेकर कमर में बांधकर भोजन करे तो बहुत खाना खाए।

६. सूखे पेड़ को शाम को न्यौत कर सुबह उसके फूल लाए। सोमवार को उन फूलों की माला बनाकर नग्न होकर मस्तक पर पहने तो भीम की तरह भोजन करे।

७. रविवार के दिन भतूलिया (बवंडर) आए उसमें आक या पीपल का पत्ता उड़ता-उड़ता आए उसको धरती पर गिरने से पहले ले लें। उस पत्ते पर उत्तर की ओर मुँह कर केसर से अनार की कलम से पन्द्रहिया यंत्र उल्टा यानि नव के अंक से एक तक लिखे (पहले नव का अंक बैठाए फिर आठ, सात आदि का)। इस तरह फिर तांबे की ताबीज में सुल्टा-सुल्टा डालकर ताबीज बना ले, ताबीज पास में रखे। खाने के

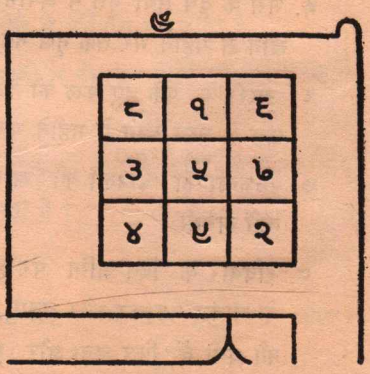

समय थाली के नीचे ताबीज-रखकर खाना खाए तो खाना खिलाने वाला थक जायेगा। यंत्र उपरोक्त रूप से लिखना है।

बिच्छू के जहर पर तन्त्र

१. सत्यनाशी की मूल बिच्छू के काटने पर पान में दे तो जहर उतरे।

२. हुलहुल की मूल बिच्छू के काटे हुए आदमी को सात बार सुंघाने मात्र से जहर उतर जाएगा।

३. नौसादर व चूना मिलाकर सुंघा देने से जहर उतर जाता है।

४. मुर्गा, कबूतर और मयूर की विष्ठा व आक की मूल घिस कर कटे स्थान पर लेप करने से जहर उतरता है।

५. पुठकंडा की मूल को घिसकर जहां बिच्छू ने काटा हो उस जगह इसको लगाये तो विष उतर जाता है।

६. जिस तरफ बिच्छू ने काटा हो उसकी दूसरी तरफ की कान में नमक घोलकर डालने से विष उतर जाता है।

७. जिसे बिच्छू ने काटा हो उसे अपामार्ग की जड़ दिखा देने भर से बिच्छू का जहर उतर जाएगा। यदि बिच्छू अधिक जहरीला हो तो अपामार्ग की जड़ को घिसकर अथवा पत्तों को पीसकर डंक के स्थान पर लगा देने से बिच्छू का जहर उतर जाता है। कान में बांध देने से भी बिच्छू का जहर उतर जाता है। जितना ऊँचा जहर चढ़ा हो उस स्थान से लेकर, जहां डंक लगा हो उस स्थान तक छुआता हुआ लाए तो जहर उतरता हुआ डंक के स्थान पर आ जाएगा।

८. जहाँ बिच्छू ने काटा हो उस स्थान से ऊपर जहाँ तक जहर चढ़ा है, उस स्थान से लेकर डंक तक निम्न यंत्र बगैर पेन्सिल उठाये लिखता जाए व तीन थपकी मारता जाये तो जहर डंक के स्थान पर आकर रुक जायगा।

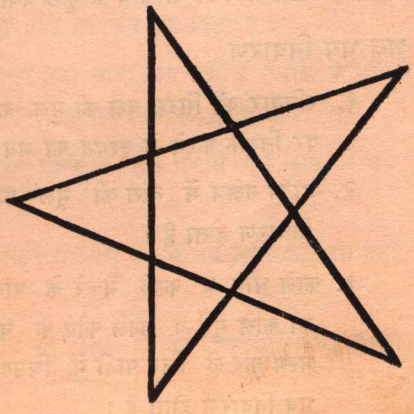

पशुओं के कीड़ों पर तन्त्र

१. नीलकण्ठ चिड़िया जो नीले रंग की होती है, उसका एक, आधा या चौथाई पंख आटे में रखकर पशु को खिला दें, इसकी एक खुराक से ही कीड़े मर जायेंगे।

२. लसोड़ा की लकड़ी चार अंगुल बराबर लें (दो सूत मोटी होनी चाहिए) फिर उसे दूनर कर (दोहराकर) रस्सी से पशुओं के गले में बाँध दें। ऐसा करने से पशु के चाहे किसी भी अंग में कीड़े पड़े हों, सूख जायेंगे और आराम हो जायगा।

भय-नाश-तन्त्र

△

मंत्र

ॐ नमो अग्निरूपाय ह्रीं नमः

विधि

शुभ नक्षत्र शुभ दिन में इस मंत्र का जाप शुरू करे, १० हजार जाप कर इसको सिद्ध कर ले। प्रयोग के समय ७ बार इस मंत्र से उस वस्तु को अभिमंत्रित कर फ़िर धारण करे।

प्रत्येक मनुष्य को शत्रु, सिंह, हांथी, सांप, बिच्छू, चोर आदि का भय बना रहता है। तंत्र में उनके सम्बन्ध में कुछ प्रयोग आते हैं, जो निम्न रूप से हैं—

शत्रु भय निवारण

१. रविवार को सिरस वृक्ष की मूल का छिलका लाकर घिसकर मस्तिष्क पर तिलक करने से दुश्मन का भय निवारण होता है।

२. आर्द्रा नक्षत्र में बांस की मूल कान में धारण करने से शत्रु का भय निवारण होता है।

३. काले घोड़े व काले बकरे के पांव के बाल, मंगलवार या रविवार को काले मुर्गे व काले कौए के चार-चार पंख लेकर सबको जलाकर भस्म कर ले फिर पानी में घिसकर उसका तिलक करने से शत्रु का भय निवारण होता है।

चोर भय निवारण

१. शुक्ल पक्ष व पुष्य नक्षत्र में श्वेत गुंजा का मूल लाकर मस्तक या शय्या पर रखने से चोर भय दूर होता है।

२. केतकी की मूल मस्तक पर धारण करने से चोरों का भय दूर होता है।

सिंह भय निवारण

रवि पुष्य नक्षत्र में श्वेतार्क मूल लेकर दाहिने हाँथ में बांधने से सिंह का भय दूर होता है।

बाघ भय निवारण

१. रवि पुष्य नक्षत्र में काले धतूरे का मूल लेकर दाहिने हाँथ में बांधने से बाघ का भय दूर होता है।

२. अश्लेषा नक्षत्र में आंवले के वृक्ष की मूल लाकर हाथ में बांधने से चोर, बाघ व राजा का भय भी दूर होता है।

हाथी भय निवारण

१. श्वेत अपराजिता का मूल हाथ में बांधने से हाथी का भय दूर होता है।

२. हस्त नक्षत्र में छछुन्दर लाकर पोसकर लेप करने से हाथी का भय दूर होता है।

सर्प भय निवारण

१. आषाढ़ शुक्ल पंचमी को सिरस की मूल कमर में बांधने से तथा चावल का पानी पीने से सर्प दंश का भय दूर होता है।

२. मेष राशि के सूर्य में एक मसूर का दाना, दो नीम के पत्तों के साथ खाने से एक साल तक सर्प दंश का भय निवारण होता है।

३. निर्गुण्डी की मूल को घर में रखने से उस घर में सर्प आने का भय नहीं रहता है।

४. मयूर के पंखों को घर में रखने से उस घर में सर्प आने का भय नहीं रहता है।

५. रवि पुष्य नक्षत्र में गिलोय की मूल लाकर उसकी माला कंठ में धारण करने से सर्प दंश का भय निवारण होता है।

६. अश्लेषा नक्षत्र में धात्री मूल लेकर हाथ में बाँधने में सर्प दंश का भय नहीं रहता।

बिच्छू भय निवारण

१. फिरोजा या हीरे की अंगूठी पहनी जाय तो बिच्छू व सर्प का भय निवारण होता है।

२. अपराजिता का मूल शुभ नक्षत्र में कान में धारण करने से बिच्छू के काटने का भय निवारण होता है। चोर भय भी दूर होता है।

अग्नि भय निवारण

श्वेतार्क मूल दाहिने हाथ में बांधने से अग्नि का भय दूर होता है।

समुद्र भय निवारण

रवि पुष्य नक्षत्र में राम लक्ष्मणा पंचांग, राजहंसी पंचांग, त्रिधातु के मादलिया में धारण करने से समुद्र सम्बन्धी कोई भय नहीं रहेगा।

युद्ध में हार का भय निवारण

श्वेतार्क मूल, उँधा होली, रुद्रवन्ती इन सबकी गोली बनाकर मुंह में रखकर युद्ध में जाए तो हार का भय नहीं रहेगा।

सर्व भय निवारण

अश्लेषा नक्षत्र में धात्री मूल लेकर हाथ में बांधने से किसी प्रकार का भय नहीं रहता।

मूठ भय निवारण

कृत्तिका नक्षत्र में लोहे की अंगूठी बनाकर हाथ में धारण करने से दीठ-मूठ का भय दूर होता है।

रात्रि भय निवारण

जिसको रात में भय लगता हो वह "करमाल की फली" पास में रखे तो भय दूर होता है।

चूहा भय निवारण

नये मिट्टी के बर्तन के चार चौकोर टुकड़े लें, उनपर "ॐ क्रौं क्रां" मंत्र लिखकर घर के चारों कोनों में गाड़ दें, तो चूहे घर में नहीं आएंगे।

प्रेत बाधा निवारण तंत्र

△

मंत्र

ॐ नमःश्मशानवासिने भूतादिनां पलायनं कुरू कुरू स्वाहा ।

विधि

प्रातः पूर्व की ओर मुंह कर रोज एक माला का जाप कर मंत्र सिद्ध कर लें ।

१. काले धतूरे की मूल उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर हाथ में बांधने से प्रेत बाधा दूर होती है ।

२. सहदेवी मूल, ८ तुलसी के पत्ते, ८ काली मिर्च एकत्र कर उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर हाथ में बांधने से प्रेत बाधा दूर होती है ।

३. श्वेत गुंजा का मूल बालक के गले में उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर बांधने से डाकिनी का भय नहीं होगा ।

४. हींग को लहसुन के पानी में पीसकर उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर सुंघाने या अंजन करने से भूतादि दूर होते हैं ।

५. नीम के पत्ते, बच, हींग, सांप की केंचुली और सरसों को गो-मूत्र में पीसकर उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर सुँघाने से सर्व-विध प्रेत बाधा दूर होती है ।

६. गोरखमुंडी, गोखरू और बिनौला तीनों का समभाग लेकर गो-मूत्र में पीसकर उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर सुँघाने से प्रेत बाधा दूर होती है ।

७. शंखाहुली की मूल घृत के साथ पीसकर उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर सुंघाने से प्रेत बाधा दूर होती है ।

८. इन्द्र बारुणी का पका फल, कमल गट्टा और काली मिर्च को गाय के मूत्र में पीसकर उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर सुंघाने से डाकिनी व शाकिनी आदि की बाधा दूर होती है । ब्रह्म राक्षस व भूत बाधा भी दूर होती है ।

९. जावित्री को श्वेत अपराजिता के पत्ते के रस में पीसकर उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर सुंघाने से डाकिनी व शाकिनी आदि की बाधा दूर होती है ।

१०. अश्विनी नक्षत्र में घोड़े के नख को उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर जलाने और उसकी धूनी देने से प्रेत बाधा दूर होती है।

११. घुग्घू के मांस को सुखाकर उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर जलावें और उसकी धूनी दें तो प्रेत बाधा दूर होती है।

१२. रविवार को सिरस के पत्ते व फूल लायें, उनमें घुग्घू, कुत्ता व बिल्ली की विष्ठा, ऊँट के बाल, गाय का गोबर, गन्धक व श्वेत गुंजा को सरसों तेल में पका लें। उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर फिर इसकी धूनी दें तो प्रेत बाधा दूर होती है।

१३. गंधक, गुग्गुल, लाख, मस्तक के बाल, लोबान, हाथी दांत व साँप की केंचुली इन सबको मिलाकर उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर धूनी देने से प्रेत बाधा दूर होती है।

१४. बेल की मूल, देवदारु, बबूल तथा प्रियंगु–इनको पीसकर उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर धूप देने से प्रेत बाधा दूर होती है।

39/14

१५. शनिवार को घुग्घू का मांस व चर्म लेकर पृथक्-पृथक् पीस लें और रविवार को दोनों को मिलाकर उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर पूरे घर में धूनी दें तो भूत, प्रेत का भय दूर हो जायगा।

१६. मिर्च, निंबोली, हींग, साबुन, लहसुन–इन सबको नीबू के रस में पीसकर गोली बांध ले, फिर गोली को घिसकर उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर आंख में अंजन करें तो प्रेत बाधा दूर हो जाएगी।

१७. काशी फल के फूलों के रस में हल्दी को पीसकर पत्थर के खरल में पीसें, फिर उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर अंजन करें तो भूत बाधा दूर हो जाएगी।

१८. लहसुन, सर्प कंचुकी, कायफल, हींग, अरीठा छाल, इंगोरा बीज व निंबोली मींजी सर्व लेकर खरल कर उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर अंजन करें तो भूत-प्रेत बाधा दूर हो जाएगी।

१९. नदी किनारे जो नाव खड़ी हो उसका लोहे का कांटा लाएं व घोड़े की नाल लाएं। उन दोनों का एक कड़ा बनवाकर धूप देकर उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर पहनें तो भूत-प्रेत बाधा दूर होगी, रोग व दोष भी दूर हो जाएगें।

विविध तंत्र

△

व्यापार वृद्धि तंत्र

१. नींबू, हरी मिर्च को एक धागे में पिरोकर दुकान के दरवाजे पर लटकाने से दुकान को लगी नजर हट जाती है।

२. जिस पेड़ पर चमगादड़ रहता है उस पेड़ को शनिवार के दिन शाम के समय न्यौत आए। रविवार प्रातःकाल सूर्योदय से पहले जाकर उसकी एक डाल तोड़ लाए। उस डाल को गद्दी या पैरों के नीचे दबा ले और एक पत्ता सिर पर रख ले। इससे ग्राहक दबता है।

३. रविवार के दिन बिल्ली की नाल लाकर उसे आदरपूर्वक जिन वस्तुओं में रखा जाएगा उसकी वृद्धि होती रहेगी।

४. रविवार के दिन काली उड़द हाथ में लेकर "भँवर बीर तूं चेला मेरा, खोल दुकान कहाकर मेरा। उठे जो डण्डी बिके जो माल, भँवर बीर सोखे नहीं जाय।" यह मंत्र उस उड़द पर १०८ बार पढ़कर दुकान में बिखेर दें। ऐसा चार रविवार करने से बिक्री बढ़ जाती है। उन बिखरे हुए उड़दों को दूसरे रोज झाड़ू निकालते समय उठाकर चौराहे में डाल दें या एक पोटली बाँध ऊँचे ताक पर रख दें।

५. तांबे के पत्रे पर शुभ मुहूर्त में इस यंत्र को खुदवाकर कृष्ण पक्ष की

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ठः	४२	३५	४०	फु
ठः	३७	३९	४१	फु
ठः	३८	४३	३६	फु
हैं	भुर	भुर	भुर	फु

चतुर्दशी की रात को शुद्ध जगह स्थापित करके शुद्ध होकर—श्वेत वस्त्र, श्वेत आसन व श्वेत माला का प्रयोग करते हुए-"ओं ह्रीं श्रीं अर्हं नमः" मंत्र की प्रतिदिन १० माला का जाप करे। सफेद फूल चढ़ाए। २१ दिन तक जाप व पूजन करने के बाद यंत्र को गल्ले में या तिजोरीमें स्थापित कर दे। इससे व्यापार में लाभ व वृद्धि होगी।

६.

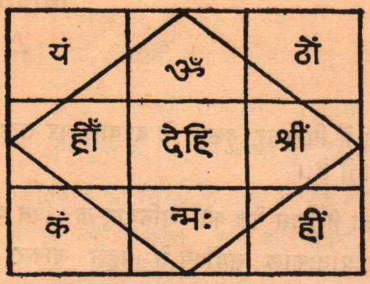

दीपावली की रात्रि को भोज पत्र पर कुमकुम या गोरोचन से लिखकर पचोपचार से पूजन करके तिजोरी में या गोदाम में रखने से उस वस्तु की वृद्धि होती है। जिसमें यह रखा जाता है।

७. जब अपना चन्द्रमा बली हो। उत्कृष्ट मुहूरत हो, उस दिन भोज पत्र पर

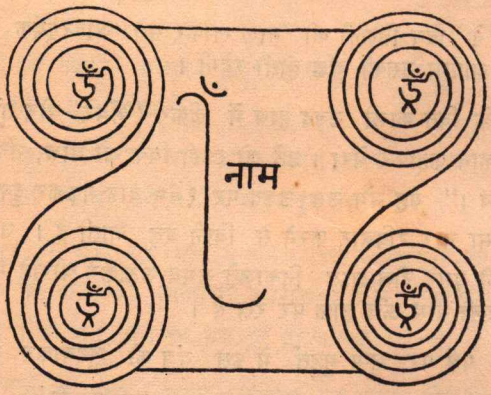

अनार की कलम से अष्टगध स्याही से उपरोक्त यत्र लिखे। नाम की जगह अपनी संस्थान या प्रतिष्ठान का नाम लिखकर संस्थान के मुख्य द्वार पर लगा दे तो प्रत्येक आने वाला व्यक्ति उस संस्थान के प्रति निश्चय ही अनुकूल होगा। हर प्रकार से सहायक होगा।

आजीविका प्राप्ति तंत्र

रवि पुष्य नक्षत्र में लज्जालु पंचांग, शंख पुष्पी पंचांग. राम पंचांग, लक्ष्मण पंचांग। ये सब लेकर पीसकर गोली कर ले व रोज अपने थूक से गीली घिस कर तिलक करे तो आजीविका मिलेगी, पर विद्या निष्फल होगी।

मुकदमा विजय तंत्र

गोभी और मयूर शिखा को मुंह में रखकर या मस्तक पर धारण कर न्यायालय में जाने से विजय प्राप्त होती है।

शरीर रक्षा तंत्र

रवि पुष्य नक्षत्र में रोहिणी का पंचांग, चक्रांग पंचांग लाकर पीसकर गुटिका कर त्रिधातु के मादलिया में डाल कर भुजा में बांधे तो जीवन पर्यन्त शरीर की रक्षा होगी।

बेड़ी व ताला भंग तंत्र

१. हस्त नक्षत्र में-सिंह वार (सिन्दुवार) मूल लेकर बेड़ी में लगाते ही बेड़ी टूट जाएगी।

२. लाल कमल और जटामासी गिरगिट को खिलाये, फिर उसकी विष्ठा को बेड़ी पर लगा दे तो बेड़ी तुरन्त खुल जाती है।

३. मृत मनुष्य को जब श्मशान में ले जाया जाता है, तब उसको खटिया पर बांधते समय दोनों पैरों के बीच में एक लोहे का टुकड़ा रख दें। श्मशान में जाकर जब चिता पर मृत को रख दिया जाता है तब अग्नि लगाने से पहले उस लोहे के टुकड़े को निकाल लें। सीधा लुहार के घर जाएं और उसकी एक छुरी बनवाएं, न तो उस पर पानी गिराए और न उसपर अग्नि का ताव दें, ऐसे ही बनवाए। ताले व बेड़ी पर चार बार छुआ देने मात्र से ताला व बेड़ी खुल जायेगी।

४. रविवार मध्याह्न के समय नग्न होकर चील और कौए के घोंसले को ले आएं फिर उसे गुग्गुल की धूनी देकर श्मशान में जाकर चिता में रखकर जला दें फिर उस भस्म को घर लाकर रख लें। एक चुटकी भर भस्म जिस ताले पर गिराई जायेगी वह ताला खुल जायेगा। कहते हैं कि उन घोंसलों में चितावर की लकड़ी हुआ करती है।

यात्रा में थकावट न आने का तंत्र

१. ऊँट के चमड़े से बिना सिलाई किये जूते बनवाएं, सरसों का चूर्ण कर अंकोल के तेल की भावना देकर, पांव के तलवों पर लेपकर वे जूते पहन कर, पैदल लम्बी दूर की यात्रा करने पर भी थकावट नहीं आएगी।

२. काले तीतर को लाकर तीन दिन तक भूखा रखें। चौथे दिन उसको पारा खिला दें। उसके बाद उसे दूध में भींगे हुए चावल खिलाए। जब तीतर विष्ठा करे, तब उस पारे को निकालकर गुटिका कर लें। इस गोली को मुंह में रखकर लम्बी दूर की यात्रा करने पर भी थकावट नहीं आएगी।

मृत आत्मा के दर्शन

मुर्दे को जब खटिया पर बांधते हैं तब गेहूँ के आटे को गोंद कर एक कांसी की कटोरी में डालकर मुर्दे की नाभि पर रखते हैं। जहाँ जलाते हैं उस जगह से पहले बीच में अर्थी को रखकर, वह आटे की कटोरी फेंक देते हैं। उस आटे को न फेंककर पास में लेलें, फिर श्मशान भूमि में अर्थी को चिता पर रखकर उसके कफन का एक टुकड़ा काटकर वृक्ष पर डाल देते हैं। उस टुकड़े में से थोड़ा फाड़कर ले लें। अब उस आटे में एक महीन छेद कर लें व कफन के टुकड़े के बीचो बीच भी एक छेद कर लें और उस कफन के टुकड़े को आटे पर लपेट दें। आटे का छिद्र व कपड़े का छिद्र एक सीध में रहना चाहिए। फिर उस छिद्र में से एक आँख बन्द कर एक आँख से चिता को ओर देखें तो मृतात्मा मंडराती हुई दिखाई देगी। कपाल क्रिया के बाद कुछ दिखाई नहीं देगा।

अदृश्य करण तंत्र

१. एक चोर की मृत्यु के बाद उसका कफन लाएं, फिर उसको जलाकर भस्म कर लें, उस भस्म को आंख में लगाने से कहते हैं कि मनुष्य अदृश्य हो जाता है।

२. एक मयूर को पकड़ कर लाएं, दो दिन तक उसे खाने को कुछ न दें। फिर मैनसील और हरताल गाय के घृत में मिलाकर एक-एक रत्ती की गोली बनाकर उसे खिलाएं। इस तरह सात दिन तक करते रहें। सातवें दिन वह जो विष्ठा करे उसे अपने दोनों हाथ पर लेप कर लें। उसके बाद हाथ पर जो वस्तु रखी जायेगी, वह किसी को भी दिखाई नहीं देगी, ऐसा कहा जाता है।

३. फाल्गुन मास में खंजन पक्षी को पकड़कर पिंजरे में बन्द कर दे। भाद्र मास तक जब उसके चोटी (शिखा) निकलती है तो वह पिंजरे में ही अदृश्य हो जाता है। उस समय उसे हाथ से पकड़कर उसकी शिखा के सातों पंखों को उखाड़ ले। उन पंखों को दस भाग स्वर्ण, बारह भाग ताँबा, सोलह भाग चांदी की एक ताबीज बनाकर उसमें भर कर रख लें। जब भी उस ताबीज को मुंह में रखा जायेगा, तो वह अदृश्य हो जायेगा।

४. रविवारी अमावस्या हो या पूरी चौदस हो, उस दिन घुग्घू का मांस लेकर मनुष्य की खोपड़ी में डालकर, नग्न होकर, मनुष्य की खोपड़ी

पर ही काजल पारे, गुग्गुल का धूप खेवे। "सिद्धि हों हि" मंत्र की एक माला का उस काजल पर जाप करे। फिर उस काजल को ताँबे के ताबीज में भर ले। जब उस तावीज को मुँह में रखा जायेगा तो कहते हैं कि वह अदृश्य हो जायेगा।

रथ सहित सूर्य दर्शन तंत्र

बिजोरा नींबू के बीज के तेल को मध्याह्न के समय तांबे के पात्र पर लगाकर सूर्य की ओर रखकर पात्र में देखें तो रथ सहित सूर्य का दर्शन होगा।

चोर दृश्य करण तंत्र

श्वेतार्क, राज हंसी, लज्जालु, मयूरशिखा पीसकर अंजन करने से चोर दिखाई पड़ जाता है।

युद्ध जय तंत्र

१. श्वेतार्क मूल, उंधा होलो व रुद्रवन्ती इन सबको पीसकर गोली बनाकर मुंह में रखकर युद्ध में जाये तो जय हो।

२. हस्त नक्षत्र में विष्णुकान्ता के मूल का तिलक कर युद्ध में जाए तो जय हो।

तवादला तंत्र

सूर्योदय से पहले स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहन कर सूर्योदय के बाद सूर्य के सामने लाल मिर्च के कम से कम इक्कीस बीज छोड़ दे और कहे कि हे सूर्य देवता ! मेरा इस जगह से जल्द तबादला हो जाना चाहिए। तीन रोज बराबर करे तो बहुत जल्द उस जगह से ट्रांसफर हो जायेगा।

ग्रह-पीड़ा-निवारण वनस्पति मूल तंत्र

△

किसी भी ग्रह की दशा ठीक न होने पर उसकी शान्ति के लिए निम्नलिखित प्रयोग तंत्र शास्त्र में उत्तम माने गए हैं। रत्न धारण की तरह ही वनस्पति का प्रयोग फलदायी कार्य करता है। जिस ग्रह को शान्ति के लिए जो मूल बताई गई है उसे उसी वार में विधिवत लानी चाहिए। मूल एक इंच लम्बी होनी चाहिए और दाहिने हाँथ में धारण करना चाहिए।

सूर्य : की शान्ति के लिए बिल्व पत्र की मूल रविवार को गुलाबी डोरे से स्वर्ण के ताबीज में धारण करें।

चन्द्र : की शान्ति के लिए खिरनी की मूल सोमवार को सफेद ऊन के डोरे में लपेट कर धारण करें।

मंगल : की शान्ति के लिए अनन्तमूल की मूल मंगलवार को लाल डोरे से स्वर्ण के ताबीज में धारण करें।

बुद्ध : की शान्ति के लिए विधारा की मूल बुधवार को हरे डोरे से चांदी के ताबीज में धारण करें।

गुरू : की शान्ति के लिए भारंगी या केले की मूल गुरुवार को पीले डोरे से स्वर्ण के ताबीज में धारण करें।

शुक्र : की शान्ति के लिए सरपंखा की मूल शुक्रवार को सफेद डोरे से स्वर्ण के ताबीज में धारण करें।

शनि : की शान्ति के लिए बिच्छू की मूल शनिवार को काले डोरे से शीशे के ताबीज में धारण करें।

राहु : की शान्ति के लिए सफेद चन्दन की मूल बुधवार को नीले डोरे से लोहे के ताबीज में धारण करें।

केतु : की शान्ति के लिए असगन्ध की मूल गुरूवार को आसमानी डोरे से चांदी के ताबीज में धारण करें।

ग्रह-पीड़ा-निवारण स्नान तंत्र

△

"मेरू तंत्र" में ग्रहों की शान्ति के लिए कुछ वनस्पति द्वारा स्नान करने के तांत्रिक प्रयोग दिये हैं। जिसके प्रयोग से हर किसी ग्रह की शान्ति होती है व सुख समृद्धि प्राप्त होती है। जो निम्न रूप से बताये गए हैं—

सूर्य : की शान्ति के लिए कनेर, दुपहरिया, नागरमोथा, देवदारु, मैनसिल, केसर, इलायची, पद्माख, महुआ के फूल और सुगन्ध बाला का चूर्ण कर पानी में डालकर भगवान का स्मरण करता हुआ स्नान करे।

मंगल : की शान्ति के लिए सोंठ, सौंफ, लाल चन्दन, सिंगरफ, माल काँगनी और मौलसरी के फूल पानी में डालकर भगवान का स्मरण करता हुआ स्नान करे।

बुद्ध : की शान्ति के लिए हरड़, बहेड़ा, गोमय, चावल, गोरोचन, स्वर्ण, आँवला और मधु पानी में डालकर भगवान का स्मरण करता हुआ स्नान करे।

गुरु : की शान्ति के लिए मदयन्ती के पत्र, मुलेठी, सफेद सरसों व मालती के फूल पानी में डालकर भगवान का स्मरण करता हुआ स्नान करे।

शुक्र : की शान्ति के लिए मूल सहित हरड़, बहेड़ा, आँवला, इलायची, केसर और मैनसील पानी में डालकर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करे।

शनि : की शान्ति के लिए सुरमा, काले तिल, सौंफ, नागरमोथा और लोध को पानी में डालकर भगवान का स्मरण करता हुआ स्नान करे।

चन्द्र : की शान्ति के लिए पंचगव्य, चाँदी, मोती, शंख, सीप और कुमुद पानी में डालकर भगवान का स्मरण करता हुआ स्नान करे।

राहु : की शान्ति के लिए नागबेल, लोबान, तिल के पत्र, बचा, गडूची और तगर पानी में डालकर भगवान का स्मरण करता हुआ स्नान करे।

केतु : की शान्ति के लिए सहदेई, लज्जालु (लोबान), बला, मोथा, प्रियंगु और हिंगोठ पानी में डालकर भगवान का स्मरण करता हुआ स्नान करे।

सर्व ग्रह की शान्ति के लिए कूठ, खिल्ला, काँगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी सर्वोषधि तथा लोध इन सबको मिलाकर चूर्ण कर किसी तीर्थ के पानी में मिलाकर भगवान का स्मरण करता हुआ स्नान करे तो ग्रहों की शान्ति और सुख समृद्धि प्राप्त होती है।

ग्रह-पीड़ा-निवारण धातु की अंगूठी

△

किसी ग्रह की दशा ठीक न होने पर जिस तरह रत्न व मूल धारण का विधान मिलता है उसी तरह धातु की अंगूठी के प्रयोग का भी विधान आता है जो निम्न प्रकार से है:-

रवि : ताँबा की अंगूठी रविवार के दिन प्रातः काल गाय के दुग्ध व घृत में डुबोकर मंत्र जाप करता हुआ धारण करे।

चन्द्र : शंख की अंगूठी सोमवार के दिन प्रातःकाल गाय के कच्चे दुग्ध व श्वेत चन्दन में डुबोकर मंत्र जाप करता हुआ धारण करे।

मंगल : स्वर्ण की अंगूठी मंगलवार के दिन प्रातःकाल गाय के कच्चे दुग्ध में डुबोकर मन्त्र जाप करता हुआ धारण करे।

बुध : चांदी की अंगूठी बुधवार के दिन प्रातःकाल गाय का कच्चा दुग्ध, घृत, मधु व श्वेत चन्दन में डुबोकर मन्त्र जाप करता हुआ धारण करे।

गुरु : चांदी की अंगूठी गुरुवार के दिन प्रातःकाल घृत, चन्दन व शुद्ध जल में डुबोकर मंत्र जाप करता हुआ धारण करे।

शुक्र : प्लैटिनम की अंगूठी शुक्रवार को प्रातः काल गाय का कच्चा दुग्ध व मधु में डुबोकर मंत्र जाप करता हुआ धारण करे।

शनि : शीशे की अंगूठी शनिवार संध्या समय गाय के कच्चे दुग्ध में डुबोकर मन्त्र जाप करता हुआ धारण करे।

राहु : लोहे की अंगूठी शनिवार को दोपहर के समय दुग्ध में डुबोकर मंत्र जाप करता हुआ धारण करे।

केतु : शीशे की अंगूठी शनिवार या मंगलवार को दुग्ध में डुबोकर मंत्र जाप करता हुआ धारण करे।

वृहत् ज्योतिष वारिधि में निम्न रूप से बताया गया है :-

रवि : ताँबा, स्वर्ण व प्लैटिनम की अंगूठी धारण करे।

चन्द्र : चांदी की अंगूठी धारण करे।

मंगल : रक्त वर्ण ताँबा की अंगूठी धारण करे।

बुध : पीतल की अंगूठी धारण करे।

गुरु : स्वर्ण की अंगूठी धारण करे।
शुक्र : कांसा की अंगूठी धारण करे।
शनि : लोहे की अंगूठी धारण करे।
राहु : टिन की अंगूठी धारण करे।
केतु : शीशा की अंगूठी धारण करे।

रत्न-तन्त्र

△

संसार में रत्नों का व्यवहार कब से चल रहा है, इसे समय की इयत्ता में नहीं बांधा जा सकता। रत्नों के उद्गम या उद्भव, विकास या विस्तार की कहानी उतनी ही पुरानी है, जितनी मानवीय सभ्यता की। रत्न अपनी उज्ज्वलता, ज्योतिर्मयता और कान्तिमयता के कारण भारतीय वाङ्मय में श्रेष्ठत्व का प्रतीक बन गया। इसलिए जहाँ किसी व्यक्ति या पदार्थ के उत्कर्ष का ज्ञापन अपेक्षित हुआ, उपमान के रूप में रत्न शब्द का बहुत प्रयोग हुआ। यों प्राचीन से प्राचीन शास्त्रों में नव रत्नों का उल्लेख मिलता है। जैन धर्म के प्रवर्तक, प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ के जन्म से पूर्व उनकी माता को स्वप्न में जिन रत्नों के दिखलाई देने का वर्णन है, उन रत्नों की नामावली श्री जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ति की शान्ति चन्द्रिया वृत्ति में मिलती है।

वराह मिहिर, अगस्त्य आदि आचार्यों ने इनका पूर्णतः विवेचन किया है। पृथ्वी में उत्पन्न होने वाले इन रत्नों (पाषाणों) का भी मानव जीवन में प्रभावशाली उपयोग होता है और यह उपयोग विज्ञान द्वारा भी समर्थित है। विद्वानों की मान्यता है कि नव रत्नों की उत्पत्ति नव ग्रहों को किरणों के पड़ने के प्रभाव से उन ग्रहों में विद्यमान विशेष तत्वों से होती है। यही कारण है कि जैसा जिस ग्रह का रंग रूप होता है, उस ग्रह से सम्बन्धित रत्न का भी वैसा ही रंग होता है तथा उसी तरह हम अपने ग्रहों व नक्षत्रों के अनुरूप इन रत्नों को धारण करते हैं। यदि ग्रह गति एवं रत्न हमारे अनुकूल रहें तो निश्चय ही कष्ट-निवृत्ति होती है और साथ ही अप्रत्याशित लाभ भी होता है। जिस प्रकार तन्त्रों में जड़ी-बूटियों के धारण द्वारा धन-प्राप्ति, रोग निवारण, शत्रु नाश तथा अन्यान्य सुख-सुविधा प्राप्ति के उपाय दिखाये गये हैं उसी प्रकार

रत्न धारण करने का भी विधि-विधान बताया गया है। तंत्रशास्त्र रत्न को मन्त्र द्वारा तेजस्वी बनाकर उसे विधिवत् धारण करने से वास्तविक लाभ प्राप्त करना बतलाता है।

प्राचीन वाङ्मय में हमें चौरासी प्रकार के पाषाणों का तथा नौ प्रकार के रत्नों का वर्णन मिलता है। ये आभूषण, औषध, ग्रह-शान्ति, भवन-निर्माण, मूर्ति, खरल एवं खिलौने आदि के काम म आते हैं।

बहुत संक्षेप में रत्नों को धारण करने की विधि, उनके उपयोग आदि के सन्दर्भ में यहाँ प्रकाश डाला जा रहा है—

जन्म दिवस पाषाण (Birth stone or Lucky stone)

पाश्चात्य देशों में जन्म-तिथियों के अनुसार रत्न धारण करने की परम्परा है। वे उसे Birth stone (बर्थ स्टोन) कहते हैं। उनमें भी अलग-अलग मान्यताएँ हैं जो निम्नांकित रूप में ग्राह्य हैं। जन्म की तारीख के अनुसार रत्न का चुनाव निम्नलिखित सारणी प्रसिद्ध विद्वान और अंक शास्त्री श्री पी० एन० शरमन की पुस्तक Gems & Their Occult Powers में दिए हुए मत के अनुसार है।

जन्म तारीख	निरयन सूर्य की राशि	उपयुक्त रत्न
१५ जनवरी से १४ फरवरी	मकर	नीलम
१५ फरवरी से १४ मार्च	कुम्भ	गोमेद
१५ मार्च से १४ अप्रैल	मीन	लहसुनिया
१५ अप्रैल से १४ मई	मेष	मूंगा
१५ मई से १४ जून	वृषभ	हीरा
१५ जून से १४ जुलाई	मिथुन	पन्ना
१५ जुलाई से १४ अगस्त	कर्क	मोती
१५ अगस्त से १४ सितम्बर	सिंह	माणिक्य
१५ सितम्बर से १४ अक्टूबर	कन्या	पन्ना
१५ अक्टूबर से १४ नवम्बर	तुला	हीरा
१५ नवम्बर से १४ दिसम्बर	वृश्चिक	मूँगा
१५ दिसम्बर से १४ जनवरी	धनु	पीला पुखराज

इंगलैण्ड के रत्न विशेषज्ञ मैंबविलसन की पुस्तक "Gems" में जन्म की तारीख के अनुसार रत्न के चुनाव की जो सारणी दी है वो निम्न रूप से है :—

जन्म तारीख			सायन सूर्य की राशि	जन्म रत्न
मार्च	२१ से अप्रैल	२०	मेष	हीरा
अप्रैल	२१ से मई	२०	वृषभ	पन्ना
मई	२१ से जून	२०	मिथुन	मोती, मूनस्टोन, एलेक्जन्ड्राईट
जून	२१ से जुलाई	२०	कर्क	माणिक्य
जुलाई	२१ से अगस्त	२०	सिंह	जबरजद, सारडोनिक्स (संगरात)
अगस्त	२१ से सितम्बर	२०	कन्या	नीलम
सितम्बर	२१ से अक्टूबर	२०	तुला	उपल, टूर्मेलीन
अक्टूबर	२१ से नवम्बर	२०	वृश्चिक	पीला पुखराज, सुनैला
नवम्बर	२१ से दिसम्बर	२०	धनु	फीरोजा, गोमेद
दिसम्बर	२१ से जनवरी	२०	मकर	तामड़ा
जनवरी	२१ से फरवरी	२०	कुम्भ	कटैला
फरवरी	२१ से मार्च	२०	मीन	वैरूंज, पितोनिया

जन्मांक के अनुसार सौभाग्य देने वाले रत्न का चुनाव—

जन्म की तारीख	जन्मांक	अंक का स्वामी गृह	उपयुक्त रत्न
१-१०-१९-२८	१	सूर्य	माणिक्य
२-११-२०-२९	२	चन्द्रमा	मोती
३-१२-२१-३०	३	वृहस्पति	पीला पुखराज
४-१३-२२-३१	४	यूरेनस	गोमेद
५-१४-२३	५	बुध	पन्ना
६-१५-२४	६	शुक्र	हीरा
७-१६-२५	७	नेप्चून	लहसुनिया
८-१७-२६	८	शनि	नीलम
९-१८-२७	९	मंगल	मूंगा

कौन-कौन सी जन्म तारीख के लिए कौन सा भाग्यवान रत्न है,

इस सम्बन्ध में पाश्चात्य देशों में बहुत दिनों से मतभेद था। सन् १९१२ में अमेरिका में बड़े-बड़े देश-विदेश के जौहरियों की एक सभा हुई, उन्होंने जन्म रत्नों के सम्बन्ध में जो निर्णय किया वही अब प्रायः सर्वत्र माने जाते हैं। उस निर्णय के अनुसार जो जन्म रत्न हैं वह नीचे दिये जाते हैं:—

जन्म मास	जन्म रत्न
जनवरी	तामड़ा
फरवरी	कटैला
मार्च	बैरूज, पितोनिया
अप्रैल	हीरा
मई	पन्ना
जून	मोती, विकल्प-मून स्टोन (चन्द्रकान्त मणि)
जुलाई	माणिक्य
अगस्त	जबरजद (संगरात)
सितम्बर	नीलम
अक्टूबर	उपल, विकल्प टूर्मेलीन (तुरमली)
नवम्बर	पीला पुखराज, विकल्प-सुनैला
दिसम्बर	फीरोजा, विकल्प-लाजवर्त

पाश्चात्य देशों में वारों के अनुसार भी रत्न पहनने का प्रचलन है एक मान्य सूची निम्न रूप से है:—

जन्मवार	जन्म रत्न
रविवार	माणिक्य
सोमवार	मोती, उपल
मंगलवार	पितोनिया, कटैला
बुधवार	ओलीवीन यानि जबरजद, यशब, हकीक
गुरुवार	पन्ना, नीलम
शुक्रवार	लाजवर्त, फीरोजा
शनिवार	सुलेमानी

जन्म तिथियों के अनुसार एक सारणी और प्रसिद्ध है जो निम्न रूप से ग्राह्य है:—

जन्म-तिथि	कौन सा रत्न धारण किया जाय
२० जनवरी से १९ फरवरी	तामड़ा, हीरा, यशव, सुलेमानी, माणिक्य
२० फरवरी से १९ मार्च	कटैला
२० मार्च से १९ अप्रैल	पितोनिया, बेरूज
२० अप्रैल से १९ मई	इन तिथियों में जन्मे हुए प्रायः पाश्चात्य हीरा पहनते हैं परन्तु विशेषतः अमेरिकन रशियन, इटैलियन तथा यहूदी नीलम को पसन्द करते हैं।
२० मई से २० जून	हकीक
२१ जून से २० जुलाई	पन्ना
२१ जुलाई से २१ अगस्त	माणिक्य, फिरोजा, सुलेमानी
२२ अगस्त से २२ सितम्बर	संगरात, जबरजद
२३ सितम्बर से २२ अक्टूबर	नीलम, विकल्प सुनेला
२३ अक्टूबर से २२ नवम्बर	उपल, बैरूज
२३ नवम्बर से २० दिसम्बर	सुनेला
२१ दिसम्बर से १९ जनवरी	फिरोजा

राशि व ग्रह के अनुसार रत्न–धारण–विधान

△

राशि	स्वामी ग्रह	अनुकूल रत्न	अपेक्षित वजन
मेष	मंगल	मूंगा	छः कैरट
वृष	शुक्र	हीरा	चार कैरट
मिथुन	बुध	पन्ना	पाँच कैरट
कर्क	चन्द्रमा	मोती	पाँच कैरट

राशि	स्वामी ग्रह	अनुकूल रत्न	अपेक्षित वजन
सिंह	सूर्य	माणिक्य	सवा दो कैरट
कन्या	बुध	पन्ना	छः कैरट
तुला	शुक्र	हीरा	तीन कैरट
वृश्चिक	मंगल	मूँगा	आठ कैरट
धनु	वृहस्पति	पुखराज	ग्यारह कैरट
मकर	शनि	नीलम	नौ कैरट
कुम्भ	शनि	नीलम	नौ कैरट
मीन	वृहस्पति	पुखराज	ग्यारह कैरेट
ग्रह	राहु	गोमेद	ग्यारह कैरेट
ग्रह	केतु	लहसुनिया	आठ कैरेट

रत्न–उपयोग : फल : विधि

△

भारत में भिन्न भिन्न ग्रहों की दशा में भिन्न-भिन्न रत्नों को धारण करने का विधान है। इस सम्बन्ध में निम्नांकित बातें विशेष रूप से ज्ञातव्य है:—

* माणिक (मानिक)

कौन धारण करे

माणिक्य सूर्य का रत्न है। यदि किसी के जन्म के समय सूर्य अनिष्ट-कारी हो तो उसे माणिक्य धारण करना चाहिए।

धारण विधि

कम से कम ३ रत्ती का माणिक्य होना चाहिए। अपने जन्म मास की १, ९, १०, तथा २८ वीं तारीख को या रविवार को प्रातः काल ग्रीवा, भुजा, तर्जनी या अनामिका अंगुली में सोने में जड़वाकर इसे धारण किया जाता है। लालड़ी (सूर्यमणि) को भी चाँदी में जड़वा कर रविवार को मध्याह्न में धारण किया जाता है। इसे धारण करने का निम्नांकित मंत्र है।

१. ॐ घृणिःसूर्याय नमः इसका सात, हजार जाप कर अंगूठी धारण करें।
२. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय स्वाहा, इसकी एक माला फेर कर अंगूठी धारण करें।

* मोती

कौन धारण करे

मोती चन्द्रमा का रत्न है। यदि किसी का जन्म के समय चन्द्रमा निर्बल है तो उसे मोती धारण करना चाहिए।

धारण विधि

२, ४, ६, ११ रत्ती का मोती होना चाहिए। ७ या ८ रत्ती का मोती नहीं पहनना चाहिए। मोती को चांदी में जड़वाकर शुक्ल पक्ष सोमवार को सन्ध्या समय ग्रीवा, भुजा या कनिष्ठा अंगुली में धारण करना चाहिए। इसे धारण करने का निम्नांकित मंत्र है—

१. ॐ सों सोमाय नमः, इसका ग्यारह हजार जाप कर अंगूठी धारण करें।
२. ॐ स्त्रें स्त्रीं स्त्रौं सः सोमाय स्वाहा, इसकी एक माला फेर कर अंगूठी धारण करें।

* मूँगा

कौन धारण करे

मूंगा मंगल ग्रह का रत्न है अतः मंगल ग्रह की दशा में इसे धारण करना चाहिए।

धारण विधि

जन्म कुण्डली में मंगल ग्रह ४, ८ या १२ वें स्थान पर हों तो ८ रत्ती का मूंगा सोने की अंगूठी में पहनना चाहिए। चन्द्र मंगल के योग में चाँदी में मूंगा जड़वाकर पहनना चाहिए। ३,११ या १२ रत्ती का मूंगा पहनना चाहिए। ५ या १४ रत्ती का मूंगा कभी नहीं होना चाहिए। मगलवार के दिन सूर्योदय से १ घण्टा पश्चात् ग्रीवा, भुजा या अंगुली में इसे धारण करना चाहिए। इसे धारण करने का निम्नांकित मंत्र है–

१. ॐ अंगारकाय नमः, इसका दस हजार जाप कर अंगूठी धारण करें।

२. ॐ क्रैं क्रीं क्रौं सः मंगलाय स्वाहा, इसकी एक माला फेर कर अंगूठी धारण करें।

* पन्ना

कौन धारण करे

पन्ना बुध ग्रह का रत्न है। अतः बुध की दशा में ५ कैरट का पन्ना धारण करना चाहिए।

धारण विधि

पन्ने को स्वर्ण में जड़वाकर अपने जन्म-मास की ५, १४ या २३ तारीख को अथवा बुधवार के दिन सूर्योदय के दो घण्टे पश्चात् ग्रीवा, भुजा या कनिष्ठा अंगुली में धारण करना चाहिए। इसे धारण करने का निम्नांकित मंत्र है–

१. ॐ बुं बुधाय नमः, इसका नौ हजार जाप कर अंगूठी धारण करें।

२. ॐ ह्रें ह्रीं ह्रौं सः बुधाय स्वाहा, इसकी एक माला फेर कर अंगूठी धारण करें।

* पुखराज

कौन धारण करे

पुखराज गुरू ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। गुरू की दशा में पुखराज धारण करना चाहिए।

धारण विधि

७ या १२ कैरट का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में जड़वा कर गुरुवार को सायं सूर्यास्त से एक घण्टे पूर्व ग्रीवा, भुजा या तीसरी अंगुली अनामिका या तर्जनी में धारण करना चाहिए। ६, ११ या १५ रत्ती का पुखराज कभी धारण नहीं करना चाहिए। इसे धारण करने का निम्नांकित मंत्र है–

१. ॐ बृं बृहस्पतये नमः, इसका उन्नीस हजार जाप कर अंगूठी धारण करें।

२. रं यं ह्रीं एैं नमः, इसकी एक माला फेर कर अंगूठी धारण करें।

* हीरा

कौन धारण करे

हीरा शुक्र ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। शुक्र की दशा में हीरा धारण करना चाहिए।

धारण विधि

२ या ५ सेन्ट या डेढ़ रत्ती का हीरा होना चाहिए। प्लैटिनम या चांदी की अंगूठी में जड़वाकर शुक्रवार को प्रातः ग्रीवा, भुजा या कनिष्ठा अंगुली में इसे धारण करना चाहिए। इसे धारण करने का निम्नांकित मंत्र है।

१. ॐ शुं शुक्राय नमः, इसका सोलह हजार जाप कर अंगूठी धारण करें।

२. ॐ ह्रैं ह्रीं ह्रौं सः शुक्राय स्वाहा। इसकी एक माला फेर कर अंगूठी धारण करें।

* नीलम

कौन धारण करे

नीलम शनि ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। शनि की दशा में नीलम धारण करना चाहिए।

धारण विधि

५ या ७ रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए। शनिवार को सूर्यास्त से दो घंटे पहले से ४० मिनट बाद तक इसे एक नीले कपड़े में बांधकर भुजा पर धारण कर तीन दिन परीक्षा करनी चाहिए। यदि अनुकूल सिद्ध हो तो पंच धातु में जड़वा कर मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। हृदय पर धारण करने से यह उसे शक्ति प्रदान करता है। इसे धारण करने का निम्नांकित मंत्र है।

१. ॐ शं शनैश्चराय नमः, इसका तेईस हजार जाप कर अंगूठी धारण करें।

२. ॐ शौं शीं शौं सः शनैश्चराय स्वाहा। इसकी एक माला फेर कर अंगूठी धारण करें।

* गोमेद

कौन धारण करे

गोमेद राहु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। राहु की दशा में इसको धारण करने से लाभ होता है।

धारण विधि

गोमेद ६, ११ या १३ कैरेट का होना चाहिए ७, १० या १६ रत्ती का कभी नहीं होना चाहिए। इसे चांदी में जड़वाकर सायंकाल

के अनन्तर दो घण्टे रात तक मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। इसे धारण करने का निम्नांकित मंत्र है।

१ ॐ रां राहुवे, नमः इसका अठारह हजार जाप कर अंगूठी धारण करे।

२. ॐ च्छौं च्छ्रौं च्छौं सः राहुवे स्वाहा। इसकी एक माला फेर कर अंगूठी धारण करें।

* लहसुनिया

कौन धारण करे

लहसुनिया केतु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। केतु की दशा में इसे धारण करना लाभप्रद है।

धारण विधिः

३, ५ या ७ कैरेट का लहसुनिया मध्यमा या कनिष्ठा अंगुली में चांदी में जड़वाकर अर्ध रात्रि में धारण करना चाहिए। १, २, ४, ११ या १३ रत्ती का निषिद्ध है।

इसे धारण करने का मंत्र है।

१. ॐ के केतवे नमः, इसका सत्रह हजार जाप कर अंगूठी धारण करें।

२. ॐ फैं फीं फौं सः केतुभ्य स्वाहा, इसकी एक माला फेर कर अंगूठी धारण करें।

कुछ रत्नों के साथ अन्य ग्रहों के रत्न धारण करने का निषेध है जो इस प्रकार बताया गया है।

१. माणिक्य के साथ हीरा, नीलम, गोमेद और लहसुनिया न पहनें।

२. मोती के साथ हीरा, पन्ना, नीलम, गोमेद और लहसुनिया न पहनें।

३. मूँगे के साथ पन्ना, हीरा, गोमेद ओर लहसुनिया न पहनें।

४. पन्ने के साथ मूंगा और मोती न पहनें।

५. पुखराज के साथ हीरा, नीलम, गोमेद और लहसुनिया न पहनें।

६. हीरा के साथ माणिक्य, मोती, मूंगा और पीला पुखराज न पहनें।

७. नीलम के साथ माणिक्य, मोती, पीला पुखराज और मूंगा न पहनें।

८. गोमेद के साथ माणिक्य, मूंगा और पुखराज न पहनें।

९. लहसुनिया के साथ माणिक्य, मूंगा, मोती ओर पुखराज न पहनें।

रत्नों, संगों (पाषाणों) के उपयोग, लाभ, हानि आदि के सम्बन्ध में निम्नांकित बातें ज्ञातव्य हैं :—

गुदड़ी : इसे मुसलमान फकीर धारण करते हैं।

हदीद : इसे मुसलमान तरबीह बनाकर जपते हैं।

फात जहर : विष के घाव पर घिसकर लगाने से घाव सूख जाता है।

रातनुआ : रात्रि में ज्वर आता हो तो गले में बांधने से आराम होता है।

फीरोजा : यह विष के प्रभाव को दूर करता है। इसको कोई भेंट के रूप में प्रदान करे और फिर इसको धारण करने से यह अपना गुण करता है। इसके धारण करने वाले के खिलाफ कोई षड्यंत्र करता है तो यह अपना रंग बदल कर सावधान कर देता है, नफरत को शान्त करता है, सिर दर्द दूर करता है किसी भी रोग के आने के पहले रंग बदल देता है। नजर नहीं लगती, मान और सफलता मिलती है।

पितोनिया : शरीर में पित्ती निकलने पर इसको रगड़ने से पित्ती शान्त हो जाती है। इसको धारण करने से मान, सम्मान, मर्यादा, हिम्मत और बुद्धि प्राप्त होती है।

झरना : इसके बनाये गये कटोरे में पानी भर देने पर पानी झरता रहता है व फिल्टर से जाता है।

पारस : यह कृष्ण वर्ण का पत्थर होता है। कहते हैं इस पत्थर के साथ लोहे का स्पर्श होने से लोहा स्वर्ण में परिणत हो जाता है।

गज मुक्ता : यह कंठ माल का रोग नष्ट करता है।

मीन मुक्ता : ऐसी किंवदन्ती है कि इस मोती को मुँह में रखकर पानी में प्रवेश करने से पानी के भीतर की सम्पूर्ण वस्तुएँ दिखाई देती हैं।

रक्तमणि (याकूत) : इसको पहनने से चोरों का भय नहीं रहता, व्यापार में लाभ तथा मानसिक चिन्ता से मुक्ति मिलती है।

मूँगा : इसको पहनने वाले व्यक्ति को जब कोई रोग होने वाला हो तब इसका रंग फीका पड़ जाता है और उसके स्वस्थ होने पर उसका रंग फिर वैसा ही हो जाता है।

सुरमा : आँख के लिए इसका अंजन बनता है। इसके टुकड़ों को नीम के वृक्ष की जड़ में खड्डा करके दो तीन वर्ष तक रखने के अनन्तर यदि सुरमा बनाया जाय तो अत्युत्तम होता है।

नीलम : यह शनिग्रह का रत्न है। इसे धारण करने से साधारण मनुष्य तो क्या, उच्च श्रेणी के मनुष्य भी उससे भय खाते हैं।

पन्ना : यूनानी बादशाह पन्नों के प्यालों में शराब पिया करते थे क्योंकि शराब में विष मिला होने से वह पन्ने के प्याले में अपना रंग बदल देती है।

सीजरी : इसके हकीक के समान अनेक प्रकार के रंग होते हैं, किन्तु इस पत्थर में, जब वह मूलत: बनने की स्थिति में होता है, पक्षी आदि के चिह्न उनकी छाया पड़ने के कारण आ जाते हैं, जो स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं। यह पत्थर होसंगाबाद जिले के टिमरनी गाँव में नर्मदा की सहायक नदी में पाया जाता है। इसमें बड़े पत्थर आठ-दस इंच तक के मिलते हैं। भगवान श्रीकृष्ण, भगवान महावीर, भगवान बुद्ध, लोकमान्य तिलक, देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद आदि महापुरुषों से मिलते-जुलते बिम्ब भी इन पत्थरों में पाये जाते हैं। प्रकृति की एक अद्भुत लीला इन पत्थरों में दृष्टिगोचर होती है।

संगे सिमाक : इसकी खरल सबसे बढ़िया होती है।

हकीक : संगे सिमाक के बाद हकीक की खरल अच्छी होती है। इससे खिलौने व ओपनी भी बनती है। इसको धारण करने से भयानक स्वप्न नहीं आते, निद्रा रोग दूर होता है। सिंहनी के बाल से बांधकर गले में पहना जावे तो हर जगह मान मर्यादा बढ़ती है। वाक्पटुता प्रदान करता है। लोभी व लालची नहीं होता, प्रेत आत्मायें कष्ट नहीं देती हैं। सन्धिवात, ग्रंथिवात और गठिया में लाभदायक है।

डूर : इसकी भी खरल बनती है।

ढ़ेढ़ी : इसके कटोरे बनते हैं।

जहर मोहरा : इसके खरल व प्याले आदि बनते हैं। इसकी खरल में हल्दी घिसी जाए तो उसका रंग सुर्ख हो जाता है। इस पत्थरमें

धागा बांधकर आग में जलाया जाये तो कहते हैं कि धागा नहीं जलता।

चन्द्रकान्त : इसके धारण करने से प्रेम में सफलता मिलती है। इसको मुंह में रखने से यह मालूम हो जाता है कि उस मनुष्य को कौन सा कार्य करना चाहिए, और कौन सा नहीं।

लहसुनिया : इसको धारण करने से भयानक स्वप्न नहीं आते। सट्टा, जुआ लाटरी व घुड़दौड़ में सफलता मिलती है। चाँदी में धारण करना चाहिए।

टूर्मेलिन : अभिनेता, लेखक, कलाकार के लिए यह रत्न विशेष रूप से सौभाग्य लाने वाला सिद्ध हुआ है। हरे रंग का टूर्मेलिन पढ़ाई में कमजोर या जिनको मानसिक कष्ट रहता है उनके लिए बहुत ही अच्छा है।

जेड : वाक्-पटुता बढ़ाता है, दुर्घटना नहीं होती, जादू टोने से हानि नहीं होती। खेल के मैदान व घुड़-दौड़ में सफलता मिलती है।

काला गोमेदक : यह सन्यासी व महात्माओं का रत्न है। इसको धारण करने से विषय भोग की इच्छा नहीं रहती, आत्मिक शक्तिप्रदान करता है। जिसके जन्म काल में शनि अशुभ हैं उसको यह हर तरह से अशुभ कारक है।

बिल्लोर : जापान का प्रत्येक गृहस्थ अपने पवित्र गृह में बिल्लोर का बना एक गोला रखता है। कहते हैं कि इस पर ध्यान लगाने वाले व्यक्ति की जिज्ञासा—अभिलाषा सुनकर वह पत्थर उत्तर देता है तथा ध्यान लगाने वाले की आत्मा उस उत्तर को समझ लेती है।

लाजवर्त : मिरगी, प्लीहा, चर्म रोग तथा रक्त दोष वाले रोगियों के लिए इससे बढ़कर कोई वस्तु नहीं है। इसकी अंगूठी पहनने से रोगी को आशातीत लाभ मिलता है।

दाने फरंग : गुर्दे के दर्द वाले रोगियों के लिए यह राम बाण प्रभावकारी है।

सुनेला : इसे धारण करने से रात में भूत प्रेत का भय नहीं रहता, भयानक स्वप्न नहीं दिखाई देते। दिन में उदासी दूर होती है। कविता या लेख लिखने की तरंग उठती है।

संगरात : इसे धारण करने से विवाहित जीवन आनन्दमय बनता है। यह प्लेग और विषैले कीड़ों के काटने से बचाता है, एवं प्रसूता की पीड़ा को घटाता है।

ओपल : इसको अंगूठी में पहनने से बुद्धि की मलिनता कम हो जाती है।

जबरजद : जब चन्द्रमा मीन राशि पर हों तब जबरजद पर घोड़े की शक्ल खुदवा कर अंगूठी में पहनने से पागलपन दूर होता है।

यशव, अकीक, जबरजद

इनको गले में पहनाने से नजर नहीं लगती।

तंत्र में अंगूठियां और कंकण

बहुत से लोग अंगूठियां व कंकण भी कई तरह के पहनते हैं। अष्ट धातु, पंच धातु, सोना, चाँदी, ताँबा व लोहा की बनी अंगूठी व कंकण आदि बनते हैं। वलय कंकण, वीर कंकण, कवच आदि का निर्देश तंत्र शास्त्रों में प्राप्त है। ये लोहा, तांबा, अष्ट धातु, सोना व चांदी के बनते हैं। इन्हें मंत्रित कर पहनने से भूत-प्रेत बाधा का निवारण व शत्रुओं द्वारा किए तंत्र प्रयोगों से रक्षा होती है। इन्हीं के आधार पर यंत्र बनते हैं, जिनमें भोजपत्र पर यंत्र लिखकर पहनने से गृह शान्ति होती है। नवग्रह पीड़ा निवारण यंत्र के सम्बन्ध में पूरा विवरण मेरी पुस्तक "मंत्र विद्या" में देखना चाहिये।

भारत में जन्म मास के अनुसार रत्न पहनने का प्रचलन निम्न रूप से है—

चैत : कपिशमणि (Jasper)

वैशाख : हीरा (Diamond)

ज्येष्ठ : पन्ना (Emerald)

आषाढ़ : मूंगा (Coral)

श्रावण : माणिक्य (Ruby)

भाद्रपद : जबरजद (Peridot), हरितपोल (Olivine)

आश्विन : नीलम (Sapphire)

कार्तिक : उपल (Opal)

मार्गशीर्ष : पुखराज (Topaz)

पौष : फिरोजा (Turquoise)

माघ : तामड़ा (Garmet)

फाल्गुन : कटैला (Amethyst)

मणिमाला ग्रन्थ (शौरीन्द्र मोहन ठाकुर) में निम्न रूप से ग्रहों के अनुसार रत्न धारण का विधान बताया गया है।

सूर्य : लहसुनिया, चन्द्र : नीला, मंगल : माणिक

बुध : पद्मराग, गुरु : मोती, शुक्र : हीरा

शनि : महानील, राहु : गोमेद, केतु : पन्ना

किस अंगुली में किस ग्रह का रत्न धारण करना चाहिए उसके लिए निम्न रूप से बताया गया है : —

रवि व मंगल के लिए

दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

चन्द्र व बुध के लिए

दाहिने हाथ की कनिष्ठा अगुली में धारण करना चाहिए।

गुरु, शुक्र व राहु के लिए

दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि के लिए

दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

केतु के लिए

दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली में धारण करना चाहिए।

भारतीय मतानुसार किस ग्रह से कौन सा रत्न बन्धुत्व रखता है वह निम्न प्रकार से है :-

रवि : चूनी व लाल प्रवाल के साथ बन्धुत्व रखता है।

चन्द्र : चन्द्रकान्त मणि व मुक्ता के साथ बन्धुत्व रखता है।

मंगल : लाल प्रवाल के साथ बन्धुत्व रखता है।

बुध : पन्ना या श्वेत प्रवाल के साथ बन्धुत्व रखता है।

गुरु : हल्दिया पुखराज के साथ बन्धुत्व रखता है।

शुक्र : हीरा या स्फटिक के साथ बन्धुत्व रखता है।

शनि : नीला के साथ बन्धुत्व रखता है।

राहु : गोमेद के साथ बन्धुत्व रखता है।

केतु : लहसुनिया के साथ बन्धुत्व रखता है।

पाराशर ने कहा है :—

रवि : चूनी के साथ बन्धुत्व रखता है।

चन्द्र : चन्द्रकान्त मणि के साथ बन्धुत्व रखता है।

मंगल : लाल प्रवाल के साथ बन्धुत्व रखता है।

बुध : श्वेत प्रवाल के साथ बन्धुत्व रखता है।

गुरु : मुक्ता के साथ बन्धुत्व रखता है।

शुक्र : हीरा के साथ बन्धुत्व रखता है।

शनि : नीला के साथ बन्धुत्व रखता है।

राहु : गोमेद के साथ बन्धुत्व रखता है।

केतु : हल्दिया पुखराज के साथ बन्धुत्व रखता है।

गर्ग मुनि कहते हैं :-

रवि : वैड्र्य व प्रवाल के साथ बन्धुत्व रखता है।

चन्द्र : वैड्र्य व नीलकान्त के साथ बन्धुत्व रखता है।

मंगल : माणिक्य के साथ बन्धुत्व रखता है।

बुध : पुष्पराग के साथ बन्धुत्व रखता है।

गुरु : मुक्ता के साथ बन्धुत्व रखता है।

शुक्र : हीरा के साथ बन्धुत्व रखता है।

शनि : परेश के साथ बन्धुत्व रखता है।

भारतीय शास्त्रों में अलग-अलग राशियों के व्यक्तियों व विभिन्न रोगों में रत्न धारण का विधान निम्न रूप से बताया गया है :-

नारद संहिता में कहा गया है कि

मस्तक व मुखमण्डल के रोगों के लिए : चूनी धारण करनी चाहिए।

स्कन्ध, ग्रीवा, कण्ठ व कान के रोगों के लिए : हीरा धारण करना चाहिए।

बाहु व स्कन्ध के रोगों के लिए : पन्ना धारण करना चाहिए।

स्तन व पाकस्थली के रोगों के लिए : मुक्ता धारण करना चाहिए।

हृदय रोग के लिए : श्वेत प्रवाल धारण करना चाहिए।

पेट व जरायु के रोग लिए : गोमेद धारण करना चाहिए।

पेशाब व वीर्य रोगों के लिए : हीरा या नीला धारण करना चाहिए।

यौन व्याधि और वन्ध्या दोष के लिए : लाल प्रवाल को धारण करना चाहिए।

नितम्ब रोग के लिए : हल्दिया पुखराज को धारण करना चाहिए।

जातक संहिता में प्रेम व विवाह के लिए निम्न रूप से बताया गया है :-

मेष राशि का जातक : लाल प्रवाल व्यवहार करें।

वृष राशि का जातक : पन्ना व्यवहार करें।

मिथुन राशि का जातक : पन्ना व्यवहार करें।

कर्क राशि का जातक : चन्द्रकान्त मणि व्यवहार करें।

सिंह राशि का जातक : चूनी का व्यवहार करें।

कन्या राशि का जातक : पन्ना या गोमेद व्यवहार करें।

तुला राशि का जातक : हीरा व्यवहार करें।

वृश्चिक राशि का जातक : प्रवाल व्यवहार करें।

धनु राशि का जातक : हल्दिया पुखराज व्यवहार करें।

मकर राशि का जातक : नीला व्यवहार करें।

कुम्भ राशि का जातक : नीला व्यवहार करें।

मीन राशि का जातक : लहसुनिया व्यवहार करें।

विभिन्न रोगों में जो रत्न धारण का विवरण मिलता है वह (रोग नाम: रत्न) के रूप में निम्नलिखित है :–

अजीर्ण : पीला पुखराज, अतिरज : नीला प्रवाल, अंत्र प्रदाह : पुखराज
अर्स : लाल प्रवाल, नीला व गोमेद, आमाशय : लाल प्रवाल
उपदंश : गोमेद, हैजा : गोमेद, गलगण्ड : पन्ना, चक्षु रोग : लाल प्रवाल
पक्षाघात : नीला, प्रमेह : गोमेद, पित्तपथरी : लाल प्रवाल
फोड़ा : गोमेद, वात : नीला या प्रवाल, अन्डकोष पीड़ा : लहसुनिया
अनिद्रा : मुक्ता, अस्थिपीड़ा : नीला या मानिक, आमवात : पुखराज
इन्फ्लुएंजा : माणिक, उन्माद : सूर्यकान्त, वर्णरोग : श्वेत प्रवाल
क्रिमि : गोमेद, जिह्वा पीड़ा : श्वेत प्रवाल, दंत रोग : मुक्ता
बहुमूत्र : हीरा, मृगी : नीला, मानसिक पीड़ा : मुक्ता या चन्द्रकान्त
विषाक्त कीट दशन : लहसुनिया, मेरुदण्ड पीड़ा : पद्ममणि,
रक्त स्वल्पता : लहसुनिया, शुक्र क्षरण : हीरा, श्वेत प्रदर : पुखराज
मस्तक पीड़ा : माणिक्य, शूल वेदना : गोमेद, यक्ष्मा : श्वेत प्रवाल
कैंसर : मुक्ता, पुखराज या नीला, धनुष टंकार : नीला, बेरी बेरी : हीरा
फाइलेरिया : गोमेद, अल्सर : पन्ना या हल्दिया पुखराज, ट्यूमर : प्रवाल
गर्भाशय व्याधि : हीरा हार्निया : नीला या चूनी,
मूत्र स्थली रोग : चन्द्रकान्त या पुखराज, गोल ब्लडर : चूनी,
गठिया : नीला, मूर्छा, स्नायु दौर्बल्य : चूनी,
मस्तक, दांत, पाद व चक्षु रोग : हल्दिया पुखराज
ग्रन्थी, कैंसर व रक्त शून्यता : हीरा,
रक्तचाप, अनिद्रा या टौंसिल : पन्ना या श्वेत प्रवाल
दुर्घटना, कुष्ठ या चर्म रोग : प्रवाल,
अतिनिद्रा, यौन व्याधि, नेत्र रोग, मस्तक रोग : चूनी
अर्श, मूत्र रोग, दाद व टौंसिल : चन्द्रकान्त मुक्ता या गोमेद
खांसी : पन्ना, चेचक : लहसुनिया, पोता बढ़ना : लहसुनिया,
हांपनि : श्वेत प्रवाल, यौवन वृद्धि, सम्भोग सुख : चूनी,
मोटापा : नीला, हीरा, स्फटिक या प्रवाल,
मस्तक पीड़ा, अतिक्रोध : चन्द्रकान्त मणि

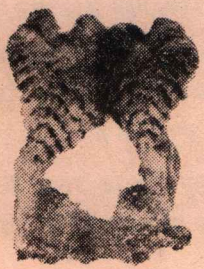

वश्य-तन्त्र

जिसके द्वारा अन्य व्यक्ति को वश
में किया जा सके, वह व्यक्ति
जैसा कहे वैसा करे—उसे
वश्य-कर्म कहते हैं।

सर्व जन वशीकरण तंत्र

△

मंत्र : ॐ सर्व लोक वशं कराय कुरू-कुरू स्वाहा ।

* ॐ नमो भगवते ज्वालाग्नी शय्यादिष्ठा विनाय स्वाहा ।
* ॐ नमो भास्कराय जगदात्मने (अमुकं) वशमानय कार्यं कुरू-कुरू पद स्वाहा ।
* ॐ नमो भगवति मातंगेश्वरी सर्व मुख रंजनी सर्वेषां महामाये मातंगे कुमारिके नन्द नन्द जिह्वे सर्व लोकं वश्य करि स्वाहा ।
* ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं, ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रीं णमों लोए सव्वसाहूणं, ॐ ह्रीं णमोणाणस्स, ॐ ह्रीं णमो दंसणस्स, अमुकं मम वश्यं कुरू कुरू स्वाहा ।

विधि : शुभ दिन व शुभ लग्न में उत्तर की ओर मुंह करके, सूर्योदय के बाद शुद्ध होकर मूंगे की माला से जाप प्रारंभ करे । १२५०० जाप कर मंत्र सिद्ध कर ले ।

प्रयोग : उपरोक्त मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र को सिद्धकर, फिर सर्व जन वशीकरण तंत्र की किसी भी वस्तु को प्रयोग में लेने से पहले २१ बार अभिमंत्रित कर फिर प्रयोग में लें ।

सर्व जन वशीकरण तिलक :

* बिल्व पत्र तथा बिजौरा को बकरी के दूध में घिसकर तिलक करे तो वशीकरण होता है ।
* ग्वारपाठा के मूल में भांग के बीज पीसकर तिलक करे तो वशीकरण होता है ।
* अपामार्ग की मूल कपिला गाय या बकरी के दूध में पीसकर तिलक करे तो वशीकरण होता है ।
* सिन्दूर तथा सफेद बच पान के रस में घिसकर तिलक करे तो वशीकरण होता है ।
* काला भांगरा, श्वेत लजवन्ती व सहदेवी मूल इन सबको सम भाग पीसकर तिलक करे तो वशीकरण होता है ।

* गूलर की मूल घिसकर तिलक करे तो वशीकरण होता है।

* शिलाजीत, तमाखू, केसर व गोरोचन, इन सबको सम भाग पीसकर तिलक करे तो वशीकरण होता है।

* मूस्ता की मूल को चन्दन के साथ घिसकर तिलक करे तो वशीकरण होता है।

* पुष्य नक्षत्र में इन्द्रायण की मूल, पींपर, सोंठ, काली मिर्च इन सबको समभाग गो दुग्ध में पीसकर गोली बना ले फिर चन्दन में घिसकर तिलक करे तो वशीकरण होता है।

* मैनसील, गोरोचन व मूस्ता की मूल पानी में घिसकर तिलक करे, जिसका नाम लेकर उसके सामने जाए तो वशीकरण होता है।

* रजस्वला स्त्री के रक्त में गोरोचन मिलाकर मस्तक पर तिलक करे तो वशीकरण होता है।

* काक विष्ठा और गो दंत दोनों पीसकर तिलक करे तो वशीकरण होता है।

* अपराजिता का मूल पीसकर, रूई की बत्ती में लपेटकर, काजल पारकर तिलक करे तो वशीकरण होता है।

* रविवारी अमावस्या को घुग्घू का कलेजा, मैनफल, अश्वगंधा, गोरोचन, केसर, चमगादड़ की विष्ठा, भैंसे का सींग और कूठ इन सबको समभाग लेकर बारीक पीसकर गो-मूत्र में गोली बनाए, जरूरत पर पानी में घिसकर तिलक करे, जहाँ जावे देखने वाले वश में होते हैं।

* तगर, कूठ, हरिताल और केसर इन सबको सम भाग लेकर अनामिका अंगुली के रक्त में पीसकर तिलक कर जिसके सामने जावे, वश में होता है।

* अपामार्ग, भांगरा, लजवन्ती और सहदेई इनको समभाग लेकर तिलक करे तो वशीकरण होता है।

* मनुष्य की खोपड़ी लाकर उसमें धतूरे के बीज रखे, फिर शहद व कपूर मिलाकर पीसे फिर तिलक करे तो वशीकरण होता है।

* बड़ के वृक्ष की मूल पानी के साथ घिसकर उसमें कण्डो (छाणा) की भस्म मिलाकर तिलक करे तो वशीकरण होता है।

* अपामार्ग के बीजों को बकरी के दूध में पीसकर तिलक करे तो वशीकरण होता है।

* अश्वगंधा, हरताल, सिन्दूर को केले के रस में पीसकर तिलक करे तो वशीकरण होता है।
* श्वेतार्क को छाया में सुखाकर कपिला गाय के दूध में घिसकर तिलक करे तो वशीकरण होता है।
* पान, तुलसी के पत्ते कपिला गाय के दूध में पीसकर तिलक करे तो वशीकरण होता है।
* गोरोचन व सहदेवी को घिसकर तिलक करे तो वशीकरण होता है।
* केशर, सोंठ, कूठ, हरताल, मैनसील व अनामिका अंगुली का रक्त मिलाकर तिलक करे तो वशीकरण होता है।
* श्वेत गुंजा को छाया में सुखाकर कपिला गाय के दूध में पीसकर तिलक करे तो वशीकरण होता है।

सर्व जन वशीकरण मूल

* पुष्य नक्षत्र में पुनर्नवा की मूल लाकर दांई भुजा में बांधने से सब लोग वशीभूत होते हैं।
* पुष्य या भरणी नक्षत्र में सुदर्शन की मूल लाकर दांई भुजा में बांधने से सब लोग वशीभूत होते हैं।
* मुस्ता की मूल को मुंह में रखकर जिसके नाम का उच्चारण किया जाय वह वशीभूत होता है।

सर्व जन वशीकरण चूर्ण:

* गूलर वृक्ष की मूल का चूर्ण कर जिस किसी को पान में खिला दे वही वशीभूत हो जायगा।
* ब्रह्मदण्डी, बच व कूठ का चूर्ण, रविवार कृतयोग में पान में डालकर खिलाए तो वशीकरण होता है।

सर्व जन वशीकरण लेप

* पान व उसकी मूल का शरीर पर लेप करे तो वशीकरण होता है।

सर्व जन वशीकरण सुपारी :

* एक सुपारी लाए। ग्रहण के समय नाभि तक जल में खड़ा होकर "पीर मैं नाथ पीर तूं नाथ,जिसको खिलाऊँ, उसको वश करना, फुरोमंत्र ईश्वर वाचा"

इस मंत्र को सात बार बोलकर वह सुपारी निगल जाय। दूसरे दिन-जब वह सुपारी मल में निकले, उसको दूध में धोकर रख ले। इस सुपारी का एक टुकड़ा भी जिस किसी को खिला दिया जाएगा वही वशीभूत हो जायेगा।

सर्व जन वशीकरण पत्र :

* भोज पत्र पर गोरोचन, केसर व महावर से जिस किसी का नाम लिखकर रख दें वह वश में रहेगा।

* हस्त नक्षत्र में पलाश का पत्ता हाथ में बांधने से सर्व वश में होते हैं।

* पुष्य नक्षत्र में झाड़ी का पत्ता-साफे, पाग व टोपी में रखकर जहाँ जाय सर्व वश में हों।

* भोजपत्र पर शत्रु का नाम लिखकर, शहद में डुबोकर रखने से वह वशीभूत हो जाता है।

* भोज पत्र पर निम्न यंत्र साध्य व्यक्ति का नाम सहित लिखकर घृत में रख दें तो वह व्यक्ति वश में रहेगा।

यंत्र :

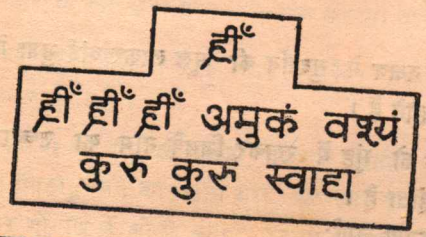

सर्व जन वशीकरण चावल

*रविवार के दिन मनुष्य की खोपड़ी लाकर उसमें चावल भरकर-अग्नि पर पकाए। पक जाने पर उन चावलों को सुखाकर रख ले। जिस व्यक्ति को वशीभूत करना हो उसे एक रत्ती भर चावल खिला देने पर वह सदा के लिये दास बन जाता है।

सर्व जन वशीकरण काजल

* गोरोचन, गजकेसर, मैनसिल समभाग लेकर पीसकर आंख में अंजन करे तो देखने वाला वशीभूत होता है।

* तगर, कूठ, और तालीश पत्र पीसकर रेशमी वस्त्र में लपेट कर बत्ती बनाए फिर उस बत्ती को सरसों के तेल के दीपक में डालकर जलाए। मनुष्य की

खोपड़ी पर काजल पारे। यह क्रिया रवि पुष्य नक्षत्र जब अमावस्या तिथि हो तब अर्ध रात्रि को करे। उस काजल को आंख में लगाकर जिसकी ओर दृष्टिपात करे वही वशीभूत हो जायेगा।

* तमाखू, सुरमा, कमल, बीज, चन्दन, प्रियंगु, व गोरोचन इनको पीसकर आंख में अंजन करे तो वशीकरण होता है।

* दीपावली के दिन कपिला गाय के घृत का दीपक जलाकर काजल पारे व उसका अंजन करे तो वशीकरण होता है।

* चन्द्रग्रहण में श्वेत सरपंखा की मूल लाकर पानी में घिसकर आँख में अंजन करे तो देखनेवाले सभी वशीभूत होते हैं।

* गिद्ध व काले रंग के उल्लू की दोनों आखें सरसों के तेल में पीसकर रूई की बत्ती उस तेल में डालकर काजल पारे। काजल को मक्खन में मिलाकर आंख में अंजन करे तो देखने वाले सभी वशीभूत होते हैं।

* भृंगराज पीसकर अपना शुक्र मिलाकर अंजन करे तो सभी वशीभूत होते हैं।

सर्वजन वशीकरण धूप

* मेढासिंगी, बच, राल, खस, चन्दन और छोटी इलायची सब समभाग कूट पीसकर छान ले। इसका पहनने के वस्त्र पर धुंआ दे तो स्त्री वश में होती है. राज्याधिकारी प्रसन्न होता है, क्रय-विक्रय में लाभ होता है।

* पुष्य नक्षत्र रविवार को धतूरा का पंचांग लाए, जीरा व गुग्गुल मिलाए, भैंस के रक्त में गोली करे फिर इसकी धूनी जिसको दे वह वश में हो जाएगा।

* छछुंदर व सर्प का सिर और बिच्छू का कांटा इन सबको पीसकर धूप बनाए, फिर जिसको इसकी धूनी दे वह वश में हो।

सर्व जन वशीकरण बुरकी

* अश्लेषा नक्षत्र में अर्जुन वृक्ष की छाल लाए, अजा मूत्र में घिसकर चूर्ण कर ले, उस चूर्ण को जिसके मस्तक पर डाला जाएगा वही वशीभूत होगा।

* मयूर का दांया व बांया पंख, काकजंघा व पोहकर मूल इन सबको पीसकर चूर्ण कर जिस पर डाले वह वशीभूत हो जायेगा।

* शनिवार धनिष्ठा नक्षत्र में बबूल की मूल लाकर चूर्ण कर जिसके मस्तक पर डाले वही वशीभूत हो जायेगा।

* चिता की भस्म, कूठ, बच, तगर और केसर पीसकर चूर्ण कर स्त्री के मस्तक व पुरुष के पैरों पर डाले तो वह वशीभूत हो जायेगा।

* पुष्यार्क अंधेरी रात्रि में संध्या के समय घृत का दीपक जलाकर काजल पारे, उसके जल में मयूर की विष्ठा, हरताल और सुहागा मिलाकर जिसके मस्तक पर डाले वह वशीभूत हो जायेगा।

* गऊवार को आक व धतूरा की मूल लाए, कबूतर की विष्ठा, चौराहे को धूल, श्मशान की धूल सबका चूर्ण कर जिसके मस्तक पर डाले वही वशीभूत हो जायेगा।

* विशाखा नक्षत्र मंगलवार को दारू हलदी की मूल "ॐ पातेब जमाते स्वाहा" मंत्र पढ़ता हुआ लाए उसे पीसकर चूर्ण कर जिसके मस्तक पर डाले वही वशीभूत हो जायेगा।

सर्व जन वशीकरण गोली

* पुष्य नक्षत्र में बालछड़ की मूल लाये, चूर्ण कर गोली करे, गोली को थोड़ी देर मुंह में रखकर जिसे पान में खिला दे वह वशीभूत हो जाएगा।

* सरसों तथा देवदाल (झारबेर) को पीसकर गोली करे, फिर अपने मुंह में रखकर जिससे वार्ता करे वह वशीभूत हो जायेगा।

* घुग्घू का मांस रविवार को लाए, लाल चन्दन केसर मिलाकर गोली बनाए, जिसको वह गोली खिलाए वह वश में हो जायेगा।

* शुक्ल पक्ष, द्वितीय तिथि, मंगलवार और भरणी नक्षत्र हो, तब छोटी इलायची, लवंग, मालकांगनी, लजवन्ती का रस व अपना शुक्र मिलाकर गोली मूँग के दाने के बराबर कर ले। पान में एक गोली जिसे खिलाए वह वश में हो जायेगा।

* चील की आँख, केसर व कस्तूरी समभाग मिलाकर, मसूर के दाने के बराबर गोली करे, पान में एक गोली जिसको खिला दे वही वशीभूत हो जाएगा।

* बकरे व घुग्घू दोनों का मांस समभाग मिलाए, एक एक रत्ती की गोली बनाएं, जिसको पानी में दे वही वशीभूत हो जायेगा।

पुरुष वशीकरण तंत्र

△

मंत्र : ॐ नमो महायक्षिण्यै मम पति में वश्यं कुरू कुरू स्वाहा ।

विधि : शुभ दिन, शुभ लग्न में उत्तर की ओर मुंहकर सूर्योदय के बाद मूंगे की माला से जाप शुरू करे । १००० की संख्या में जप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है ।

प्रयोग : उपरोक्त मंत्र को सिद्ध कर फिर पुरुष वशीकरण तंत्र की किसी भी वस्तु को प्रयोग के समय सात बार अभिमंत्रित कर फिर प्रयोग करें । इस मंत्र का जप तथा प्रयोग केवल स्त्रियों के लिए ही है । अतः उन्हीं को इसका प्रयोग करना चाहिए ।

मंत्र जप के समय 'ममपति में' नहीं भी बोला जाय तो हर्ज नहीं, मंत्र सिद्ध हो जायेगा ।

प्रयोग के समय 'ममपति में' या किसी पुरुष का नाम बोला जा सकता है जिसको वश में करना है ।

पुरुष वशीकरण तिलक

* गोरोचन, कुमकुम को केले के रस में पीसकर तिलक करे तो पुरुष वश में हो ।
* गोरोचन, योनि के रक्त को केले के रस में पीसकर तिलक लगाने से पुरुष मुग्ध रहता है ।
* विष्णुकान्ता, भांगरा, गोखरू और गोरोचन समभाग पीसकर गोली बना ले । आवश्यकता पर घिसकर तिलक करे तो पुरुष वश में हो ।
* सूर्यग्रहण में सहदेवी की मूल लाकर चन्दन में घिसकर तिलक करे तो पुरुष उसके वश में रहता है ।
* काला भांगरा, श्वेत लजवन्ती को पीसकर गोली कर ले । फिर उसको घिसकर तिलक करे तो पुरुष उसके वश में रहता है ।
* पुष्य नक्षत्र में धतूरे के फूलों में कस्तूरी और भंवरे के पंख मिलाकर-पीसकर गोली बनाए, फिर घिसकर तिलक करे तो पुरुष वश में रहता है ।
* स्त्री अपने रज में गोरोचन मिलाकर तिलक करे तो पुरुष वश में रहता है ।

पुरुष वशीकरण सुपारी

* मंगलवार या ग्रहण के दिन पूरी सुपारी निगल जाए, सुबह जब वह सुपारी

मल में निकल आए तो उसको धोकर जिस पुरुष को खिला दे वही वशीभूत रहेगा।

* रजस्वला के समय औरत अपने कपड़े के साथ एक सुपारी को भी बांधे। ऐसा छः मास करे, फिर उसको दूध से धोकर साफ कर ले, फिर पान में जिस पुरुष को खिला दे वह वश में हो जाएगा।

पुरुष वशीकरण रोटी

* स्त्री अपने बाएँ पैर की जूती के बराबर आटा तौलकर रविवार या मंगलवार के दिन उस आटे की चार रोटियाँ बनाकर, जिस पुरुष को खिला दे वह वशीभूत हो जाएगा।

पुरुष वशीकरण लौंग

* स्त्री जब रजस्वला हो, उस समय वह अपने गुप्तांग में चार लौंग रख ले। तदुपरान्त उनको पीसकर चूर्ण कर ले। वह चूर्ण जिस पुरुष के मस्तक पर डाले वह उसको वशीभूत हो जाएगा।

* स्त्री अपने जिह्वा के मैल में लौंग को घिसकर जिस पुरुष को खिला दे, वह उसके वशीभूत हो जायेगा।

पुरुष वशीकरण भोजन

* मयूर शिखा, मजीठ, शंख पुष्पी व धोल ये सब सम भाग लेकर अपने पंच मेल के साथ जिस पुरुष को खाने में खिला दे वह पुरुष वशीभूत हो जायेगा।

* सुकड़ी, तगर, प्रियंगु, काला धतूरा, स्याही की मूल, उपलेट और अपने पांचों मैल समभाग लेकर जिस पुरुष को खाने में खिला दे वो वशीभूत हो जाएगा।

पुरुष वशीकरण अंजन :

* मक्खी को मारकर शुष्क करे और सुरमा में मिला ले फिर उसका अन्जन करे, जो पुरुष उसको देखेगा वह वशीभूत हो जावेगा।

* कमल पत्र, गोरोचन व अपना रज सम भाग लेकर जो स्त्री अन्जन करे तो उसे जो पुरुष देखे वह वशीभूत हो जाएगा।

पुरुष वशीकरण ताबीज

* रविवार मूल नक्षत्र के दिन श्वेतार्क की मूल लाकर ताबीज में डालकर स्त्री अपने पति को दे, तो उसका पति उसके वश में रहता है।

पुरुष वशीकरण लेप :

* अनार का पंचांग व सरसों पीसकर गुप्तांग पर लेप कर जिसके साथ सहवास करे वह पुरुष वशीभूत हो जाएगा।

* अन्धाहुली, जलभांगरा, रुद्रवन्ति इन सबको समभाग पीसकर, हाथ पर लेप कर पुरुष को दिखाए तो वह वशीभूत हो जायेगा।

* मालती के फूलों को सरसों के तेल में पकाकर अपने गुप्तांग में लेपकर जो स्त्री जिस पुरुष के साथ सहवास करती है तो वह पुरुष भूलकर भी किसी अन्य स्त्री के प्रति आसक्त नहीं होगा।

* श्वेत सरसों, तुलसी, धतूरा, अपामार्ग और तिल का तेल समभाग, महीन पीसकर अपने गुप्तांग पर लेपकर जिस पुरुष के साथ सहवास करती है वह पुरुष उसके वश में रहेगा।

* नाशपाती के फूलों को तेल में मिलाकर अपने शरीर पर लेपकर, जिस पुरुष के साथ स्त्री सहवास करती है वह पुरुष उसके वशीभूत हो जायेगा।

* कूठ रविवार को लेकर जिस पुरुष के पैर में मालिश करे वह पुरुष वशीभूत रहेगा।

* कपूर और देवदार के बुरादा का लेप अपने गुप्तांग में कर जिस पुरुष के साथ स्त्री सहवास करे वह पुरुष वशीभूत हो जायेगा।

स्त्री वशीकरण तन्त्र

△

* मन्त्र–ॐ ऐं पूरं क्षोभय भगवती गम्भीरा ब्लूं स्वाहा।

विधि : पुष्य नक्षत्र में बिसखपरा (पुनर्नवा) तथा रुद्रवन्ती की मूल लाए। उन दोनों जड़ों के साथ थोड़े से जौ मिलाकर उपरोक्त मंत्र से सात बार अभिमन्त्रित करे। फिर एक पीले रंग के वस्त्र में लपेटकर धूप-दीप देकर पुरुष अपनी दायीं भुजा में बांध ले। इसके बाद सूर्योदय के बाद मूंगे की माला से २० हजार जाप कर मंत्र को सिद्ध कर ले।

* ॐ नमः कामाक्षी देवी अमुकी नारी में वशं कुरु-कुरु स्वाहा।

विधि : शुभ दिन शुभ लग्न में उत्तर की ओर मुँहकर मूंगे की माला से २१ दिन तक रोज एक माला का जाप कर मन्त्र सिद्ध करले।

प्रयोग : उपरोक्त मन्त्रमें से किसी भी एक को सिद्ध कर फिर स्त्री वशीकरण तंत्र की किसी भी वस्तु को प्रयोग के समय सात बार अभिमन्त्रित कर फिर प्रयोग करे। इस मन्त्र का जाप व प्रयोग केवल पुरुषों के लिए है। अतः उन्हीं को इसका प्रयोग करना चाहिए।

स्त्री वशीकरण तिलक :

* श्वेत आक की मूल, कुटकी, मोथा व जीरा इन सबको समभाग लेकर अपने खून में पीसकर तिलक करे तो स्त्री वश में रहेगी।

* रविवार के दिन काले धतूरे का पंचांग लाकर पीस ले फिर उसके साथ कपूर, केसर तथा गोरोचन मिलाकर घोटे, फिर तिलक करे तो जिस स्त्री की पहली बार नजर पड़ेगी वह चाहे अरुन्धती ही क्यों न हो उस पुरुष के वशीभूत हो जाएगी।

* लजवन्ती, मुलेठी और कमलगट्टे को पीसकर अपने शुक्र के साथ मिलाकर फिर तिलक करे तो स्त्री वशीभूत होगी।

* रवि पुष्य नक्षत्र में इन्द्रायण की मूल लाये और त्रिकुटा में मिलाकर कूट पीसकर गो दुग्ध से गोली बना ले फिर तिलक करे तो जो स्त्री देखेगी वह वश में हो जायेगी।

* उल्लू के पीठ की हड्डी, केसर, कुमकुम व कस्तूरी मिलाकर चन्दन के साथ घिसकर तिलक करे तो स्त्री वश में हो जाती है।

* गाय के दांत, मनुष्य के दांत इन दोनों के तेल में पीसकर तिलक करने से स्त्री वश में हो जाती है।

* सूर्य ग्रहण के समय सहदेवी की मूल लाकर चन्दन में घिसकर जिस औरत को इसका तिलक जो पुरुष करेगा वह औरत वशीभूत हो जायेगी।

* मैनसील व हरताल पान के रस में पीसकर मंगलवार को तिलक करे तो स्त्री वशीकरण होता है।

* सिन्दूर को केले की मूल के साथ पीसकर गुरुवार को तिलक करे तो वशीकरण होता है।

* गोरोचन व कमल पत्र को पीसकर शनिवार कृतयोग में तिलक करे तो वशीकरण होता है।

स्त्री वशीकरण लौंग

* काली कुतिया के दूध में लौंग को तीन दिन तक भिगोकर फिर अपने शुक्र में भिगोये फिर सुखाये, सूखने के बाद जिस स्त्री को खिला दे वह वशीभूत हो जायेगी।

* मंगलवार के दिन अपने शिश्न के छिद्र में एक लौंग रखकर बुधवार के दिन निकाले, फिर पान में जिस स्त्री को खिलाये वह वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री वशीकरण पुतली

* शनिवार के दिन स्त्री के बायें पैर के नीचे की धूल लाये। पुतली बनाये उस पुतली में उसी स्त्री के केश लपेट दे, उस पुतली के गुप्तांग में अपना शुक्र डालकर नीले वस्त्र से पुतली को ढँककर सिन्दूर से पोते, फिर उसी स्त्री के घर के दरवाजे के आगे गाड़ दे। जब वह स्त्री उस स्थान को लांघकर जायगी तो उसी समय वह पूर्ण रूप से वशीभूत हो जायगी।

स्त्री वशीकरण फूल

* मोगरे के फूल को "ॐ ह्रीं स्वाहा" मंत्र से सात बार अभिमन्त्रित कर जिस स्त्री को सुंघावे वह वशीभूत हो जायगी।

स्त्री वशीकरण अंजन

* श्वेतार्कमूल, गो घृत व अजा रस में पीसकर अंजन तैयार कर आँख में अंजन करे तो जो स्त्री देखे वह वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री वशीकरण चुम्बन

* "ॐ नमो भगवाय विद्यमहे पुष्प बाणाय धीमहि तंत्र काम प्रचोदयात्" इस मंत्र का सात बार जाप कर स्त्री की नाभि, हृदय व कंठ पर सात फूँक मारे, फिर चुम्बन के समय-श्वास भर कर मंत्र पढ़कर स्त्री के मुंह पर फूंक मारे तो वह स्त्री वशीभूत हो जायगी।

स्त्री वशीकरण दूध

* एक बालक के दो हाथ के चार नाखून, दो बाएँ पैर के नाखून एक दायें पैर का नाखून इन सातों को लेकर जलाये, उस भस्म में अपना शुक्र मिलावे, फिर दूध में औटाए। वह दूध जिस औरत को पिला दे वह वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री वशीकरण सूत

* चिडाचिड़ी सम्भोग करते हों तब जितनी बार वे सम्भोग करें उतनी गांठ

एक सूत के लगायें, फिर उसे गिरगिट के खून में भिगोकर सुखालें, जिस किसी स्त्री के सामने उस सूत के बीच की गांठ खोले तो वह औरत वशीभूत हो जायगी।

स्त्री वशीकरण सुपारी

* सूर्य ग्रहण या चन्द्र ग्रहण में एक सुपारी लाए। उस पर "ॐ ह्रीं क्लीं पर स्त्री मम वेशमान अंग चतुर्मुखे फट् स्वाहा" इस मन्त्र को १०८ बार पढ़कर साबूत सुपारी निगल जाय। अगले दिन शौच जाय तो वह सुपारी शौच में निकले, तब उसको लेकर दूध में धोकर साफ कर ले फिर थोड़ी सी काटकर जिस औरत को खिलाए वह वशीभूत हो जाएगी।

स्त्री वशीकरण नस्य

* बिजोरे की मूल, धतूरे के बीज तथा प्याज सबको एकत्र कर पीस ले। जिस औरत को सुंघाया जावेगा वह वशीभूत हो जायगी।

स्त्री वशीकरण चावल

* मनुष्य की मृत्यु के तीसरे दिन शमशान में खिचड़ी ले जायी जाती है, वह खिचड़ी जब कोई ले जा रहा हो उसके पीछे चला जाए। जब वह खिचड़ी वहां रखकर चला आए तो पीछे से कौए उस खिचड़ी को खायेंगे। अन्त में उस मिट्टी के बरतन में से कुछ बचे हुए चावल व कुछ चावल जो कौवों के खाने से धरती पर गिर जाते हैं, उनको अलग-अलग ले आए और गुग्गुल की धूनी देकर-चौराहे में गाड़ दे। प्रति शनिवार उस जगह एक बताशा चढ़ाए और शराब की धार दे व गुग्गुल का धूप दे। इस तरह सात शनिवार करे फिर उनको निकालकर-बर्तन के भीतर वाला चावल जिस औरत को खिला दे वह वशीभूत हो जाएगी और जब उसको छोड़ना हो तब धरती पर गिरे हुए चावल को खिला देने के बाद वह कभी नहीं आयेगी।

स्त्री वशीकरण भस्म :

* सवा हाथ सफेद नया कपड़ा लाए और जब भतुलिया (बवंडर) आवे तब उसमें कपड़े को उड़ा देवे, फिर जहां वह कपड़ा गिरे, उसको लगी मिट्टी सहित उठा ले। सीधा धोबी के कपड़े धोने की सिला पर जावे, पीछे घूमकर न देखे। शिला पर बैठकर कपड़े की मिट्टी अलग कर ले व कपड़े को उस शिला पर जलाकर भस्म कर ले, फिर घर आकर गुग्गल की धूनी दोनों

को दे और अलग-अलग रख दे। वह भस्म जिस औरत पर डाली जायेगी या लगाई जाएगी तो वह साधक के घर आ जाएगी जब उससे छुटकारा पाना हो तब उस धूल को उस पर गिरा दे या लगा दे तो फिर नहीं आएगी।

स्त्री वशीकरण काजल

* जो स्त्री पहले पहल रजस्वला हो उसके मासिक धर्म का रक्त युक्त वस्त्र ले आए उसे बत्ती की तरह बनाए। एरंड के तेल के दीपक में उस बत्ती को डाल कर जलाए, काजल पारे। उस काजल को एक डिब्बी में भरकर रख ले, फिर थोड़ी सी काजल को रेख स्वाती नक्षत्र में जिस औरत को लगा दे वह भ्रमित चित्त होकर साधक के पास चली आयगी।

* रविवार, होली या दीवाली के दिन लाल एरंड को एक झटके में ही उखाड़ कर लाए, उसका काजल पारे "ॐ नमो काला भैरव काली राति काला आया आधी राती, चले कतार बांधु तु बावन बीर पर नारी सों राखे सीर छाती धीर के बाको लावे। सोती होय जगाय के लावे, बैठी हो उठाय के लावे। शब्द सांचा पिंड काचा-चलो मित्रों इश्वरो वाचा" इस मन्त्र से काजल को इक्कीस वार अभिमन्त्रित कर फिर औरत के उसको रेख लगाए तो वशीभूत हो।

* मालती के फूल को रेशमी वस्त्र में लपेट कर बत्ती बनाए, मंगलवार या शुक्रवार के दिन मनुष्य की खोपड़ी में एरंड का तेल भरकर, उक्त बत्ती डालकर दीपक जलाए, मनुष्य की खोपड़ी पर ही काजल पारे और उस काजल का आंख में अंजन करे, तो जो स्त्री देखे वह वशीभूत हो जायगी।

स्त्री वशीकरण पान

* अपने पंच मैल को पान में डालकर जिस स्त्री को खिला दिया जाए वह वशीभूत हो जाएगी।

* माघ कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को श्वेत गुंजा की मूल लाकर पीसकर थोड़ा सा पान में जिस औरत को खिलाए वह वशीभूत हो जायगी।

* सहस्र मूल व मिश्री सम भाग कूट पीसकर उसमें अपना शुक्र मिलाकर जिस औरत को पान में खिला दे वह वशीभूत हो जाएगी।

* जब सोमवार को मृगशिरा नक्षत्र हो, एक सुपारी लाए खूब बारीक पीसकर उसमें अपना शुक्र मिलाए और जिस औरत को थोड़ा सा पान में डालकर खिलाए वो वशीभूत हो जाएगी।

* रविवार को अमावस्या हो उस दिन घुग्घू का मांस लाए, केसर व लाल चन्दन मिलाकर-गोली कर जिस औरत को पान में खिलाए वह वशीभूत हो जाएगी।

* कृष्ण पक्ष त्रयोदशी के दिन श्वेत चोटले की मूल लाकर चूर्ण कर थोड़ी सी पान में जिस औरत को खिलाए वह वशीभूत हो जायगी।

स्त्री वशीकरण लेप

* रति के अन्त में पुरुष अपने बायें हाथ से अपना शुक्र लेकर स्त्री के बायें पैर के तलुए में लगा दे तो वह स्त्री दूसरे को कभी नहीं चाहेगी।

* मयूं शिखा, कुमारिका, श्वेत रूद्रजटा, श्वेतार्क मूल और सहदेवी मूल इन सबका चूर्ण कर शिश्न पर लेप कर सहवास करे तो स्त्री अवश्य वश में हो जायगी।

* हल्दी, गोमूत्र, घृत और सरसों पान के रस में इन सबको पीसकर मधु में तयार करे फिर अपने शरीर पर लगाकर अभिलषित स्त्री के पास जाए तो देखते ही वशीभूत हो जायगी।

* श्वेत सरसों, अनार के वृक्ष का पंचांग, महीन पीसकर मधु में मिलाकर शिश्न पर लेप कर स्त्री के साथ सहवास करे तो वह वशीभूत हो जायगी।

* सिन्दूर, इमली का फल और मधु समभाग लेकर-लेप बनाए, अपने शिश्न पर लेप कर स्त्री के साथ सहवास करे तो वह वशीभूत हो जाएगी।

* मूली के बीज, गुड़ व मधु तीनों का लेप तैयार कर अपने शिश्न पर लेप कर स्त्री के साथ सहवास करे तो वह औरत वशीभूत हो जाएगी।

* सेंधा नमक, कबूतर की विष्ठा पीसकर शहद मिलाकर शिश्न पर लेपकर अक्षत योनि तरुणी के साथ भी सहवास करे तो वह तरुणी फिर कभी भूल कर भी अन्य पुरुष का ध्यान नहीं करती।

* सफेद दूब को कपिला गाय के दूध के साथ पीसकर शरीर पर लेप कर स्त्री के पास जाए तो वह वशीभूत हो जायगी।

स्त्री वशीकरण बुरकी

* आश्विन कृष्णा चतुर्दशी रात को मनुष्य की खोपड़ी, श्मशान की भस्म, चौराहे की धूल इन सबका चूर्ण कर 'ॐ नमो क्लीं महापिशाचिनी ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा'' इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिस औरत पर गिराई जायेगी वह वशीभूत हो जायगी।

* सफेद चन्दन, मछली का पित्ता, दोनों मिलाकर बायें हाथ की छोटी अंगुली से जिस औरत पर छींटा दे तो वह व्याकुल हो जायेगी। उसी समय उसके मस्तक पर तिलक कर दिया जाये तो वह हमेशा के लिए वशीभूत हो जाएगी।

* ब्रह्म दण्डी, व चिता की भस्म मिलाकर जिस औरत के अंग पर फेंका जाएगा वह वशीभूत हो जायेगी।

* थूहर के कांटों का चूर्ण, स्व रक्त, बानर की विष्ठा और कलिहारी की मूल का चूर्ण जिस स्त्री के मस्तक पर डाला जायेगा वह अवश्य वश में हो जायेगी

* चिता की भस्म, कूठ, बच, केसर व गोरोचन का चूर्ण जिस औरत के मस्तक पर डाला जायेगा वह वशीभूत हो जायेगी।

* शनिवार को कौवे की जिह्वा, श्मशान की मिट्टी, अपने हाथ पांव के नाखूनों की भस्म, औरत के बायें पांव की मिट्टी, चौरस्ता की धूल इन सबका मिलाकर-एक चुटकी भर जिस औरत पर गिरा दे वह वशीभूत हो जायेगी।

* कूठ, कमल पत्ते, भौरे के पंख, तगर, कमल गट्टा और काक जंघा का चूर्ण करके उसमें अपनी अनामिका अंगुली का रक्त मिलाकर बुरकी तैयार कर जिस औरत के मस्तक पर डाली जाएगी वह वशीभूत हो जायेगी।

* पुष्य नक्षत्र में धोबी के पांव की मिट्टी लाकर रविवार के दिन संध्या के समय थोड़ी सी स्त्री के मस्तक पर डाले तो वह वशीभूत हो जायेगी।

* माघ मास बुधवार अष्टमी, स्वाति नक्षत्र जिस दिन हो उस दिन आक को न्यौता दें दूसरे दिन उसकी कोंपल तोड़ लाये वो जिस स्त्री के मस्तक पर डाल दें वह वशीभूत हो जायेगी।

आर्द्रा नक्षत्र में एक तालाब के पास जाकर एक ही डुबकी में नीचे से माटी ले आए-उस माटी को जिस औरत के मस्तक पर डाले वह वशीभूत हो जायेगी।

* शुक्ल पक्ष पुष्य नक्षत्र हो उस दिन शाम के समय जब धूप दीप करते हैं, उस समय श्मशान में जाकर एक मुट्ठी भस्म ले आये उसमे से एक चुटकी जिस औरत पर डाल दे वह वशीभूत हो जायेगी।

* श्मशान की हड्डी, भेड़ के दूध में घिसकर जिस औरत पर छींटा दें वह वशीभूत हो जाती है।

* राई और सरसों "ॐ ऐं क्लीं उच्छिष्ट चांडाली महापिशाचिनी ठः ठः ठः स्वाहा" इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिस औरत के ऊपर गिराए वो वशीभूतहो जायेगी।

* काक जंघा, तगर, केसर, मैनसील सम भाग लेकर चूर्णकर जिस औरत के मस्तक पर डाला जायगा वह वशीभूत हो जायेगी।

* उल्लू के मांस को छाया में सुखाकर चूर्णकर जिस औरत के मस्तक पर डाला जायेगा वह वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री वशीकरण चूर्ण

* रविवार रात्रि को श्मशान की भस्म लाये उसमें अपना थूक और शुक्र मिलाकर जिस औरत को खिलाये वह वशीभूत हो जायेगी।

* राजा घुग्घू की बींठ, गोरोचन चमक पाषाण व अपना शुक्र व कनिष्ठा अंगुली का रक्त इन सबको मिलाकर चूर्ण कर जिस औरत को बिना नमक की वस्तु के साथ खिला दे वह वशीभूत हो जायेगी।

* बच, उपलेट, काकजंघा, स्वरक्त व शुक्र एक साथ मिलाकर जिस औरत को खिला दे वह वशीभूत हो जायेगी।

* रविवार के दिन चील की आंख लाकर उसमें कस्तूरी और केसर मिलाकर महीन पीसकर रख लें। एक रत्ती चूर्ण जिस औरत को खिला दे वह वशीभूत हो जायेगी।

* रविवार पुष्य नक्षत्र में श्वेत गुंजा की मूल लावें-चूर्ण कर अपना शुक्र मिलाकर किसी भी खाने की वस्तु में जिस औरत को खिला दे वह वशीभूत हो जायेगी।

* मंगलवार को दुधेली की मूल व फूल लाये। उसको तुलसी रस, आक दूध व उत्तर वारुणी की प्रत्येक की सात सात भावना दे फिर एक तोला जिस औरत को खाने में खिला दे वह वशीभूत हो जायेगी।

* काले कौवे की जिह्वा व अपने बीसों नख जलाये, श्मशान की भस्म, अपना शुक्र व कनिष्ठा अंगुली का रक्त व जिह्वा का मैल ये सब मिलाये। रविवार को थोड़ी सी जिस औरत को खिला दे वो वशीभूत हो जायेगी।

* मूल नक्षत्र में श्वेत संखाहुली की मूल, कनेर के फूल समभाग लेकर अपना शुक्र मिलाकर गुग्गुल की धुनी देकर जिस औरत को खिला दे वह वशीभूत हो जायेगी।

* संखाहुली श्वेत रविवार को लाये, गाय के दूध में पीसकर गुग्गुल की धूनी मिठाई में जिस औरत को खिला दे वह वशीभूत हो जायेगी।

* मंगलवार को बगुले को मारकर जलाए वह भस्म जिस औरत को खिलाए वह वशीभूत हो जायेगी।

* मनुष्य अपने बीसों नख सात शनिवार तक बढ़ाए, आखिरी रविवार को काटे व खुटक बढैया (कठफोड़ा) के नाखून उनके साथ मिलाए एक माटी के बरतन में जलाए, भस्म कर ले। उस भस्म को मक्खन में मिलाकर जिस औरत को खिला दे वह वशीभूत हो जायेगी।

* अमावस्या के दिन अपना शुक्र एक पेड़े में मिलाएं, कुम्हार के घर जाकर उसकी चाक पर उस पेड़े को उल्टे सात चक्कर दिलायें फिर उस पेड़े को जिस औरत को खिला दे वह वशीभूत हो जायगी।

* रविवार को श्वेत गुन्जा की मूल लाकर अपने रक्त में पीसकर मिठाई में जिस औरत को खिला दे वह वशीभूत हो जायेगी।

* शुक्ल पक्ष रविवार को श्मशान की मिट्टी लाये। अपना शुक्र व अपने हाथ पांव के नाखूनों की भस्म मिलाये। जिस औरत को खिलाये वह वशीभूत हो जायेगी।

* हुदहुद पक्षी के नाखून, अपने हांथ पांव के नाखून, शुक्रवार को काटकर किसी कोरे मिट्टी के बरतन में बन्द कर अग्नि पर जलायें फिर उस भस्म में अपना शुक्र मिलाकर जिस औरत को खिला दे वह वशीभूत हो जायेगी।

* रवि पुष्य नक्षत्र में एक मुर्गी का अण्डा लाए उस पर छेदकर जर्दी निकाल दे। फिर उसमें अपना शुक्र डालकर छेद बन्द कर घोड़े की लीद में इक्कीस दिन दबाकर रखे। इक्कीस दिन पश्चात् निकाल कर धोकर छिलका उतार कर शेष को सुखाकर चूर्ण कर ले। वह थोड़ा सा चूर्ण जिस औरत को खिला दिया जायेगा वह वशीभूत हो जायगी।

* भँवरे के दोनों पर, तोता का मांस, अपने कान का मैल, पुष्य नक्षत्र के दिन अपनी अनामिका अंगुली का रक्त डालकर मसूर के दाने के बराबर गोली कर ले। एक गोली खाने में दे और यदि घिसकर औरत के शरीर पर मल दे तो वह वशीभूत हो जायेगी।

* हाथ व पांव के नाखून की भस्म खाने की वस्तु में खिला दे तो वह औरत वशीभूत हो जायेगी।

* मंगलवार या रविवार के दिन रति करती हुई कुतिया को एक अन्जीर की डाली से मारे, उस डाली को जलाकर भस्म कर ले। उस भस्म को अपने मत्र

में सानकर चूर्ण या गोली कर ले। एक गोली या थोड़ा सा चूर्ण जिस औरत को खिला दे वह वशीभूत हो जायेगी।

* चमेली को रविवार को न्यौते उसी दिन उसकी लकड़ी लाये। सुखाकर चूर्ण कर उसमें जायफल, राल, लवंग सम भाग मिलाए। आक के दूध में सात भावना देकर गोली बाँध ले या चूर्ण रखे। जिस औरत को थोड़ा सा खिला दे वह वशीभूत हो जायेगी।

राज्याधिकारी वशीकरण तंत्र

△

मंत्र : ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं महीपति में वश्यं कुरू कुरू स्वाहा।

विधि : शुभ दिन शुभ लग्न में उत्तर की ओर मुँह कर सूर्योदय के बाद मूंगे की माला से जाप शुरू करे। २१ दिन तक रोज एक माला का जाप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है।

द्रष्टव्य : उपरोक्त मंत्र को सिद्ध कर फिर राज्याधिकारी वशीकरण तंत्र की किसी भी वस्तु को प्रयोग के समय २१ बार अभिमंत्रित कर फिर प्रयोग करें।

प्रयोग

* पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में एक अनार को तोड़कर लाए। धूप देकर उसके दाने को हाथ में बाँधकर जिस राज्याधिकारी के पास जाय वह वशीभूत हो जायगा।
* रवि पुष्य नक्षत्र में अपामार्ग के बीज लाकर जिस राज्याधिकारी को खाने में खिला दे वह वशीभूत हो जायगा।
* चन्दन, गोरोचन तथा कपूर इनको घोटकर तिलक कर जिस राज्याधिकारी के पास जाय वह वशीभूत हो जायगा।
* हरताल, अश्वगंधा, कपूर व मैनसील बकरी के दूध में घिसकर तिलक कर जिस राज्याधिकारी के पास जाय वह वशीभूत हो जायगा।

* केसर, चन्दन, कपूर और तुलसी का पत्ता गाय के दूध के साथ घिसकर तिलक कर जिस राज्याधिकारी के पास जाय वह वशीभूत हो जायगा।
* पुष्य नक्षत्र में लज्जालु पंचांग लाए, अष्टगन्ध के साथ मिलाकर तिलक कर कचहरी में या किसी भी राज्याधिकारी के पास जाय तो वे सम्मान करें एवं मेहरबानी करें।
* सुदर्शना की मूल हाथ में बाँधकर जिस राज्याधिकारी के पास जाय वह वशीभूत हो जायगा।
* पुष्य नक्षत्र में सिंघी की मूल लाकर कमर में बांधकर जिस राज्याधिकारी के पास जाय वह वशीभूत हो जायगा।
* पुष्य नक्षत्र में सुदर्शना की मूल लाकर उसमें कपूर व तुलसी का पत्ता पीसकर एक वस्त्र पर लेप करे और उस वस्त्र की बत्ती बनाले, फिर विष्णुकान्ता के बीज के तेल में दीपक जलाकर काजल पारे। इस काजल को आँख में अंजन कर जिस राज्याधिकारी के पास जाये वह वशीभूत हो जायेगा।

सर्व-जन-सम्मोहन-तंत्र

मंत्र

* ॐ उड्डामहेश्वराय सर्व जगन्मोहनाय अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं फट् स्वाहा।
* ॐ नमो भगवते कामदेवाय यस्य यस्य दृश्यो भवामि यश्च यश्च मम सुखं तं तं मोहयतु स्वाहा।
* ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय मोहय मोहय मिलि मिलि ठः ठः स्वाहा।
* ॐ ह्रीं काली कपालिनी घोर नदिनि विश्वं विमोहय जगन्मोहय सर्वं मोहय ठः ठः स्वाहा।

विधि : शुभ दिन शुभ लग्न में उत्तर की ओर मुंह कर सूर्योदय के बाद दीवाली के दिन रात्रि के समय या होली के दिन दोपहर के समय से मूंगे की माला से जाप शुरू करे। एक नम्बर के मंत्र का

एक लाख जाप, दो नम्बर के मंत्र का दस हजार जाप, तीन नम्बर के मंत्र का तीस हजार जाप, चार नम्बर के मंत्र का सवा लाख जाप कर मंत्र को सिद्ध कर ले।

प्रयोग : उपरोक्त मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र को सिद्ध कर, फिर सर्व जन सम्मोहन तंत्र की किसी भी वस्तु को प्रयोग में लेने से पहले २१ बार अभिमंत्रित कर फिर प्रयोग में लें।

सर्व जन सम्मोहन तिलक

* श्वेतार्क मूल और सिन्दूर को केले के रस में पीसकर तिलक करे तो सब मोहित हो जायेंगे।
* सिन्दूर, कुंकुम, गोरोचन को आंवले के रस में पीसकर तिलक करे तो सब मोहित हो जायेंगे।
* रविवार को सहदेवी के रस में तुलसी के बीज पीसकर तिलक करे तो सब मोहित हो जायेंगे।
* मैनसिल व कपूर को केले के रस में पीसकर तिलक करे तो सब मोहित हो जायेंगे।
* हरताल, अश्वगंधा व गोरोचन को केले के रस में पीसकर तिलक करे तो सब मोहित हो जायेंगे।
* सिन्दूर व श्वेतबच को नागरबेल के पान के रस में पीसकर तिलक करे तो सब मोहित हो जायेंगे।
* सफेद दूब व हरताल को पीसकर तिलक करे तो सब मोहित हो जायेंगे।
* मनुष्य की खोपड़ी में धतूरा, शहद व कपूर मिलाकर तिलक करे तो सब मोहित हो जायेंगे।
* तगर, कूट, हरताल व केसर सम भाग मिलाकर तिलक करे तो सब मोहित हो जायेंगे।
* मिढ़ासिंगी, जल भांगरा व कुमारिका सम भाग पीसकर तिलक करे तो सब मोहित हो जायेंगे।
* काकड़ासिंगी, चन्दन, बच और कूट पान के रस में सम भाग पीसकर तिलक करे तो सब मोहित हो जायेंगे। पशु पक्षी भी मोहित हो जायेंगे।

* बेल पत्र लेकर छायामें सुखाये। कपिला गाय के दूध में मिलाकर गोली कर ले। आवश्यकता पर गोली घिसकर तिलक करे तो सब मोहित हो जायेंगे।

* केसर, चन्दन, व गोरोचन सम भाग पीसकर तिलक करे तो सभी मोहित हो जायेंगे।

* भांगरा, गोखरू व गोरोचन समभाग पीसकर गोली कर ले। आवश्यकता पर जहाँ जाना हो गोली घिसकर तिलक करे तो सभी मोहित हो जायेंगे।

* केसर, तगर व हरताल सम भाग लेकर शुक्रवार या पुष्य नक्षत्र को अपनी तर्जनी अंगुली का रक्त मिलाकर तिलक करे तो सभी मोहित हो जायेंगे।

* हरताल, मैनसील, भंवरे के दोनों पर व धतूरे के फूल सम भाग लेकर गोली कर ले। गोली को घिसकर तिलक करे तो सभी मोहित हो जायेंगे।

* गोरोचन व मछली का पीत्ता सम भाग मिलाकर तिलक करें तो सभी मोहित हो जायेंगे।

* गोरोचन व सहदेवी मूल को पानी में घिसकर तिलक करे तो सभी मोहित हो जायेंगे।

* पुष्य नक्षत्र में आक की मूल और जौ की मूल लाकर बारीक घिसकर गोली कर ले। गोली घिसकर तिलक करे तो सभी मोहित हो जायेंगे।

* पोहकर मूल श्रवण नक्षत्र में लाकर उसमें तगर मिलाकर तिलक करे तो सभी मोहित हो जायेंगे।

* श्वेत सरसों को पुठकण्डे के रस में घिसकर तिलक करे तो सभी मोहित हो जायेंगे।

* पुठकुण्डे की मूल को कपिला गाय के दूध में घिसकर तिलक करे तो सभी मोहित हो जायेंगे।

* पुष्य नक्षत्र में पूर्णमासी के दिन बड़ की मूल लाकर घिसकर तिलक करे तो सभी मोहित हो जायेंगे।

* चन्द्र ग्रहण में चित्रा की मूल लाकर मधु में गोली कर ले। जरूरत पर घिसकर तिलक करे तो सभी मोहित हो जायेंगे।

* केसर, मैनसिल, गोरोचन और पत्रज, इन्हें जल में पीसकर तिलक करे फिर

जिसके सामने मुंह करेंगे तो मोहित होगा। किसी सभा में जायें तो सभी मोहित हो जायेंगे।

* बादाम का पंचांग व एक गुंजा पिसकर तिलक करे तो सभी मोहित हो जायेंगे।

* अनार के पंचाग में सफेद गुंजा मिलाकर तिलक करे तो सभी मोहित हो जायेंगे।

* श्वेतार्क की मूल सफेद चन्दन में घिसकर तिलक करे तो सभी मोहित हो जायेंगे।

सर्व जन सम्मोहन लेप

* श्वेत गुंजा के पत्तों के रस में ब्रह्म दंडी की मूल घिस कर अपने शरीर पर लेप करे तो सभी मोहित हो जायेंगे।

* भांग का पत्ता व सफेद सरसों पीसकर शरीर पर लेप करे तो सभी मोहित हो जायेंगे।

* राई, सिरसम, शंखाहुली व दूब कूट पीसकर शरीर पर लेप करें। गर्म पानी से स्नान कर, केसर का तिलक कर किसी भी सभा में जायें तो सभी का सम्मोहन होता है।

सर्व जन सम्मोहन गोली

* ताजा तुलसी पत्र लाकर छाया में सुखायें। भांग के बीज व अश्वगंधा को कपिला गाय के दूध में पीसकर गुन्जा बराबर गोली बना ले। प्रतिदिन एक गोली खाए तो सभी मोहित हो जायेंगे।

सर्व जन सम्मोहन अंजन

* श्वेतार्क मूल, मक्खन व अजारस का चूर्ण कर, मिलाकर अंजन करे तो सभी मोहित हो जायेंगे।

* पुष्य नक्षत्र सोमवार को ब्रह्मदण्डी की शाख लाकर घिसकर अंजन करे तो सभी मोहित हो जायेंगे।

* रविवार को घुग्घू की जिह्वा और नीम के अढ़ाई पत्ते लेकर पीसकर अंजन करे तो सभी मोहित हो जायेंगे।

* गूलर के फूलों को सुखाकर रूई की बत्ती में लपेटकर रात में मक्खन में डुबो-कर व जलाकर काजल पारे। अंजनकर जहाँ जाए सभी मोहित हो जायेंगे।

* कड़ुवी तूम्बी के बीजों के तेल में अथवा बीजों को तेल में भिगोकर कपड़े की बत्ती के साथ जलाकर काजल पारे। उसका अन्जन कर जहाँ जाए सभी मोहित हो जाएंगे।

* उल्लू की दोनों आखें, ग्वारपाठा व वंशलोचन इन सबको खरल कर सुखा ले और रुई में लपेट कर बाती बनाये। गौ घृत में दीपक जलाए और यह मन्त्र पढ़ता हुआ "ॐ नमो महा पक्षी उमा के वेशमान स्वाहा" काजल पारे। उसमें मक्खन मिलाकर अन्जन करे, जिसके पास जाय वही मोहित हो जायेगा।

सर्व जन सम्मोहन धूप

* पुष्य या श्रवण नक्षत्र में धतूरा की हरी पत्ती और मयूर की विष्ठा समभाग लेकर पीसकर गोली बनाए। एक गोली का धुआं जिसको दे वह मोहित हो जायगा।

* काकड़ासिंगी, चन्दन, कूट और बच इन सबको समभाग मिलाकर धूप बनाये और कहीं जाने के समय अपने कपड़ों व मुँह पर धुंआ देकर जहाँ जाए वही मोहित हो जायेंगे।

* नील कमल, गुग्गुल और अगर सर्व समभाग लेकर अपने शरीर पर उसका धूप देकर किसी भी राज्याधिकारी के पास जाय तो वह मोहित हो जायगा।

सर्व जन सम्मोहन पत्र

* रोहिणीं नक्षत्र में केले का पत्ता हाथ में बांधे तो सभी मोहित होंगे।
* मृगशिरा नक्षत्र में भी केले का पत्ता हाथ में बाँधे तो सभी मोहित होंगे।
* चित्रा नक्षत्र में धावड़ी वृक्ष का पत्ता जिसको खिला दे उसके साथ प्रेम बढ़े।
* भोज पत्र पर गोरोचन से किसी नाराज व्यक्ति का नाम लिखकर दूध में छोड़ दे, तो वह प्रसन्न हो जाएगा।
* ताल पत्र पर कांटे की कलम से क्रुद्ध व्यक्ति का नाम लिखकर कीचड़ में छोड़ दें, तो वह मोहित होकर क्रोध त्याग देगा।
* उल्लू के पंख की कलम से व बकरे के खून से भोज पत्रपर "ॐ नमों अरूंठनी असवस्थनी महाराज छनी फट् स्वाहा" मंत्र पढ़ता हुआ लिखे तो सर्व जन मोहित होंगे।

सर्व जन सम्मोहन भस्म

खंजन पक्षी की विष्ठा और जुगनूं, इन दोनों को पीसकर टिकिया बनायें। फिर उन्हें पृथ्वी पर रखकर अग्नि में फूंकें। जल जाने पर उस भस्म को अंग में लगाकर जिसके पास जाए वह मोहित हो जाएगा।

सर्व जन सम्मोहन मूल

* पुष्य नक्षत्र में आक की मूल लाकर अपनी कलाई पर बाँधकर जहाँ जाय, देखने वाले मोहित हो जायेंगे।
* चैत्र कृष्णा अष्टमी को चित्रा को न्यौता दें। नवमी के दिन लाए, धूप दीप कर अपने पास रखें तो सभी मोहित होंगे।
* घनिष्ठा नक्षत्र में आक का फूल दाहिने हाथ पर बाँधे तो सभी मोहित होंगे।

स्त्री सम्मोहन पान

रविवार के दिन एक पान का बीड़ा लेकर धोबी के कपड़ा धोने की शिला पर जाकर नग्न होकर उस बीड़े को खोलकर चारों ओर घूम जांए, फिर बन्द कर कपड़े पहनकर चुपचाप घर आ जाए। वह पान जिस स्त्री को खिलायेंगे वह सम्मोहित हो जाएगी।

स्त्री सम्मोहन अन्जन

* रवि पुष्य में आक की मूल लाकर भेड़ के रक्त में घिसकर उसमें सुरमा मिलाकर अंजन करे तो जो स्त्री देखे वह मोहित हो जाएगी।
* शुक्रवार के दिन पुष्य नक्षत्र में तालीश, कूठ और तगर का चूर्ण कर रूई की बाती में लपेट कर सरसों के तेल में दीपक जलाए। मनुष्य की खोपड़ी पर काजल पारे। उसका अन्जन करे तो जो स्त्री देखे वह मोहित हो जायेगी।

स्त्री सम्मोहन तिलक

* जीरा, कुटकी, नागर मोथा, श्वेतार्क मूल को अपने रक्त में पीसकर तिलक करे तो सभी स्त्री मोहित होगी।
* पुष्य नक्षत्र में काले धतूरे का फूल, भरणी नक्षत्र में फल, विशाखा नक्षत्र में शाखा, हस्त नक्षत्र में मूल लाकर चूर्ण कर ले फिर इसमें केसर, गोरोचन मिलाकर गोली बनाए। उस गोली को पीसकर तिलक करे तो स्त्रियाँ मोहित होंगी।

स्त्री सम्मोहन लेप

* ब्रह्म दण्डी और श्मशान की चिता की भस्म दोनों मिलाकर जिस स्त्री के शरीर पर लेप कर दे वह सम्मोहित हो जायेगी।
* श्वेत गुंजा के पत्तों के रस में ब्रह्मदण्डी की मूल पीसकर सारे शरीर पर लेप करे तो हर एक स्त्री सम्मोहित होगी।

स्त्री सम्मोहन बुरकी

* काले भँवरे के दानों पर व बाल, पोहकर मूल, तगर और श्वेत काक जंघा इन सबको एकत्र कर जिस औरत के शरीर पर डाल दिया जाए वह मोहित हो जायेगी।
* पुष्य नक्षत्र में मजीठ की मूल लाकर चूर्ण कर जिस औरत पर डाल दे वह मोहित हो जायेगी।
* रविवारी अमावस्या को घुग्घू और बिल्ली के नेत्र, पारा, केसर, बच, रसोत, सरसों और नागकेसर, इन सबको पीसकर चूर्ण कर श्मशान में गाड़ दे। अगले रविवार को निकाल ले। एक चुटकी जिस औरत पर डाल दे वह मोहित हो जायेगी।

आकर्षण-तन्त्र

△

मंत्र : ॐ नमो आदिरूपाय अमुकस्य आकर्षणं कुरू कुरू स्वाहा।

विधि : शुभ दिन शुभ लग्न में उत्तर की ओर मुँहकर मूंगे की माला से सूर्योदय के बाद जाप शुरु करे। १२५०० जाप होने से मंत्र सिद्ध हो जाता है।

मंत्र : झं हां हां हैं हैं।

विधि : उपरोक्त विधि से इक्कीस दिन तक रोज इक्यावन माला का जाप कर मंत्र सिद्ध कर ले।

प्रयोग : उपरोक्त मंत्र में से किसी भी एक को सिद्ध कर, फिर सर्व जन आकर्षण तंत्र की किसी भी वस्तु को प्रयोग के समय २१ बार अभिमंत्रित कर फिर प्रयोग करें।

पत्र तंत्र

* काले धतूरे के पत्तों के रस में गोरोचन मिलाकर श्वेत कनेर की कलम से भोज पत्र पर जिसको आकर्षित करना है, उस व्यक्ति के नाम सहित उपरोक्त मंत्र लिखे। फिर खैर की लकड़ी की आग पर उसे तपाये। तपाते समय मंत्र की एक माला का जाप करे। इससे वह व्यक्ति आकर्षित होगा और शीघ्रातिशीघ्र प्रयोक्ता के पास आने को आतुर हो उठेगा व आ जायेगा।

* जो व्यक्ति गया हुआ है, उसका एक कपड़ा लेकर अमुक को जल्दी बुलाओ की भावना करता हुआ उपरोक्त मंत्र नाम सहित लिखे और चर्खे पर बाँध दे। उस व्यक्ति के परिवार का प्रमुख व्यक्ति प्रातः, सायं उल्टा चर्खा चलाए तो गया व्यक्ति शीघ्र लौटे।

कपाल तंत्र

* मनुष्य की खोपड़ी पर श्वेत कनेर की कलम से और गोरोचन की स्याही से नाम सहित मंत्र लिखे। त्रिसंध्या को खैर की लकड़ी की आग पर उसे तपाये तो आकर्षण होगा। तपाते समय मंत्र का जप करते रहना चाहिए।

चूर्ण तंत्र

* पंचमी के दिन सूर्यावर्त (हुलहुल) वृक्ष की मूल लाकर पीस कर चूर्ण कर ले। जिस स्त्री या पुरुष को मान के साथ खिलाये तो वह आकर्षित होकर आप के पास आयेगा।

पुतली तंत्र

* जिस व्यक्ति का आकर्षण करना है, उसके बायें पैर की मिट्टी लाकर गिरगिट के रक्त से पुतला बना ले। पुतले के वक्षस्थल पर अभिलषित व्यक्ति का नाम लिखकर पुतला धरती में गाड़ दे। जहाँ गाड़ उसी स्थान पर नित्य मूत्र त्याग करता रहे। ऐसा करने से निश्चय ही आकर्षण होगा।

बुरकी तंत्र

* रवि पुष्य नक्षत्र के दिन ब्रह्म दन्डी लाकर चूर्ण करे। उस चूर्ण को जिस स्त्री के मस्तक पर डाल दे वह औरत आकर्षित एवं काम पीड़ित होकर साधक पुरुष के पीछे चली जाती है।

* होली के दिन होली को न्यौते और उसकी लकड़ी लाए। धूप दीप करके धोबी के घर जाए। उसकी भट्टी में उस लकड़ी को रख दे। जलने के बाद

उसके कोयले ले आए। कूट पीसकर चूर्ण कर ले। जब हस्त नक्षत्र आये तब जिस स्त्री के मस्तक पर गिरा दिया जाएगा वह स्त्री पीछे-पीछे चली आयेगी।

घूमावती तंत्र

* मध्याह्न तथा मध्य रात्रि में, गये हुए व्यक्ति को माता अथवा स्त्री, केवल एक वस्त्र पहन कर सिर के बाल खोल दे और अमुक को जल्दी बुलाओ की भावना लेकर उपरोक्त मंत्र लिखे। वस्त्र को घर में चक्की से बाँधकर उसके बीच से चक्की निकाल कर २१ बार सुबह शाम उल्टी चक्की घुमाये, तो जल्द उसका आकर्षण होता है।

* जो व्यक्ति गया हुआ है उसका एक कपड़ा लेकर, अमुक को जल्दी बुलाओ की भावना करता हुआ उपरोक्त मंत्र नाम सहित लिखे और चर्खे पर बांध दे। उस व्यक्ति के परिवार का प्रमुख व्यक्ति प्रातः सायं उल्टा चर्खा चलाए तो गया व्यक्ति शीघ्र लौटता है।

स्तंभन-तंत्र

जिसके द्वारा मनुष्य, पशु, पक्षी आदि जीवों की गति व हलचल का निरोध हो, उसे स्तंभन-कर्म कहते हैं।

स्तंभन-तंत्र

△

स्तंभन तंत्र में कई प्रकार के स्तंभन आते हैं, जैसे सेना स्तंभन, शास्त्र स्तंभन अग्नि स्तंभन, निद्रा स्तंभन, मेघ स्तंभन, नौका स्तंभन, गर्भ स्तंभन, शुक्र स्तंभन, बुद्धि स्तंभन व स्त्री, पुरुष, पशु, पक्षी स्तंभन आदि। इन सबको विस्तृत रूप से न देकर कुछ स्तंभन के प्रयोग यहाँ दे रहे हैं। इनके मंत्र भी अलग-अलग होते हैं। कुछ प्रयोग मंत्र सहित भी दे रहे हैं:-

अग्नि-स्तंभन

△

मंत्र : ॐ नमो अग्निरूपाय मम शरीरं स्तंभनं कुरू कुरू स्वाहा।

विधि : शुभ दिन शुभ लग्न में रूद्राक्ष की माला से इक्कीस दिन तक रोज एक माला का जापकर मंत्र सिद्ध कर ले या स्वर्ण की माला से जाप करे। पूर्व की ओर मुंह रखे, सूर्योदय के बाद जाप शुरू करे।

प्रयोग

* अश्व का खुर व बेंत की मूल दोनों को उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर अग्नि में डाल दें तो अग्नि नहीं जलेगी।
* केले का रस ग्वारपाठे का रस दोनों को मिलाकर पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर शरीर में लेप करे तो अग्नि में जलने का भय नहीं रहेगा।
* श्वेत कनेर की मूल रविवार के दिन लाकर दांई भुजा में धारण करने से अग्नि में जलने का भय नहीं रहता है।

शस्त्र-स्तंभन

△

मंत्र : ॐ अहो कुम्भकर्ण महाराक्षस नैकषा गर्भ संभूत पर सैन्य स्तम्भनं महाबलवान रूद्र आज्ञापयति स्वाहा।

विधि : शुभ दिन शुभ लग्न में इक्कीस दिन तक रोज एक माला का जापकर मंत्र सिद्ध कर ले।

प्रयोग

* श्वेत गुंजा मूल उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर हाथ में धारण करे तो शस्त्र का स्तंभन होगा।

* सुदर्शन की मूल उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर हाथ में धारण करे तो उसके शस्त्र नहीं लगेगा।

* ओंगा (अपामार्ग) की मूल उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर पीस कर शरीर में लेप करे तो शस्त्र की चोट नहीं लगेगी।

सेना-स्तंभन

△

मंत्र : ॐ नमः कालरात्रि त्रिशूल धारिणी मम शत्रु सैन्य स्तंभन कुरू कुरू स्वाहा।

विधि : शुभ दिन शुभ लग्न में इक्कीस दिन तक रोज एक माला का जाप कर मंत्र सिद्ध कर ले।

प्रयोग

* मिट्टी के एक बर्तन में बीच में श्मशान की भस्म का लेप कर उसके मध्य शत्रु का नाम लिखे फिर उसको नीले सूत से लपेटकर एक गड्ढा खोदकर उसके बीच वह बर्तन रख दे और ऊपर से पत्थर रखकर उसको बन्द कर दे तो शत्रु सैन्य का स्तंभन हो जायेगा।

बुद्धि-स्तंभन तंत्र

△

मंत्र : ॐ नमो भगवते शत्रूणां बुद्धि स्तंभनं कुरू कुरू स्वाहा।

विधि : शुभ दिन शुभ लग्न में जाप शुरू करे। इक्कीस दिन तक रोज एक माला जाप कर मंत्र सिद्ध कर ले। इस मंत्र को सिद्ध कर बुद्धि स्तंभन तंत्र की किसी भी वस्तु को प्रयोग में लेने से पहले २१ बार अभिमंत्रित कर फिर प्रयोग में ले।

प्रयोग

* उल्लू बन्दर व ऊंट जिस किसी एक को विष्ठा को छाया में सुखाकर थोड़ी सी जिसको पान में खिला दे उसकी बुद्धि का स्तंभन हो जायेगा।
* सहदेवी व अपामार्ग को लोहे के पात्र में घिसकर तिलकर जिसके सामने जाये उसकी बुद्धि का स्तंभन हो जायेगा।
* अपामार्ग, भांगरा, श्वेत सरसों, सहदेवी, जमीकन्द, बच और श्वेतार्क सबको लोहे के पात्र में पीसकर तिलकर जिसके सामने जाये, उसकी बुद्धि का स्तंभन हो जायेगा।
* भांगरा के रस में सफेद सरसों को पीसकर तिलकर जिसके सामने जाये उसकी बुद्धि का स्तंभन हो जायेगा।

गर्भ-स्तंभन तंत्र

△

मंत्र : ॐ गर्भधारिणी गर्भं स्तंभन कुरू कुरू स्वाहा।

विधि : शुभ दिन शुभ लग्न में जाप शुरू करे। इक्कीस दिन तक रोज एक माला का जाप कर मंत्र को सिद्ध कर ले। इस मंत्र को सिद्ध कर गर्भ-स्तंभन तंत्र की किसी भी वस्तु को प्रयोग में लेने से पहले २१ बार अभिमंत्रित कर फिर प्रयोग में लें।

प्रयोग

* कृष्ण चतुर्दशी को धतूरे की मूल लाकर सहवास के समय जो स्त्री अपनी कमर में बांध कर रखती है उसको गर्भ नहीं रहेगा।
* सर्प के दांत को जो स्त्री अपने पास रखती है उसको गर्भ नहीं रहेगा।
* मेढक की अस्थि को जो स्त्री अपने पास रखती है उसको गर्भ नहीं रहेगा।
* सरसों मूल जो स्त्री अपनी कमर में बाँध कर रखती है उसको गर्भ नहीं रहेगा।
* सिद्धार्थ की मूल को मस्तक पर धारण करने वाली स्त्री गर्भ धारण नहीं करती।
* हाथी की लीद का गुप्तांग पर लेप करे तो गर्भ नहीं रहेगा।

* पुरुष के कान का मैल तथा बाकला का दाना इन दोनों को पश्मीने में बाँधकर जो औरत अपने कण्ठ में धारण करती है, उसके गर्भ नहीं रहेगा।
* ऋतुकाल के बाद ५ दिन तक रोज एक तोला पान की मूल का रस पीए तो गर्भ नहीं रहेगा।

मुख-स्तभंन व विवाद विजय-तंत्र

△

मंत्र : ॐ नमो विश्वरूपाय अमुकेन विजयं कुरू कुरू स्वाहा।

विधि : शुभ दिन शुभ लग्न में इक्कीस दिन तक रोज एक माला का जाप कर मंत्र सिद्ध कर ले। इस मंत्र को सिद्ध कर विजय तंत्र की किसी भी वस्तु के प्रयोग में लेने से पहले २१ बार अभिमंत्रित कर फिर प्रयोग में ले।

प्रयोग

* श्वेतगुंजा मूल को वाद-विवाद के समय अपने मुंह में रखे तो सामने वाले के मुंह का स्तंभन हो जायेगा, यानि वाद-विवाद में वह हार जायेगा।
* चौलाई की मूल चांदी के ताबीज में मढ़ाकर अपने मुंह में रखे तो सामने वाले के मुंह का स्तंभन हो जायगा।
* हरताल के रस से मदार के पत्ते पर जिस व्यक्ति का नाम लिखकर किसी बगीचे के ईशान कोण में गाड़ दिया जायगा तो उसके मुंह का स्तंभन हो जायगा।
* रवि पुष्य नक्षत्र में श्वेत गुंजा के अग्रभाग के मूल को लेकर दाहिने हाथ में धारण करे तो विवाद में जय होगी।
* अपामार्ग की मूल, धतूरा, कनेर और हरताल को बकरी के दूध में पीस कर तिलक करे तो विवाद में जय होगी।
* जया पौधे की मूल राजकुल में अच्छी जगह स्थापित कर दी जाय तो हमेशा जय हो।
* मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा को गाजर की मूल लाकर भुजा या मस्तक में धारण करे तो विवाद में जय हो।

* काले साँप के मस्तक में चर्बी और मिट्टी भरें । उसमें श्वेत गुंजा बोये । उसकी मूल लेकर उसका तिलक करे तो वह शत्रु को पांच गुना ज्यादा ताकतवर मालूम होगा ।

मेघ-स्तंभन तंत्र

△

* श्मशान के अंगारे दो ईंटों में रखकर जंगल में गाड़ देने से बरसता हुआ पानी बन्द हो जायेगा ।
* दो हड्डियों में श्मशान के अंगारे भरकर दोनों के मुंह मिलाकर जंगल में गाड़ दे तो वर्षा बन्द हो जायगी ।

निद्रा-स्तंभन तंत्र

△

* कटेरी की मूल और महुआ पीसकर सूंघने से नींद नहीं आती ।
* नमक, काली मिर्च, सोंठ इन तीनों को पीसकर सात दिन तक आँख में डाले तो निद्रा नहीं आयगी ।
* कुत्ते के कान का मैल व हरताल मिलाकर हाथ में बांधने से निद्रा नहीं आएगी ।
* कटेरी की मूल को शहद में पीसकर नस्य लेने से निद्रा का स्तंभन हो जाता है ।

नौका-स्तंभन तंत्र

△

* भरणी नक्षत्र में गूलर या पीपल को पांच अंगुल की एक शाखा लाकर उसकी कील बनाकर नौका के किसी छिद्र में डाल दे तो नौका नहीं चलेगी ।

* काले तीतर को हल्दी व मालकांगनी खिलाए । दूसरे रोज उसकी विष्ठा को लेकर उसकी बुरकी नाव में डाल दे तो नाव नहीं चलेगी ।

* शतावरी वृक्ष की पांच अंगुल की कील को नाव में डाल देने से नाव का स्तंभन हो जाता है ।

सर्वजीव-स्तंभन तंत्र

Δ

* मनुष्य की खोपड़ी में श्वेतगुन्जा को बोये । दूध से सींचे । उसके बाद उसकी शाखा व लता जिसके शरीर पर रखे उसका स्तंभन हो जायगा ।

* श्मशान के अंगारों पर शत्रु के नाम सहित नमक का हवन करे तो उसका स्तंभन हो जायगा ।

* रजस्वला औरत का वस्त्र लेकर उस पर गोरोचन व मजीठ से जिस किसी का नाम लिखकर एक घड़े में डाल दे तो उसका तत्काल स्तंभन हो जायगा ।

* जहाँ पर नदी व समुद्र का संगम हो वहाँ जाकर दोनों के किनारे की मिट्टी लें और उसमें कुत्ते की पूंछ के बाल मिलाकर गोली बनाये । वह गोली अंकोल के तेल में डालकर जिस मनुष्य को दिखाये तो वह मनुष्य तब तक नहीं उठ सकेगा जबतक गोली तेल से नहीं निकाल ली जायगी ।

* रजस्वला स्त्री के वस्त्र में गोरोचन मिलाकर, जिस मनुष्य का नाम लेकर एक कलश के भीतर डाल दे तो उस मनुष्य का स्तंभन हो जाएगा ।

* गेहूँ को शहद में २४ घंटा रखकर फिर सुखाकर जिस पक्षी को खिलाया जायगा उसका स्तंभन हो जायगा ।

* हींग जल में घोलकर उसमें गेहूं डाल दे । २४ घंटे बाद उसको निकालकर सुखा ले । वह गेहूँ जिस किसी पक्षी को खिलायेंगे उसका स्तंभन हो जायगा । गर्म पानी उसके ऊपर डालने से ठीक हो जायेगा ।

* चावल, चना या गेहूँ, आक के दूध में भिगोकर फिर सुखाकर जिस पक्षी को खिलाएंगे उसका स्तंभन हो जायगा ।

* बड़ के दूध में चावल पीसकर गोलियां बना ले, उन गोलियाँ को जिस पशु पक्षी को खिलायेंगे वह तुरन्त बेहोश हो जायेगा। गर्म पानी उस पर डालने से ठीक हो जायेगा।
* ऊंट की हड्डी की चार कील बनाए। चारों दिशाओं में गाड़ दे। जो पशु उसके बीच में आ जाएगा वह फिर बाहर नहीं जा सकेगा।
* ऊँट के बाल जिस पशु पर डाल दें तो कहते हैं कि उसका वहीं स्तंभन हो जायगा।

शुक्र-स्तंभन

△

* फिटकरी के टुकड़े को कमर में बाँधकर संभोग करने से अधिक समय तक स्तंभन होता है।
* लंगड़े आम की मूल कमर में बांधकर संभोग करने से देर तक स्तंभन रहता है।
* काले बिलाव के जांघ की हड्डी कमर में बांधकर संभोग करने से देर तक स्तंभन होता है।
* छालिया सुपारी को दोनों गलाफों में दबाकर संभोग करें तो देर तक स्तंभन होता है।
* रविवार को चिड़ा-चिड़ी जिस लकड़ी पर बैठकर संभोग करें, उस लकड़ी का टुकड़ा कमर में पीछे की ओर बांधकर संभोग करे तो देर तक स्तंभन रहता है। पेड़ू के ऊपर करने से स्खलित होता है।
* लाल अपामार्ग की मूल मंगलवार को लाकर कमर में बाँधकर संभोग करे तो देर तक स्तंभन रहता है।
* गिरगिट की पूंछ के अग्र भाग को काटकर एक अंगूठी में डालकर कनिष्ठा अंगुली में पहनकर संभोग करे तो देर तक स्तंभन रहता है।
* ऊँट की हड्डी पलंग के सिरहाने की ओर बाँधकर उसी शय्या पर संभोग करे तो देर तक स्तंभन रहता है।
* ऊंट के बालों की रस्सी बनाकर जांघ में बाँधकर संभोग करने से देर तक स्तंभन रहता है। रस्सी को जबतक खोला नहीं जायगा तब तक स्तंभन रहेगा।

* शनिवार को गदहा या भैंसा चौराहे पर लोटे। उस जगह की मिट्टी पूर्व की ओर मुंह करके उठाये। धोती के किनारे बाँधकर संभोग करे तो देर तक स्तंभन रहता है।

* कपिला गाय के घृत से जलाया हुआ और इन्द्र गोप के चूर्ण से युक्त दीपक से रात्रि में संभोग के समय देर तक स्तंभन रहता है।

* काले धतूरे व बच की मूल समभाग लेकर पीसकर शिश्न पर लेप कर संभोग करे तो देर तक स्तंभन रहता है।

* पुष्य नक्षत्र में नग्न होकर तुम्बा की मूल लाए। उसमें सोंठ व काली मिर्च मिलाकर महीन पीसकर गाय के दूध में खरलकर चने के बराबर गोली बनाए। एक गोली संभोग के समय मुँह में रखे तो देर तक स्तंभन रहता है।

* कपूर, सुहागा और पारा समभाग लेकर सूर्यमुखी फूल के रस में खरलकर उसमें मधु मिलाकर शिश्न पर लेपकर संभोग करे तो देर तक स्तंभन रहता है।

* रवि पुष्य नक्षत्र में सरपंखा की मूल लाए। कुंवारी कन्या के हाथ से कते सूत के सात तार लेकर उससे बाँधकर अपनी कमर में बाँधे तो देर तक स्तंभन रहता है।

* रवि पुष्य नक्षत्र में लजवन्ती की मूल लाकर चाँदी की अंगूठी में जड़ा कर अपने पास रखे तो स्तंभन बढ़ता है।

* रविवार या मंगलवार को घोड़ा और खच्चर की पूंछ का एक एक बाल लाए और पीली कौड़ी में छेदकर दोनों बाल उसमें डाल दे। फिर दांयी भुजा पर बाँध कर संभोग करे तो स्तंभन बढ़ता है।

* जो औरत लजवन्ती के पत्तों के रस का गुप्तांग में लेपकर संभोग करेगी तो उस औरत का अद्भुत स्तंभन होगा।

* पांव में केसु का लेपकर संभोग करे तो स्तम्भन शक्ति बढ़ती है।

* श्वेत आर्क के रूई की बत्ती बनाकर, खच्चर की चर्बी में भिगोकर, अरंडी के तेल के दीपक में जलाए तो जब तक बत्ती जलती रहेगी तब तक स्तंभन रहेगा।

* खस और चन्दन को शहद में मिलाकर हाथ से गले पर लेप कर सहवास करे तो देर तक स्तंभन रहता है।

* चिता की भस्म, बच, कूठ, केसर और गोरोचन इनको सम भाग लेकर पीसकर यदि थोड़ा सा स्त्री के मस्तक पर गिराकर सहवास करे तो देरतक स्तंभन रहता है।

* धतूरे के रस में गोरोचन, कुमुद, पारा, केसर और चन्दन खरल कर शिश्न पर लेपकर सहवास करे तो देरतक स्तम्भन रहता है।

* काला कमल, भौंरे के दोनों पंख, अगर को मूल, सफेद काकजंघा, सम भाग पीसकर स्त्री के मस्तक पर गिराकर सहवास किया जाए तो स्त्री संभोग के लिए दासी हो जायगी।

* उल्लू की जिह्वा और गोरोचन, तांबे के ताबीज में डालकर उसे मुंह में रखकर सहवास करे तो स्तंभन देर तक रहता है।

* भाद्रमास या माघमास की चतुर्दशी को कलिहारी की मूल लाकर कमर में बाँधकर सहवास करे तो देर तक स्तंभन रहता है।

* अपराजिता की मूल व शाखा को रेशमी वस्त्र में लपेट कर अपनी भुजा में बाँधकर सहवास करे तो देर तक स्तम्भन रहता है।

* सूअर के दायीं ओर के दांत को कमर में बांधकर सहवास करे तो जब तक उसे खोलकर अलग नहीं किया जायेगा तब तक स्तम्भन रहेगा।

* कमलगट्टे को शहद के साथ पीसकर नाभि के ऊपर लेप करे। जब तक लेप हटाया नहीं जायगा तब तक स्तम्भन रहेगा।

* पुष्य नक्षत्र में इन्द्र वारुणी की मूल लाकर उसमें सोंठ काली मिर्च व पीपल मिलाकर गाय के दूध में गोली बांध ले। सहवास के समय गोली मुँह में रखे, मुँह से वापस निकालने तक स्तम्भन रहेगा।

* श्वेत सरपंखा की मूल शहद के साथ पीसकर नाभि के ऊपर लेप कर सहवास करे तो देर तक स्तम्भन रहता है।

* धतूरे के बीजों को मधु के साथ पीसकर नाभि पर लेप कर सहवास करे तो देर तक स्तम्भन रहता है।

* कपूर, सुहागा व पारा को आंवले के रस में पीसकर शिश्न पर लेप करे, सूखने के बाद लेप उतार कर सहवास करे तो देर तक स्तम्भन रहता है।

* जमीकन्द व तुलसी का बीज पान में खाये तो देर तक स्तंभन रहता है।

* चिड़ी को पूंछ को मक्खन में पीसकर पैरों में लेप कर सहवास करे, जब तक पैर जमीन को नहीं छुयेंगे तब तक स्तम्भन रहेगा।

* बीरबहूटी का चूरण कर महावर के पानी में पीसकर उसमें रुई की बत्ती बनाए। गाय घृत का दीपक करे। जब तक दीपक जले तो उसकी सुगन्ध से देर तक स्तम्भन रहे।

विद्वेषण-तंत्र

जिसके द्वारा दो मित्रों के मध्य
मैत्री भंग हो जाय और
उनका संगठन टूट जाय
उसे विद्वेषण कर्म
कहते हैं ।

विद्वेषण-तन्त्र

△

मन्त्र : ॐ नमो नारायणाय अमुकस्यामुकेन सह विद्वेषं कुरू कुरू स्वाहा ।
नमो महाभैरवाय श्मशानवासिन्यै···योः विद्वेषं कुरू कुरू क्रूं फट् ।

विधि : शुभ लग्न व शुभ दिन से जाप शुरू करे । मध्याह्न में पुत्रजीवक की माला से आग्नेय दिशा की ओर मुँहकर इक्कीस दिन तक रोज एक माला का जाप कर किसी भी एक मन्त्र को सिद्ध कर ले । खाली जगह में दोनों का नाम बोलना चाहिए ।

द्रष्टव्य : उपरोक्त मंत्र में से किसी भी एक मन्त्र को सिद्ध कर, फिर विद्वेषण तंत्र की किसी भी वस्तु को प्रयोग में लेने से पहले २१ बार अभिमन्त्रित कर फिर प्रयोग में लें ।

प्रयोग

* बिलाव और चूहे की विष्ठा से एक पुतली बनाए और उस पुतली को नीले वस्त्र से लपेट कर उपरोक्त मंत्र से एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित कर एक जगह रख दें, दोनों दोस्तों में शत्रुता हो जायेगी ।

* एक संगमरमर का ऐसा टुकड़ा जिस पर किसी की मृत्यु की तिथि लिखी हो, उसको पानी में घिस कर उपरोक्त मंत्र से २१ बार अभिमन्त्रित कर यदि दो दोस्तों को वह पानी पिला दिया जाए तो उनमें शत्रुता हो जायेगी ।

* एक हाथ में कौवे का दूसरे हाथ में उल्लू का पंख लेकर दोनों को मिलाकर काले सूत से बांध ले । उन दोनों पंखों को हाथ में लेकर अंजलि से प्रतिदिन एक सौ आठ बार तर्पण करने पर विद्वेषण होगा । सूत से बांधते समय भी मन्त्र का जाप करते रहना चाहिए ।

* किसी स्त्री के सर के बाल कोरे प्याले में जलाये, फिर उस स्त्री के चाहने वाले व्यक्ति को उस प्याले में पानी पिलाए तो उनमें आपस में विद्वेषण हो जाएगा । बाल जलाते समय व प्याले में पानी डालते समय मंत्र का जाप होना चाहिए ।

* कौए और उल्लू दोनों के पंखों की राख रविवार को बनाकर उपरोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर दो मित्रों के सर पर डाल दी जाए तो उनको आपस में शत्रुता हो जायेगी ।

* रविवार को उल्लू व कौवे के रक्त को लेकर उसमें दोनों मित्रों का उतारा हुआ वस्त्र कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात्रि को उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर डाल दिया जाए तो उनकी आपस में शत्रुता हो जायेगी।

* बिलाव व चूहे के पांव की मिट्टी और दो मित्रों के पांव की मिट्टी लेकर कपड़े में बांधकर उपरोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर रविवार के दिन जहाँ दो मित्र रहते हों वहां गिरा दें तो उनमें आपस में शत्रुता हो जायेगी।

* रविवार को उल्लू की आंख लेकर इसको गुग्गुल की धूनी देकर उसकी छोटी-छोटी गोली बना लें। मंगलवार के दिन जहां कोई दो मित्र रहते हों वहां एक गोली उपरोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर गिरा दें तो उनकी आपस में शत्रुता हो जायेगी।

* अमावस्या, रविवार या मंगलवार को या जिस दिन चन्द्रमा वृश्चिक राशि में हो उस दिन घुग्घू का मस्तिष्क लेकर उसमें चील और उल्लू के पंख व कौवे के नाखून डालकर सबको पीस लें और गुग्गुल की धूनी देकर इसको जलाकर राख बना लें। फिर उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिसके घर में थोड़ी सी डाल दें तो उस घर में रहने वालों का परस्पर कलह हो जायेगा।

* यदि तोते का रक्त शुष्क कर उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर दो मित्रों पर डाल दे तो उनमें आपस में शत्रुता हो जायेगी।

* रविवार दोपहर समय गधा या भैंसा जहां पर लेटा हो उस जगह की धूल लाकर उपरोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर जिसके घर में डाल दें उनमें परस्पर झगड़ा हो जायेगा।

* हाथी और सिंह के बाल लाकर, दो मित्रों के पांव की मिट्टी लेकर, सब मिलाकर धरती में गाड़ दे। उस पर अग्नि जलाए और चमेली के फूलों की १०८ आहुति मंत्र पड़ते हुए दें, तो दोनों मित्रों की आपस में शत्रुता हो जायेगी।

* सर्प की दाढ़, नेवले का बाल व श्मशान की राख को मिलाकर गोली बना लें और ऐसी जगह गाड़ दे जहाँ से दोनों मित्रों का आवागमन हो। उसके लांघते ही उनमें आपस में शत्रुता हो जायेगी।

* रविवार के दिन पंचमी हो, उस दिन श्मशान की धूल लाकर गुग्गुल की धूनी देकर उपरोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर जिसके घर में गिरा दें उस घर में रात दिन कलह रहेगी।

* श्मशान में जाकर किसी मुर्दे के बायें पैर की नली लाये और उसकी एक कील बना ले। उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर जिसके घर में गाड़ दें, वहां रात दिन कलह रहेगी।

* रविवार के दिन चूहे व बिलाव के एक-एक टँक (चार आना भर) बाल लेकर उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिसके घर में गाड़ दे, उस घर में रात दिन कलह रहेगी।

* कूकर, सूकर व बिलाव इन तीनों के दांत, श्मशान की भस्म, चौराहे की धूल इन पाँचों को एकत्र कर उपरोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर जिस किसी के घर में डाल दे तो उस घर में कलह हो जायेगी।

* आक के फूलों को हाथ में लेकर उपरोक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करने से जिन दो व्यक्तियों के नाम से मन्त्र का जप किया जायेगा उनमें आपस में बैर हो जायेगा।

* बिल्ली के सर के बाल, चूहे के सर के बाल व शनिवार को न्यौतकर रविवार को नीम के पेड़ पर बने कौवे के घोसले की लकड़ी लाए। तीनों को जलाकर भस्म कर गुग्गुल की धूनी देकर एक कपड़े में बाँधकर जिसके घर में गिरा दें उस घर के व्यक्तियों में आपस में विद्वेष हो जायेगा।

* घुग्घू और कौवे का पंख शनिवार की अर्द्धरात्रि को जलाकर उपरोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर जिन दो मित्रों के सिर पर गिरा दें उनका आपस में वैमनस्य हो जायेगा।

* पुरुष का वस्त्र व स्त्री के सिर के बाल मंगलवार को जलाकर उस भस्म को उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर उन दोनों को खिला दें तो उनमें आपस में वैमनस्य हो जायेगा।

* काले नाग की कांचली और नेवले के बालों को एक साथ जलाकर गुग्गुल की धूनी देकर उपरोक्त मन्त्र से अभिमंत्रित कर जिन दो व्यक्तियों के बीच में धूप की तरह जलायेंगे उनमें आपस में वैमनस्य हो जायेगा। किसी सभा में धूनी दे तो सभा में झगड़ा होकर सभा भंग हो जायेगी।

* सेही के कांटे (एक प्रकार के झाड़ का कांटा) को उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर जिस घर के दरवाजे में गाड़ दिया जाएगा उस घर में नित्य झगड़ा होता रहेगा ।

* बारह सरसों, तेरह राई, चाक की माटी, श्मशान की राख, खैर की लकड़ी से घृत डालकर हवन करें । ठंडा होने पर उस राख को जिन दो मित्रों के बीच में गिरा दें उनकी अभिन्न मैत्री टूट जाएगी । हवन उपरोक्त मंत्र को बोलते हुए करें ।

* कुत्ते के बाल व बिल्ली के नाखून की किसी सभा में धूनी दी जाए तो उस सभा में विप्लव हो जाता है ।

* हाथी व घोड़े के बाल की जिस सभा में धूनी दी जाए तो क्षण मात्र में उस सभा में विद्वेष फैल जाता है ।

* हाथी के दांत व शेर के दांत को मक्खन में पीस कर तिलक करके जिस सभा में जायें उसमें विद्वेष होकर सभा समाप्त हो जाती है ।

* मयूर की विष्ठा व सांप के दांत का चूर्ण कर उसका तिलक कर जिस सभा में जायें उस सभा में विद्वेषण हो जायेगा ।

* अपने दुश्मन के पैर की मिट्टी व दुश्मन के दुश्मन के पैर की मिट्टी लेकर उसकी पुतली बनाकर यदि श्मशान में गाड़ दी जाए तो उनके जीवन में कभी भी मैत्री नहीं होगी ।

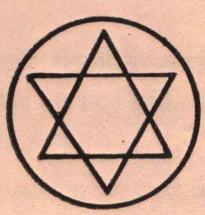

उच्चाटन-तंत्र

जिसके द्वारा मनुष्य, पशु, पक्षी अपने
स्थान या धन्धे से भ्रष्ट हों,
इज्जत और मान-सम्मान
खो दें उसे उच्चाटन
कर्म कहते हैं।

उच्चाटन-तंत्र

△

मंत्र : ॐ नमो भगवते रुद्राय दंड कराल्राय अमुकं सपुत्र बांधवैः सह हन हन दह दह पच पच शीघ्र उच्चाटय उच्चाटय हुँ फट् स्वाहा ठः ठः ठः ।

विधि : शुभ दिन शुभ लग्न में वायव्य दिशा को ओर मुंहकर पुत्रजीवक की माला से अपराह्न में इक्कीस दिन तक रोज एक माला का जाप कर मंत्र सिद्ध कर ले । इस मंत्र को सिद्ध कर उच्चाटन तंत्र की किसी भी वस्तु को प्रयोग में लेने से पहले २१ बार अभिमंत्रित कर फिर प्रयोग में लें ।

प्रयोग

* घुग्घू का सिर लेकर, सुखाकर, चूर्ण करके जिसके मस्तक पर डाला जाएगा उसका उच्चाटन हो जायेगा ।

* नीबू की लकड़ी, घुग्घू की हड्डी, बिल्ली का चमड़ा व नख, धतूरे का रस, श्मशान की हड्डी इन सबको लाकर जिसके घर में गाड़ दिया जायेगा, उस घर वालों का उच्चाटन हो जायगा ।

* कौए के घोंसले को जलाकर भस्म कर ले, उस भस्म को जिसके मस्तक पर डाला जायगा उसका उच्चाटन हो जायगा ।

* श्वेत कंडयारी की मूल लेकर जिसके घर में दबा दी जाए, उस घर में रहने वालों का उच्चाटन हो जायगा ।

* रविवार या मंगलवार को घुग्घू व कौवे का पंख जलाकर भस्म कर ले और जिसके मस्तक पर डाल दें तो उसका उच्चाटन हो जायगा ।

* उमरी वृक्ष की चार अंगुल की लकड़ी की कील बनाकर जिसके घर में गाड़ दी जाएगी तो उस घर वालों का उच्चाटन हो जायगा ।

* अश्विनी नक्षत्र में पीपल की दस अंगुल की लकड़ी जिस घर में गाड़ दी जाए उस घर वालों का उच्चाटन हो जायगा ।

* मृगशिरा नक्षत्र में मार्ग का जल लाकर जिसके मस्तक पर डाल दिया जाय उसका उच्चाटन हो जायगा ।

* हस्त नक्षत्र में सेंधा नमक की एक मूर्ति बनाए । उस पर शत्रु का नाम लिखे । रोज पूजन कर मूर्ति को स्नान कराए तो जिस तरह मूर्ति गलेगी, शत्रु का उच्चाटन होगा ।

* एक शिव लिंग पर ब्रह्म दण्डी तथा चिता की भस्म का लेप करे। फिर उस लेप को उतार कर सफेद सरसों मिलाकर शनिवार की रात्रि को जिसके घर में फेंक दिया जाय उस घर के मालिक का उच्चाटन हो जायगा।

* गधी के बायें पांव के नीचे की धूल लेकर रविवार मध्याह्न में जिस घर में डाल दी जाय तो उस घर वालों का उच्चाटन हो जायगा।

* हरताल, लहसुन व धतूरे के बीज इनका चूर्ण कर जिसके मस्तक पर डाल दिया जाय वह निर्लज्ज हो जायगा। दूध व शक्कर पिलाने से ठीक होगा।

* शत्रु के घर से शनिवार या रविवार को एक बोरी लाए। उस बोरी के ऊपर बैठकर तीन दिन तक रोज "ॐ ह्री क्लीं श्रीं फट् गुरूडाय जापय स्वाहा" इस मंत्र का २४ बार जापकर बोरी को झाड़ दे, तो उस घर वालों का भयंकर उच्चाटन होगा।

* मंगलवार दोपहर में गधे के बायें पैर की धूल शत्रु के घर में डाल दें तो उनका उच्चाटन हो जाएगा।

* सरसों और शिवनिर्माल्य यानी शिव पूजा के कमल पत्र शत्रु के घर में गाड़ दें तो उनका उच्चाटन हो जायगा।

* कौवे की पांख रविवार को शत्रु के घर में गाड़ दे तो उनका उच्चाटन हो जायगा।

* उल्लू की विष्ठा व सरसों का चूर्ण जिसके मस्तक पर डाल दिया जाए, उसका उच्चाटन हो जायगा।

* गूलर वृक्ष की लकड़ी की एक चार अंगुल की कील जिसके घर में गाड़ दें उसका उच्चाटन हो जायगा।

* मनुष्य के हाड़ की एक चार अंगुल की कील शत्रु के घर में गाड़ दे तो उनका उच्चाटन हो जायगा।

* उल्लू की पांख मंगलवार के दिन शत्रु के घर में फेंक दे तो उनका उच्चाटन हो जायगा।

* काले उल्लू की पंखों का जिस व्यक्ति का नाम लेकर १०८ बार होम करे तो उसका उच्चाटन होकर रहेगा।

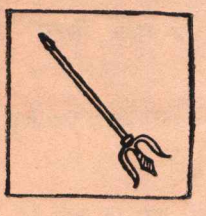

मारण-तंत्र

जिसके द्वारा अन्य जीवों का
प्राण हनन हो जाय उसे
मारण-कर्म कहते हैं।

मारण-तंत्र

△

मंत्र : ॐ नमः कालरूपाय अमुकं भस्म कुरू कुरू स्वाहा।

विधि : शुभ दिन शुभ लग्न में ईशान कोण की ओर मुंहकर पुत्रजीवक की माला से सांय-काल में इक्कीस दिन रोज एक माला का जाप कर मंत्र सिद्ध कर ले। इस मंत्र को सिद्ध कर फिर मारण तंत्र की किसी भी वस्तु के प्रयोग में लेने से पहले कम से कम २१ बार अभिमंत्रित कर फिर प्रयोग में लें।

प्रयोग

* मनुष्य की हड्डी का चूर्ण पान में रख के जिसको खिला दे उसकी मृत्यु हो जायगी।
* चिता की लकड़ी मंगलवार भरणी नक्षत्र में जिसके दरवाजे पर गाड़ दे उसकी मृत्यु हो जायेगी।
* उल्लू की जिह्वा सुखाकर चूर्ण कर उसमें केसर मिलाकर जिसे दूध में पिला दें उसकी मृत्यु हो जायेगी।
* सांभर सींग का चूर्ण, नींबू की छाल का चूर्ण, मालकांगनी का चूर्ण, पारा व सीसा बराबर भाग लेकर हलकी आंच से गरम कर ले, फिर उस चूर्ण को जिसके मस्तक पर डाल दिया जायेगा उसका शरीर फूटकर मृत्यु को प्राप्त हो जायगा।
* तीतरी व बटेर की विष्ठा लाकर शत्रु के मस्तक पर डाल दी जाये तो उसकी मृत्यु हो जायगी।
* विष (जिसको संखिया कहते हैं उसमें भी सिंगी मोरा या मीठा तेलीया कहते हैं उसी को लेना चाहिए) चिता की भस्म व धतूरा सभी का चूर्ण कर मंगलवार के दिन जिसके शरीर पर गिरा दे उसकी मृत्यु हो जायगी।
* मिलावा का तेल, काले सांप का दांत, विष व धतूरा सबको मिलाकर पीसकर जिसके शरीर पर डाल दे उसकी मृत्यु हो जाएगी।
* सांप की हड्डी का चूर्ण जिसके शरीर पर डाल दे उसकी मृत्यु हो जायगी।
* बिच्छू का मांस व उसका कांटा पीसकर जिसके शरीर पर डाल दे तो उसकी मृत्यु हो जायगी।

* उल्लू की विष्ठा में विष का चूर्ण मिलाकर जिसके शरीर पर डाल दे उसकी मृत्यु हो जायेगी।

* गधे की विष्ठा में विष का चूर्ण मिलाकर जिसके शरीर पर डाल दे उसकी मृत्यु हो जायेगी।

* पूर्णिमा के दिन चिता की भस्म बायीं तरफ से ले, उस भस्म से पन्द्रहिया यंत्र लिखकर श्मशान की अग्नि में मगलवार को डाल दे तो उसकी मृत्यु हो जायेगी।

* गिरगिट की चर्बी में उसी का तेल मिलाकर उसको एक बूंद भी जिसके शरीर पर डाल दे उसकी मृत्यु हो जायगी।

* रात को जब दीपक जलाए तो उसमें जिसके नाम से नमक व भांग डाल दे तो उसकी एक मास में मृत्यु हो जायेगी।

* काले सांप की चर्बी में बत्ती बनाये, मनुष्य की खोपड़ी में धतूरे के बीजों का तेल डालकर, मनुष्य की खोपड़ी पर ही काजल पारे। उस काजल में पांचों नमक मिलाकर जिस पर डाल दे उसकी मृत्यु हो जायेगी।

* शत्रु की विष्ठा को मनुष्य की खोपड़ी में डालकर जिसके नाम से बगीचे में गाड़े उसकी मृत्यु, जिस तरह विष्ठा सूखेगी हो जायगी।

शत्रु-कष्ट-कारक-तंत्र

△

रोग तन्त्र

* कौए की दायीं ओर की पांख, गीदड़ की पूंछ के बाल रविवार को लेकर उन्हें गुग्गूल की धूनी देकर शत्रु के बिस्तर पर फेंक दे तो वह बीमार हो जायगा।

* मंगलवार, शनिवार, रविवार या अमावस्या को शत्रु के पांव की औंधी जूती लाकर पानी में उबाले तो शत्रु बीमार हो।

* मयूर, मुर्गा और कबूतर की विष्ठा धतूरे व हरताल में मिलाकर शत्रु पर फेंक दे तो वह बीमार हो जायेगा।

* सोमवार या मंगलवार को श्मशान से धूल लाए और उसमें राई मिला दे। आक की लकड़ी जलाकर "अमुकस्य हन हन स्वाहा" यह मन्त्र बोलते हुए २० बार उसका होम करे तो शत्रु भयंकर रूप से बीमार हो जाएगा।

* थोडी सी धूल व सरसों लेकर "आः ह्रीं, ठं ठं फु" इस मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित कर शत्रु के ऊपर डाल दिया जाय तो उसे भयानक यंत्रणा का कष्ठ उठाना पड़ेगा।

* जब मुर्दे को जलाया जाता है, उसके पहले वहाँ की जमीन को साफ कर एक तांबे का पैसा या टुकड़ा रखकर उस पर चिता रखी जाती है। उस तांबे के पैसे या टुकड़े को दूसरे रोज निकाल लाएं। उसमें से थोड़ा सा टुकड़ा काटकर अलग कर ले। ज्यादा वाले टुकड़े का ताबीज बनवा ले। छोटे वाले टुकड़े का एक हाथ लम्बा एक तार बनवा ले। उस तार को ताबीज लटकाने की जगह लगा ले। फिर दुश्मन के बाएं पैर की मिट्टी लाकर उस ताबीज में भर ले और उस तार के सहारे ऊंचा लटका दे। एक भारी लोहे का वजनदार टुकड़ा या तोलने वाला लोहे का बाट उसके साथ बाँध दे तो दुश्मन बैठा होगा तो बैठा ही रह जायेगा। खड़ा होगा तो खड़ा रह जायेगा यानि उसके शरीर में भयानक तनाव हो जायेगा।

ज्वर तन्त्र

* रविवार को श्मशान से मृतक का एक कफन का टुकड़ा ले आए। उसे आक के दूध में भिगोकर सुखा ले। फिर उस पर कौवे की पंख की कलम से विष व हरताल की स्याही से दुश्मन का नाम लिखकर एक आक की लकड़ी में उस कपड़े को खोंसकर अग्नि में जलाए तो शत्रु को ज्वर हो जायगा।

* रवि पुष्य नक्षत्र में इन्द्रायण की मूल लाकर उसमें पीपल, सोंठ और काली मिर्च मिलाकर, बकरी के दूध में पीसकर, गोली कर धूप देकर रख ले। जब उस गोली का चूर्ण-शत्रु के मस्तक पर डाला जायगा तो उसको ज्वर हो जायगा। कांजी के पानी से स्नान कराने से ठीक हो जायगा।

* रविवार के दिन जिसकी अकाल मृत्यु हुई हो उस दिन एक कच्चे मिट्टी के बर्तन में दूध डालकर श्मशान में उस चिता के पास जाकर वस्त्रहीन होकर बायें पैर के अंगूठे से उस चिता से अंगारा निकाल कर मुंह में दूध लेकर उस दूध से अंगारे को बुझा ले, ठंडा कर ले। फिर घर आकर धूप दीप कर उस अंगारे को चौराहे में गाड़ दे। २१ दिन तक रोज उस पर धूप दीप करे।

२१ दिन बाद उसको निकाल कर ले आए। उस कोयले से मिट्टी पात्र के एक टुकड़े पर शत्रु का नाम लिखकर उँचो जगह रख दे तो उसे निश्चय ही ज्वर हो जायेगा।

टट्टी पेशाव बन्द तंत्र

* जहां शत्रु टट्टी पेशाब करता है वहां बिच्छू का एक डंक गुग्गुल की धूनी देकर गाड़ दिया जाए तो शत्रु अत्यन्त कष्ट पाएगा। डंक निकालने से ही ठीक होगा।

* श्मशान में मनुष्य की कपाल क्रिया करते समय जो लकड़ी काम में ली जाती है, उसको घर लाकर उसके चार टुकड़े करे। फिर शत्रु जहां टट्टी पेशाब करता है वहाँ एक टुकड़ा टट्टी की जगह, एक पेशाब की जगह, दो दोनों पैरों की जगह गाड़ दे, जब तक वे गाड़े हुए रहेंगे शत्रु का टट्टी पेशाब बन्द रहेगा।

* शत्रु जहाँ पेशाब करता है उस जगह की मिट्टी सोमवार को ले आए, पहले दिन रविवार की रात्रि में एक ही बार में नर छछुन्दर को मारकर उसकी खाल में वह मिट्टी भरकर, जंगल में एक वृक्ष पर लटका दे, जब तक लटका रहेगा, उसका पेशाब बन्द रहेगा। उस मिट्टी को निकालने से ही ठीक होगा।

नपुंसककरण तन्त्र

* रविवार अनुराधा नक्षत्र में कलिहारी की मूल लाए। शत्रु जहाँ पेशाब करता है वहां गाड़ दे तो वह नपुंसक हो जायगा, निकालने से ठीक होगा।

* जौंक को भूनकर, चूर्ण कर मक्खन के साथ जिसको भी खिला दिया जाए वह नपुंसक हो जाएगा। धतूरे का फूल, शर्करा मिलाकर खिलाने से ठीक हो जायगा।

* बुधवार या शनिवार को गिरगिट को पकड़ कर लाए शत्रु के मूत्र की मिट्टी के साथ जमीन में गाड़ दे तो वह नपुंसक हो जायगा। निकालने से ठीक हो जायगा।

वमनकरण तन्त्र

* शत्रु जब खाना खा रहा हो तो उस समय बगुले की विष्ठा का तिलक कर उसके सामने जाए तो उसको देखते ही शत्रु को वमन हो जाएगा।

निर्लज्जकरण तन्त्र

* हरताल, लहसुन और धतूरे के बीज का चूर्ण कर शत्रु के मस्तक पर डाल दिया जाय तो वह निर्लज्ज हो जायगा। दूध और शक्कर पिलाने से ठीक हो जावेगा।

पिशाचकरण तन्त्र

* मयूर, परेवा और मुर्गे की विष्ठा मिलाकर चूर्ण कर शत्रु के मस्तक पर डाल दिया जाय तो वह पिशाच के समान हो जाएगा। सिर मुंडवा देने से ठीक हो जायगा।

पागलकरण तन्त्र

* कौवे का पंख और दायां पांव तथा सियार की पूँछ रविवार को लाकर धूप और गुग्गुल की धूनी देकर शत्रु के सोने की खाट में गुप्त रूप से रख दे तो उस खाट पर सोने वाला व्यक्ति पागल हो जायेगा। निकालने से ठीक हो जायगा।

* अफीम को पानी में घोलकर उसमें पीपल की दाढ़ी भिगोकर तर कर ले, फिर सुखा ले। इसकी धूनी जिसे भी दी जायगी। वह कुछ समय के लिए पागल हो जायगा।

* मुर्गे की विष्ठा, डोडकाग की विष्ठा मिलाकर सुखाकर, चूर्ण कर, थोड़ी सी एक चावल के बराबर पानी में जिसे पिला दे तो वह पागल हो जायगा।

घाव तंत्र

* सांप, भंवरा, काला बिच्छू और बन्दर का मस्तक इनको सम भाग लेकर चूर्ण कर शत्रु के ऊपर या उसकी शय्या पर डाल दे तो उसके शरीर में घाव ही घाव हो जाएंगे।

व्यवहार बन्द तन्त्र

* रविवार को मरे हुए कुत्ते को जिस डोरी में बांधकर दूर गिराया जाता है वह डोरी ले आए और उसको धूप देकर शत्रु के घर के दरवाजे में खोंस दे, तो उसका सामाजिक व्यवहार बन्द हो जायगा।

हंसी तन्त्र

* रविवार के दिन काला गदहा जहां लेटे उस जगह की धूल ले आएं, जिस

किसी के खाने की थाली के नीचे उस धूल को रख दे या बिछा दे तो खाने वाला हँसेगा ही हँसेगा।

मासिक धर्म (स्राव) तंत्र

* रविवार के दिन कुम्हार के घर जाकर उसके चाक से बर्तन काटकर उतारने वाले डोरे को चुराकर ले आए। फिर जिस दिन चिड़ा-चिड़ी को संगम करते हुए देखें, उस समय उस डोरे के सांत गाठ लगाकर रख ले। जब चाहे उस डोरे को रास्ते में डाल दे, तो जो औरत उस डोरे को लांघकर जायगी उसका आजार बन्द टूट जायेगा।

* रविवार या मंगलवार को क्वांरी कन्या के हाथ से कते सूत के सात तार ले, फिर जब चिड़ा-चिड़ी को संगम करते हुए देखें तो उस समय उन तारों को गांठ देते जाए, फिर मंगलवार को छिपकली को मारकर उसके रक्त से उस सूत को भिगोकर छाया में सुखा ले और फिर शनिवार को इसे आधा आधा काटकर पृथक पृथक रास्ते में गिरा दे। उन डोरों पर से जो भी स्त्री गुजरेगी उसका आजार बन्द टूट जायगा।

* एक नींबू व एक सेह की सूल लेकर रात्रि के समय आकाश में तारों को देखता रहे "अल्लाहुमा खिरली वक्त ली" इस मन्त्र का जप करता रहे। जब कोई तारा टूटे तो तुरन्त बोले, "तारो टुट्यो अमुक औरत को नाड़ो छुट्यो" यह बोलकर तुरन्त नीबू में सेह की सूल चुभो दे। जिस औरत का नाम लेकर सूल चुभोई गई है उसका आजार बन्द टूट जायेगा। जब तक सेह की सूल नींबू से निकाली नहीं जायेगी तब तक खून बन्द नहीं होगा।

भय तन्त्र

* धतूरा, अदरक, बड़ और मूंगा को मूल सम भाग लेकर पानी में घिसकर तिलक कर शत्रु के सामने जाए तो शत्रु भय-ग्रस्त रहेगा।

वस्तु कीड़ा तन्त्र

* रविवार को मरे हुए कुत्ते का मस्तक एक कपड़े में बांधकर रख दें। सात दिन तक उसका सिंदूर से पूजन करे। आठवें दिन मस्तक को गिरा दे और उस कपड़े का एक तार लेकर शत्रु के घर के दरवाजे में खोंस दे तो उसके खाने-पीने की वस्तुओं में कीड़े ही कीड़े हो जाएंगे। उस तार को निकालने से ठीक हो जायेगा।

मकान भंग तन्त्र

* बिल्ली की ऊपर की दाढ़, कुत्ते के नीचे की दाढ़ शनिवार की रात को लें। रविवार को "ॐ ह्रीं णमों ओहि जिणाणं; ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं नमः" इस मन्त्र की एक माला उनपर फेरकर शत्रु के घर की दीवाल में दबा दे, तो उसका पूरा मकान गिर जायेगा।

पत्थर तंत्र

* शनिवार के दिन श्मशान में जाए। जलते हुए मुर्दे की चिता में सात कंकरी "ॐ नमो उच्छिष्ट चंडालिनी देवी महापिशाचिनी क्लीं ठः ठः स्वाहा" इस मंत्र से सात बार अभिमंत्रित कर डाल दें। तीन घंटे बाद उसे निकालकर ले आए। सिंदूर से चर्चे व गुग्गुल की धूनी दे। फिर जिस घर में या घर के पीछे या नाले आदि में वो कंकड़ गाड़ दे तो उस घर में रात्रि को पत्थर बरसेंगे।

* जब जंगल में टट्टी जाए तो एक पत्थर से गुदा को साफ करे और उस पत्थर को अलग रख दे। इस तरह २१ दिन करे और क्रम वार पत्थर रखता जाए। २१ वें दिन उनमें से एक पत्थर उछलेगा। उस पत्थर को घर लाकर पूजा कर शत्रु के घर में रख दें तो जब तक वह पत्थर रखा रहेगा रोज रात को शत्रु के घर में पत्थर बरसेंगे।

* रोज जंगल में टट्टी जाए, जिस पानी से गुदा साफ करे उस पानी में से थोड़ा पानी बचा ले। वह पानी भैरव के मन्दिर पीछे जो वृक्ष होता है उस पर डाल दे। अगरबत्ती जला दे। बिना बोले, बिना पीछे देखे घर आ जाए। इस तरह २१ दिन तक करे। अन्तिम दिन वृक्ष का यक्ष पूछेगा कि मुझे क्यों याद किया। तो उससे कहें कि मैं जब तक ना नहीं कहूं मेरे अमुक शत्रु के घर पत्थर पड़ते रहें। शनिवार के दिन से शुरू करें तो उस घर में रोज पत्थर पड़ें।

अद्भुत कष्ट कारक तंत्र

△

* शनिवार के दिन जिसको कब्र में गाड़े उसी रोज उस कब्र के पास जाकर पश्चिम की ओर मुंहकर सीने के ऊपर की मिट्टी उठा लाए और एक जगह पर रख दे। मंगलवार के दिन एक सूअर की हड्डी लाए और रख दे

फिर शनिवार को कौवे की एक पांख लाए और रख दे फिर मंगलवार को नीलटांस का एक पंख लाए, फिर सबको इकट्ठा कर तांबे की ताबीज में भर ले। फिर शनिवार के दिन उसी कब्र के पास जाए और दाहिने हाथ में यंत्र लेकर कहे कि मैं जिस कार्य के लिए इसको करता हूं वह मेरा काम नहीं होगा तो तुम्हारा कल्याण नहीं होगा'' ऐसा बोलते ही यंत्र वाले हाथ में झनझनाहट होगी तब उस यंत्र को बायें हाथ में ले ले। झनझनाहट समाप्त होने पर वापिस यंत्र दाहिने हाथ में लेकर घर आ जाए और एक डिब्बी में उस यंत्र को डालकर रख दे। जब प्रयोग करना हो तब शत्रु के पैर की मिट्टी लाकर उस डिब्बी में डाल दे तो उस दिन शत्रु को नींद नहीं आयेगी। दूसरे रोज उसके शरीर में कीड़े खाते हुए से महसूस होंगे। फिर तीसरे रोज हाथ पैरों में सरण चलेगी। चौथे रोज उसको दस्त लगने शुरू हो जायेंगे तथा पांचवें रोज उस मिट्टी को डिब्बी से निकाल कर अलग रख दे। शत्रु को दस्त लगते रहेंगे। जब उसको ठीक करना हो तब वो मिट्टी वापस उस डिब्बी में डाल दें। वह ठीक हो जायेगा। पांच सात रोज बाद वह मिट्टी निकाल कर फेंक दे। फिर जब जब जिस पर प्रयोग करे इसी तरह करें।

कल्प-तंत्र

रुद्राक्ष कल्प

△

भोग और मोक्ष की इच्छा रखने वाले चारो वर्णों के लोगों को रुद्राक्ष धारण करना चाहिए। देवी भागवत, शिव पुराण, स्कन्द पुराण (विशेषत: ब्रह्मोत्तर खण्ड) पद्म पुराण, लिंग पुराण एवं जावल्योपनिषद् में इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी है। विश्वविख्यात रसायन शास्त्री डा० ब्रिहिम जमूर ने खोज की कि रुद्राक्ष के द्वारा कैंसर आदि अनेक रोगों का निदान किया जा सकता है। ब्रिटेन निवासी पाल ह्यूम ने अपनी चर्चित पुस्तक "रुद्राक्ष" में बताया है कि इसके प्रयोग से असम्भव से असम्भव कार्य सम्भव किये जा सकते हैं। सम्मोहन, उच्चाटन, वशीकरण व धनागम के क्षेत्र में अन्यतम है। इसके द्वारा भाग्य परिवर्तन सम्भव है। भाग्य के मार्ग में आने वाली रुकावटें दूर की जा सकती हैं। अमेरिकी महिला डा० सूसन भी स्वीकार करती हैं कि इससे तलाक रुकवाए जा सकते हैं, गर्भ धारण किया जा सकता है, इच्छित सन्तान प्राप्त की जा सकती है। यह वनस्पति ऐसे अद्भुत पुद्गलों का पिंड है, इसमें ऐसी ऊर्जा शक्ति है जिससे चमत्कारी कार्य सम्पन्न हो जाते हैं।

उत्तम रुद्राक्ष पाप समूहों का भेदन करने वाला है। जाति भेद के अनुसार रुद्राक्ष चार तरह के होते हैं, ब्राह्मण वंशीय, क्षत्रिय वंशीय, वैश्य वंशीय और शूद्र वंशीय। ब्राह्मणादि जाति के रुद्राक्षों के वर्ण श्वेत, रक्त, पीत तथा कृष्ण जानने चाहिए। मनुष्यों को चाहिए कि वे क्रमश: वर्ण के अनुसार अपनी जाति का ही रुद्राक्ष धारण करें।

जो रुद्राक्ष आँवले के फल के बराबर होता है, वह समस्त अरिष्टों का विनाश करने वाला होता है। जो रुद्राक्ष बेर के फल के बराबर होता है, वह उतना छोटा होते हुए भी लोक में उत्तम फल देने वाला तथा सुख-सौभाग्य को वृद्धि करने वाला होता है। जो रुद्राक्ष गुंजा फल के समान बहुत छोटा होता है, वह सम्पूर्ण मनोरथों और फलों की सिद्धि करने वाला होता है। रुद्राक्ष जैसे जैसे छोटा होता जाता है, वैसे-वैसे अधिक फल देने वाला होता जाता है। एक-एक बड़े रुद्राक्ष से एक-एक छोटे रुद्राक्ष को विद्वानों ने दस गुना अधिक फल देने वाला बताया है। अत: पापों का नाश करने के लिए रुद्राक्ष धारण करना आवश्यक बताया गया है।

रुद्राक्ष के समान फलदायिनी कोई भी माला नहीं है। समान-आकार प्रकार वाले चिकने, मजबूत, स्थूल, कण्टक युक्त (उभरे हुए छोटे-छोटे दानों वाले)

और सुन्दर रुद्राक्ष अभिलषित पदार्थों के दाता तथा सदैव भोग और ‌ ‌ ‌ ‌ ‌ ‌ ‌ ‌ ‌ ‌ ‌ न वाले हैं। जिसे कीड़ों ने दूषित कर दिया हो, जो टूटा-फूटा हो, जिसमें उभरे हुए दाने न हों, जो व्रण युक्त हों तथा जो पूरा-पूरा गोल न हो, इन पांच प्रकार के रुद्राक्षों को त्याग देना चाहिए।

जिस रुद्राक्ष में अपने आप ही डोरा पिरोने योग्य छिद्र हो गया हो, वही उत्तम माना गया है। जिसमें मनुष्य के प्रयत्न से छेद किया गया हो, वह मध्यम श्रेणी का होता है। ग्यारह सौ रुद्राक्ष धारण करने वाला मनुष्य जिस फल को पाता है, उसका वर्णन सैकड़ों वर्षों में भी नहीं किया जा सकता। भक्तिमान् पुरुष साढ़े पांच सो रुद्राक्ष के दानों का सुन्दर मुकुट बना ले और सिर पर धारण करे। तीन सौ साठ दानों को लम्बे सूत्र में पिरोकर एक हार बना ले। वैसे-वैसे तीन हार बनाकर भक्ति परायण पुरुष उनका यज्ञोपवीत तैयार करे और उसे यथास्थान धारण किये रहे।

छः रुद्राक्ष की माला कान में, बारह की हाथ में, पन्द्रह की भुजा में, बाईस की मस्तक में, सत्ताईस की गले में, बत्तीस की कंठ में (जिससे झूलकर वह हृदय को स्पर्श करती रहे) धारण करनी चाहिए।

कौन सा रुद्राक्ष कहाँ धारण करना चाहिए

छः मुखा रुद्राक्ष दाहिने हाथ में, सात मुखा कंठ में, आठ मुखा मस्तक में, नौ मुखा हाथ में, बारह मुखा केश प्रदेश में, चौदह मुखा शिखा में धारण करना चाहिए। इसके धारण करने से आरोग्य लाभ, सात्विक प्रवृत्ति का उदय, शक्ति का आविर्भाव और विघ्न का नाश होता है। रुद्राक्ष के मुखों के अनुसार फल निम्न प्रकार से हैं—

एक मुखी

एक मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् शिव स्वरूप है। भोग व मोक्ष रूपी फल प्रदान करता है। जहां इसकी पूजा होती है, वहां से लक्ष्मी दूर नहीं जाती। उस स्थान में सारे उपद्रव नष्ट हो जाते हैं तथा वहां रहने वाले लोगों की सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण होती है। विधिवत् इसके धारण करने से धारक के सम्पूर्ण अनिष्ट दूर होकर सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। भक्ति, मुक्ति व मन को शांति प्राप्त होती है। यह परम दिव्य, सर्व सिद्धिदायक, सर्वगुण सम्पन्न व स्वयं सिद्ध है।

द्विमुखी

दो मुख वाला रुद्राक्ष अर्द्धनारीश्वर का प्रतीक माना गया है। शिव भक्तों के लिए इस रुद्राक्ष को विधिवत धारण करना अधिक कल्याणकारी कहा गया है। तामसी वृत्तियों के शमन के लिए यह अधिक उपयुक्त है। चित की एकाग्रता, मानसिक शान्ति, आध्यात्मिक उन्नति, कुण्डलिनी जागरण के लिए इसका प्रयोग सर्वथा उपयुक्त है। गर्भवती महिलाओं को कमर या बांह पर सूत से बांध देने पर गर्भावस्था में नौ महीने के अन्दर किसी भी प्रकार की बाधा, भय, बेहोशी, हिस्टीरिया व डरावने स्वप्न आदि दोष नहीं होगें। साथ में एक रुद्राक्ष बिस्तर पर तकिये के नीचे एक डिबिया में रख लेना चाहिए। वशीकरण के लिए इस रुद्राक्ष का प्रयोग अचूक माना गया है।

त्रिमुखी

तीन मुख वाला रुद्राक्ष त्रि-अग्नि का प्रतीक माना गया है। विधिवत् धारण करने वाले धारक से अग्निदेव प्रसन्न रहते हैं। यह धन एवं विद्या की वृद्धि में सहायक है। तीन दिन के बाद आने वाला ज्वर इसको धारण करने से ठीक हो जाता है।

चतुर्मुखी

चार मुख वाला रुद्राक्ष ब्रह्मा का प्रतीक माना गया है। यह धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों को देने वाला है। बुद्धि मन्द हो, वाक्-शक्ति कमजोर हो, स्मरण शक्ति क्षीण हो, उसके लिए यह कल्प वृक्ष के समान है। विधिवत् इसको धारण करने से शिक्षा व भेंट आदि में धारक को असाधारण सफलता प्राप्त होती है। सम्मोहन, आकर्षण व वशीकरण में भी इसका प्रयोग किया जाता है। इसे दूध में उबालकर बीस दिन तक पीने से मस्तिष्क सम्बन्धी विकार दूर होते हैं।

पंचमुखी

पांच मुख वाला रुद्राक्ष कालाग्नि रुद्र का प्रतीक माना गया है। यह सब कुछ करने में समर्थ है। सबको मुक्ति देने वाला तथा सम्पूर्ण मनोवांछित फल प्रदान करने वाला है। इसके तीन दाने विधिवत् धारण करने से लाभ होता है। धारक के पाप-ताप का नाशक व स्वास्थ्य रक्षक है। रात के समय इसका एक दाना नाभि के ऊपर रखकर सीधे सोते हुए एक से लेकर १०८ तक की गिनती करें

धीरे-धीरे फिर १०८ से लेकर १ तक उल्टे गिने। फिर दाने को यथास्थान रख दे। इससे कब्ज की शिकायत दूर होती है।

षड्मुखी

छः मुख वाला रुद्राक्ष कार्तिकेय का प्रतीक माना गया है। कई विद्वान इसे गणेश का प्रतीक भी मानते हैं। ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त करने, कार्य मे पूर्ण सफलता प्राप्त करने तथा व्यापार में अद्भुत आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त करने के लिए दाहिनी बांह में धारण किया जाता है। विधिवत धारण करने वाले धारक के जीवन में भौतिक दृष्टि से कोई कमी नहीं रहती। विद्यार्थियों के लिए यह अति उत्तम है। हिस्टोरिया, मूर्छा, प्रदर आदि स्त्रियों से सम्बन्धित रोग आदि में आश्चर्यजनक गुणकारी है।

सप्तमुखी

सात मुख वाला रुद्राक्ष अनंग स्वरूप और अनंग नाम से प्रसिद्ध है। इसके देवता सप्त मातृकाएं, सप्ताश्व एवं सप्त ऋषि माने जाते हैं। विधिवत् धारण करने वाले धारक को यह यश, कीर्ति, धन मान व ऐश्वर्य का दाता है।

अष्टमुखी

अष्ट मुख वाला रुद्राक्ष बटुक भैरव का प्रतीक माना गया है। असत्य भाषण का पाप नष्ट करता है। विधिवत् इसको धारण करने वाले धारक का काया-कल्प के सदृश आयु की वृद्धि करता है। भगवान का कृपा-पात्र होता है।

नवमुखी

नौ मुख वाला रुद्राक्ष, यम, भैरव तथा कपिल मुनि का प्रतीक माना गया है। नौ रूप धारण करने वाली माहेश्वरी दुर्गा इसकी अधिष्ठात्री देवी मानी गई हैं। नवरात्रों में विधिवत धारण किया जाये तो भगवती दुर्गा उस पर अति प्रसन्न रहती हैं। दोनों भुजाओं में से किसी पर भी यह धारण किया जाता है। यह धारक की भाग्य-वृद्धि, धन-वृद्धि, पारिवारिक-सुख, सन्तान तथा मनोकामनाओं की पूर्ति में अमीम फलप्रद माना गया है।

दसमुखी

दस मुख वाला रुद्राक्ष भगवान विष्णु का प्रतीक माना गया है। दसों दिक्पाल इसके रक्षक माने गए हैं। विधिवत धारण करने वाले धारक के सर्व

ग्रह दोष, भूत-प्रेत, पिशाचादि दोष दूर करता है। तांत्रिक क्षेत्र में इसका बहुत अधिक महत्व है। जो व्यक्ति गले में इसको धारण करता है उस पर मारण-मोहन, अकाल-मृत्यु आदि का प्रभाव नहीं होता। दूध के साथ घिसकर तीन बार इसको चटाया जाय तो कूकर खाँसी रोग का निवारण होता है।

एकादश-मुखी

ग्यारह मुख वाला रुद्राक्ष एकादश रुद्र-प्रतिमा का प्रतीक माना गया है। कई विद्वान इन्द्र को भी इसका प्रधान देवता मानते हैं। इसे घर, पूजा गृह अथवा तिजोरी में मंगल कामना के लिए रखना लाभदायक है। यह सबको मोहित करने वाला है। स्त्रियों के लिए यह रुद्राक्ष महत्वपूर्ण है। पति की सुरक्षा, उसकी दीर्घायु एवं उन्नति तथा सौभाग्य प्राप्ति में उपयोगी है। जाबल्योपनिषद् के अनुसार इस रुद्राक्ष को अभिमंत्रित कर कोई भी स्त्री धारण करे तो उसे निश्चय ही पुत्र लाभ होता है। संक्रामक रोगों के नाश के लिए भी इस रुद्राक्ष का उपयोग किया जाता है। विधिवत धारण करने वाले व्यक्ति को सुख व विजय मिलती रहती है।

द्वादश-मुखी

बारह मुख वाला रुद्राक्ष भगवान विष्णु का प्रतीक माना गया है। बारहों आदित्य इसके देवता माने गये हैं। विधिवत धारण करने वाले धारक को सुख व रोजगार की प्राप्ति होती है।

त्रयोदश-मुखी

तेरह मुख वाला रुद्राक्ष विश्व देवों का प्रतीक माना गया है। कई विद्वान कार्तिकेय का प्रतीक व इन्द्र को इसका देवता मानते हैं। विधिवत् इसको धारण करके मनुष्य सम्पूर्ण अभीष्टों को पाता है तथा सौभाग्य और मंगल लाभ करता है। मनचाहे स्त्री-पुरुष को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति व रासायनिक सिद्धि प्राप्त करता है।

चतुर्दश-मुखी

चौदह मुख वाला रुद्राक्ष भगवान शिव का प्रतीक माना गया है। हनुमान का भी स्वरूप माना जाता है। भगवान शंकर के नेत्र से इसका प्राकट्य माना गया है। विधिवत् इसको ललाट पर धारण किया जाता है। इससे समस्त पापों का शमन होता है। आरोग्य प्रदान करना तथा कष्टों को शान्ति

करना इसकी विशेषता है। इसको दूध में उबाल कर बीस दिन तक पीने से कहते हैं कि मस्तिष्क सम्बन्धी विकार दूर होते हैं।

गौरी शंकर

यह रुद्राक्ष भगवान शंकर और भगवती पार्वती का प्रतीक माना गया है। घर, पूजा गृह अथवा तिजोरी में मंगल कामना के लिए विधिवत् रखना अति लाभदायक माना गया है।

रुद्राक्ष को अमूल्य वस्तु माना गया है। इस तरह मुखों के भेद से रुद्राक्ष के मुख्यतः चौदह भेद बताए गये हैं।

रुद्राक्ष धारण करने के मन्त्र निम्नलिखित रूप में हैं

१–४–५–१०–१३ : इन पांचों का मन्त्र "ॐ ह्रीं नमः" है।
२–१४ : इन दोनों का मन्त्र "ॐ नमः" है।
३ : इसका मन्त्र "ॐ क्लीं नमः" है।
६–९–११ : इन तीनों का मंत्र "ॐ ह्रीं हुँ नमः" है।
७–८ : इन दोनों का मन्त्र "ॐ हुँ नमः" है।
१२ : इसका मन्त्र "ॐ क्रौं क्षौं रौं नमः" है।

उपरोक्त चौदह ही मुखों वाले रुद्राक्षों को अपने-अपने मन्त्र द्वारा धारण करने का विधान है। कई विद्वान महामृत्युञ्जय मंत्र से अभिमन्त्रित कर यथा-स्थान धारण करते हैं।

उपरोक्त चौदह ही मुखों वाले रुद्राक्षों को अपने-अपने मंत्र द्वारा धारण करने का विधान है। रुद्राक्ष की माला धारण करने वाले पुरुष को देखकर भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी तथा द्रोहकारी राक्षस आदि सभी दूर भाग जाते हैं। मोक्षकामी को सफेद सूत या रेशम के धागे में, आकर्षण, वशीकरण साधने वाले को लाल रंग के धागे में, आत्म लाभ चाहने वाले को कमल के तन्तु में पिरोकर माला बनानी चाहिए।

एक मुखी रुद्राक्ष को साधने का मन्त्र

△

मंत्र : श्री गणेश जी को नमः ऊं ह्रीं श्रीं क्लीं एक मुखाय भगवतेऽनुरूपाय सर्वयुगेश्वराय त्रैलोक्यनाथाय सर्व काम फलप्रदाय नमः।

विधि : चैत्र शुक्ला अष्टमी को १०८ रक्त वर्ण के पुष्पों से पूजन करे। धूप, दीप, प्रसाद करे। केसर, चन्दन व कपूर का तिलक करे। प्रत्येक पुष्प पर एक मन्त्र पढ़े। फिर इसी तरह दीपावली के दिन करे। तत्पश्चात् तिजोरी में रख दे या सोने में मढ़ाकर गले में धारण करे।

अपामार्ग (ओंगा) कल्प (लालडंडी)

Δ

विधि : रवि पुष्य नक्षत्र को इसकी मूल विधिवत् लाएं। शनिवार को न्यौता दें और रविवार को प्रातः काल विधिपूर्वक लाएं।

तत्पश्चात् इसे निम्नलिखित प्रयोगों में लाया जा सकता है—

* इसकी दातून छह महीना करे तो वचन सिद्धि हो।
* इसकी मूल की भस्म दूध में पीयें तो सन्तान हो।
* इसके बीजों की खीर बनाकर खाये तो भूख नहीं लगेगी।

सफेद अपामार्ग

Δ

विधि : उपरोक्त विधानुसार इसकी मूल को न्यौता देकर लाए। तत्पश्चात् इसे निम्नलिखित प्रयोगों में लाया जा सकता है—

* इसकी मूल पास में रखे तो लाभ हो।
* इसकी मूल घिसकर तिलक करे तो वशीकरण हो।
* इसकी मूल, बहेड़ा की मूल दुश्मन के घर पर डाल दे तो उस घर के सभी व्यक्तियों का उच्चाटन हो जायेगा।
* इसकी मूल की बत्ती बनाकर दीपक जलाए और उस पर बच्चे का ध्यान एकाग्र कराए तो हाजरात चढ़े।
* पुष्य नक्षत्र में तांबे की ताबीज में इसकी मूल डालकर यंत्र तैयार करे। जिसके धरण पड़ गई हो उसकी नाभि पर बांधने से धरण ठिकाने आ जायेगी।

* जहां बिच्छू ने काटा हो वहाँ इसकी पत्ती पीस कर लगाये तो विष उतर जायेगा ।
* इसके ढाई पत्ते गुड़ के साथ दो दिन तक खिलाए तो ज्वर ठीक हो जायेगा ।
* इसकी मूल को शरीर पर लेपकर युद्ध में जाए तो शस्त्र की चोट नहीं लगेगी ।
* इसकी चार अंगुल की मूल स्त्री के गुप्तांग में रखे तो शीघ्र सन्तान हो ।

△

रक्तगुन्जा कल्प

△

विधि : मूल लाने की विधि से इसकी मूल ले आये ।

रक्तगुन्जा की उत्पत्ति लता पर होती है । इसके पत्ते लम्बे व पतले होते हैं । इस पर लगने वाली चिरमीटी श्वेत, लाल और काली होती है । यह एक विष है । शोधन किये बिना खाने में उपयोग नहीं किया जाता । विधिपूर्वक लाने के बाद इसके प्रयोग निम्नलिखित रूप से बताये गये है—

पुष्य होय आदित्य को, तब लीजे यह मूल ।
शुक्करवारी रोहिणी, ग्रहण होय अनुकूल ॥ १ ॥

कृष्ण पक्ष की अष्टमी, हस्त नक्षत्र जो होय ।
चौदह स्वाती शतभिषा, पूनम को ले सोय ॥ २ ॥

अर्ध निशा कारज करे, मन की शंका खोय ।
धूप-दीप कर लीजिये, धरे दूध से धोय ॥ ३ ॥

जो काहू नर-नारि को, विष कोऊ को होय ।
विष उतरे सब तुरत हो, जड़ी पिलावे धोय ॥ ४ ॥

तिलक लगावे भाल पर, सभा मध्य नर जाय ।
मान मिले सब स्तुति करे, सबही पूजे पांय ॥ ५ ॥

हाँजी हाँजी सब करैं, जो वह कहै सो सांच ।
एक जड़ी की जुगत से, सभी नचावे नाच ॥ ६ ॥

ताँबे मूल मढ़ाय के, बांधे कम्मर सोय।
नव मासे वो नारि के, निश्चय बेटा होय ॥ ७ ॥

ऋतुवंती के रक्त से, अंजन आंजे कोय।
देखत भाजै सैन सब, महा भयानक होय ॥ ८ ॥

काजर हूं घिस आंजिये, मोहें सब संसार।
गाली दे दे ताड़िये, तोय लग रहे लार ॥ ९ ॥

मधु सूँ अन्जन आंजिये, देखै वीर बैताल।
जो मंगावे वस्तु कूं, लै आवे तत्काल ॥१०॥

जो घिसकर लेपन करै, दूध संग सब अंग।
भूत, प्रेत सब यक्ष गण, लगे फिरत सब संग ॥११॥

घिसके रुई लगाइये, बाती धरे बनाय।
फेर भिजोवे तेल में, दीपक देय जलाय ॥१२॥

करो अचंभो सबन में, घर समान दरशाय।
सात महल के बीच सूं, लावै पलंग उठाय ॥१३॥

जो घृत में घिस के करे, लेप मूत्र नर ताय।
भोग शक्ति बाढ़े अमित, मन बहु मोद बढ़ाय ॥१४॥

अजा मूत्र में रगड़िके, बिंदी दे जो हात।
करै दूर की बात वो, रहे यक्षिणी साथ ॥१५॥

गोरोचन के संग घिस, लिखिये जाको नाम।
मृत्यु होय बाकी तुरत, नहीं बेर को काम ॥१६॥

लिंग पत्र के अर्कसूं, घिसिये केवल नाम।
भूत प्रेत अरु डाकिनी, देखत न्हासे तमाम ॥१७॥

स्याउ संग वा रगड़ि के, तलुआ तले लगाय।
आँख मीच के पलक में, सहस कोस उड़ जाय ॥१८॥

जो घिस आंजे पीसके, बन्दी छोड़ कहाय।
बंदि पड़े छूटे सभी, बिनही किये उपाय ॥१९॥

जो गुलाब संगयाहि घिस, नाड़ी लेप कराय।
घड़ी चार कूजी परै, मुरदा सहज सुभाय ॥२०॥

फेर अंकोल के तेल में, घिस आंजे कोय।
धन दीखे पाताल को, दिव्य दृष्टि जो होय ॥२१॥

जो बाघिन के दूध में, घिस चुपड़े सब अंग।
सर्व शस्त्र लागे नहीं, बड़कर जीते जंग ॥२२॥

घिसके तिल के तेल में, मर्दन करे शरीर।
दीखे सब संसार को, महावीर रणधीर ॥२३॥

जो अलसी के तेल में घिसिये सहत मिलाय।
कोढ़ी के लेपन करे कंचन तन हो जाय ॥२४॥

जो कोई संसार में, अन्धा आंजे कोय।
सात दिवस भर आंजिये, दृष्टि चौगुनी होय ॥२५॥

कस्तूरी सूं आंजिये, प्रातः समय ल्यौ लाय।
मौत ज्यूं लखिये सबन की, काल पुरुष दरसाय ॥२६॥

गंगाजल सूं आंजिये, दोनों नेत्र न माहिं।
बरषा बरसे भूल की, यामे संशय नाहिं ॥२७॥

जो आंजे निज रक्त सूं, भरके दोऊ कोय।
देखे तीनों लोक को, अपनी आंखन सोय ॥२८॥

जौ आंजे निज मूत्र सूं, खुले रागिनी राग।
जो घिस पीवै दुध सूं, होये सिद्ध सो भाय ॥२९॥

रक्त गुन्जा यह कल्प है, सूक्ष्म कह्यौ बनाय।
जो साधे सो सिद्ध हो, या में संशय नांय ॥३०॥

हाथा जोड़ी कल्प

Δ

विधि : रवि पुष्य नक्षत्र में पंचामृत से स्नान कराकर विधिवत् पूजन कर निम्नलिखित मंत्र का १२५०० जप कर के इसको सिद्ध कर ले। रक्त-आसन उत्तराभिमुख बैठकर लाल रंग की माला से जाप करे।

मंत्र : हाथा जोड़ी बहु महिमा धारी कामण गारी, खरी पीयारी, राजा-प्रजा मोहन गारी, सेवत फल, पावे नर नारी, केशर कपूर से मैं करी पूजा,

दुश्मन के बल को तुं भुजा, मन इछंत मांगु ते देवे-कहण कथन मेरा ही रवे हाथा जोड़ी मात दुहाई रख जे मेरी बात सवाई, मेरी भक्ती गुरू की शक्ति फुरो मंत्रो ईश्वरोवाचा ।

विधि : रवि पुष्य नक्षत्र में पंचामृत से स्नान कराकर विधिवत् पूजन कर निम्न-लिखित काव्य वृद्धि व मंत्र का १२५०० जाप करके इसको सिद्ध कर ले । रक्त आसन पूर्वाभिमुख बैठकर लाल रंग की माला से जाप करे । लाल फूल चढ़ाये व लाल वस्त्र पहने । सामने चक्रेश्वरी व भैरव की मूर्ति स्थापन करे व उनकी पूजा करे । भैरव की पूजा तेल सिंदूर व लाल फूल से करे चक्रेश्वरी की अष्ट प्रकार की पूजा करनी है ।

काव्य : बलगत्तुरंगगजगर्जित भीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ।
उद्यादिवाकरमयूखशिरवापविद्धं, त्वत्कीर्तनात् तम इवाशु भिदामुपैति ॥

ऋद्धि : ॐ ह्रीं अर्हं णमों सव्वोसवाणं ।

मंत्र : ॐ नमो नमिऊण विसहर विस प्रणाशन रोग शोक दोष ग्रह कप्पदु-मच्चजा यइ सुहनाम गहण सकल सुह दे ॐ नमः स्वाहा ।

उपरोक्त साधना करने के बाद एक चांदी की डिबिया में शुद्ध सिन्दूर के साथ कृष्ण पक्ष के पहले दिन ही सुबह इसको उल्टा करके (यानि पंजे नीचे की ओर) रख दें । फिर शुक्ल पक्ष के पहले दिन सुबह सीधा करके (यानि पंजे ऊपर) रख दें । इस तरह तीन कृष्ण पक्ष व तीन ही शुक्ल पक्ष उल्टा सीधा करके रखते रहें । आखिर के शुक्ल पक्ष में वो उल्टा ही रहेगा फिर हमेशा के लिये उसे उल्टा ही रखना है । उस चाँदी की डिबिया को अपनी तिजोरी में रख दें परन्तु कभी भी कोई भी औरत उस डिबिया को भूल से भी खोलकर न देखे । नहीं तो उसका प्रभाव समाप्त हो जायगा । यह बहुत ही सुन्दर लक्ष्मी-वर्धक प्रयोग है ।

प्रयोग

* किसी भी व्यक्ति से वार्ता करने में साथ रखे तो बात मानेगा ।
* जिसको भी वश में करना हो, उसका नाम लेकर जाप करे तो इसके प्रभाव से वह व्यक्ति वशीभूत होगा ।
* त्रि-धातु के ताबीज में धारण करने से सेनापति भी पैरों में पड़ता है । सभी कार्यों में निरंतर निर्भय होता है । गले में धारण किया जाता है ।
* प्रयोग के बाद चांदी की डिबिया में सिन्दूर के साथ तिजोरी में रख दें ।

बन्दा-नक्षत्र-कल्प-तंत्र

△

बन्दा वृक्ष के ऊपर उत्पन्न हो जाया करता है। आयुर्वेद शास्त्र में चिकित्सा के लिए भी एकाध बन्दे के प्रयोग आते हैं। किन्तु तंत्र को छोड़कर किसी भी विज्ञान में इसके प्रयोग पर विचार नहीं किया गया है। तंत्र शास्त्र में ही इसका विवेचन आता है कि किन नक्षत्रों, दिनों, वारों में, किन तिथियों के योग में किस प्रकार का प्रभाव आ जाता है। साथ ही मंत्र द्वारा इसी प्रकार कई गुना शक्ति सम्पन्न किया जाता है।

मंत्र : ॐ नमो भगवते रुद्राय मृतार्क मध्ये संस्थिताय मम शरीरं अमृतं कुरू-कुरू स्वाहा '

मंत्र : ॐ नमों धनदाय स्वाहा।

विधि : शुभ मुहूर्त में उपरोक्त किसी एक मंत्र का पूर्व की ओर मुंह कर सफेद माला से १० हजार जाप कर मंत्र सिद्ध कर लें। फिर प्रयोग के समय वस्तु को ९ बार अभिमंत्रित कर प्रयोग करें। धन-धान्य अक्षय रखने के लिए दूसरे मंत्र का प्रयोग करना चाहिए।

अश्विनी : * इस नक्षत्र में बेल वृक्ष का बन्दा लाकर हाथ में धारण करे तो अदृश्य हो।

भरणी : * इस नक्षत्र में कपास वृक्ष का बन्दा लाकर हाथ में धारण करे तो अदृश्य हो।

* इस नक्षत्र में कुशा वृक्ष का बन्दा लाकर घर में रखने से धन धान्य अक्षय रहता है।

कृतिका : * इस नक्षत्र में थूहर वृक्ष का बन्दा लाकर हाथ में धारण करे तो वाक् सिद्धि हो।

* इस नक्षत्र में कैथ वृक्ष का बन्दा लाकर मुंह में रखने से शस्त्र आघात का भय दूर होता है।

रोहिणी : * इस नक्षत्र में वट वृक्ष का बन्दा लाकर हाथ में धारण करे तो वशीकरण होता है, सब लोग उसके कार्यों में सहयोग करते हैं।

* इस नक्षत्र में गूलर वृक्ष का बन्दा लाकर घर में रखने से धन धान्य की अभिवृद्धि होती है।

मृगशिरा

* इस नक्षत्र में सिंघोट (शिंघोर) वृक्ष का बन्दा लाकर पान द्वारा मुंह में रखे तो अदृश्य हो ।

* इस नक्षत्र में बेल वृक्ष का बन्दा लाकर हाथ में धारण करे तो अदृश्य हो ।

* इस नक्षत्र में सिंघोट, आम, गोखरू के बन्दे लाकर चौथाई हिस्से नमक में मिलाकर उसे दूध के साथ पीसकर मस्तक पर तिलक लगाए तो गुप्त धन दिखाई देता है ।

पुष्य

* इस नक्षत्र में इमली वृक्ष का बन्दा लाकर हाथ में धारण करे तो धन-धान्य की समृद्धि होती है ।

आश्लेषा

* इस नक्षत्र में अर्जुन वृक्ष का बन्दा लाकर बकरी के मूत्र में घिसकर जिस किसी भी व्यक्ति के सिर पर डाला जायेगा वह आकर्षित होगा ।

* इस नक्षत्र में शनिवार व मंगल अष्टम हो उस दिन अनार के बीजों का रस, कमल की जड़ तथा शतावरी का रस इन तीनों को शुद्ध करके अंजन तैयार कर अंजन करे तो गुप्त धन दिखाई देता है ।

* सोमवार को यह नक्षत्र आये तो बहेड़ा वृक्ष का बन्दा लाकर तिजोरी में रखे तो अकूत भंडार रहे ।

मघा

* इस नक्षत्र में बहुवार (हर सिंगार) वृक्ष का बन्दा लाकर रखने से धन-धान्य की वृद्धि होती है ।

पूर्वाफाल्गुनी

* इस नक्षत्र में बहेड़ा वृक्ष के बन्दे को लाकर चूर्ण कर खाये तो भूत बाधा दूर होती है ।

* इस नक्षत्र में अनार तथा सेमर वृक्ष का बन्दा लाकर घर में रखने से धन-धान्य की वृद्धि होती है ।

उत्तराफाल्गुनी

* इस नक्षत्र में आम का बन्दा लाकर दाहिने हाथ में बाँधे तो सभी वश में हों, पति पत्नी में प्रेम हो ।

हस्त

* इस नक्षत्र में निर्गुण्डी वृक्ष का बन्दा लाकर घर में रखने से धन-धान्य की वृद्धि होती है।

चित्रा

* इस नक्षत्र में धावड़ी वृक्ष का बन्दा लाकर जिसे खिलाए उसके साथ प्रेम बढ़े।

स्वाति :

* इस नक्षत्र में हरड़ वृक्ष का बन्दा लाकर पास में रखे तो राज सम्मान मिले।

* इस नक्षत्र में बेर वृक्ष का बन्दा लाकर हाथ में बाँधे तो जिन-जिन पदार्थों की इच्छा करेगा वे सब प्राप्त होंगी।

* इस नक्षत्र में नीम वृक्ष का बन्दा लाकर हाथ में धारण करे तो अदृश्य हो।

विशाखा

* इस नक्षत्र में महुवे के वृक्ष का बन्दा लाकर सिर में रखे तो ताकत आए।

अनुराधा

* इस नक्षत्र में कनेर वृक्ष का बन्दा लाकर दाहिने हाथ में बाँधे तो शत्रु शत्रुता छोड़ दें।

* इस नक्षत्र में रोहितक वृक्ष का बन्दा लाकर ग्रहण कर मुँह में रखे तो अदृश्य हो।

ज्येष्ठा

* इस नक्षत्र में अनार का बन्दा लाकर घर के दरवाजे पर बांध देने से बच्चों के दुष्ट ग्रहों का निवारण होता है।

मूल

* इस नक्षत्र में खजूर वृक्ष का बन्दा लाकर हाथ में बाँधे तो शत्रु की हार हो।

पूर्वाषाढ़ा

* इस नक्षत्र में पूर्वा वृक्ष का बन्दा लाकर दाहिने हाथ में बांधे तो व्यापार लाभ हो।

उत्तराषाढ़ा

* इस नक्षत्र में अशोक वृक्ष का बन्दा लाकर ग्रहण करें तो अदृश्य हों।

* इस नक्षत्र में बेल वृक्ष का बन्दा लाकर धारण करने से अदृश्य हो जाता है।

शतभिषा

* इस नक्षत्र में सुपारी वृक्ष का बन्दा लाकर एक वर्णी गाय के दूध में पीने से वृद्धावस्था नहीं आती।

होलिका

* इसके एक दिन पहले पलाश वृक्ष के बन्दे को निमंत्रण देकर होली के दिन सूर्योदय से पहले बन्दा लाये, पूजन करे, धूप दीप करे, भोग चढ़ाये फिर धान्य के साथ रखे तो वृद्धि हो।

ग्रहण

* चन्द्रमा या सूर्य ग्रहण के दिन गूलर वृक्ष के बन्दे को निमंत्रण दे आये। ग्रहण के दिन सूर्योदय से पहले हलुवे का नैवेद्य चढ़ाकर बन्दा तोड़ लाये। ग्रहण लगते ही बन्दे की पंचोपचार से पूजा करे। कमल गट्टे की माला से पूरे ग्रहण काल में (मन्त्र ॐ महालक्ष्म्ये च विदमहे, विष्णुपत्न्यै च धीमहीतन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्) इस मन्त्र का जाप करता रहे। फिर इसको स्वर्ण के यंत्र में डालकर धारण करे तो भूमिगत धन दिखाई दे तथा उसकी प्रगति हो

शुभ दिन

* साधक का चन्द्रमा बली हो तब रिक्ता तिथि (शनिवार को ४, ९ अथवा १४ तिथि होने पर) के एक दिन पहले सायं काल के समय पीपल वृक्ष के बन्दे को निमन्त्रण दे आये, फिर शनिवार रिक्ता तिथि के दिन प्रातः सूर्योदय से पूर्व बन्दा विधि युक्त तोड़ लाए। दूसरी रिक्ता तिथि के रोज बन्दे का पंचोपचार पूजा करे फिर यन्त्र बनाकर धारण करे तो रोजगार मिलता है।

नक्षत्र-कल्प तन्त्र (शुभ कारक)

△

अश्विनी

* इस नक्षत्र के दिन बिल्व वृक्ष का पत्ता एक वर्णी गाय के दूध के साथ पीए तो बाँझ के भी पुत्र हो।

* भरणी

इस नक्षत्र के दिन जिसके घर में चोरी हुई हो उस घर में पान लगाकर डाले तो वस्तु मिले।

* कृत्तिका

इस नक्षत्र के दिन प्याज वृक्ष का पत्ता एक वर्णी गाय के दूध में पीए तो सर्व रोग शान्त हो।

इस नक्षत्र के दिन थूहर का मूल हाथ में बांधे तो वाक् सिद्धि हो।

* आर्द्रा

इस नक्षत्र के दिन मन्तुन्डा वृक्ष के आखिरी पत्ते को खेत में रखे तो सौगुनी खेती हो।

* पुष्य

इस नक्षत्र के दिन मूल लाने की विधि से शंख पुष्पी की मूल को लाकर चांदी की डिब्बी में डालकर तिजोरी में रख दे तो धन-धान्य की वृद्धि हो।

इस नक्षत्र में चमेली का मूल लाकर इसका यंत्र बनाकर अपने पास रखें तो शत्रुओं पर जय होती रहे।

इस नक्षत्र में निर्गुन्डी व सफेद सरसों, घर के द्वार पर या दुकान के द्वार पर रखी जाये तो अच्छा क्रय-विक्रय हो।

* अश्लेषा

इस नक्षत्र में बड़ का पत्ता अनाज के कोठे में रखे तो व्यापार में लाभ हो।

* मघा

इस नक्षत्र में बैर की झाड़ी (बोरटी) का पत्ता हाथ में बांधे तो मंत्र सत्य हो।

* पूर्वाफाल्गुनी

इस नक्षत्र में बहेड़ा का पत्ता जिस किसी के घर में रख दिया जाय तो उस घर पर मूठ नहीं चले।

* उत्तराफाल्गुनी

इस नक्षत्र में उत्तर दिशा की ओर से व्याघ्रनखी की मूल लाकर स्त्री के कमर में बांध देने से प्रदर रोग दूर हो जाता है।

* हस्त

इस नक्षत्र के दिन रविवार हो तो पवांर के पेड़ की मूल लाकर दाहिने हाथ में बांध कर जुआ खेले तो विजयी हो।

* विशाखा

पौष मास कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को जब यह नक्षत्र हो पीपल को न्यौता दे। चतुर्दशी को इसकी मूल लाए। नग्न हो स्नान कर, धूप देकर हाथ में बांधे तो प्रेत बाधा दूर हो।

* रोहिणी

श्रावण कृष्ण पक्ष में जब यह नक्षत्र आए उस समय तालाब या कुंए पर चला जाय। जब पानी का घड़ा भरकर पणिहारी जाय उस समय पूरे भरे हुए घड़े से पानी छलकेगा तो उस पानी को लाकर जिस औरत को पिला दे उसे गर्भ रह जायेगा।

* ज्येष्ठा

इस नक्षत्र में अरडूसा के मूल को लाकर धूप देकर स्त्री की कमर में बांध दे तो रुका हुआ मासिक फिर चालू हो जायेगा।

* उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराआषाढ़

इनमें से किसी भी नक्षत्र में अपामार्ग की मूल को उत्तर दिशा में लाकर सिर पर धारण करे तो द्यूत व वाद-विवाद में विजय पाए।

* मूला

इस नक्षत्र में सरपंखी पंचांग, विषखपरा पंचांग, वारुणी पंचांग, ईश्वर लिंगी पंचांग लाकर मिलाकर चूर्ण करके रक्खे। जब कोई भी पेट का रोग हो और पेट पर लेप करे तो रोग शान्त हो।

इस नक्षत्र में ताड़ वृक्ष की मूल लाए तो मूल लाते ही पितृ दोष दूर हो।

* श्रवण

इस नक्षत्र में बेंत की लकड़ी का टुकड़ा दाहिने हाथ पर बांधकर युद्ध करे तो विजयी हो।

इस नक्षत्र में काले अरण्ड का मूल लाकर स्त्री के गले में बांधे तो सन्तान हो।

* शतभिषा

इस नक्षत्र में रक्त गुन्जा की मूल हाथ में बांधे तो सर्व कार्य में सफल हो।

* रेवती

इस नक्षत्र में झाड़ी का पत्ता दाहिने हाथ में बांधे तो जुए व सट्टे में जीत हो।

नक्षत्र -कल्प-तंत्र (अशुभ कारक)

△

मन्त्र : ॐ कामां कां स्वाहा।

* मूल नक्षत्र में बावड़ी की मिट्टी लाकर पुतला बनाए। लोहे की एक अंगुल की कील पुतले की छाती में खोंस दे। पुतले की एक जगह स्थापना कर उपरोक्त मंत्र का सवा लाख जाप कर जिसके घर में गाड़ दे उस घर वालों का भयंकर रूप से अशुभ होगा।

मन्त्र : ॐ चिली चिली स्वाहा।

* पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में घोड़े की ७ अंगुल की हड्डी की एक कील बनाकर उस पर सवा लाख उपरोक्त मन्त्र का जाप कर फिर मार्ग में गाड़ दिया जाये तो उस मार्ग में आने जाने वाले सभी लोगों का वशीकरण होगा।

मन्त्र : ॐ क्षाँ क्षिं क्षः स्वाहा।

* घनिष्ठा नक्षत्र में गाय के दांत की एक अंगुल की कील बनाकर उपरोक्त मन्त्र से सवा लाख जाप कर जिसके खेत में गाड़ दिया जाये तो वहां चूहे बहुत ज्यादा हो जायेंगे।

मन्त्र : ॐ ठः ठः ठः स्वाहा।

* उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में कुत्ते की हड्डी की ५ अंगुल की एक कील बनाकर उपरोक्त मन्त्र से सवा लाख जाप कर जिसके घर में डाल दे वह व्यक्ति पागल हो जायेगा।

मन्त्र : ॐ चिली चिली स्वाहा।

* श्रवण नक्षत्र में सियार की हड्डी की ७ अंगुल की एक कील बनाकर

उक्त मंत्र से सवा लाख जाप कर जिसके घर में गाड़ दिया जाय उस घर के व्यक्ति को लकवा मार जायेगा।

मन्त्रः औं जां जां जवेन जनस ठः ठः स्वाहा।

* उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में कौवे की हड्डी की कील बनाकर उपरोक्त मन्त्र से सवा लाख जाप कर जिसके घर में गाड़ दे उस घर के व्यक्ति सदा रोगी रहेंगे।

मन्त्रः ॐ श्रीं श्रीं श्रीं स्वाहा।

* उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में कुम-कुम की सात अंगुल की लकड़ी लेकर उपरोक्त मन्त्र से सवा लाख जाप कर जिसके घर में गाड़ दे उस घर के व्यक्तियों का उच्चाटन हो जायगा।

मन्त्रः ॐ शुरे शुरे स्वाहा।

* अश्लेषा नक्षत्र में सर्प की हड्डी की एक कील बनाकर उपरोक्त मंत्र से सवा लाख जाप कर जिसके घर में गाड़ दी जाय वह व्यक्ति मरण को प्राप्त हो जायगा।

मंत्रः ॐ पच पच स्वाहा।

* अश्विनी नक्षत्र में घोड़े की हड्डी की एक सात अंगुल की कील बनाकर उस पर दस हजार जाप कर जिस अश्वशाला में गाड़ दे वहाँ के घोड़े मर जायेंगे।

मन्त्रः ॐ जले स्वाहा।

* पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में झड़बेरी की आठ अंगुल की एक लकड़ी लेकर उस पर उपरोक्त मन्त्र का एक हजार जाप कर जिसके घर में डाल दे वहाँ की मछलियाँ सब नष्ट हो जायेंगी।

मंत्रः ॐ मातिस्य स्वाहा।

* मघा नक्षत्र में भिलावा की सात अंगुल की लकड़ी लेकर उस पर उपरोक्त मंत्र का एक हजार जाप कर जिसके घर में डाल दे वहां की मछलियाँ नष्ट हो जायेगी।

* भरणी

० मंगलवार के दिन यह नक्षत्र हो उस दिन चिता की लकड़ी लेकर जिसके घर में डाल दें उस घर के लोग बीमार हो जायेंगे।

० मंगलवार के दिन यह नक्षत्र हो उस दिन श्मशान की मिट्टी, राई, आक की राख, इन सबको मिलाकर एक चुटकी भर शत्रु के ऊपर फेंक दे तो वह रोग ग्रस्त हो जायेगा।

० इस नक्षत्र के दिन गूलर या पीपल की लकड़ी की पांच अंगुल की एक कील बनाकर नौका के छिद्र में डाल दे तो नौका नहीं चलेगी।

* कृत्तिका

० इस नक्षत्र के दिन आक की लकड़ी की ३ अंगुल की एक कील लेकर किसी कुएं या तालाब में डाल दे तो वहाँ की मछलियां मर जायेगी।

० इस नक्षत्र के दिन आक की लकड़ी की १६ अंगुल की एक कील लेकर किसी शराब के व्यापारी के घर में गाड़ दे तो उसकी बिक्री कम हो जाएगी।

* रोहिणी

० इस नक्षत्र के दिन बेर की लकड़ी की एक ग्यारह अंगुल की कील लेकर लुहार की भट्ठी में डाल दे तो उसका लोहा गर्म नहीं होगा।

* मृगशिरा

* इन नक्षत्र में गीदड़ की हड्डी की ४ अंगुल की एक कील बनाकर जिसके घर में गाड़ दी जाय उस घर में रहने वालों का उच्चाटन निश्चय हो जायगा।

० इस नक्षत्र में इमली की एक पांच अंगुल की लकड़ी जिसके घर में डाल दे उस घर के व्यक्तियों को मंदाग्नि का रोग हो जायेगा।

* आर्द्रा

० इस नक्षत्र में नीम का या सिरस का बूर जिसके घर में गाड़ दें, उस घर के रहने वाले बीमार हो जायेंगे।

० इस नक्षत्र में रीछ की हड्डी जिस घर में गाड़ दी जाय उस घर के व्यक्तियों का उच्चाटन हो जायेगा।

० इस नक्षत्र में रीछ की हड्डी जिस खेत में गाड़ दी जाय उस खेत की खेती नष्ट हो जाएगी।

* पुनर्वसु

० इस नक्षत्र में चित्रा वृक्ष की लकड़ी की एक तीन अंगुल की कील बनाकर जिसके खेत में गाड़ दे तो उस खेत में धान, फल, फूल नहीं होंगे। होंगे तो पैदावार खराब होगी।

* हस्त

० इस नक्षत्र में कनेर की लकड़ी की तीन अंगुल की कील बनाकर कुम्हार के घर में गाड़ दे तो उसके घर के बरतन ज्यादा फूटेंगे।

* चित्रा

० इस नक्षत्र में भिलावा की आठ अंगुल की या महुवे की चार अंगुल की लकड़ी तेली के घर में गाड़ दी जाय तो उसका तेल खराब हो जायेगा।

* विशाखा

० इस नक्षत्र में बेर की ८ अंगुल की लकड़ी लेकर केले के वृक्ष के नीचे गाड़ दे तो उस वृक्ष पर फल नहीं आयेंगे।

* अनुराधा

० अर्कवार के दिन यदि यह नक्षत्र हो उस दिन कालिहारी की मूल लाकर दुश्मन जहाँ पेशाब करता है वहाँ यदि गाड़ दी जाये तो जबतक वह गड़ी रहेगी वह व्यक्ति नपुंसक रहेगा।

० इस नक्षत्र में जामुन की ८ अंगुल की लकड़ी ग्वाले के घर में गाड़ दे तो उसकी गाय भैसें दूध बहुत कम देगी।

* शतभिषा

० इस नक्षत्र में सुपारी के वृक्ष की ८ अंगुल की लकड़ी लेकर किसी सुपारी के व्यापारी या उत्पादक के घर में गाड़ दे तो उसकी सुपारी खराब हो जाएगी।

० इस नक्षत्र में चार तोला सीसा लाकर एक कटोरी में रखकर गर्म करे फिर उसमें चीनी और बाजरे का तेल डालकर पृथ्वी में गाड़ दे और ऊपर तेल से सींचता रहे। तीस दिन बाद उस कटोरी को वहां से निकालकर किसी कपड़े के व्यापारी के घर में गाड़ दे तो उसके कपड़े गल जायेंगे।

* पूर्वाभाद्रपद

० इस नक्षत्र में बट वृक्ष की आठ अंगुल की जटा लेकर चोर के घर में डाल दे तो उसके कार्य में विघ्न होता रहेगा।

* रवि पुष्य

० इस नक्षत्र के दिन इन्द्रायण (तुम्बा) की मूल लाकर उसमें पीपल, सोंठ और काली मिर्च मिलाकर बकरी के दूध में पीसकर गोली बनाए धूप देकर रखे। जिसपर उस गोली को पीसकर उसका चूर्ण डाला जायेगा उसको ज्वर चढ़ेगा। कांजी के पानी से स्नान कराने से ही उसका ज्वर उतरेगा।

० इस नक्षत्र में मनुष्य की हड्डी की चार अंगुल प्रमाण कील को जिसके घर में गाड़ दी जाय उस परिवार का नाश हो जायगा।

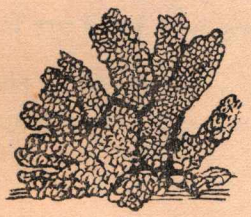

मनुष्य - पशु - पक्षी तंत्र

मनुष्य

△

* अत्यन्त प्रसन्नता में जब मनुष्य को आँख में आँसू आए, उन आंसुओं को कोई चिन्तातुर व्यक्ति पी जाए तो उसकी चिंता दूर हो जाती है।

* जिस औरत के पहली सन्तान लड़का हो उसकी नाल सुखाकर किसी वस्तु में यदि निःसन्तान औरत खाले तो उसके सन्तान हो जाएगी।

* जिस बच्चे का पहला दांत गिरे तो उसको धरती पर गिरने से पहले ले ले और जो औरत उसे अपने बायें हाथ में बांध ले तो उसके सन्तान हो।

* उपरोक्त विधि से लिए हुए दांत को जो स्त्री चांदी के यंत्र में जड़ाकर अपनी कमर में बांध के रखेगी तो उसको गर्भ नहीं रहेगा।

* जो व्यक्ति उस दांत को अपने पास रखता है या यंत्र बनाकर गले में धारण करता है तो उसका सभी जगह सम्मान होगा।

* जिस औरत के पहली सन्तान लड़का हो उस लड़के की नाल सुखाकर तिजोरी में रखें तो धन-धान्य पूर्ण हो। अपने पास कोई रखे तो उसका सभी जगह सम्मान हो। स्वर्ण की अंगूठी में जड़ाकर रखा जा सकता है।

* मृतक पुरूष की हड्डी का यंत्र बनाकर चौथ के ज्वर (चार दिन बाद आने वाला ज्वर) वाले व्यक्ति को वह यंत्र बांध दे तो उसका चौथिया ज्वर दूर हो जायेगा।

* जो मनुष्य पैरों की ओर से जन्मा हो, उस व्यक्ति से, जिस व्यक्ति को चिणक पड़ गई हो वह मौन उस व्यक्ति के पास जाये। संकेत से दर्द वाला स्थान दिखाये और वह व्यक्ति दर्द वाले स्थान पर हल्के हल्के सात मुक्के मारे या पैर से मारे। इस तरह शनिवार, रविवार या किसी भी दिन तीन समय करने से चिणक का दर्द दूर हो जाता है।

* जिस व्यक्ति के दोनों हाथ व दोनों पैर में छह छह अंगुलियाँ हों या एक हाथ व एक पैर में एक एक अंगुली ज्यादा हो। जिस व्यक्ति के पित्ती

निकलती हो तो उस छह अंगुली वाले उस व्यक्ति के पास मौन जाए और वह व्यक्ति उसके मस्तक पर हाथ फेरे या पूरे शरीर पर हाथ फिराये तो पित्ती ठीक हो जायेगी।

* जिस व्यक्ति की जिह्वा का नीचे का हिस्सा काला हो और वह व्यक्ति प्यार से या दुश्मनी से भी किसी प्राणी या वस्तु की या किसी कार्य की प्रशंसा कर दे चाहे स्वजन ही क्यों नहीं हो, तो वह बिगड़ जायेगी और प्राणी बीमार हो जायेगा। जब वह व्यक्ति आकर जिसको उसकी नजर लगी हो, उसको थू थू नहीं करेगा, वह ठीक नहीं होगा। ऐसे पुरुष को कलजिह्वा कहते है।

* जो बच्चा पैरों की ओर से जन्मा हो उस बच्चे की नाल और उस स्त्री की आंवल (जर) लेकर छाया में सुखा ले। उसपर किसी की छाया न पड़ें। फिर उन दोनों के साथ सफेद सरसों पंचांग, राजहंसी पंचांग, काला धतूरा पंचांग, काला जल भांगरा पंचांग इन सबको पुष्य नक्षत्र में लाकर कूट पीस कर गोली बना ले। उस गुटिका का शरीर पर लेप करे तो जल में नही डूबेगा।

* जब बच्चे का जन्म हो तब उसकी झिल्ली मंगा ले। उसको सुखा ले। फिर जिस चित्र को इसकी धूनी देंगे तो चित्र की आंखों से पानी आयेगा। गुग्गुल की धूनी से ठीक हो जायेगा।

औरत

△

* अत्यन्त प्रसन्नता में जिस औरत को आंसू आए और कोई चिन्तातुर औरत उन आंसुओं को पी जाये तो उसकी चिन्ता दूर हो जायेगी।

* जो औरत पैरों की ओर से जन्मी हो, उस औरत से जिस व्यक्ति के चिणक पड़ गई हो वह मौन उस औरत के पास जाए, संकेत से दर्द का स्थान दिखाये और वह औरत दर्द वाले स्थान पर हल्के हल्के सात मुक्के या सात बार पैर से मारे, तो इस तरह शनिवार, रविवार या किसी भी दिन तीन समय करने से चिणक का दर्द ठीक हो जाता है।

* जिस औरत के दोनों हाथ और दोनों पैर के छह छह अंगुलियां हों या एक हाथ व एक पैर के छह छह अंगुली हो तो उस छह छह अंगुली वाली औरत

के पास मौन जाकर उसके सामने बैठ जाए और वह औरत सामने वाले व्यक्ति के मस्तक पर या सारे शरीर पर हाथ फेरे और थू थू करे तो उसकी पित्ती ठीक हो जायेगी।

* जिस औरत की जिह्वा का नीचे का हिस्सा काला हो और वह औरत प्यार से या दुश्मनी से भी किसी प्राणी या वस्तु की सराहना कर दे, चाहे स्वजन ही क्यों न हो तो वह वस्तु बिगड़ जायेगी और प्राणी बीमार हो जायेगा। जब तक वही औरत आकर जिसको उसकी नजर लगी है, उसको थू थू नहीं करेगी तब तक वह ठीक नहीं होगा। ऐसी औरत को कलजिह्वी कहते हैं।

* जब औरत प्रथम बार रजस्वला हो तो उसके गंदे कपड़े को जलाकर उसकी भस्म जो औरत खाए उसके घर औलाद बहुत होगी, परन्तु जिसका वस्त्र लेगी उसको सन्तान नहीं होगी।

* रजस्वला स्त्री का वस्त्र नौका बादवाने के साथ बांध दिया जाय तो नौका को कोई नुकसान नहीं होगा।

* मृगी के रोगी को जब दौरा पड़ा हो उस समय रजस्वला स्त्री उसको हाथ लगाए तो मृगी का दौरा ठीक हो जायेगा।

* रजस्वला स्त्री अपने रजस्वला के रक्त का स्तन पर मालिश करे तो स्तन कठोर हो जाएंगे।

* जिस स्त्री के पुष्य नक्षत्र में पुत्र जन्मा हो उस स्त्री की आंवल (जर) लेकर एकान्त में सुखाकर फिर रूई के अन्दर डालकर बत्ती बनाकर दीपक करे तो घर में अनेक मनुष्य दिखाई देंगे। चोर यदि चोरी करने आएंगे तो उन मनुष्यों को देखकर चले जायेंगे।

* जिस औरत को पहली बार बच्चा हो रहा हो उसके बच्चा होने के समय का खून लेकर जो स्त्री अपने सम्पूर्ण शरीर पर लेप कर लती है तो उसको जीवन भर गर्भ नहीं रहेगा।

* प्रसूति के समय जो कपड़ा औरत के ऊपर हो वह यदि चौथिया ज्वर वाले का ओढ़ाया जाए तो ज्वर दूर हो जायेगा।

* जो स्त्री पहली बार जिस मास व दिन को रजस्वला होती है उसका अलग-अलग फल होता है जो निम्न प्रकार से बताया गया है–

मास-फल

△

पहली बार जो स्त्री रजस्वला चैत्र मास में हो तो निर्धन होती है।

" " " वैशाख " धनी होती है।
" " " ज्येष्ठ " रोगिणी होती है।
" " " आषाढ़ " जल्द मृत्यु होती है।
" " " श्रावण " लक्ष्मी वाली होती है।
" " " भाद्र " दरिद्री होती है।
" " " आश्विन " धन-धान्य से भरपूर होती है।
" " " कार्तिक " निर्धन होती है।
" " " मार्गशीर्ष " अनेक सन्तान वाली होती है।
" " " पौष " व्यभिचारिणी होती है।
" " " माघ " पुत्रवती होती है।
" " " फाल्गुन " पुत्रवती होती है।

तिथि-फल

△

जो स्त्री पहली बार रजस्वला एकम के दिन हो तो पवित्र रहती है।

" " " द्वितीया " " दुःखी होती है।
" " " तृतीया " " पुत्रवती होती है।
" " " चतुर्थी " " विधवा होती है।
" " " पंचमी " " सौभाग्यवती होती है।
" " " षष्ठी " " विघ्न सन्तोषी होती है।
" " " सप्तमी " " उत्तम संतान वाली होती है।
" " " अष्टमी " " राक्षसी होती है।
" " " नवमी " " विधवा होती है।

जो स्त्री पहली बार रजस्वला दशमी के दिन हो तो सुख भोगने वाली होती है।

" " " एकादशी " " पवित्र होती है।
" " " द्वादशी " " जल्दी मृत्यु होती है।
" " " त्रयोदशी " " शुभ होती है।
" " " चतुर्दशी " " व्यभिचारिणी होती है।
" " " अमावस्या " " अशुभ होती है।

वार-फल

△

जो स्त्रीपहली बार रजस्वला सोमवार को होती है तो मृत सन्तान जन्में रहें तो भाग्यशाली हों।

" " " मंगलवार " " अपने समान पुत्र-पुत्री जन्मै-आत्मघाती हो।
" " " बुधवार " " अनेक पुत्रियों वाली हो।
" " " वृहस्पतिवार " " पुण्यवान पुत्र जन्मे।
" " " शुक्रवार " " पुत्र-पुत्रियां वाली हो।
" " " शनिवार " " व्यभिचारिणी व कपूत संतान वाली हो
" " " रविवार " " विधवा होगी।

सिंह

△

* इसके दांत का यंत्र बनाकर बच्चे के गले में डालने से उसको नजर नहीं लगेगी।

* इसके दांत का यंत्र बनाकर बच्चे के गले में डालने से उसके दांत आसानी से निकलते हैं और जो भी व्यक्ति इसका यंत्र गले में रखेगा उसको दांत की पीड़ा नहीं होगी।

* इसका पंजा जिस किसी को पानी में घोलकर पिला दिया जाय तो वह प्राणी सूख जाएगा।

* इसके पंजे का यंत्र बनाकर जो व्यक्ति अपने पास रखता है उसको किसी पशु-पक्षी का भय नहीं होगा।

* इसके मस्तक का चर्म जो व्यक्ति अपने पास रखता है उससे सभी भयभीत रहेंगे।

* इसका मल शराब में मिलाकर जिसको पिला दे वह शराब छोड़ देगा।

बाघ
△

* इसका रक्त जो औरत पी ले वह बांझ हो जायेगी।

* इसके दांत को घोड़े की पीठ से बाँध दे तो घोड़ा बहुत तेज दौड़ेगा।

* यदि कोई इसके दांत को अपने पास रखता है तो बाघ का भय उसे नहीं होगा।

* जो कोई व्यक्ति इसकी बांयी आंख अपने पास रखता है तो उसको नींद नहीं आयेगी।

* इसकी दायीं आंख जो व्यक्ति अपने पास रखता है तो उसको किसी भी स्थान पर भय नहीं होगा।

* इसका मस्तक यदि कबूतरखाने में रखा जाय तो वहां बिल्ली नहीं आयेगी।

* इसका मस्तक बकरियों के बाड़े में गाड़ दिया जाय तो सभी बकरियां बीमार हो जायेंगी।

हाथी
△

* इसके दाँत को मिट्टी के बर्तन में डालकर उसको ढक्कन लगाकर चारों ओर आटा चिपका कर अग्नि पर रखकर उसको जला लें। फिर उस भस्म को आंवला के रस में पीसकर रख लें। रात में मस्तक पर लगाकर सो जाएं। भोर में धोकर साफ कर लें। कई दिन करने से बाल आ जाते हैं।

* इसके दांत को उपरोक्त विधि से जलाकर इसकी भस्म को बकरी के दूध में पीसे व चने भर रसोत मिलाकर दिन में दो तीन बार मस्तक पर लगाए तो बाल आ जाते हैं।

* इसके कान की मैल कोई खा ले तो सात दिन तक निद्रा नहीं आयेगी।

* इसकी हड्डी मृगी के रोगी के हाथ में बांध दे तो मृगी रोग दूर हो जाता है।

* इसकी चर्बी का धुआं जिसको दे दिया जाय उसको कुष्ट रोग हो जाएगा।

* इसके दांत का चूर्ण का धुंआ जिस वृक्ष को दिया जाए तो उस वृक्ष में लगे कीड़े नष्ट हो जायेंगे और घर में धुंआ दे तो मच्छर दूर हो जाएंगे।

* इसकी लीद ९ माशा लेकर चांदी के यंत्र में डालकर बालक के गले में डाल दें तो नजर नहीं लगेगी।

* जिस वृक्ष में इसका दांत बांध दिया जाय उस वृक्ष में फल नहीं लगेंगे।

* इसकी लीद का यंत्र बनाकर जो औरत अपने पास रखे तो उसको गर्भ नहीं रहेगा।

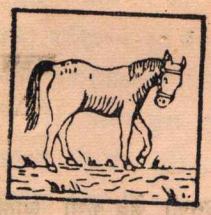

घोड़ा
△

* इसकी लीद को जलाकर इसकी भस्म को तिल्ली के तेल में पीसकर मस्तक में लगाए तो बाल बढ़ेंगे।

* अश्विनी या भरणी नक्षत्र में सात अंगुल की इसकी हड्डी लेकर कील की तरह बनाकर अश्वशाला में गाड़ दे तो घोड़े बीमार हो जायेंगे।

* इसकी पूंछ का बाल कमरे के दरवाजे में लटका दिया जाय तो भीतर मच्छर नहीं होंगे।

* इसके दांत का यंत्र बनाकर मंगलवार के दिन बच्चे के गले में डाल दिया जाय तो उसके दांत आसानी से निकलेंगे।

* जो व्यक्ति रात को दांत पीसता हो उसके सिरहाने इसका दांत रख दिया जाए तो उसका दांत पीसना छूट जायेगा ।
* गर्भवती स्त्री को प्रसूति के समय इसके खुर का धुंआ दिया जाय तो सन्तान होते समय कष्ट नहीं होगा ।
* इसके नाखून व गारो बेंत की मूल समभाग लेकर बारीक पोसकर चूल्हे में या भट्टी में डाल दी जाय तो आग नहीं जलेगी ।
* इसकी लीद जलाकर वह भस्म बालों में लगाए तो बाल बढ़ते हैं ।
* इसका पसीना जिस स्थान पर लगाया जाय वहां बाल पैदा नहीं होंगे ।
* अश्विनी नक्षत्र में सात अंगुल की इसकी एक हड्डी लेकर शत्रु के घर में गाड़ने से वशीकरण होता है ।
* जो औरत इसके मूत्र में मालकांगनी, सौंफ, व वशलोचन मिलाकर गुप्तांग में लेपकर जिस पुरुष के साथ सम्भोग करे तो वह व्यक्ति उस औरत के वशीभूत होगा ।
* अश्विनी नक्षत्र में इसके खुर की धूनी प्रेत बाधा वाले व्यक्ति को दी जाय तो प्रेत बाधा दूर होगी ।

खच्चर

△

* इसके दाँत को जो कोई अपनी जेब में रखे तो उसकी जेब कभी खाली नहीं होगी ।
* इसके कान का मैल जो औरत खाय तो उसके गर्भ नहीं रहेगा ।
* इसकी हड्डी या मस्तक का मांस किसी को खिला दे तो वह तुरन्त बेहोश हो जायेगा ।
* इसके खुर अलसी के तेल में जलाकर गंज के स्थान पर लगाए तो बाल आ जायेंगे ।
* इसके मस्तिष्क का मांस जहां पर जलाया जाय, उस स्थान पर जो भी काम किया जाएगा वह कभी सफल नहीं होगा ।

* इसकी पूंछ के बाल और दो मित्रों के कपड़े जलाकर उस भस्म को उन मित्रों को खिला दे तो उन दोनों में आपस में झगड़ा हो जायेगा।

कुत्ता

△

* यदि छोटे बच्चे के गले में इसके दांत का यंत्र बनाकर डाले तो उसके दांत आसानी से निकलेंगे।
* यदि पागल कुत्ते का दांत कोई अपने पास रखे तो उसको पागल कुत्ता नहीं काटेगा।
* यदि काले कुत्ते की बायीं आंख, जिस दिन चन्द्रमा वृश्चिक राशि में हो या अमावस्या का दिन हो उस दिन किसी के घर में दबा दिया जाय तो उस घर के व्यक्तियों का उच्चाटन हो जायेगा।
* यदि काले कुत्ते की दायीं आँख कोई अपने पास रखे तो उसे पागल कुत्ते का भय नहीं रहेगा।
* इसके मूत्र में मिट्टी डालकर गोली बनाये। उसको सुखाकर ज्वर वाले के गले में बांधे तो ज्वर दूर हो जायेगा।
* काली कुतिया के दूध में लौंग को तीन दिन तक भिगोकर रखे। फिर सुखाकर अपना शुक्र मिलाकर जिस औरत को खिलाए वह वश में हो जाएगी।
* यदि कोई पत्थर कुत्ते को मारा जाय और उसी पत्थर को कुत्ता मुंह से उठाकर फेंके तो उसी पत्थर को शराब में डालकर किसी को वह शराब पिला दी जाय तो वह व्यक्ति झगड़ालू हो जायेगा।
* यदि उस पत्थर को कबूतरखाने में रख दिया जाये तो सारे कबूतर भ्रमित हो जायेंगे।

गदहा

△

* जिसे निद्रा नहीं आती हो उसके सिरहाने इसका दांत रख देने से निद्रा आ जायेगी।

* इसके खुर का धुंआ प्रसूति के समय कष्ट निवारण करता है।

* इसके खुर को तेल में जलाकर बैठ माला के रोगी के रोग के स्थान पर मालिश की जाये तो फायदा होगा।

* इसके खुर को पानी में घोलकर मृगी के रोगी को पिलाया जाय तो लाभ होता है।

* इसके मस्तक के चर्म को पानी में घोलकर दो दोस्तों को पिलाया जाय तो उनमें आपस में वैमनस्य हो जायेगा।

* इसकी हड्डी को जैतून के तेल में मिलाकर गर्म करके मस्तक पर मालिश करने से बाल बढ़ता है।

* जिस समय यह सम्भोग करता हो उस समय इसकी पूंछ के तीन बाल लेकर जो व्यक्ति अपनी जंघा पर बांधे उसकी स्तम्भन शक्ति बढ़ती है।

* रवि पुष्य नक्षत्र में जुई का पंचांग तथा समुद्र फल लाए। इसके मूत्र से गुटिका करे और उसका प्रेत छाया वाले व्यक्ति की आंख में अंजन करे तो प्रेत बाधा दूर हो।

* उपरोक्त गुटिका का स्त्री अपने गुप्तांग पर लेप करे तो सुभंगी हो।

* शनिवार या रविवार को धरती पर पड़ने से पहले इसका मूत्र ले उसमें राई को भिगो दे। तीन दिन बाद उसको निकाल कर सूखा ले। रविवार के दिन धूनी देकर दो मित्रों के बीच गिराए तो उनमें वैमनस्य हो जायगा।

* रविवार को यह जहाँ लेटे उस जगह की धूल, बिना बोले व बिना किसी के टोके ले आए। गुग्गुल की धूनी देकर जिसके मस्तक पर गिराये या घर में गाड़ दे तो उस घर में कलह हो जाएगी।

* रविवार को धरती पर पड़ने से पहले इसका मूत्र ले। गुग्गुल की धूनी देकर फिर रात्रि में आंख में डाले तो पित्र दिखाई देंगे।

* रविवार या मंगलवार को यह जहाँ लेटे उस जगह की धूल लाये। जब कोई खाने बैठे तो उस थाली के नीचे थोड़ी धूल रख दे तो खाने वाला बहुत हंसता है।

* शनिवार को यह जहां लेटे, पूर्व की ओर मुंह करके उस जगह की धूल उठा लाये। सम्भोग के समय धोती के किनारे बांधे तो स्तम्भन शक्ति बढ़ती है।

* इसकी पसली की हड्डी जिसके घर में गिरा दे उसके घर में रात दिन कलह रहेगी।
* इसके दाहिने पैर के नाखून की अंगूठी दाहिने हाथ की अंगुली में पहनने से मिरगी रोग शान्त होता है।

ऊँट

△

* ऊंट के हाड़ की चार कीलें बनाए। चारों दिशाओं में गाड़ दे। उसके बीच आने वाले पशु बाहर निकल नहीं सकेंगे।
* ऊंट के बालों की रस्सी बनाकर अपनी जांघ में बांधकर संभोग करने से जब तक रस्सी को खोला नहीं जायेगा, तब तक स्खलन नहीं होगा।
* ऊंट की हड्डी में छेद करके सिरहाने की ओर बांधकर उसी शय्या पर संभोग करने से तब तक स्खलन नहीं होता, जब तक की हड्डी को खोल नहीं दिया जाता।
* इसके दांए पैर का नाखून लेकर घर में रखा जाय तो वहाँ से चूहे निकल जायेंगे।
* मूत्र के रोगी की जंघा पर इसके बाल बाँधे तो मूत्र अधिक नहीं आएगा।
* जो बच्चा रात को बिछौने पर मूत्र कर देता है, उसकी दायीं जंघा पर इसके बाल बाँध देने से रात्रि को मूत्र नहीं करेगा।
* इसकी चर्बी जिस स्थान पर रखे वहाँ सर्प नहीं आएगा।
* इसकी मेंगनी जलाकर शहद में बुझाकर डिब्बी में रख ली जाय और जब जरूरत हो एक मेंगनी तोड़कर हवा में रख दे। स्वतः ही आग जल जायेगी।

भेंड़

△

* जिस वृक्ष के नीचे इसका सींग लटका दिया जाय तो उस वृक्ष के फल जल्द पकते हैं और मीठे होते हैं।

* इसकी चर्बी में मच्छी की चर्बी सम भाग मिलाकर उसकी बत्ती बनाकर दीपक जलाएं तो जब तक दीपक जलता रहेगा तब तक घर में पानी भरा हुआ दिखाई देगा।

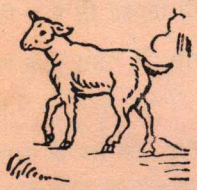

बकरी

△

* यदि दूध पीने वाला बच्चा रात को रोता है तो उसके सिरहाने इसकी मेंगनी रख दी जाय तो बच्चा रोना बन्द कर आराम से सोयेगा।
* यदि बकरे की दाढ़ी चौथिया ज्वर वाले को बांधी जाय तो ज्वर बन्द हो जायेगा।
* यदि श्वेत रंग की बकरी का सींग सोये हुए आदमी के सिरहाने कपड़े में लपेट कर रखा जाय तो वह सोया ही रहेगा।
* पहाड़ी बकरे का सींग सोए हुए व्यक्ति के सिरहाने रखा जाय तो वह अपने मन की बातें बता देगा।

बिल्ली

△

* बिल्ली की आंवल (जर) लेकर यदि कोई अपनी तिजोरी में रख दे तो धन व सन्तान की अवश्यमेव वृद्धि होगी।
* काली बिल्ली के दांत यदि कोई पास में रखे तो उसको किसी स्थान का भय नहीं होगा।
* यदि इसके पाखाने का धुंआ भूत-प्रेत ग्रस्त व्यक्ति को दिया जाय तो प्रेत छाया दूर होगी।
* यदि किसी औरत के ब्लीडिंग हो गई हो तो काली बिल्ली की तिल्ली का यन्त्र बनाकर बांधा जाय तो उसकी ब्लीडिंग बन्द हो जाएगी।

* इसकी आंख का यंत्र बनाकर बालक के गले में पहनाया जाय तो बच्चे को नजर न लगे।

* यदि इसकी दांयीं आंख को अंगूठी में जड़ा कर रखे तो उस पर मन्त्र-तन्त्र का प्रभाव नहीं होगा।

* यदि काली बिल्ली का रक्त व खरगोश का रक्त समभाग मिलाकर किसी स्त्री पर डाला जाए तो वह स्त्री उसके वश में होगी।

* यदि काली बिल्ली की जिह्वा जूतों के नीचे लगाकर जंगल में जाए तो कोई पशु-पक्षी उसके पास नहीं आयेगा।

गीदड़

Δ

* इसके दायें पैर का नाखून जो कोई अपने पास में रखे वह चलने में नहीं थकेगा।

* इसकी जिह्वा को मंगलवार, शनिवार या अमावस्या को जिसके घर में गाड़ दिया जाय, उस घर में रात दिन कलह रहेगी।

* इसकी दांयी आंख को यंत्र में डालकर अपने पास रखे तो बल बढ़ता है।

मृग

Δ

* इसकी दांयी आंख पुष्य नक्षत्र में लेकर अंगूठी में नगीने के नीचे जड़ाकर हाथ में पहने तो तुष्टि होती है और लोग उससे प्यार करते हैं।

* इसकी बांयी आंख यंत्र में डालकर जो व्यक्ति अपने पास रखता है उसे औरतें अधिक प्यार करती है।

* इसके घुटने की हड्डी यदि यात्रा में अपने पास रखें तो सफर में थकावट नहीं होगी।

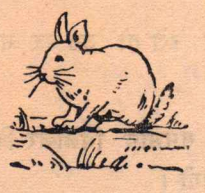

खरगोश

△

* यदि इसके बालों की बत्ती बनाकर स्त्री अपनी योनि में रखे तो उसकी मासिक ऋतु बन्द हो जायगी।

* इसके दांत का यंत्र बनाकर अपने पास रखा जाय तो स्मरण शक्ति बढ़ती है।

* इसके रक्त को गुलाब जल में मिलाकर दीपक में जलाएं तो खरगोश ही खरगोश चलते दिखाई देंगे।

लंगूर

△

* इसके दुग्ध को किसी को पिला दिया जाय तो वह पागल हो जाएगा।

* इसकी आंख का यंत्र बनाकर पास में रखे तो बल बढ़ता है।

* इसकी हड्डी कोई अपने पास रखे तो लोग उसे प्यार करेंगे।

* अमावस्या के दिन इसकी खोपड़ी लाकर उसके ऊपर दो मित्रों का नाम लिखकर श्मशान में गाड़ दी जाएं तो उन दोनों की मित्रता टूट जाएगी।

* अमावस्या के दिन इसकी खोपड़ी लाकर किसी के घर में गाड़ दी जाय तो उस घर का नाश हो जायगा।

* बन्दर की हड्डी मंगाकर उसको धूप देकर गांव की सीमा में गड़वा दें तो गाँव की विपत्ति टल जायेगी।

गाय

Δ

* रविवार को जो बैल मरे उसका सींग मंगाए। उसमें स्त्री के बायें पैर की धूल लाकर सींग में भर दे। गुग्गुल की धूनी देकर घर में गाड़ दे तो वह औरत वश में हो जाएगी।

* जिस गाय के सींग मिले हुए हों उनके छिलके, श्वेत गुंजा के साथ पीसकर जिसके मस्तक पर गिराए वह वश में हो।

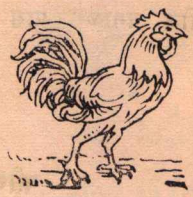

मुर्गा

Δ

* इसके पेट में पथरी होती है। कोई उस पथरी को अपने पास रखे तो उसकी ताकत बढ़ती है।

* वृश्चिक राशि का चन्द्रमा हो या मंगलवार हो उस दिन यदि काले मुर्गे की विष्ठा किसी के घर के दरवाजे पर लगाई जाय तो उस घर में कलह होती रहेगी।

* यदि सवार इसको अपनी कमर में बाँधकर यात्रा करे तो उसे थकान नहीं आयगी।

* जिस समय दो मुर्गे आपस में लड़ें उस समय उनके जो रक्त निकले उस रक्त को पास में रखें। फिर यदि किसी वस्तु में मिलाकर दो मित्रों को खिला दिया जाय तो उनमें आपस में शत्रुता हो जाएगी।

* यदि इसकी चर्बी में मुरदासिंगी मिलाकर उसका लेप करके स्त्री के साथ सम्भोग करे तो स्तंभन शक्ति बढ़ती है।

मयूर

△

* इसकी बाँयी ओर की हड्डी प्रसूता स्त्री के पैर में बाँधी जाय तो प्रसूति के समय पीड़ा नहीं होती है।
* इसकी हड्डी का यंत्र बनाकर बच्चे के गले में बाँधा जाय तो उसको नजर नहीं लगेगी।
* इसके मस्तक की कलंगी जो अपने पास रखे लोग उसे प्यार करेंगें।
* इसकी चोंच के साथ पन्द्रह का यंत्र लिखकर ताबीज बनाकर पास में रखे तो धन सम्पत्ति बढ़ेगी।

कौवा

△

* रवि पुष्य नक्षत्र में कौवे के दायें पाँव का नाखून उतार कर जेब में रखा जाय तो धन से जेब कभी खाली नहीं होगी।
* दो मित्रों के बीच में कौवा व उल्लू की आँख का धुआं दिया जाय तो उनमें आपस में शत्रुता हो जायगी।
* इसकी चर्बी को चेहरे पर मलकर जिसके सामने जाय वह प्यार करे।
* काले कौवे की जिह्वा को तिल्ली के तेल में जलाकर काजल बनाकर पैरों की ओर से जन्मे व्यक्ति की आंख में डाला जाये तो उसको जमीन के अन्दर दबा हुआ धन दिखाई देगा।
* इसके दिल का यन्त्र बनाकर पास में रखा जाय तो प्यास नहीं लगेगी।

* इसके पैरों को जलाकर जिस स्थान पर बाल न हों वहाँ लगाया जाय तो बाल उत्पन्न हो जायेंगे।

* इसके घोंसले को जलाकर भस्म कर लिया जाय। उस भस्म को जिसके मस्तक पर डाला जायेगा, उसका उच्चाटन हो जाएगा।

* रविवार के दिन कौवे की चोंच मंगाए गुग्गुल का धूप दें और रास्ते में एक लकीर खींच दे। तो जो औरत उस लकीर को लांघकर जायेगी तो उसके खून चालू हो जायेगा और उस चोंच को पानी में घोलकर उस औरत को पिला दिया जाय तो खून बन्द हो जाएगा।

चीड़ी

△

* इसकी विष्ठा को शराब में मिला दिया जाय तो बेहोशी आ जाती है।

चमगादड़

△

* इसके कपाल को सिरहाने रखा जाय तो निद्रा नहीं आएगी।

* इसके मस्तिष्क का यंत्र बनाकर कोई पास में रखे तो बल की वृद्धि हो और सांसारिक इच्छायें बढ़ेगी।

* इसकी विष्ठा को तिल्ली के तेल में भूनकर गुप्तांग पर मालिश की जाय तो शिथिलता दूर हो जायेगी।

कबूतर

△

* जंगली कबूतर की विष्ठा को तेल में मिला कर गुप्तांग पर मालिश करने से शिथिलता दूर होती है।

* इसकी दांयी आँख का यंत्र बनाकर या अंगूठी में जड़ाकर अपने पास रखा जाय तो सब लोग उसे प्यार करेंगे।

* इसके पित्ते में कपूर, सुहागा, पीपल, मधु समभाग मिला कर लेपकर फिर सम्भोग किया जाय तो स्त्री मोहित होती है।

* जो पुरुष इसकी विष्ठा में सेंधा नमक मिलाकर शिश्न पर लेपकर जिस स्त्री के साथ सम्भोग करे तो वह औरत उसके वश में रहेगी।

* इसकी विष्ठा में सुहागा समभाग मिला कर शिश्न पर लेपकर सम्भोग करे तो पुत्र हो।

हुदहुद
△

* इसकी जिह्वा का ताबीज बनाकर पास में रखे तो शत्रु उससे भय खाए।

* इसके नाखून में अपने नाखून मिलाकर शुक्ल पक्ष में शुक्रवार में दिन जिस स्त्री को खिलाया जाये वह अत्यन्त प्यार करेगी।

* इसके दाएं पैर को सिरहाने रखा जाय तो निद्रा बिल्कुल नहीं आएगी।

* रविवार को इसका रक्त लेकर अपना शुक्र मिलाकर यदि किसी स्त्री को खिलाया जाये तो वह स्त्री वश में हो जायेगी।

* इसके मस्तक को सुखा कर किसी के सिरहाने रखें तो उसको निद्रा बहुत आयेगी।

* इसके मस्तक को सुखाकर तेल में मिलाकर चेहरे पर मालिश की जाय तो लोग सम्मान करें।

* इसके मस्तक को कोई अपने पास रखे तो स्मरण शक्ति बढ़ती है।

* इसके दिल का यंत्र बनाकर अपने पास रखे तो ताकत की वृद्धि होती है।

बाज

△

* जिस वृक्ष के साथ इसके नाखून बांध दें उस वृक्ष पर चिड़िया नहीं बैठेगी।

* चन्द्रमा जिस समय वृश्चिक राशि में हों इसकी चोंच लेकर इसके साथ इसके चमड़े पर शत्रु का नाम लिखकर जंगल में गाड़ दें तो शत्रु का नाश हो जायगा।

मेढक

△

* इसके मांस को आटा में गूंथकर रोटी पकाएं और फिर जिस पर चोरी का शक हो यदि उसको खिला दें तो वह अपने मन का भेद बता देगा।

* सोई हुई औरत के सीने पर इसकी जिह्वा रख दी जाय तो वह अपने मन का भेद बता देगी।

* इसकी चर्बी में अंजीर की लकड़ी भिगोकर चूल्हा में डाल दें तो जितनी चाहे आग जलाए उस पर कोई वस्तु नहीं पकेगी।

अबाबील

△

* इसकी हड्डी के साथ दुश्मन के पेशाब की धूल ताबीज में डालकर रख दें तो उसका पेशाब बन्द हो जायगा।

* इसकी हड्डी के साथ दुश्मन के पैर की धूल ताबीज में डालकर भारी शिला के नीचे रख दें तो उसको नींद नहीं आयेगी।

* यदि इसके घोसले की घास को पानी में धोकर उस पानी को प्रसूता स्त्री को दें तो पीड़ा दूर हो।

* इसकी आंख कपड़े में लपेट कर किसी के सिरहाने रखें तो उसको नींद नहीं आएगी।

* इसका मांस स्त्री को खिला दिया जाय तो उसकी कामेच्छा दूर हो जाती है।

* इसकी दायीं आंख को स्वर्ण की अंगूठी में जड़ाकर हाथ में डाले तो धन की वृद्धि होती है।

* इसकी हड्डी को तांबे के ताबीज में डालकर गले में लटका कर रात को छाती पर रखते हुए सो जाय तो उसे रात में स्वप्न में युद्ध होता दिखाई देगा। आखिर में उसके जो दुश्मन हैं वे दिखाई देगें। उनको पहिचान ले फिर दूसरे रोज उन व्यक्तियों के पैर की मिट्टी मंगाकर उस ताबीज में डालकर रख दें तो तीन रोज के अन्दर ही वह मित्रता करने पर बाध्य हो जाएंगे।

उल्लू

△

* इसकी आंख को कस्तूरी में रगड़ कर जिसके ऊपर डाल दिया जाय वह मित्र बन जायेगा।

* इसका मांस सुखाकर जिसको खिलाया जाय वह परेशान रहेगा।

* इसकी हड्डी को जलाकर जिसके सिर में वह राख डाल दी जाय वह आवारा फिरता रहेगा।

* इसके पैरों की राख जिसको खिला दी जाय वह सदा चिंतातुर रहेगा।

* इसकी दोनों आंखों को पानी में डाल दें। जो सीधी रहे वह सोने वाली और जो उल्टी पड़ी रहे वो जागने वाली आंख है। यदि सीधी आंख को किसी के सिरहाने रख दें तो उसका उठने का मन न चाहे और उल्टी आंख को अंगूठी में जड़ाकर पास में रखें तो जो पहिने उसको नींद न आए।

* इसकी जिह्वा को दूध में थोड़ी सी केसर के साथ मिलाकर जिस किसी को पुष्य नक्षत्र में रविवार को पिला दी जाय तो वह व्यक्ति पागल सा होकर मृत्यु प्राप्त करेगा।

* इसकी विष्ठा सुखाकर सुपारी के साथ किसी को खिला दी जाय तो उसको बुद्धि भ्रष्ट व नष्ट हो जायगी।

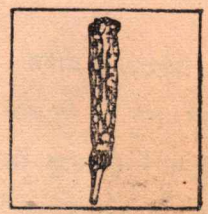

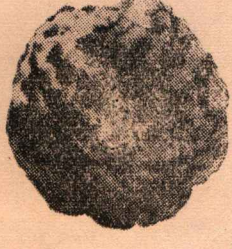

साधना-तंत्र

साधना-तंत्र

△

देवी, यक्षिणी, परी, पीर आदि साधनाओं के अनेक दुर्लभ, अद्भुत प्रयोग-पुरानी पड़तों, गुटकों गुप्त ग्रंथ ब्रह्म चिन्तामणि से, व सरहपाद के और विज्ञ व्यक्तियों से जो प्राप्त हुए और मुझे अलभ्य प्रतीत हुए उनको यहाँ पूर्ण विधि-विधान के साथ दे रहा हूं। प्रयोगों को प्राप्त करने के सम्बन्ध में मैं बहुत घूमा, अनेक दुर्लभ प्रयोग मुझे मिले भी, जो साधारणतया कोई भी देने में हिचकिचाता है। मैं बहुत आभारी हूँ वाराणसी के आचार्य श्री ब्रह्म गोपाल भादुड़ी व मेरे मित्र श्री एस. एन. खंडेलवाल (ये कविराज गोपीनाथ जी के शिष्य रहे हैं व अच्छे तांत्रिक भी हैं) का, जिनके सहयोग से बहुत ही सटीक व अचूक प्रयोग बड़ी सुगमता से मुझे प्राप्त हुए।

छिन्नमस्ता-साधना

△

मंत्र : ओं श्रीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

विनियोग : इस मंत्र का भैरव ऋषि है, विराट छन्द है, छिन्न मस्ता देवता है।

ध्यान : चमकते हुए बड़े भारी सूर्यमण्डल में वामरति पर स्थित हुई खुले बालों वाली अपने सिर को काटकर अपने बांए हाँथ पर रखे हुए तीन रुधिर धाराएं निकल रही हैं – एक अपने मुंह में, दूसरी अपने दायें – बांए खड़ी हुई डाकिनी तथा वर्णिनी के मुख में गिर रही है।

नोट : इस ध्यान की रचना हिमालय के केदारनाथ के मन्दिर के पास फूलों की घाटी में हुई। इसके मन्दिर उत्तर भारत में दो स्थानों पर मिलते हैं। एक जिला होशियारपुर, चिन्तपूर्णी के स्थान पर, दूसरा जिला सहारनपुर में शैवालिक घाटी में – शाकंभरी के मन्दिर के पास। इसको प्रचण्ड चण्डिका व वज्र वैरोचनी भी कहते हैं।

विधि : इस मंत्र का एक लाख पच्चीस हजार जाप तीन महीने में करना है।

किसी भी महीने की पूर्णिमा की रात्रि के १० और १२ बजे के बीच जाप शुरू करना है। लाल चन्दन की माला, लाल वस्त्र धारण कर, लाल आसन पर बैठकर रात्रि १० और १२ बजे के बीच ही जाप करना है। उसके बाद दशांश हवन, मार्जन, तर्पण और ब्राह्मण भोजन कराना है ।

हवन : बालुका स्थंडिल बनाएं और उसपर चारों ओर आटे का परकोटा बनाकर बीच में षट्कोण बनाए। मध्य में देवी का ध्यान करें। हवन के लिए आम, बेरी अथवा पलाश को समिधा लें और काले तिल, जौ, चावल, खाँड़, पंच मेवे गो घृत में मिलाकर हवन करें। प्रसाद के रूप में हवन के शेष दिन खोर खिलाना है ।

प्रयोग : पुत्र – प्राप्ति के लिए यह सिद्ध अनुष्ठान है। मासिक धर्म होने के चार दिन बाद छठें, आठवें, दसवें, बारहवें, चौदहवें तथा सोलहवें दिन रात्रि के समय – १० बजे दुग्ध पान कर १२ बजे पुरुष भोग करे। एक महीने में गर्भाधान होगा और पुत्र प्राप्ति होगी।

लक्ष्मी-साधना

△

मंत्र : ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हसौः जगत्प्रसूत्यै नमः।

विनियोग : भृगुऋषि, निचृश् छन्द लक्ष्मी देवता, श्रीं बीज है।

विधि : शुभ दिन शुभ लग्न में रात्रि को १० और १२ के बीच पीत या श्वेत आसन, माला व वस्त्र धारण कर सवा लाख जाप तीन महीने में करना है।

हवन : छिन्न मस्ता में जो हवन की विधि दी है उसी प्रकार हवन करना है। इसके अन्त में १०८ खोर की आहुति भी देनी है।

प्रयोग : हवन के बाद भोज पत्र पर केसर की स्याही, अनार की कलम से उपरोक्त मंत्र को लिखकर तिजोरी में रख दें। धन, सम्पदा के लिए यह अचूक प्रयोग है।

वार्ताली साधना

△

मंत्रः ओं ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवती वार्ताली वाराहि वारीहि वाराह मुखि ऐं ग्लौं ऐं अंधे अंधिनि नमो रून्धे रून्धिनि नमो जंभे जंभिनि नमो मोहे मोहिनि नमः स्तंभे स्तंभिनि नमः ऐं ग्लौं ऐं सर्व दुष्ट प्रदुष्टाणां सर्वेषां सर्व वाक चित्त चक्षुमुंख गति जिह्वा स्तंभं कुरू कुरू शीघ्रं वश्यं कुरू कुरू ऐं ग्लौं ऐं ठः ठः ठः ठः हूँ फट् स्वाहा।

विनियोगः इस मत्र के ऋषि शिव, जगती छन्द, वार्ताली देवता, ग्लौं बीज तथा स्वाहा शक्ति है।

ध्यानः लाल कमल के पत्तों पर मुर्दे के आसन पर बैठी हुई, गले में मुंडमाला धारण किए हुए, नीलम के समान कांतिवाली, कमलरूपी एक हाथ में मोगरी, दूसरे में हल, तीसरे में भय और चौथे में वर की मुद्रा को धारण किए हुए, लाल वस्त्र धारण किए हुए तीन नेत्रोंवाली वाराहमुखी को मैं प्रणाम करता हूं।

विधिः शुभ दिन शुभ लग्न में रात्रि को १० और १२ बजे के बीच लाल आसन, लाल वस्त्र धारण कर लाल माला से जाप शुरू करे। एक लाख जाप तीन महीने में पूर्ण करना है।

हवनः छिन्न मस्ता मंत्र के हवन सामग्री के समान हवन करना है केवल गुग्गुल इसमें और लेना है।

प्रयोगः हवन समाप्ति पर जिस शत्रु के लिए यह प्रयोग किया गया है उसका नाम लेकर पृथ्वी पर तीन बार जल को फेंक दें। शत्रु का शमन अवश्य हो जायेगा।

कर्ण–पिशाचिनी साधना

△

मन्त्रः ॐ नमो कर्णपिशाचिनी अमोघ सत्यवादिनी मम कर्णे अवतर-अवतर सत्यं कथय-कथय अतीत अनागत वर्तमान मम दर्शय दर्शय कथय-कथय ह्रीं कर्ण पिशाचिनी स्वाहा।

विधिः प्रातःकाल स्नान कर उत्तर की ओर मुँह कर ऊन का आसन व ऊन का ही वस्त्र व ऊनी कम्बल ही ओढ़े। केशर चन्दन व कस्तूरी का तिलक करे, गुग्गुल का धूप करे, गाय घृत का दीपक करे। १२ दिन तक रोज दस माला का जाप करे। एकाशन करना, खीर व गेहूँ की रोटी खानी चाहिये।

गेहूँ के आटे की एक टिकड़ी बनाए उसको घृत में तल ले। जाप करते समय उसे मुँह में रखकर जाप करे।

अन्तिम दिन खीर की १०८ आहुति देनी चाहिए।

आहुति–मन्त्र

ह्रीं कर्ण पिशाचिनी स्वाहा।

ॐ वः वः कम्बली के गंद पिंड पिशाचिनी स्वाहा।

उच्छिष्ट चंडालिनी साधना

△

मन्त्रः ॐ नमो उच्छिष्ट चण्डालिनी पुरपाटण क्षोभणी आकर्षिणी २ आकर्षय २ द्रव्य आनय आनय ह्रीं फुट् स्वाहाः।

विधिः रविवार के दिन शुभ मुहूर्त में जाप शुरू करे। उस दिन व्रत रखे। बिना बोले भोजन करे। पहले मन्त्र का १०८ जाप करे टट्टी जाते समय जाप करता रहे ऐसा ४९ दिन करें। भूमि शयन करे अशुचि रहे, हाथ, पैर, कपड़े वगैरह न धोवे। पहले सप्ताह स्वप्न दे, दूसरे सप्ताह अशुभ स्वप्न आवे, तीसरे सप्ताह अशुभ दर्शन दे, चौथे सप्ताह अशुभ स्वप्न, पांचवे सप्ताह मांसादिक दे, छटे सप्ताह अच्छा रूप दिखावे, सातवें सप्ताह प्रत्यक्ष दर्शन दे। रक्त चन्दन की माला से जाप करे। सातों रविवार को व्रत रखे। पेशाब करते वक्त भी २१ बार पढ़े। निश्चित वरदान दे।

मन्त्र: एं ह्रीं क्लीं सौः एं ज्येष्ठ मातङ्गि नमामि उच्छिष्ठ चांडालिनी त्रैलोक्य वशंकरी स्वाहा।

ध्यान: देवी शवासन पर बैठी है, रक्त वस्त्र धारण किये रक्त वर्ण के आभूषण से विभूषित, गुन्जा हार से शोभित १६ वर्ष की युवती है, दोनों उरोज समुन्नत हैं, बांये हाथ में नर कपाल है और दाहिने हाथ में कैंची है, ज्योति स्वरूपा है।

विधि: भोजन के बाद बिना आचमन किए मूल तन्त्र से रोज बलि देकर हृदय में ध्यान करे, बलि उच्छिष्ट पदार्थ की ही दें। एक लाख जाप करने से देवी सिद्ध होती है।

होम: "मूल मंडलाय नमः" से स्थण्डिल में चतुरश्र मंडल की पूजा करे, देवी का ध्यान करें सफेद सरसों, चावल व दही से एक हजार होम करे। मार्जार मांस के होम से शास्त्रों में पारंगत होता है। मधुयुक्त छाग मांस से होम करने से कुल देवता सिद्ध होते हैं। शर्करा व खीर के होम से विद्या प्राप्त होती है, घृत, मधु, शक्कर व विल्व पत्र के होम से पुत्र की प्राप्ति होती है।

स्वप्न साधना

Δ

मन्त्र: ॐ णमो अरहंताणं

ॐ णमो सिद्धाणं

ॐ णमो आयरियाणं

ॐ णमो उवज्झायाणं

ॐ णमो लोए सव्व साहूणं

मूल मन्त्र: ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं, लोगुत्तमाणं, लागनाहाणं, लोगहियाणं, लोग पईवाणं, लोग पज्योयगराणं मम शुभाशुभं दर्शय दर्शय ॐ ह्रीं कर्णपिशाचिनी मुन्डे स्वाहा।

विधि: हाथ, पैर, मुंह धोकर साफ करले। पहले ऊपर वाले मन्त्र को एक माला फेरे उसके बाद पहले प्रश्न का चिन्तन करे फिर मूल

मंत्र की एक माला का जाप करे। फिर सो जाये तो स्वप्न में प्रश्न का जबाब निश्चय मिलेगा। स्वप्न आते ही उठकर लिख लेना चाहिये जिससे विस्मृति न हो।

लीलपरी साधना

△

मन्त्र: विशमिल्लाहररहमान नीररहीम लाय जल्लल्लिहालेवक्ताइल्लाहू।

विधि: एकान्त जगह, एक सफेद कपड़ा सवा हाथ चौड़ा ढ़ाई हाथ लम्बा बिछाए, तहमद पहने, गंजीपहने, मस्तक पर टोपी पहने। रात के आठ बजे पूर्व की ओर मुंह करके बैठे, साधना के पहले दिन एक गुलाब के इत्र का फौआ, एक लगा हुआ मीठा पान साथ में लौंग लगा हो व सफेद फूल तथा एक वृक्ष की डाली, एक पानी का लोटा, लोबान, धूप व अगरबत्ती सर्व वस्तु साधक के दायीं तरफ रहे। १०१ मोतियों की माला से जाप शुरु करे। प्रथम दिन जाप शुरु करने के पहले ही कह दे कि हे लीलपरी मैं तुम्हारी साधना बहिन के रूप में कर रहा हूँ फिर विशमिल्लाहररहमान का पाठ तो केवल रोज जाप शुरू करने के पहले एक दफे ही बोलना है – फिर मंत्र जाप पौने दो घण्टे एक आसन से रोज करे। तेल का दीपक जरूरी समझा जाए तो पास में रखा जा सकता है। मांस, शराब, लहसुन प्याज आदि नहीं खाने हैं। रजस्वला औरत के हाथ का खाना भी नहीं खाना है। यह साधना ४१ दिन की है।

जिब्राइल-साधना

△

साधना विधि :

सबसे पहले एक चांदी का पतरा बनवाये। उस पर हकीक सुलेमानी, करकेतक और याकूत के नगीने जड़वा ले और नीचे की तरफ 'या गनीयो, या कबीलो या मदीयो, या सलीयो, या रव्व' लिख लें। यह तैयार होने के बाद साधना शुरू करे। एक ढाई हाथ लम्बा- १।। हाथ चौड़ा सफेद कपड़ा बिछाए,

पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर बैठ जावे। सर पर टोपी रखे। लोबान धूप खेवे और 'बिशमिल्लाहररहमान नीर रहीम' को सौ बार पढ़े। फिर उस चांदी वाले पतरा को गले में लटका ले फिर मशरिक की ओर मुंहकर के आसमान की ओर देखते हुए 'या जिब्राइल, या जिब्राइल, या जिब्राइल' का १०८० कलमा जपे। जप करते समय निगाह आसमान की ओर ही रखनी है। फिर एक जमजमा बिछाये और उस पर लौंग, मुनक्का, खजूर, मिश्री, किसमिस व अखरोट परोसे। पानी का भरकर एक बधना (लम्बी नली वाला पानी का बरतन) रख दे। फिर आंख बन्द कर 'या जिब्राइल, या जिब्राइल, बहक जिब्राइल' १०० बार पढ़े। लोहबान का धूप खेवे, धूप देकर सिजदा करे और उठ जाये। भोग मसजिद में दे आवे, खाना नहीं चाहिए। इस तरह सौ दिन तक बराबर करे जिससे जिब्राइल खुश होकर कामना सिद्ध करेगा।

विरहना पीर साधना

△

मन्त्र:

पीर विरहना फूल विरहना धुं धुं कारे सवा सेर का तीसा खाय अस्सी कोस का धावा करे, सात सौ कुत्तक आगे चले, सात सौ कुत्तक पीछे चले, ५६०० छूरी चले, ५२०० बीर चले जिसमें गढ़ गजनी का पीर चले और उसकी धुजा उखाड़त चले अपनी धुजा टेकता चले सोते को जगाता चले बैठत को उठाता चले हाथों में हथकड़ी पैरों में रकड़ी गेरे हुलाल मांही दीठ करे मुरदार मांही पीठ करे, कलवान नबी को याद करे, ॐ ॐ ॐ नमः ठः ठः स्वाहा।

विधि:

ग्रहण की रात से हकीक की माला पर ४० दिन तक रोज एक माला का जाप करे। छुहारा, किशमिश, लौंग व हलवा का रोज भोग चढ़ावे। ४० वें दिन पीर प्रकट होगा तब उसको भोग चढ़ाकर वचन ले ले। केवल हितकारी कार्यों के सिवाय गलत कार्य पीर से न कराये।

मुहम्मदा पीर साधना

△

मन्त्र:

विशमिल्लाहररहमान नीर रहीम पायं घूघरा कोट जंजीर, जिस पर खेले मुहम्मदा पीर, सवा मन का तीर जिस पर खेलता आवे मुहम्मदा पीर, मार मार करता आवे, बांध बांध करता आवै, डाकिनी को बांध, पलीत को बांध, नौ नरसिंह को बांध, बावन भैरों बांध, जातका मरते बांध, गूंगिया, पीलिया, धोलिया, कालिया मसाण बांध, बांध कुआं बावड़ी, लावो सोती को, लावो पीसती को, लाबो पकाती को, लावो जल्दी जावो हजरत इमाम हुसैन की जांघ से निकाल कर ल्यावो, बीबी फातमा के दामन सू खोल कर लाओ, नहीं लावे ता माता का चूखा दूध हराम कहे, लावे । शब्द सांचा फूरे मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि:

मन्त्र यद्यपि बड़ा है फिर भी इसका फल और लाभ बहुत अधिक है । इस प्रकार के मन्त्रों की साधना करते समय विचित्र प्रकार के, किसी तरह भयानक दर्शन भी हुआ करते हैं किन्तु उनको देखकर डरना या घबराना नहीं चाहिए । नौ चन्दी की जुमेरात की शाम से इस मन्त्र का प्रयोग आरम्भ करना चाहिए । इस मन्त्र को शाम के समय केवल दस बार पढ़ना है और पढ़ते समय लोबान की धूप करनी है । इस तरह करने पर इक्कीस जूमे रात में पीर प्रकट हो जायगा, इसे देख कर वचन ले लेना चाहिए, डरना नहीं चाहिए । भक्तिभाव पूर्वक नमस्कार करना चाहिए । इससे जो कुछ भी करने को कहा जाय वह करेगा । यह ध्यान रखना चाहिए कि जिन दिनों इसकी साधना की जाये उन दिनों पाक साफ रहना चाहिए किसी का भी अहित नहीं करना चाहिए । सिद्ध होने पर इस मन्त्र को पढ़कर किसी बीमार पर धूल की चुटकी फेंक देने मात्र से रोगी को आराम हो जावेगा । केवल हितकारी कार्य लें । गलत कार्य पीर से न लें ।

दिक्पाल–साधना

△

किसी भी दूरस्थ व्यक्ति को आकर्षित करने की यह उत्कृष्ट साधना है । पहले दिक्पाल साधन किया जाता है । इसके लिए हाथ की दसों अंगुलियों

पर नियंत्रण करना होता है। कारण दिक्पाल के आह्वान के बिना आकर्षण सिद्ध नहीं होता। इनका प्रयोग सिद्ध कर लेने पर ये दूरी कम करते हैं। यह साधना कर लेने के बाद जब भी आवश्यकता हो प्रयोग विधि के अनुसार प्रयोग किया जा सकता है। परन्तु एक बात का ध्यान रखा जाय कि यह प्रयोग जब भी किसी के लिये किया जाये तो बिना कुछ दक्षिणा लिए नहीं करना चाहिए, और जितनी भी दक्षिणा ली जाये उसका दशांश प्रत्येक दिक्पाल के नाम से गरीबों को दान कर देना चाहिए।

अंगुली नियंत्रण साधना

दायें हाथ की चारों अंगुलियों को आपस में चिपका लें–इसी तरह बायें हाथ की अंगुलियों को भी आपस में चिपका लें–फिर आगे की ओर थोड़ा मोड़ कर झुका लें, और दांये-बांये हाथ की झुकी हुई अंगुलियों को एक दूसरे के सामने कर लें। उनकी दूरी ज्यादा से ज्यादा आधा सूत ही रहनी चाहिए। अब दोनों अंगुष्ठों को सीधा रखते हुए अपने अपने हाथ की अनामिका अंगुली के ऊपर के पौरवे के सामने रखना चाहिए। यह मुद्रा ठीक आंखों से नौ इन्च की दूरी पर रहनी चाहिए। यह मुद्रा अम्बुज मुद्रा कहलाती है। अब अपनी दृष्टि को उस आधा सूत के खाली स्थान पर स्थिर कर देनी चाहिए। यह दृष्टि स्थिरता कम से कम एक मिनट तक बिना किसी संकल्प विकल्प के स्थिर रहनी चाहिए। इस तरह यह साधना तीस दिन तक करनी है। इसके बाद प्रयोग निम्न प्रकार से किया जाना चाहिए।

प्रयोग

दाहिने हाथ के अंगुष्ठ के पौरवे पर लालचन्दन (या मसूर की दाल पीसकर) लगायें और बांये हाथ के अंगुष्ट के पौरवे पर काजल लगाये, और एक दूसरे के सामने करके उन पर अपनी दृष्टि स्थिरकर––'हुं' बीज का १०८ मानस जप करें (जिह्वा भी हिलनी नहीं चाहिए) इस तरह ११ दिन तक यह क्रिया करें। तत्पश्चात १२ वें दिन जिस व्यक्ति को आकर्षित करना है उसके चित्र या चित्र के अभाव में उसके हाथ से लिखे पत्र को जमीन पर रख कर उन दोनों अंगुष्ठों को उसपर दबाकर रखें और इस मंत्र का 'झां झां झां हां हां हें हें हूं' १०८ मानस जप करे। इस प्रयोग से वह व्यक्ति आकर्षित होगा और जल्द आ जायगा।

वश्य-साधना

Δ

साधना

अपने बांये हाथ की हथेली में सरसों का तेल लें। पाँच मिनट तक उसको देखते हुए 'रं' बीज का मानस जप करे। उसके बाद दाँये हाथ की अनामिका अंगुली से वह तेल ले और उस पर 'लं' बीज का पाँच बार मानस जप कर उस तेल को नाभी में लगा ले। बाकी को फेंक दे। फिर पाँच मिनट तक सहज मुद्रा से नाभी की तरफ ध्यान स्थिर करे। इस तरह तीस दिन तक इस प्रयोग की साधना कर ले।

प्रयोग

व्यक्ति के दाहिने भौओं के ऊपर कालचक्र और बाँये भौंओं के ऊपर ललना चक्र होता है। अब जिस व्यक्ति का वशीकरण करना है उस व्यक्ति या उसके चित्र को देखते हुए उसके कालचक्र के ऊपर ध्यान स्थिर कर मन ही मन में दृढ़ भावना करे कि इस व्यक्ति का मस्तिष्क मेरे अनुकूल हो। यह करते समय 'लं' बीज का ११ मानस जप करे। फिर ललनाचक्र की ओर देखे ओर 'लं' बीज का ११ बार मानस जप करे। परन्तु ललनाचक्र की ओर देखते समय किसी भी तरह की भावना नहीं करनी चाहिए। केवल जप करना है। ललना चक्र पर जाप करने के बाद उसके सम्पूर्ण चेहरे की ओर देखे और मन ही मन यह दृढ़ भावना करे कि यह व्यक्ति अब मेरे अनुकूल हो गया है।

दृष्टव्य

कालचक्र व ललनाचक्र कहाँ होता है? इसके लिए बताया गया है कि आँख के ठीक ऊपर नाक के हिस्से से लेकर कान की तरफ जो बाल गए है उन्हें भौंहे कहते हैं और भौंहों का कान की तरफ का जो अन्तिम हिस्सा है उसके ठीक एक अंगुल पहले से बालों के ठीक ऊपर कालचक्र व ललनाचक्र होता है। यह दुर्लभ अचूक, यौगिक-प्रयोग है।

षट्चक्र साधना

Λ

इसके साधने की क्रिया आज्ञाचक्र से प्रारंभ होकर प्रत्येक चक्र पर ध्यान देते हुए मूलाधार तक जाती है और ठीक उसी तरह उल्टा मूलाधार से प्रत्येक चक्र पर

ध्यान देते हुए आज्ञाचक्र तक पहुँचना है। कम से कम यह साधना नौ बार अवश्य करनी है। धीरे-धीरे साधना को १०८ बार तक करना है। ऊपर से नीचे-नीचे से ऊपर यह दो क्रम हुआ। द्वादशाय नमः के बाद फिर एकाय नमः ही शुरू करें। यह बैठे बैठे सुखासन में साधना करनी चाहिए। जब साधना का स्तर बढ़ जाय तब शवासन में भी की जा सकती है। इसमें इतना ही फरक है कि शवासन में समाधि जल्द लगने की आशंका रहती है और बैठे हुए सुखासन में धीरे-धीरे देरी से समाधि लगती है। शवासन में कभी-कभी साधक की उच्च साधना से समाधि लम्बे समय तक लग जाती है और इस कारण अन्य लोग उसे मृतक के रूप में समझ लेते हैं, परन्तु मृतक का शरीर कुछ समय बाद सड़ने लगता है और समाधि ग्रस्त व्यक्ति का शरीर सड़ता नहीं। समाधि को जल्द तोड़ने के लिए एक दो उपाय काम में लिए जाते हैं, जैसे गेहूँ के आटे की एक कच्ची पक्की रोटी बनाए और उसको हलका हलका गरम रखे। उस रोटी को समाधिग्रस्त व्यक्ति के मस्तक पर रख दे या एक काष्ठ की हथौड़ी बनाए और उससे बहुत हलके हलके मस्तक पर टक टक करे तो इन क्रियाओं से समाधि जल्द टूट जायगी।

विधि

एकान्त स्थान में सुखासन में बैठ कर आज्ञाचक्र (ललाट) पर ध्यान केन्द्रित कर 'एकाय नमः' कहे, और एक मिनट ध्यान करे। फिर विशुद्धाख्य (गला) पर ध्यान केन्द्रित करे और द्वितीयाय नमः कहे और एक मिनट गले पर ध्यान केन्द्रित कर ले। फिर अनाहत (हृदय) पर ध्यान केन्द्रित करे और त्रितियाय नमः कहे और एक मिनट ध्यान हृदय पर केन्द्रित कर ले फिर मणिपुर (नाभि) पर ध्यान केन्द्रित करे और चतुर्थाय नमः कहे और नाभि पर एक मिनट ध्यान केन्द्रित कर ले। फिर स्वाधिष्ठान (लिंगमूल) पर ध्यान केन्द्रित करे और पंचमाय नमः कहे और एक मिनट ध्यान केन्द्रित कर ले। फिर मूलाधार (अंडकोश के ठीक नीचे) ध्यान केन्द्रित करे और षष्ठाय नमः कहे और एक मिनट ध्यान केन्द्रित कर ले। इसी तरह वापिस लौटना है। मूलाधार से ही सप्तमाय नमः करते हुए आज्ञाचक्र तक द्वादशाय नमः कहते हुए ध्यान में डूब जाना है, फिर जितनी देर ध्यान किया जा सके करे। नमस्कार मानस जप के रूप में करना है। जिह्वा भी हिलनी नहीं चाहिए। आँखे बन्द ध्यान में उन चक्रों को ही सोचना है, परन्तु चक्रों का ध्यान शरीर के पीछे की ओर नहीं आगे की तरफ ही ध्यान केन्द्रित करना है।

फल प्राप्ति

इस साधना से षट्चक्र जागरण, इच्छा सिद्धि व दीर्घायु प्राप्त होती है।

निराकार साधना

△

एक पूर्ण अंधकारमय कमरा जिसमें प्रकाश की एक रेख भी नहीं आती हो उसमें सुखासन से बैठ जाय और अपनी आंखों से दो फुट की दूरी पर हृदय तक की ऊँचाई तक एक अगरबत्ती बहुत बढ़िया सुगन्धवाली जलाए। उस कमरे में किसी देवी देवता या व्यक्ति विशेष का भी चित्र नहीं रहना चाहिए और न किसी का ध्यान भी करना चाहिए। अब अगरबत्ती जलाने के बाद उसमें धुंआं निकालना शुरू हो जायगा। अपने को धुंए की तरफ ध्यान नहीं देना है। उस अगरबत्ती की जो हल्की हल्की अग्नि सी जलती दिखाई देती है उस अग्नि की जड़ पर ठीक आंखों के सामने ध्यान केन्द्रित करना है और फिर उस अग्नि के चारों ओर पहले बाएँ से दाएँ की ओर ध्यान को चक्कर लगा देना है। चक्कर लगाकर वापिस उसी पॉयन्ट पर पहुंच जाना है। वहां पहुँच कर एक मिनट ध्यान करना है। विचारशून्य केवल ध्यान में उस अग्नि की जड़ को देखना है और फिर उसी तरह उल्टा चक्र लगाना है और उसी पॉयन्ट पर ध्यान केन्द्रित करना है। तत्पश्चात् उस अग्नि के ठीक ऊपर की नोंक पर (राख झाड़कर, कारण दो मिनट में उस पर राख आयगी) ध्यान केन्द्रित कर ध्यान का सीधा व उल्टे चक्र घूमकर उसी पॉयन्ट पर ध्यान ले आये और फिर जितनी देर इच्छा हो ध्यान लगाए रहें। यह अगरबत्ती में जो अग्नि जल रही है वह चेतना का प्रतीक है और नेत्र की जो दृष्टि शक्ति है वह जगत का प्रतीक है, तो हम अपने नेत्र द्वारा (भौतिक शक्ति) चेतना की परिक्रमा करते हैं जो कि सारे जगत के कण कण में व्याप्त है। फिर अन्त में जो चोटी की परिक्रमा है उसके बाद जो ध्यान करते हैं वो अपनी भौतिक सत्ता का चेतना में समर्पण है। आँख बन्द करने के बाद यानि ध्यान करते समय सोचना कुछ भी नहीं है। जो भी दृश्य ध्यान में सामने आये उनको केवल देखना है। उसी अगरबत्ती के पैकेट का और माचिस का दूसरे किसी भी कार्य में प्रयोग नहीं करना है, अलग रख दिया जाय। उसकी झड़ी हुई राख कूड़े में न फेंक दें उसे नदी में बहा दें। उस अगरबत्ती व माचिस को इसी प्रयोग में लेना है जब जब ही करें।

फल प्राप्ति

इस साधना का फल मन की शान्ति व चित्त की एकाग्रता है। समझ लें आप किसी भयंकर समस्या से बहुत चिंतित व उद्वेलित हो गए हैं तो आप तुरन्त इस क्रिया को करें। आप का मन शान्त व चित एकाग्र हो जायगा। इससे चिन्ता का जो कारण बना है वह दूर नहीं होगा परन्तु आपमें उस कारण से जो अशान्ति पैदा हुई है वह निश्चय ही शान्त हो जायेगी और धीरे-धीरे इच्छा नहीं इच्छा शक्ति बढ़ेगी। जो सबसे उत्तम शक्ति है।

वीर साधना

△

मंत्र : जब तारा तूरी स्वाहा।

विधि : नये चांद के बृहस्पतिवार को सारा दिन व्रत रखे। संध्या को दूध की खीर बनाकर खाये। एक पहर रात बीत जाने पर स्नान कर शुद्ध हो। सुर्ख वस्त्र पहन कर शरीर में सुगन्धी लगाये। रूमी सिंगरफ का एक घेरा बनाकर उसमें बैठ जाये। एक लगा हुआ मीठा पान जिसमें लौंग लगा हुआ हो, चार इलायची, आठ लौंग और सुपारी दायीं ओर रखे। घृत का दीपक जलाये, धूप करे, सर पर टोपी लगाकर एकाग्र मन से उपरोक्त मंत्र का जाप शुरू करे। एक आसन व एक बैठक में पांच हजार जाप करने से जिस वीर का ध्यान करके जाप शुरु किया है वह वीर उपस्थित हो जायेगा। तत्पश्चात् प्रणाम कर अपने कार्य की सफलता की मांग करे तो सफलता प्राप्त हो।

छाया पुरुष साधना

△

मंत्र : आगम निगम की खबर लगाये सोहं पारब्रह्म को नमस्कार।

विधि : एकान्त एक कमरा, शान्त वातावरण, कमरे में नई सफेदी करायें। रात्रि के समय स्नान कर, शुद्ध वस्त्र पहन कर उत्तर की ओर मुंह कर जाप शुरू करना है। खड़े खड़े जाप करना है। उससे पहले एक घृत का दीपक इस तरह रखे जिससे अपनी छाया भली प्रकार दिखाई दे सके। उस छाया की ओर टकटकी लगाकर देखते हुए उपरोक्त मंत्र का जाप करे। रोज २५०० जाप एकाग्र मन से चालीस दिन तक करना है। सातवें दिन साधक को छाया

पुरुष का कुछ आकार सा दिखाई देगा। इक्कीसवें दिन कुछ धुंधली आकृति सी दिखाई देगी। इस पर साधक को घबराना नहीं चाहिए। अन्तिम दिन छाया पुरुष दिखाई देगा। प्रगट होते ही छाया पुरुष पूछेगा कि क्या चाहता है? तब उससे वचन मांग ले कि जब याद करूं आए व मेरा जो कार्य हो, सम्पन्न करे। फिर वह छाया पुरुष हमेशा पास रहेगा। हजारों मील दूर की सूचना वह लाकर दे सकता है। वह अनेकों कार्य कर सकता है।

पुतली साधना

△

हिन्दू सम्प्रदाय में जिस तरह यक्षिणियों की साधना का विधान आता है उसी तरह मुस्लिम सम्प्रदाय में परी व पुतलियों की साधना का विधान आता है। यहाँ दो पुतलियों की साधना की विधि दे रहा हूँ।

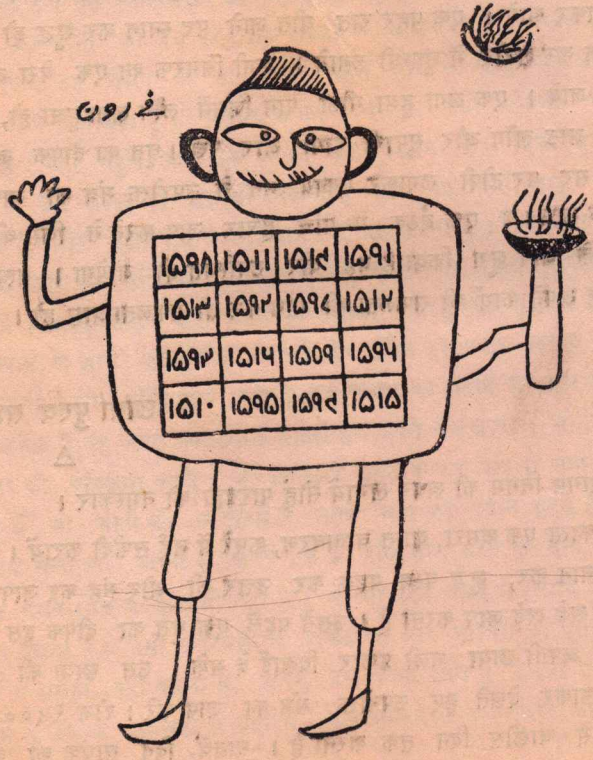

पुतली बनाने की विधि :

एक सफेद कागज बढ़िया शुद्ध होना चाहिए। पुतली की सभी लाइनें आदि काली स्याही से लिखी जायेंगी। केवल यंत्र के जो अक्षर है वे लाल स्याही से लिखे जायेंगे। फेरुन का नाम काली स्याही से लिखें।

पुतली साधन विधि :

एकान्त स्थान में साधक अपने हाथ के माप से साढ़े तीन हाथ नीचा, ढाई हाथ चौड़ा, लम्बा, गोल गढ़ा खोद ले। उसके भीतर साधक बैठेगा तो ठीक अपने सामने की दीवाल सटाता हुआ एक हाथ व दो अंगुल गहरा व करीब एक बीता गोल गढ़ा और खोद ले और उस गढ़े को १२ साल के नीचे नीचे के बच्चे के मल से पोताई कर दे और एक शीशी में स्वयं का मूत्र भरकर साथ में ले लें, और अब अन्धेर पक्ष के किसी भी दिन से साधना शुरू करे। मस्तक पर टोपी शरीर पर गन्जी व नीचे तहमद बाँधकर उस गड्ढे में पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाये। शाम के साढ़े सात बजे से रात ग्यारह बजे के बीच शुरू करना चाहिए। उसमे बैठकर ठीक अपनी आंख के सामने उस पुतली को दीवाल के सहारे काठ की कीलों से चिपका दे, और "या फेरुन" का जाप शुरू कर दे। एक घण्टा पन्द्रह मिनट रोज जाप करना है। जाप के हर इक्कीसवीं बार उस मूत्र की शीशी से उस छोटे गड्ढे में थोड़ी सी मूत्र का धार दे दे। फिर जाप शुरू करे। फिर इक्कीसवीं बार मूत्र की धार दे दे। इस तरह यह साधना ग्यारह दिन तक करनी है। साधना के नवें राज साधक को भूकम्प के सदृश आवाज व कम्पन सुनाई देगा। उस समय "खाज खिज्र साहब मेरी मदद करें" यह प्रार्थना कर दे जिससे वो भूकम्प का दृश्य समाप्त हो जायगा। ग्यारवें दिन साधना पूरी हो जायेगी। तब उस दिन वो पुतली वहाँ से निकाल ले। गड्ढे को भर कर बन्द कर दें। यदि उस शीशी में मूत्र बचा हो तो उस छोटे गड्ढे में गिरा दें। शीशी भी वहीं छोड़ दें और बाहर आकर स्नान कर उस सिद्ध पुतली को अच्छी जगह स्थापित कर दें।

प्रयोग :

१. एक दूसरी वैसी ही पुतली उसी लिखने के विधि विधान से बनाए। दोनों चिरागों के बीच अपने शत्रु का पूरा नाम लिखे। दुश्मन के बांये पैर की मिट्टी ले आये और एक ताँबे का बड़ा ताबीज बनाये और ऊपर डोरी बांधने

के लिये एक अंकोडिया भी रख ले। अब उस पुतली की तीन परत करके उस यंत्र में शत्रु के पैर की मिट्टी सहित डालकर यंत्र को बन्द कर दे। फिर घोड़े की पूंछ के कम से कम तीन बाल उस यंत्र पर लपेट दें। फिर उसमें लम्बी डोरी बाँधकर ऊँचे छत की कड़ी में इस तरह लटका दे जिसके नीचे बैठा व्यक्ति उस डोरी को ऊपर नीचे करता रहे। डोरी को ऊपर की ओर ढील देगा तो ताबीज नीचे आयेगा और डोरी को नीचे की ओर खींचेगा तब ताबीज ऊपर जायेगा। इस तरह लटका दे कि जब जरूरत हो जितनी देर तक जल्दी-जल्दी या धीरे-धीरे उस ताबीज को ऊंचा नीचा करेंगे तो शत्रु जहां कहीं भी होगा उसी तरह उछल कूद मचायेगा। जब आप बन्द करेंगे तो वह बन्द हो जायेगा इस उछल कूद के सिवाय उसको कोई नुकसान नहीं होगा।

२. इसी तरह की एक और पुतली बनाई जाये। उसी तरह उसमें शत्रु का नाम लिख और शत्रु जहां टट्टी, पेशाब किया है वहां पेशाब व टट्टी की मिट्टी उठा लाए और एक हाथ दो अंगुल गहरा एक गड्ढा खोदकर उस मिट्टी सहित पुतली को उस गड्ढे में गाड़ दे और बन्द कर दे। अब जब तक वो पुतली व मिट्टी गड्ढे में गड़ी रहेगी, शत्रु का टट्टी व पेशाब होना अवश्य बन्द रहेगा।

३. इसी तरह की एक और पुतली बनाए। उसमें किसी शत्रु आदि का नाम नहीं लिखना है। पुतली बनाने के बाद जिस व्यक्ति में प्रेत आत्मा का साया है उसके सामने बैठ जाये और उसके सामने दोनों हाथों से पुतली के कागज को पकड़ कर उस रोगी से कहे कि इस पुतली के यंत्र पर नजर स्थिर करो। नजर स्थिर करने के बाद उस व्यक्ति से यह कहलाए कि हे दुष्ट आत्मा इस पुतली के अन्दर आ जाओ तो वह प्रेत आत्मा उसे उस पुतली में दिखाई देने लगेगी। जब रोगी बतलाये कि हाँ वह प्रेतात्मा उस पुतली में आ गई है तब पुतली के कागज को तीन परत देकर बन्द कर एक सूत लपेट कर एक बहते पानी के कुएं में गिरा दे। उसमें गिराते वक्त पत्थर पड़ने जैसी आवाज होगी। उसके बाद वह प्रेतात्मा कभी भी उस व्यक्ति को नहीं सतायेगी।

नोट : १. तीनों प्रयोग करते समय "या फेरून" का जाप करते रहना चाहिए।

२. पहले पुतली बना लें फिर सिद्ध की हुई पुतली जहाँ स्थापित की हुई है उसके पास जाकर हाथ जोड़कर कहें कि मैं जो काम करने जा रहा हूं वह मेरा काम सफल होना चाहिए। ऐसा कहकर फिर प्रयोग शुरू करें।

नं० २ पुतली

△

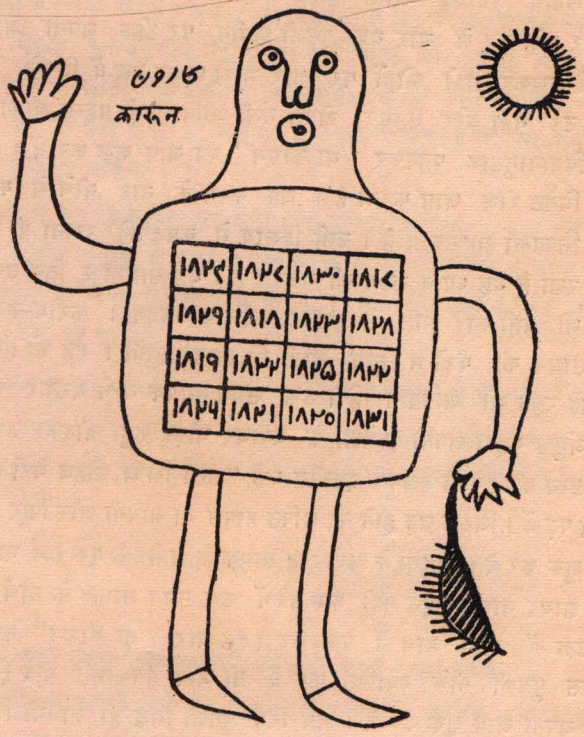

पुतली बनाने की विधि :

पुतली नं० १ में जो बनाने की विधि दी है उसी तरह इसे भी बनाया जायेगा।

पुतली साधन विधि :

एक साढ़े तीन हाथ लम्बाई का गोल एरिया बनाए। उसमें जगह-जगह चार छह लम्बी लकड़ी गाड़ दें। लकड़ी गाड़ने के बाद जमीन के बाहर साढ़े चार हाथ ऊंची होनी चाहिए। इसको करने के बाद एक साढ़े तीन हाथ लम्बा व साढ़े चार हाथ चौड़ा काला कपड़ा बनाए और उस घेरे की लकड़ियों के चारों ओर उस कपड़े को लपेट दें। जगह-जगह सिलाई कर दें, जिससे गिरे नहीं। उसके भीतर की तरफ अपने मल से कपड़े को लीप दें और

ठीक उसके बीचो-बीच खड़ा हो जाये। भीतर में घुसते समय एक ऊँची टेबल पास में रखे जिसके सहारे उस घेरे में उतर जाये। जब उस घेरे के बाहर कपड़ा लगायें तब वह कपड़ा जमीन से दो अंगुल ऊंचा होना चाहिए। पूर्व की ओर मुंह कर ले और वह पुतली जमीन पर ठीक अपनी नजर पड़ती रहे ऐसे रखकर चारो कोनों पर चार भारी पत्थर रख दें जिससे पुतली का कागज उड़े नहीं और तहमद, टोपी, गंजी आदि उसी पहली वाली पुतली के विधि विधानानुसार पहनकर "या कारून" का जाप शुरू कर दें। एक घण्टा पन्द्रह मिनट रोज जाप करना है। जप करने के बाद नीचे से कपड़ा ऊंचा करके निकाला जा सकता है। उसी हिसाब से कपड़े को रखना है जो लपेटते समय रखा है यह ध्यान रखने की जरूरत है। यह साधना ६ दिन तक चलेगी। समय भी वही साढ़े सात से ग्यारह रात्रि का रहेगा। करीब-करीब सातवें रोज साधक को पैरों में सुन्न आती सी महसूस होगी। यह भी हो सकता है कि खड़े रहने की शक्ति न रहे। उस समय साधक नीचे बैठकर कम से कम चार अंगुल गहरा अपनी हथेली के बराबर चौड़ा गड्ढा खोदकर उस पर अपने दायें हाथ की हथेली रखकर इक्कीस दफे "खाज खिज्र साहब मेरी मदद करें" इसको पढ़ लें। जिससे खड़े होने की शक्ति वापस आ जायेगी और फिर खड़ा होकर जाप शुरू कर दे। साधना के नवें रोज साधक के शरीर से एक गर्म भाप निकलेगी जिसे शायद साधक सहन नहीं कर सकेगें उस समय साधक के नीचे से पुतली को उठा लें, दोनों हाथ से पकड़कर १०८ बार "या कारून" का जाप कर वापिस पुतली नीचे स्थापित कर दे तो भाप निकलनी बन्द हो जायेगी। फिर अपना जाप शुरू कर दे। नवें दिन पुतली सिद्ध हो जायेगी। फिर पुतली को निकाल लें कपड़े व लकड़ी को जला दें और जगह को साफ कर दें। पुतली को एकान्त में सुरक्षित स्थान पर स्थापित कर दें।

प्रयोग

१. ऐसी ही एक पुतली बनाये। सूर्य के नीचे शत्रु का नाम लिखे, काली स्याही ही प्रयोग करें। फिर उस सिद्ध पुतली के पास जाकर कहे कि मैं जो काम करने जा रहा हूँ वह मेरा काम सफल होना चाहिए फिर उस पुतली को एक थाली में चिपका दें। दुश्मन के दांये पैर की मिट्टी मंगा कर जमीन पर रख दें और उस मिट्टी पर थाली औंधी रख दें। ऊपर से किसी भी वस्तु से थाली को मारता जाये जिससे थाली से जो आवाज निकलेगी उसी तरह की आवाज शत्रु जहां भी होगा उसके पेट में होगी। नगारे व ढोल आदि का

प्रयोग करेंगे तो वही आवाज पेट से आयेगी। नगारे व ढोल पर पुतली चिपका दी जायेगी और उस मिट्टी पर नगारा या ढोल को रखकर बजाया जायेगा।

२. पुतली को एक जगह रखकर पुतली के मुंह के घेरे के भीतर शत्रु के दायें पैर को मिट्टी एक चिमटी भर गिरा देनी होगी और उसके ऊपर घोड़े की पूंछ का बाल फिराते रहना होगा तो उससे शत्रु की आंख में झूंझ, नाक से छींक, गले में खरखरी शुरू हो जायेगी। जब आप बन्द करेंगे तो शत्रु का कष्ट पाना भी बन्द हो जायेगा।

३. पुतली के पेट के हिस्से पर जहां यंत्र लिखा है, शत्रु के दायें पैर की मिट्टी गिरा दे और पुतली के हाथ में एक करात है उस पर घोड़े के बाल फेरे जायेंगे तो शत्रु के पेट में करात को तरह चलेगी। जब आप बन्द करेंगे, उसका भी कष्ट पाना बन्द हो जायेगा।

४. एक और पुतली बनाये, शत्रु के खंखार, थूक या पान का पीक चाहे सूखा भी हो लाकर उसमें एक या दो रंग और घोलकर पुतली की आँख पर लेप कर दे तो जब तक वह लेप रहेगा शत्रु को हर समय उतने ही रंग दिखाई देते रहेंगे।

५. प्रेत के साये का प्रयोग ऊपर वाली पुतली के समान ही है।

नोट :

१. प्रयोग करते समय "या कारुन" का जाप करते रहना चाहिए।

२. पहले पुतली बनाये फिर सिद्ध की हुई पुतली के सामने आकर हाथ जोड़कर कहे कि मैं जो काम करने जा रहा हूँ वह मेरा काम सफल होना चाहिए, ऐसा कह कर प्रयोग करें।

शव साधना

△

इस शव साधना को मोक्ष परक शव साधना कहा जाता है। यह बहुत भयंकर, विकट, दुर्द्धर व अति उत्तम शव साधना है। पूर्ण मनोबल वाला व्यक्ति ही इस साधना की ओर अग्रसर हो सकता है, वरना साधना प्राप्ति या जीवन समाप्त करने के सिवाय-दूसरा कोई विकल्प इस साधना में नहीं है। यही वास्तविक वीराचार है जिसे वीर ही सुसिद्ध कर सकता है।

वस्तु की आवश्यकता :

मांस, शुद्ध कच्ची शराब, सरसों, कालातिल, पानी, चन्दन, कंघा, सिंदूर, कुश आसन, लौंग, कपूर, जावित्री व कत्था लगा हुआ एक मीठा पान, तीन कुश, सधवा स्त्री के लम्बे बाल, मनुष्य अस्थि की आठ कील (या नीम की लकड़ी) धान की खील (लावा), रेशम की रस्सी, १० ढ़ेला, ४६ अंगुल लम्बा एक खड्ग, चावल का आटा, बिल्व पत्र, मिष्ठान्न, नया बिछावन व एक शुद्ध शव। इन वस्तुओं को पहले संग्रह कर फिर साधना शुरू करें।

इष्ट मंत्र :

ॐ क्लिं कालिकाऐं नमः।

उपरोक्त मन्त्र का पहले सवा लाख जाप कर यह दृढ़ निश्चय करे कि या तो यह साधना कर सिद्ध बनूंगा या यह शरीर समाप्त कर दूंगा।

साधना :

श्मशान में जाकर पहले गुरु का ध्यान करे। तत्पश्चात् यह भावना करे कि जितनी भी आत्माएं और देवता जो श्मशान में वास करते हैं सभी मेरी रक्षा करें। इसके बाद श्मशान के देवता को मानकर एक त्रिकोण वेदी बनाकर वहां मांस व कच्ची शुद्ध शराब का भोग दें। फिर "हालाहल सहस्त्रार हुँ फट्" मंत्र से अपनी देह बाँधे। फिर दशों दिशाओं में "दुर्गे दुर्गे रक्षिणी स्वाहा" मंत्र से सरसों छिड़के। उसके बाद दशो दिशाओं में "पितृ लोकानपृणाहि जः स्वाहा" मंत्र से काले तिल छिड़के। फिर शुद्ध शव को लाए "ॐ फट्" मंत्र से उसे स्नान कराए। इसके बाद "ॐ हुँ मृतकाय नमः" मंत्र से उसके चरण छू कर पंचमहाभूत भावना से प्रणाम करे। फिर शव को उलट दे, उलटते समय "ॐ मृतकाय नमः" कहे। चन्दन आदि सुगन्ध द्रव्य से उस पर लेप करे। फिर कुछ मदिरा छिड़क कर कुछ स्वयं पी ले। उसके बाद शव के निकट जाकर उसकी कमर पकड़े। यदि शव में कोई कम्पन हो तो उसके मुंह में थूक दे। तत्पश्चात् उसकी दोनों बाहु की ओर, दोनों कंधे की ओर कमर के दोनों ओर तथा जांघ के दोनों ओर मनुष्य अस्थि (या नीम की लकड़ी) की कील गाड़े। फिर सभी खूटों (कील) से चारो स्थान पर किसी सधवा महिला के बाल से शव को "इदम् बंध बंध झम झम बांधय तिष्ठ तिष्ठ" इस मन्त्र को बोलते हुए बांध दे। शव का मुंह धो दे। शव के नीचे कुश आसन पहले से बिछा रहे। शव के मुंह में लौंग, कपूर, जावित्री व कत्था लगा हुआ मीठा पान डाल दे।

इसके बाद चारो ओर "गृह गृह विघ्न निवारणम् कृत्वा सिद्धिम् प्रयच्छ" मंत्र बोलकर धान का खील (लावा) छिड़क दे और प्रत्येक दिशा के दिक्पाल को मांस, मदिरा का भोग दे। तत्पश्चात् अष्ट डाकिनियों को आठ जगह माँस मदिरा, पत्ते में परोस दे। फिर "मणिधारिणी हुं फट् स्वाहा" मंत्र से अपना आसन शुद्ध करे। उसके बाद १०८ बार "ह्रीं" मंत्र का जाप करे। पूजा के सामान एवं अन्य सामानों को थोड़ा दूर रख दें। फिर तेजी से "फट्" कह कर शव की पीठ पर अपना शुद्ध आसन बिछाकर घोड़े के समान सवार हो जाय। शव के पांव के नीचे तीन कुशा डाल दें व उसके बालों को संवार दें। फिर दो मिनट प्राणायाम करे। इसके बाद 'ॐ क्लिं कालिके रक्ष' मंत्र से दसों दिशा पर ढेला फेंक दे। फिर शव पर आसन बिछाकर बेड़े बेड़े बैठे (चौड़ाई में मुंह घुमाकर पालथी मारकर) और शव के पाँव रेशम की रस्सी से बांध दे, जिससे वह उठ न सके। शव के दोनों हाथों को थोड़ा सा बाहर छितरा दें फिर उस पर कुश रखे और शव पर बैठे बैठे अपने दोनों तलवों से पैर लम्बा कर उसके दोनों हाथों को दबा दे। इसी स्थिति में 'ह्रीं स्पुर, स्फुर, फुस्फुर, प्रस्फुर, घोरघोरकर तन्तों रूप, चट चट, प्रचट प्रचट, हुल हुल हिलि हिलि टं टं लं लं हं हं स्फ्रें स्फ्रें किलि स्फुर हं क्षं ' मंत्र का जाप ब्रह्म मुहूर्त (३ बजे तक) करता रहे। जब जब हं क्षं बोलने का समय आये तब तब आज्ञाचक्र पर ध्यान जरूर ले जाना चाहिए। इसके बीच भयंकर भयंकर दृश्य दिखाई देंगे, शव हिलेगा उठने को कहेगा कि आसन से उठ जाओ। नाना प्रकार के माया जाल फैलायेगा, भयानक डरावनी आकृतियां दिखलाई देंगी। परन्तु साधक न तो शव से उठे, न कुछ छुवे, न किसी तरह का लोभ करे। अन्त में स्त्री रूप में या ब्राह्मण के रूप में देवता आयेंगे। तब शव पर बैठे बैठे ही उन्हें मांस व मदिरा का भोग दे दें। प्रणाम कर वर मांग ले। फिर गुरू को प्रणाम कर शव से उतर जाय। शव के बन्ध को खोलकर उसके पीठ व दोनों पावों में अपनी कनिष्ठा अंगुली से 'ॐ मृतकाय गच्छ' गच्छ मंत्र लिखकर शव को नदी में डाल दे और स्नान कर घर आ जाय। दूसरे दिन चावल के आटे का हाथी बनाकर उसके गले में सिन्दूर लगाये और ४६ अंगुल के खड्ग से उसकी बलि दे। उस दिन पंचगव्य पीये। तीसरे दिन २५ ब्राह्मणों को अच्छा मिष्ठान्न भोजन कराये। छः दिन तक अपनी साधना को बिल्कुल गुप्त रखे। १५ दिन तक एक दम नये, बिना किसी के प्रयोग किये बिछावन पर सोये। कोई भी गीत न सुनें, कोई भी नाच न देखे, दिन में न बोले, अन्यथा अनिष्ट हो जायगा। १५ दिन तक शरीर में देवता रहता है। नित्य गौ और ब्राह्मण का दर्शन व स्पर्श करे। स्त्री से १५ दिन बिल्कुल

दूर रहे। नित्य प्रातः बिल्व पत्र का रस पीये। १५ वे दिन किसी तीर्थ में स्नान करें। सारी सिद्धि मिले। इस लोक में मान, इज्जत, सम्पदा मिले और अन्त में निश्चय ही मोक्ष मिले।

पिशाच–साधना

△

मन्त्र : सुनसान सोखता मसान जागे भूत नाचे शैतान ॐ श्री वं वं भुं भूतेश्वरी मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : श्मशान से मृत मनुष्य की हड्डी लाकर एकान्त स्थान स्थित शिवजी के मन्दिर में आसन के नीचे हड्डी को दबाकर बैठ जाए और उपरोक्त मंत्र का ५००० जाप रोज करे। मांस व कच्ची शराब का भोग दे। यह ४० दिन की साधना है। भोग रोज साथ में ले जाना है। कारण किसी भी दिन पिशाच प्रकट हो सकता है। साधना के एक सप्ताह से ही नाना दृश्य दीखने चालू हो जायेंगे। उनको देखकर घबड़ाना नहीं चाहिए। पिशाच के प्रकट होते ही भोग देकर उससे वचन ले लें।

वृक्ष प्रेत-साधना

△

मन्त्र : ॐ साल सलीता सोसल वाई काग पढ़ंता धाई आई ॐ लं लं लं ठः ठः।

विधि : शनिवार के दिन अर्ध रात्रि में नग्न होकर बबूल के वृक्ष के नीचे बैठकर आक की लकड़ी जलाए। काले तिल एवं उड़द की उपरोक्त मंत्र पढता हुआ आहुति दे। इस तरह इक्कीस दिन तक रोज ११०० मंत्र जाप करे व आहुति दे। बाइसवें दिन भी वैसा ही करे। उस दिन प्रेत सम्मुख आ जायेगा। उस समय बिलकुल घबड़ाये नहीं। दृढ़ रहकर, अपने दांये हाथ की कलाई के पास से थोड़ा काटकर सात बूंद रक्त पृथ्वी पर टपका दे। इस क्रिया के बाद प्रेत हमेशा के लिए वश में हो जायेगा।

प्रयोग : जब प्रेत को बुलाना हो, रात्रि में मल त्याग करने को जाए। वापस आते वक्त कुछ पानी बचा ले। वो पानी बबूल के वृक्ष पर मंत्र पढ़ता हुआ चढ़ाए प्रेत तुरन्त हाजिर हो जायगा।

कलवा-साधना

△

मंत्र : कलवा कलवा गां गि गुं आहि आहि कों काल कमानी आव आव रह रह देश विदेशां खीचे आव, बातें मोरी अब पतिआव।

विधि : किसी नाबालिक बच्चे के शव का कफन ले आवे और उसी शव के मुंह के थूक का उस कफन पर लेप कर दे। तत्पश्चात अर्ध रात्रि में बबूल के पेड़ के नीचे जाकर उस कफन को बिछा दे। फिर थोड़ी दूर मल त्याग करने को जाय। मल त्याग कर गुदा साफ न कर ऐसे ही आकर उस कफन के आसन पर बैठ जावे और एक पाव कच्चा मांस परोसे। मांस परोस कर आंख बन्द कर उपरोक्त मंत्र का १०८ जाप करे। फिर परोसे गए मांस का एक छोटा सा टुकड़ा अपने मुंह में जीभ के नीचे रखकर फिर उपरोक्त मंत्र का १०८ मानस जप करे। फिर उस मांस को मुंह से निकाल कर मस्तक पर लगाकर वहां से वह कफन लेकर घर चला आए। इस तरह ११ दिन तक यह साधना करनी है। परन्तु एक बात का ध्यान रखना है कि साधना करने जाते समय और वापिस आते समय न तो किसी से बोले और न पीछे मुड़कर देखे और न कोई पीछे से आवाज दे तो भी बोले। जब कलवा सामने आकर पुकारे तभी बोले। उत्तर दे व मांस व मदिरा उसे परोस कर वचन ले ले।

श्मशान प्रेत साधना

△

विधि : शनिवार या मंगलवार को विशेषत: विजयादशमी को दस बजे रात्रि को साधक श्मशान में जाये। श्मशान में जाते समय निम्न वस्तुएं साथ में ले जाए। घृत, कच्ची देशी शराब, मिठाई, पान, फूल, अरवा चावल, चीनी, दीपक, धूप सिन्दूर, कच्चा दूध, छुरी, नींबू पानी, व कटहल की पत्तियां एक दियासलाई की डिब्बी और रूई।

अब एक तेली या चाण्डाल का अक्षत शव ले उसे स्नान कराकर सारे शरीर पर घृत लगाये और ईशान कोण की ओर मस्तक कर उसे सीधा सुला दे। उस शव के बायें हाथ के पास साधक बैठ जाए और शव अपने चारो ओर देह रक्षा मंत्र को बोलते हुए एक रेखा खींच दे। जब तक साधना चले भूल कर भी उस रेखा से बाहर न आए। घेरे में बैठने से पहले श्मशान में पड़ी हुई एक मिट्टी की हड़िया व कुछ लकड़ियां पास में रख ले। अब सबसे पहले दीपक जलावे व अपनी देह रक्षा हेतु निम्नलिखित मंत्र पढ़ता हुआ देह रक्षण करें।

मंत्र

वामन की चोली, कालिका के बान के मारौ, समोखी के बान, सौर बान शक्ति बान, सिंह चढ़े जीव तुरन्त कर दे पानी।

उपरोक्त मंत्र से देह रक्षण करने के बाद एक मिट्टी का चूल्हा बनाकर उसपर हड़िया चढ़ाकर दूध और चावल की खीर पका ले। अब उस हड़िया को साधक अपने दाहिने हाथ में लेकर निम्न मंत्र का जाप शुरू करे।

मंत्र

सर्व जठर अनंग हलाहल पानीयम ददामि करिष्यामि इति कामाक्षी देव्यै नम। दोहाई नोनियां चमारिन की।

जप करते समय एक प्रकाश सा दिखाई देगा, पर उसे देख कर घबड़ाना नहीं चाहिए। जप के समय बीच बीच में शव मुंह खोलेगा व बन्द करेगा, बार-बार वह ऐसा करेगा। उस समय जब जब वह मुंह खोले तब तब हड़िया से थोड़ी खीर उसके मुंह में डालता जाए। इस तरह उपरोक्त मंत्र का २१०० जाप करना है।

इसके बाद निम्न आह्वान मंत्र का १०१ बार जाप करना है।

मंत्र

काली कराल बदनां घोराय, मुक्त केशी चतुर्भुजाम देवी कामाक्षी रूद्राम देहि में प्रविष्ठानां प्रेत पिशाचानां इति कामाख्या देव्यै नमः।

उपरोक्त मंत्र जप के बाद १०-२० प्रेत आयेंगे। उस समय साधक बिलकुल न घबराये और न रेखा के बाहर आए। जहाँ बैठा है वहीं से कटहल के पत्तो पर (जिसके पहले ही दोने बनाकर रख ले) थोड़ी दारू व खीर डालकर दे दे

उसे प्रेत योनि वाले लेते जायेगे। सब से अन्त में उनका सरदार आयेगा तब पूरी भरी हुई दारू की बोतल उसे दे दे। वह उसे लेकर लौट आयेगा। अगर उसने दारू पीकर खाली बोतल शव के ऊपर फेंक दी तो उस स्थिति में श्मशान सिद्ध हो जाता है। इधर उधर फेंकने पर अधूरी सिद्धि होती है।

सिद्धि पाकर शव को घृत से फिर लिप्त कर पुनः स्नान कराए। छुरी से नींबू काटकर छुरी को धो लें। फिर निम्न मंत्र को छुरी पर पांच बार पढ़कर छुरी बांध ले।

मन्त्र

माटी माटी माटी करे महादेव की कंठी डांड बन्द करे। दो लिलार बंद करे, दो बाघ व भाल चोर चोट्टा भूत प्रेत डायन जोगिन साकिन दोहाई नरसिंह गुरू के बन्दी पाट।

उपरोक्त मंत्र से छुरी को पांच बार बांधकर, शव का दाहिने हाथ का पंजा कलाई तक काट ले। इस पर सिन्दूर व घृत का लेपकर, धूप देते हुए घर पर ले आए और जमीन में गाड़ दे। प्रेत वशीकरण तो हो गया है। अब जब उस हाथ का मांस खत्म होकर केवल हड्डी रह जाए तब उसको निकाल कर अपने अपने पास रखें। जब प्रेत को बुलाना हो तब उस पंजे सहित हड्डी को हाथ में लेकर आह्वान मंत्र को उस पर पढ़े। मंत्र पढ़ते ही प्रेत हाजिर होगा। उसको जिस काम के लिये कहा जायगा वह तुरन्त करने के लिए जायेगा। जब वह जाएगा तब वह पंजा गायब हो जायेगा और जब प्रेत काम करके वापिस आयगा तब पंजा भी साधक के पास आ जायेगा।

भस्मी-साधना

△

मन्त्र

ॐ नमो भस्मतीं माता, भस्मती पिता, तीन लोक तारणी, जोग दे जोगणी, भोग दे भोगणी, भस्मती मोहनी, जल देखे जल कंपे, थल देखे थल कंपे, हाथ खड़ग महेश्वर कंपे, सिंहासन बैठी राणी कंपे, मुख देख्यां जगत कंपे और से की देवता कंपे, हाथ राणी कंपे, जब पाताल की राणी कंपे, और सै का तंगा लगाय दिये, तो जल जल उठे, बल बल उठे. ऐसी लगे

जैसी मात पूत को आंच लगे, गुरु गोरखनाथ यो ही सीध का खेत अलील अखंड अनाहद नाद शब्द सांचा पींउ वाचा फूरो मंत्र ईश्वर वाचा।

विधि :

बारिश के दिन दुर्घटनावश अचानक जिसकी मृत्यु हो गई हो उसकी चिता के पास रात को बारह बजे जाए। उसके सिरहाने उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाये। उसके सीने परकी भस्म अन्दाज से एक कागज या डिबिया में ले और उपरोक्त मंत्र की एक माला का जाप उस भस्म से करे। फिर जब भी उस भस्म में से थोड़ी सी जिसके मस्तक पर या किसी अंग पर लगा दे तो वह व्यक्ति उसका दास हो जायेगा।

कज्जल—साधना

△

मन्त्र :

नारसिंह नारी का जाया, मोहन करणी तेरी माया, पढ़त मन्त्र उलट देव, देव देव जाय चौखूंट हिलाया, तो सा बीर देखा न पाया, जल अग्नि न बांधे कार, नारी करे न घर सम्भार, डारूं ऐसी मोहनी तन कम्पे दहलाय, वशीकरण न करे तो धोबी के घर जाय, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फूरो मन्त्र ईश्वर वाचा।

विधि :

इसका साढ़े बारह हजार जाप कर मन्त्र सिद्ध कर ले। फिर लज्जवन्ती का कागज बनाकर उस पर सात बार मंत्र पढ़ कर आँख में अंजन कर जिसके पास जायें वह वश में हो।

धूल—साधना

△

मन्त्र :

ॐ नमो आदेश गुरू का धूलि धसम, धूलि परमेश्वर, धूलि धूं धूं कार जां परि रालो धूलिया सो तजे घर बार, खसम छोड़ी और ही छोड़ी घर

देखे, जले, बले हम देखे शीतल होय जाय गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वर वाचा ।

विधि :

साढ़े बारह हजार जाप कर मंत्र सिद्ध कर ले । फिर जिस औरत को वशीकरण करना है उसके बाएं पैर के नीचे की तीन चुटकी धूल ले और तीनों पर तीन तीन बार मन्त्र पढ़े फिर उसी धूल को उस औरत पर गिरा दे तो उसका वशीकरण हो जायेगा ।

मन्त्र :

ॐ नमो धुलि धुलि धुलेश्वरी धुली चचती जे जै कार जेहनै इ भरी चाम्पा भरी अमुकी छारी घाटी छारी ते निसरे मुकै धुरी बार मारु तो मसाण लोटे जीव तो वाचा बांधे सोवई तो सुती जगावि माता धुलेश्वरी तेरी शक्ति फुरै मेरी काम सरे ॐ ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि :

साढ़े बारह हजार जाप कर पहले मंत्र सिद्ध कर ले । फिर रविवार के दिन जिस पुरुष की मृत्यु हुई हो उसकी चिता की भस्म और अपने दायें पैर के नीचे की धूल उसमें मिलाकर उस पर इक्कीस बार मन्त्र का जाप कर किसी भी रविवार के ही दिन जिस औरत पर गिराई जायेगी उस औरत को वशीकरण होगा ।

तेल—साधना

△

मंत्र

ॐ नमो तेल तेल महातेल तेल हमरा दास अवर देख्यां जलै बलै हमें देख्यां शीतल होय जाय, चालती का पांव बाधु भारती का हाथ बांधु बोलती की जीभ बाँधु इत शब्द उलंघे खड़ घाले घाव तो गोरखनाथ जती की आण । गुरू की शक्ति हमारी भक्ति फूरो मंत्र ईश्वर बाचा ।

विधि

इकतालीस दिन तक रोज एक माला का जापकर मंत्र सिद्ध कर ले। फिर इक्कीस दफे तेल को मंत्र कर रख दे। हर रविवार मंत्र पढ़ता हुआ, गुगुल का धूप खेवे। जब भी कोई औरत उस तेल को अपने मस्तक पर लगा लेगी तो उसका वशीकरण हो जायगा।

मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरू को सुरज उगे जाल जलंखा, सर्व युग आवै पाँव पडंता, मेरा मुख देखे सब कोई, मेरी उतरती करे न कोई, हथेली हणवंत बसै, भैरूं बसे कपाली हो जगत्र की मोहिनी, बीन्दी देहुली लारी, सुरज सींवण, जप करण तीनों एक अनन्त, नगरी माहें पैठ तो सो वैरी सौम्यन्त। गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वर वाचा।

विधि

इकतालीस दिन तक रोज एक माला का जाप कर, मंत्र सिद्ध कर ले। फिर सूर्य के सामने बैठ कर सात बार या इक्कीस बार तेल को अभिमंत्रित कर, मस्तक में लगाये, ललाट पर एक बिन्दी लगाये, दोनों कन्धे चुपड़कर जहां कहीं भी जाये सर्वत्र सन्मान हो किसी तरह का भय न रहे।

मंत्र:

ॐ नमो भैरुं रे भैरुं वीर कर कामणी पहरयां चीर हूं लगाऊं जिक लाग जे लाग तो एसो लाग हियड़ो फोड़ कालजो चाख रात जक न दिन जक तीसरे पहर तीसरी घड़ी में बुलाऊं अवांर संवार तब ही हाजर न करे तो माता कालिकारा चूंग्या दूध हराम ॐ स्वाहा।

विधि :

पहले पहल रविवार की रात को भैरु के मन्दिर में जाकर मूर्ति के आगे चौका देकर बैठ जाये और एक माला जाप करे फिर सात शनिवार की रात्रि को जावे। ढ़ाई सेर तेल ले जाये-मूर्ति पे चढ़ाये सातवें शनिवार को उस तेल को अपने सामने रखकर मंत्र जप करे, उसमें एक शीशी तेल भरकर अपने पास रख ले बाकी मूर्ति को चढ़ा दे। और ऐसी जगह रख दे जहां कोई औरत उसके हाथ न लगायें उस तेल का छींटा जिस औरत के कपड़े पर लगावे उसका वशीकरण हो जायेगा।

सिंदूर-साधना

△

मन्त्र

ॐ हथेली तो हनुमन्त बसे, भैरु बसे कपाल, नारसिंह की मोहिनो मोहे सब संसार, मोह, मोह, हनुमन्ता बीर सब बीरन में तेरा सीर, सब की दृष्टि बांध के मोहे तेल सिंदूर, चढ़ाऊं तोहि तेल सिंदूर, तेल सिंदूर कहां से आया, कैलाश पर्वत से आया, कौन लाया, अंजनि पुत्र हनुमन्त लाया, गौरी पुत्र गणेश लाया, गणेश ल्याय भैरु न दीन्हा, काला, गौरा, तोतला तीनो बसे कपाल, बिंदो तेल सिन्दुर की दुश्मन गया पताल, दुहाई कीमीया सिन्दुर की, दुजे को देख्यां बले जले हमें देख्यां शीतल हो जाय हमारी भक्ति गुरु की शक्ति फूरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु का।

विधि :

इकतालीस दिन तक रोज एक माला का जापकर मंत्र सिद्ध कर ले। फिर सिंदूर को तेल मे मिलाकर इकीस बार अभिमन्त्रित कर एक बिन्दी ललाट पर लगाकर जहां भी जावे वशीकरण हो।

कार्य जानकारी-साधना

△

मन्त्र :

अलहमदो लिल्हा हे रबिल आल मिन हर्र रहमान निर रहीम मालेकियो मिदीन या का नाम बदोया का नस्ताईन।

विधि

रात को पहले अपने किसी कार्य का चिन्तन कर उपरोक्त मंत्र का आधा घण्टा तक जप करे। जिस कार्य के लिए जप कर रहे है यदि वो कार्य सम्पन्न होगा तो आप का मुंह दाहिनी तरफ घूम जावेगा, कार्य नहीं होगा तो बायीं तरफ घूम जावेगा, कार्य देर में होगा तो नीचे की तरफ और कार्य नहीं होगा तो आकाश की ओर मुंह हो जावेगा।

शक्ति क्षीण–साधना

△

मन्त्र :

ॐ मठ मसान जोगी सेवे, देखतां की दृष्टि कीले, बोलतां का होठ किले प्रसारतां की बाहु कीले, राजा प्रजा किले, उदेगा किलाई मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फूरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

विधि :

इकतालीस दिन तक रोज एक माला का जाप कर मन्त्र सिद्ध कर ले। फिर आवश्यकता पड़ने पर ग्यारह दफे उपरोक्त मंत्र को पढ़कर जिसके भी सामने बैठेगा उस सामने वाले की शक्ति क्षीण हो जावेगी ।

अघोर–साधना

△

मंत्र :

ॐ नमो घोर घोर महाघोर जमी अघोर, आकाश अघोर, पवन अघोर, पाणी अघोर, चन्द्र अघोर, सूरज अघोर, घोर, घोर, महाघोर, बज्र अघोर, बज्र काया, जम कुंमारो, कालकुं मको, आप कुं आप ही रखो, पंड पड़तो धरती लाजे, प्रेम हँस उड़तो गोरख लाजे, अजे राज रा वाचा पींड प्राण की रक्षा अनादे पुरुष करे, अनादे धाम की नींदा करे तो पींड छोड़ बेगा ही मरे घ्रं घ्रं घ्रं घ्रं घ्रं फट् स्वाहा ।

विधि :

प्रातः काल श्मशान, तालाब या नदी के किनारे बैठ कर ४१ दिन तक रोज २१ बार उपरोक्त मन्त्र का जाप कर मंत्र सिद्ध कर ले। फिर जिस किसी के घर के सामने बैठ कर २१ बार मन्त्र पढ़ कर उस घर की तरफ फूंक मारे तो उस घर के व्यक्तियों पर भयंकर फटकार लगे ।

लघु प्रेत नाश

△

विधि :

एक त्रिकोण की आकृति का हवन कुण्ड बनायें। अब जिस व्यक्ति पर प्रेत आता है उस व्यक्ति की एक फोटो लें, या जिस घर में प्रेत आता है उस स्थान का एक नक्शा बना लें, और उस फोटो या नक्शे को हवन कुण्ड के बीच में रख दें। तत्पश्चात् गौ घृत से ब्रह्म गायत्री के १०८ जप के साथ १०८ आहुति दें। १०८ वीं अन्तिम आहुति के समय संकल्प द्वारा उस प्रेत का नाम (या यदि नाम ज्ञात न हो तो उसका चिन्तन करते हुए) ब्रह्म गायत्री के साथ 'अमुक निधनं स्वाहा' कहें तो तत्काल प्रेत का नाश हो जायेगा। यदि निम्नतम श्रेणी का प्रेत हो, उस स्थिति में सुदर्शन गायत्री का जप करते हुए हवन करें।

प्रेत-नाश

△

मंत्र : ह्रौं ह्रँ।

विधि :

संधि बेला में दक्षिण पश्चिम कोण में बैठ कर उपरोक्त मंत्र का ११००० जप कर मंत्र सिद्ध कर ले। फिर जिस स्थान में प्रेत आता हो वहां या जिस व्यक्ति के ऊपर प्रेत आता हो वहां नींबू के सूखे पेड़ की मूल (जड़) या अपनी शिखा के बाल बायें हाथ से उखाड़ कर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में दबाकर वहां जाये, तत्पश्चात उपरोक्त मंत्र का तीन बार जप कर उस स्थान पर या उस व्यक्ति पर उसको फेंक दें तत्काल प्रेत भाग जायेगा।

पिशाच नाश

△

मंत्र : क्रौं क्रः।

विधि :

एक त्रिकोण की आकृति का हवन कुण्ड बनायें। अब जिस व्यक्ति पर पिशाच

आता है उस व्यक्ति की एक फोटो लें या जिस घर में पिशाच आता है उस स्थान का एक नक्शा बना लें, और उस फोटो या नक्शे को हवन कुण्ड के बीच में रख कर उस पर एक लोहे का कांटा गाड़ दें। कांटे पर लहसुन का पौधा या पुष्प रख दें। तत्पश्चात् उपरोक्त मंत्र का जप करता हुआ, १०८ घृत की आहुति दें। तत्काल पिशाच का नाश हो जायेगा।

ब्रह्मपिशाच व ब्रह्मपिशाचिनी नाश

△

मंत्र : सां क्रौं क्रीं।

विधि :

एक षट्कोण हवन कुण्ड का निर्माण करें। किसी मृतक महिला की जांघ की हड्डी उस हवन कुण्ड के बीच में गाड़ दें। बरगद की लकड़ी से अग्नि जलाये व शुद्ध कच्ची मदिरा से उपरोक्त मंत्र का जप करता हुआ १००७ आहुति दे। अन्तिम १००८ वीं आहुति 'सां क्रौं क्रीं अमुकं निधनं स्वाहा' से देनी चाहिये। अमुकं के स्थान पर जो दुरात्मा हो उसका चिन्तन करते हुए आहुति दें। तत्काल ब्रह्मपिशाच का नाश हो जायेगा।

भूत-प्रेत बाधा दूर मंत्र

△

मंत्र :

ॐ नमो आदेश गुरू कुं आए हणवंत अंजनी का पूत, मैं कीलूं च्यारूं कूंट के भूत और कीलू जोगणी ओर कीलूं मसाण, असी बांसी अविनाथ कीलूं। वाय व माय गल दंत पाय लंका सो कोट, समुद्र सी खाई, इस पींड में भूत प्रेत, छल छिद्र, डाकिनी, शाकिनी रहे तो जती हणवन्त अंजनी के पूत की लाख लाख दुहाई। गुरू की शक्ती हमारी भक्ती फूरो मंत्र इश्वरो वाचा, वाचा त्रिवाचा, वाचा चूकै तो तूं उभो सूकै, सत्य नाम आदेश गुरू कुं।

विधि :

२१ रोज तक रोज एक माला का जाप कर मंत्र सिद्ध कर ले। आवश्यकता पर व्यक्ति को २१ बार झाड़ दे तो भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी दूर हो।

मंत्र :

ॐ नमो आदेश गुरू कुं श्वेत घोड़ा, श्वेत पलाण, तिस चढ़ी आया महमदा पठाण गाजंतो आवै, घोरंतो आवै, सार का चिणा चावतो आवै, लौह की लाठी उलालंतो आवै, डाकिनी बांधी, साकिनी बांधी, भूत बांधी, प्रेत बांधी, दृष्ट बांधी, पुष्ट बांधी, कलालणी बांधी, बामणी बांधी, बिणयाणी बांधी, धोबण बांधी, कुमारी बांधी, छिपणी बांधी छत्तीस पवन बाँधी। इस पिंड पीड़ा करे तो लूणा चमारी की कार छै, हणवंत जती की कार छै, ब्रह्मारी शक्ति हमारी भक्ती फूरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि :

२१ दिन तक रोज एक माला का जाप कर मंत्र सिद्ध कर ले फिर ग्रस्त व्यक्ति के ऊपर सात बार मंत्र पढ़ कर, सात बार ही फूंक मारे और उसकी शिखा के गाँठ दे दे तो तुरन्त प्रेत बंध जायेगा। फिर उसको पूछताछ कर जाने को कहे और बालों की गांठ खोल दे तो तुरन्त प्रेतात्मा निकल जायेगी और फिर कभी नहीं आयेगो।

डाकिनी के चोट लगाने का मंत्र

△

मंत्र :

ॐ नमो महाकाय योगिनी योगिनी पार, शाकिनी कल्प वृक्षाय, दृष्टि योगिनी सिद्धि रुद्राय, काल दंभने साधय साधय, मारय मारय, चूरय चूरय, अपहर शाकिनी सपरिवारं नमः ओं ठः छः ओं ह्रीं छः ह्रों ह्रों फट् स्वाहा।

विधि :

२१ रोज तक रोज एक माला का जाप कर मंत्र सिद्ध कर ले। प्रयोग के समय गुग्गुल को सात बार अभिमंत्रित कर ओखली में मूसल से गुग्गुल को कूटे

तो डाकिनी के चोट लगे। इस मंत्र से उस्तरा या छुरी को अभिमंत्रित कर अपने घुटने को मूंड़े तो डाकिनी का सिर मुड़ जाये, इसी मंत्र से उड़द को अभिमंत्रित कर फेंके तो डाकिनी आकर नाचने कूदने लगे और इसी मंत्र से पानी मंत्र कर नेत्रों में लगाये तो डाकिनी बोलने लगे।

जिन्न, परी व खब्बीस हटाने का मंत्र

△

मंत्र : रब्बे इन्नी मगलूबुन फन्तसीर।

विधि :

एक मोर पंख लें। उसे लोबान की आग में आधा जलाए। जलाते समय 'बिशमिलाहररहमान नीर रहीम' का जाप करता रहे। इस अध जले मोरपंख को एक पूरे मोरपंख के मोरछल (चंवर) में खोंस दें। मोरछल की जड़ में काली घोड़ी के पूंछ के बाल से तीन हकीक, एक मरगज, एक लहसुनिया छेद कर पिरो दे और उसे मोरछल की जड़ में बांध दे। फिर लोबान का धूप करे। सामने सात लौंग रखे। लोबान जलाने के बाद आग में फिटकरी का टुकड़ा छोड़ दे। अब जिस पर जिन्न, पीर या खब्बीस की सवारी आई हुई हो उसे सामने बैठाए और उपरोक्त मंत्र पढ़ता हुआ १८ बार झाड़ दे। फिर इसी मंत्र से सातों लौंग फूंक कर एक तो उस व्यक्ति को खिला दे बाकी छः किचरकर ताबीज में भर कर बांह में बांध दें। सवारी निश्चित हट जायेगी। अगर सवारी अधिक भयंकर व तेज हो तो उन लौंगों को जलाकर उसकी सुगन्ध उस व्यक्ति को सुंघाये तो सवारी जल कर भस्म हो जायेगी।

कलवा हटाने का मन्त्र

मन्त्र :

△

चकती सोहे वरूण कर, बगहा पर असवार, ये देवा रक्षा करे, कलवा भगे राज दुआर।

विधि :

यदि किसी ने किसी पर कलवा का प्रयोग कर दिया है तो हाथ में सरसों के दाने लेकर उपरोक्त मंत्र पढ़ता हुआ चारो ओर सरसों के दाने छिड़क दे। कलवा भाग जायेगा।

हंडिया मूठ साधना

△

एक कच्ची मिट्टी की हांडी ले। उस हांडी में निम्न जाति की स्त्री के नाक के कफ का लेप करे। तत्पश्चात् नागफनी लकड़ी का बना एक दीपक उस हाँडी के अन्दर लगे लेप के ऊपर रख दे। दीपक में शव के कफन की वत्ती बनाकर रख दे और दीपक में ऐरण्ड का तेल भर दे। उसके बाद एक की बलि देकर उसके धड़ से निकलते रक्त की ३-४ बूंद उस तेल में छोड़ दे। तत्पश्चात एक नारियल को मध्य भाग से थोड़ा चिटका दे (एकदम अलग न करे)। उस चिट के भाग में शेष रक्त गिरा दे। मुर्गे के मुण्ड को हांडी में रख दें।

तत्पश्चात् जिस व्यक्ति पर प्रयोग करना है उस व्यक्ति का नाम, उसके पिता का नाम तथा गोत्र को बोलते हुये 'निशीथिनी झां पा न कार आज्ञे कामरूपी कामाख्यार आज्ञे परे जा' मंत्र बोलते हुए प्रदीप जलाये। उसके बाद उस नारियल को उसके चिटके हुए भाग को नीचे की तरफ करके जमीन में गाड़ दे और उस पर हांडी को रख दे। हांडी उस पर रखते ही उड़ जायेगी और उस व्यक्ति पर जाकर मारण करेगी। वह व्यक्ति तुरन्त मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा।

मूठ रक्षा तंत्र

△

जिस व्यक्ति पर हंडिया मूठ का प्रयोग किया गया है वह व्यक्ति अपने ऊपर मंडराती हुई हांडी देखते ही तत्काल निम्नलिखित प्रयोग करेगा तो बच जायेगा और वह मूठ वापस जाकर प्रयोग करने वाले व्यक्ति को ही समाप्त कर देगी।

१. हंडिया को देखते ही अपने हाथ की अंगुली को कुछ काट कर भूमि पर रक्त छिटका दे तो मूठ वापिस चली जायेगी।

२. निम्न जाति का जूठन अथवा मलमूत्र या स्वमूत्र जिह्वाग्र में लगाते हुये एक दृष्टि से उस हंडिया की ओर आकाश में देखता रहे तो मूठ वापिस चली जायेगी।

मारण तंत्र साधना

△

मंत्र :

१. ॐ हिलि हिलि किलि किलि क्रौं हुँ फट् स्वाहा।

विधि :

ईशान कोण की ओर मुंह कर बैठें। वाम अगुष्ठ में चिताभस्म लगाकर उसे भूमि में लगाये रहे। इसी अवस्था में उपरोक्त मंत्र का एक लाख दस हजार जाप करे। तत्पश्चात अन्तिम दिन जिस व्यक्ति पर प्रयोग करना है उस व्यक्ति का ध्यान करते हुए उसका नाम नागफनी के कांटे से भूमि पर लिखे। नाम लिखते ही उस व्यक्ति की मृत्यु हो जायेगी।

मंत्र :

२. ॐ रुद्राय उड्डामरेश्वराय श्मशान भूत प्रेत वैतालादिक स्वामिने महाकाल रूपिणे मम अमुक शत्रूणां मारय मारय हुँ फट्।

विधि :

जिस शनिवार को पुष्य नक्षत्र हो और चतुर्दशी एवं अमावस्या का संगम हो (यानि इकट्ठी हो) उस दिन जिस व्यक्ति पर प्रयोग करना है उस व्यक्ति के केश लेकर दक्षिणाभिमुख होकर उपरोक्त मंत्र का प्रथम दिवस ११०००, द्वितीय दिवस २२०००, तृतीय दिवस १३००० चतुर्थ दिवस ५००० पंचम दिवस ८००० जाप करे। तत्पश्चात् पूर्णिमा पर्यन्त १०१ जाप रोज करे तो उक्त व्यक्ति मरण प्राप्त करे।

मंत्र :

३. क्रीं कालिका क्लीं अमुकं मारय मारय क्लीं क्रीं ॐ ।

विधि :

रोज रात को १२ बजे सर्वप्रथम पंचमकार साधन शास्त्रोक्त विधि से करे। तत्पश्चात् उपरोक्त मंत्र का ११०० जाप करे। इस तरह २१ दिन जाप करे। तदनन्तर २२वें दिवस धरती पर रक्त चन्दन से एक त्रिशूल बनाये। तत्पश्चात् जिस व्यक्ति पर प्रयोग करना है उस व्यक्ति का ध्यान कर दक्षिण हाथ की कनिष्ठा अंगुली से त्रिशूल के अग्रभाग का स्पर्श करते हुये एक बार उपरोक्त मन्त्र को जपते ही उक्त व्यक्ति का प्राणान्त हो जायेगा।

मंत्र :

४. आगुन रूपे मारी धाम सुरजो मुखी मारी यार पांच जीव पांच पुराण राम बोलो लोखन ए मुख जीया नाहीं यार मोर मंत्रो हेल्बु सेल्बु शिवशंकर कार्तिक गोनेशेर मूठ फुट्क दुहाई महाकाल दुहाई महाकाल।

विधि :

सात रोज तक हर रोज ११ माला का जाप कर मंत्र को सिद्ध कर ले। फिर एक मोम का पुतला बनाये। २१ तोला मोम, १ तोला सिन्दूर, १ तोला पीला संखिया और १ तोला श्मशान भूमि का कोयला, इन सब को एकत्रित कर एक पुतला बनायें। उस पुतले पर एक हजार उपरोक्त मंत्र का जप करे और उस पुतले के अन्दर सात सूई खोंस दे और अपने दुश्मन का नाम उस पुतले पर लिख दे और उस पुतले के सामने एक दीपक जलता हुआ रख कर २१ बार मंत्र पढ़े। फिर श्मशान भूमि में उस पुतले को रख दे और ठीक पुतले के सामने तीन अंगुल की दूरी पर वह जलता हुआ दीपक रख कर आ जाय तो बहुत जल्द दुश्मन की मृत्यु हो जायेगी।

मंत्र :

५. ॐ नमो महाबीर हनुमत बीर शूरबीर, धाय धाय चाले वीर, मूठी भर चलाये तीर, मूठी मार कलेजा काढ़े, क्रोध करता हिया फाड़े, मेरा बैरी तेरा भक्त होये, धरम की दुहाई, राजा रामचन्द्र की दुहाई, जो मेरे बैरी कुं न पछाड़े, मारे तो माता अंजनी की दुहाई।

विधि :

होली की रात्रि एक हजार जाप कर मंत्र सिद्ध कर ले । धूप दीप करे, पान फूल चढ़ाए । मंत्र सिद्ध होने पर काले उड़द पर २१ बार मंत्र पढ़कर दुश्मन के सीने पर मारे तो उसी समय वो पछाड़ खाकर गिर जाएगा और जल्दी उसकी मृत्यु हो जायेगी ।

मूठ निवारण मंत्र

△

मंत्र :

ॐ ह्रीं आई को लगाई को जट जट खट खट उलट पलट लूका को मूका को नार नार सिद्ध यति की दोहाई मंत्र सांचा फूरो वाचा ।

विधि :

दीपावली या ग्रहण की रात्रि को एक हजार जाप कर मंत्र सिद्ध कर ले । फिर उड़द के दानों पर २१ बार मंत्र पढ़कर जिधर से मूठ आ रही हो उधर या सभी दिशाओं में और जिस व्यक्ति के मूठ लगी हो उसके ऊपर वो दानें गिरा दें, तो मूठ शान्त हो जाएगी ।

हाजरात तंत्र

△

जब किसी वस्तु की चोरी हो जाती है, कोई चला जाता है या बीमारी आदि हो जाती है तब कुछ तांत्रिक प्रयोग कराये जाते हैं । उनमें हाजरात का प्रयोग ज्यादा प्रचलित है । अन्य तंत्रों में दीपावतार, घटावतार, दर्पणावतार, खड्गावतार आदि का प्रयोग किया जाता है । जिस तरह दीपक की लौ में, कांच में जो प्रयोग होते हैं वे अवतार प्रयोग कहलाते हैं । जिस तरह घड़े में पानी भर कर उसमें सिन्दूर डालकर मंत्र से अभिमंत्रित कर प्रश्न का उत्तर प्राप्त किया जाता है उसे घटावतार कहते हैं । नख दर्पण हाजरात के कुछ प्रयोग निम्न रूप से हैं—

काली देवी हाजरात

△

मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं महाकाली नमः।

विधि

शुक्ल पक्ष की द्वितीया से शुरू कर कृष्ण पक्ष की द्वितीया तक पन्द्रह रोज में सवा लाख जाप करना है। जाप के समय धूप व दीप बराबर रखना है। जाप रात को नौ बजे से शुरू करना है। नहा धोकर शुद्ध वस्त्र पहन कर पूर्व की ओर मुंह कर के बैठना है। जब आवश्यकता हो तब चांदी की कटोरी में कपूर का काजल तैयार कर बारह साल से कम के बच्चे के नाखून पर हाजरात चढ़ाए। साधना के समय हमेशा खीर का भोजन करें। प्रयोग में काली माता का आह्वान करें।

हनुमान हाजरात

△

मंत्र

ॐ नमों आदेश गुरू का सजलिया बजरक धोटा बजरकिया, हांक मारूं जति हनुमंत आवो, दीपक की जोत में आवो न आवो तो अंजनी का दूध हराम करो, महादेव की जटा पर घाव पड़ो।

विधि

शनिवार से दूसरे शनिवार तक साढ़े बारह हजार जाप करना है। हनुमान जी की मूर्ति सामने रखे, रोज नैवेद्य, खीर सवा पाव चने चढ़ाए। रोज एकासन करें। ब्रह्मचर्य से रहे। रात को ही उपरोक्त विधि से जाप करे व दीपक हनुमान जी की मूर्ति के आगे सारी रात जलता रहे। दीपक तेल का करे। आवश्यकता पर कपूर का काजल तैयार कर बच्चे के नाखून पर चढ़ाए। प्रयोग में हनुमान जी का आह्वान करे।

हाजरात (मुस्लिम)

△

मंत्र

१. याबुद्ध मंजुलाल च्यार मोकल को भेजो हाल,राज सभा को ल्यावो साथ मुख से हासिल करो आप।

विधि

बुधवार के दिन में बारह बजे कोई कुंए तालाब या नदी के पास बैठ कर शुक्रवार तक तीन दिन रोज एक माला का जाप करना है। रोज पांच पैसे के बताशे साथ में रखना है। शुक्रवार के दिन एक माटी के बर्तन में एक अतर का फाहा, रंगे हुये चावल, चीनी, घृत व बताशे ले जाना है। सिद्ध करने के बाद कपूर का काजल कर बच्चे पर प्रयोग करना है। पीर साहेब का आह्वान करना है। मुँह पश्चिम की ओर रखकर जाप करना है।

मन्त्र

२. ॐ विशमिल्ला बुद्धु बुद्धु की लाट चले, सात सौ सोटा आगे चले, सात सौ सोटा पीछे चले, सीधे बाजु से पीर. पैगम्बर चले, नरसिंगीया को पकड़ लेवे, हड़मान के पांव में बेड़ी जड़े, बेतालिया को पटक देवे, बावनबीर कैद में राखे, बुद्धू का नख चले एक लाख पीर पैगम्बर चले ये ये ये लाये।

विधि

शुक्ल पक्ष बुधवार से जाप शुरू करे। इक्कीस दिन तक रोज ग्यारह माला का जाप करे। कुंआ, तालाब या नदी के पास पश्चिम की ओर मुंह कर जाप करे। पांच पैसे के बतासे चढ़ाए। इक्कीसवें रोज एक माटी के दिवासे में रंधे चावल, घृत, चीनी, अगरबत्ती, गुलाब व अतर का फाहा ले जाए। सिद्ध करने के बाद कपूर का काजल बनाकर बच्चे पर प्रयोग करे। पीर साहब का आह्वान करे।

नोट : प्रयोगों के समय मंत्र का जाप करते रहना चाहिए। अगरबत्ती व धूप भी जरूर करें। बच्चे के दाहिने हाथ के अंगूठे पर काजल लगाकर लड़के को उसमें देखने को कहें। जब लड़का साधक से यह कहे कि मेरा मुंह दीखने लग गया है तब कहा जाए, दो आदमी आएं। वे

आ जाएं, तब दो और, फिर दो, फिर दो। इस प्रकार आठ आदमी आ जाएं तो उनसे कहें झाड़ू वाले को बुलाओ, भिश्ती को बुलाओ, पानी छिड़कवाओ, फर्श वाले से फर्श मगवाओ, बिछवाओ, दो कुर्सी और तख्त मगवाओ, गद्दी बिछवाओ। यह सब हो जाने पर कहा जाए कि काली माता, हनुमान या पीर साहेब जिसकी हाजरात हो उनको जाकर अर्ज करो कि आपका भक्त (साधक का नाम) आपको याद कर रहा है। मुन्शी साहब को साथ ले कर पधारें। जब काली माता, हनुमानजी या पीर साहेब आकर तख्त पर बैठ जाएं तो मुन्शी साहब से कहें कि काली माता से अर्ज करें कि आपका भक्त (साधक का नाम) आपसे प्रश्न पूछता है। लड़के को उत्तर मिलेगा। अगर लड़का वो उत्तर न समझ सके तो मुन्शी साहेब से कहे कि हमें अमुक भाषा में लिखकर समझाएं या दिखाएं। मुन्शी साहेब लड़के को इच्छित भाषा में लिखकर समझा देंगे दिखला देंगे। काम पूरा होने पर काली माता या जिनकी हाजरात है उस देवता से जाने का अर्ज करे और तकलीफ देने के लिए माफी मांगे। फिर लड़के के अंगूठे की काली पोंछ डाले।

दीप दान तन्त्र

△

दीपदान का शास्त्रों में बड़ा महत्व है। रूद्रयामल, शारदा तिलक, डामर-तंत्र, ब्रह्मयामल ग्रन्थों में दीपदान का पूर्ण विवेचन आया है। जैसे, दीपपात्र, निर्माणवस्तु, पात्ररचना प्रकार एवं भार आधार भूमि स्थापना, वर्तिका मान, दीपदान सामग्री, घृत-तैलमान शलाका काल, शकुन, आदि का पूरा विस्तृत रूप से आलेख मिलता है। फल के सम्बन्ध में कुछ शास्त्रीय प्रमाण निम्नरूप से हैं —

* ८ पल घृत का ८ पल के धातु पात्र में दीपदान करने से यात्रा में किसी प्रकार का भय नहीं होता है तथा सकुशल अपने घर लौट आता है।
* दस पल तेल से प्रति दिन दस पल के पात्र में सात दिन तक (रात्रि में) दीपदान करने से यदि राजा साक्षात् जगत्पति हों, तब भी वश में हो जाता है।

* इस दस पल मान वाले पात्र की ऊंचाई छः अंगुल होना चाहिए तथा तीस तन्तुओं से बनी हुई बत्ती का प्रयोग करना चाहिए।

* छः अंगुल की ऊंचाई वाले ११ पल के पात्र में १६ पल तेल से दीप दान करने पर ग्रह पीड़ा का निवारण होता है।

* ३२ पल के पात्र में १६ पल तेल से २४ तन्तुओं की बत्ती बनाकर दीपदान करने से मारण, उच्चाटन आदि कार्य होते हैं।

* २० पल घृत से, १६ पल के पात्र में, जिसकी ऊंचाई छः अंगुल की हो, ऐसा दीप २० दिन तक करने से क्षय और अपस्मार जैसे दारुण रोग भी नष्ट हो जाते हैं।

* ६ अंगुल ऊंचाई वाले ११ पल के पात्र में २५ पल तेल का दीप करने से भूत बाधा नष्ट होती है।

* ६ अंगुल की ऊंचाई वाले ३० पल के पात्र में ३० पल तेल का दीप अर्पित करने से क्षुद्र रोग नष्ट होते हैं।

* ६ अंगुल की ऊंचाई वाले ३० पल के पात्र में पचास पल घृत का दीप करने से वशीकरण एवं चोरी की शान्ति होती है।

* ३० पल के पात्र में १९ दिन तक प्रतिदिन तेल का दीप करने से कन्या प्राप्ति के इच्छुक को भैरव की कृपा से इच्छित कन्या प्राप्त होती है।

* ९ अंगुल की ऊंचाई वाले ५२ पल के पात्र में १०० पल तेल भरकर दीप करने से शत्रुओं का नाश होता है।

* ९ अंगुल की ऊंचाई वाले ६० पल के तथा २४ अंगुल चौड़े पात्र में ७५ बत्तियों वाला दीप जलाने से सब शत्रुओं का नाश होता है।

* १६ अंगुल की ऊंचाई, २४१ अंगुल चौड़े तथा सौ पल के भार वाले पात्र में ३०० बत्तियों का दीपक करने से सिंह, बाघ और सर्पादि का भय नष्ट होता है।

* १२ अंगुल की ऊंचाई, ३२ अंगुल की चौड़ाई तथा १०० पल के भार वाले दीप में १००० बत्तियां जलाकर दीप करने से उत्तम बुद्धि और आरोग्य की वृद्धि होती है।

* १०० पल के पात्र में १००० पल घृत से दीप दान करने पर शत्रु के द्वारा छीने गये राज्य की पुनः प्राप्ति होती है तथा सभी कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है।

* १५ अंगुल की ऊंचाई तथा १०५ पल के भार वाले पात्र में दस हजार पल तेल से दीप करने पर कारागार से मुक्ति होती है। यहाँ सभी कार्य की सिद्धि के लिए २०८, ८८ अथवा २८ इस प्रकार तीन तरह की बत्तियों की संख्या बताई गई है।

नोट :

एक पल चार तोले का होता है।

सांथिया-तन्त्र

△

शब्द का अपना एक आकार, प्रभाव और गति होती है। प्रत्येक शब्द किसी न किसी स्थिति का अथवा पदार्थ का प्रतीक होता है। इस तथ्य को तांत्रिक इस रूप में मानते हैं कि यह स्थूल संसार शब्द ब्रह्म की अभिव्यक्ति है। शब्दों की तरह रेखाओं का भी अपना स्वरूप व स्वभाव है। ये रेखायें अपने आप में निरपेक्ष हैं। किन्तु उनका संयोजन हमारी अनुभूति और चेतना के केन्द्रों को उद्दीप्त करता है। कई बार रेखाओं के संयोजन से बनी आकृति हमें भयभीत कर देती है तो चक्रव्यूह का रेखाचित्र हमें भूल भुलैया में डाल देता है। इसके समानान्तर कई आकृतियां हमें प्रसन्न भी कर देती हैं।

समयोजन का यह सिद्धान्त तंत्र में भी आदरणीय है, पर तंत्र चित्र कला नहीं है, इसलिए वह मानवीय या प्राकृतिक आकृतियों या दृश्यों को अपना आधार नहीं बनाता। वह कुछ कोणों और वलयों के प्रतीकों के माध्यम से प्रकृति पर नियन्त्रण करता है। इसलिए उन प्रतीकों में भी वही शक्ति आ जाती है जो शब्दों में रहती है। जैनों के ठाणांग सूत्र में आता है कि भगवान के आगे अष्ट मंगल चलते हैं। उनकी अलग-अलग आकृतियाँ जरूर बताई हैं, पर वे कौन से पुद्गलों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं इसका कहीं वर्णन नहीं

आया है। इस अवसर पर मैं एक प्रसंग का उल्लेख करता हूँ—करीब दस साल पहले की बात है, मैं बनारस में सारनाथ के खण्डहरों को देखता हुआ वहां के संग्रहालय में पहुंच गया। वहाँ मैंने भगवान गौतम बुद्ध की एक प्रस्तर मूर्ति देखी। उनके पैर के नीचे एक सांथिए की आकृति खुदी हुई थी। उसे देखकर मैं चौंक गया। मैं सोचने लगा कि यह सांथिया पैर के नीचे क्यों? ४-५ मिनट तक मैं उसे ही देखता रहा। एक बौद्ध भिक्षु वहां घूम रहे थे। उन्हें इतने मनोयोग से उस मूर्ति की ओर मेरा देखना कुछ अटपटा लगा होगा, उन्होंने मुझसे पूछा कि आप इस मूर्ति के पैरों की ओर इतने मनोयोग से देख रहे हैं क्या बात है? मैं उनकी ओर देखकर बोला महामना, मैं यह समझ नहीं पा रहा हूं कि पैर के नीचे सांथिया क्यों? मस्तक पर, छाती पर व आजू-बाजू में तो सांथिये जरूर होते हैं पर यह पैर के नीचे सांथिया देने का तात्पर्य मेरी समझ में नहीं आ रहा है?

उन्होंने मुझसे पूछा कि सांथिया कितनी तरह के होते हैं? मैंने कहा-एक सांथिया हमारे जैनों के अष्ट मंगल में नन्दावर्त कहलाता है, दूसरा हमलोग अपने खातों में व प्रत्येक मांगलिक कार्यों में प्रयोग करते हैं,। तीसरा मैं यहां गौतम बुद्ध के पैर के नीचे देख रहा हूँ। ये तीन हुए। तब उन्होंने कहा, नहीं एक और होता है और वह तुम भूल रहे हो। चौथा हिटलर की सेना का चिह्न था टेढ़ा सांथिया।

मैंने उनसे पूछा कि ठीक हैं, ये सांथिये होते हैं पर ये कौन से पुद्गलों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं? क्या आप मुझे बतला सकते हैं? अष्ट-मंगल की आकृतियों का वर्णन हमारे जैन सूत्रों में जरूर आता है और वैष्णव सम्प्रदाय में भी सांथिये का प्रयोग मांगलिक कार्य में होता है। पर इसका विवेचन मुझे कहीं नहीं मिला कि ये कौन सी ऊर्जा के पिंड हैं, उनका गुण धर्म क्या है? तब उन्होंने मुझे चारों सांथिये लिखकर बताये—

यह सांथिया "श्री" (लक्ष्मी-वृद्धि) के पुद्गलों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

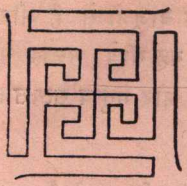

यह जैनों के अष्ट मंगल का नन्दावर्त साँथिया अहिंसा के पुद्गलों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

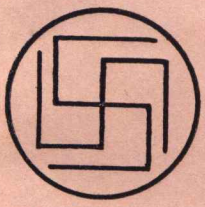

यह सांथिया जो आप भगवान गौतम बुद्ध के पैर के नीचे देख रहे हैं यह सत्य के पुद्गलों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

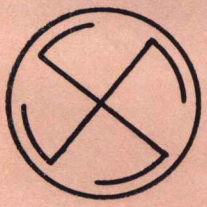

यह टेढ़ा सांथिया जो हिटलर की बाजू पर भी था यह शक्ति के पुद्गलों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

मेरी जिज्ञासा शान्त नहीं हुई। मैंने पूछा ठीक है कि यह साँथिया जो गौतम बुद्ध के पैर के नीचे है, सत्य के पुद्गलों को अपनी ओर आकर्षित करता है। पर पैर के नीचे देने का तात्पर्य क्या हुआ? शक्ति के पुद्गलों को अपनी

ओर आकर्षित करने वाला टेढ़ा सान्थिया बाजू पर क्यों ? उनका संक्षिप्त उत्तर बहुत वैज्ञानिक आधार पर था। शक्ति का सम्बन्ध बाजुओं से है और पैर की अंगुलियों से जो ऊर्जा ग्रहण की जाती है वह सीधे मस्तक में आयेगी। उसका तुरन्त प्रभाव मस्तक व हृदय पर होगा और मनुष्य सत्यसय बन जायेगा।

इसी तरह ये चारों सान्थिए ऐसे पुद्गलों के पिंड निर्माण करते हैं जो साधक अपनी ऊर्जा शक्ति व एकाग्रता के बल पर उन पुद्गलों को अपने में समाहित कर लाभ प्राप्त करता है।

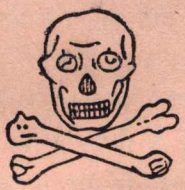

तंत्र शास्त्र

की

विचित्र-रहस्यमयी-अद्भुत वस्तुएं

तन्त्र शास्त्र की विचित्र-रहस्यमयी-अद्भुत वस्तुएं

△

तन्त्र-मन्त्र क्या है, क्या नहीं ? यह विवाद का विषय हो सकता है, पर तंत्र के लिए प्रयोग में आने वाली कतिपय वस्तुएं निर्विवाद रूप से अद्भुत, रहस्यमय और दुर्लभ हैं। तंत्र चाहे जो हो, पर वे वस्तुएं जिनका शास्त्रों में वर्णन आया है, योगियों, तान्त्रिकों से सुना है, अवश्यमेव दुर्लभ हैं। इस प्रकार की ही वस्तुओं का विवरण जो तान्त्रिक अपने पास रखते हैं नीचे प्रस्तुत है—

श्वेतार्कगणपति :

इसको राजस्थानी में आक एवं संस्कृत में आर्क कहते हैं। इसके पत्ते हरे व नीले रंग के व छोटे-छोटे गंध हीन फूल होते हैं। इस जाति के पौधों में एक पौधा एकदम सफेद रंग का होता है और उसके फूल भी सफेद होते हैं। संयोगवश ही यह पौधा कहीं-कहीं दिखाई देता है। यह दुर्लभ माना गया है। इस श्वेत आर्क की मूल को सावधानी से निकालकर इसकी ऊपरी परत, छिलका यदि सावधानी से हटाया जाय तो स्वतः ही अंकित गणपति का चित्र इसपर दिखाई देगा। इसी को श्वेतार्क गणपति कहते हैं। कुछ लोग इसकी मूल को बढ़ई को देकर गणपति की मूर्ति बनवा लेते हैं। ऐसी मूर्ति भी फलप्रद मानी जाती है। तंत्र शास्त्र के अनुसार श्वेतार्क गणपति को कठिन साधना के द्वारा जागृत कर लेने के बाद उसके लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है। योगी अपनी झोली में रखकर उसमें से जो भी मनचाही वस्तु निकालना चाहते हैं वो झोली में स्वतः ही आ जाती है।

एकमुखी रुद्राक्ष :

मन्त्र-तन्त्र साधना में एकमुखी रुद्राक्ष का बड़ा महत्व है। इसका वृक्ष मध्यम कद का होता है। यह मुख्य रूप से नेपाल एवं दक्षिण एशिया के देशों में पाया जाता है। रुद्राक्ष इसी पेड़ का फल होता है। इसका आकार चने से लेकर आड़ू के बीज के बराबर होता है। इसमें प्राकृतिक रूप से ही आर-पार एक छिद्र होता है। यह लाल, काले तथा सिन्दूरी रंग में मुख्य रूप में पाया जाता है। इनमें बनी धारियां ही इनका "मुख" कही जाती हैं। ये धारियां एक से लेकर इक्कीस तक होती हैं। तंत्र शास्त्र में अलग-अलग धारियों का

अलग-अलग महत्वमाना गया है। इनमें एक धारी रुद्राक्ष दुर्लभ माना जाता गया है। इसको साक्षात् शिव माना गया है। जिस व्यक्ति के शरीर पर इसका एक भी दाना होता है, उसे किसी प्रकार की दैहिक या दैविक बाधा नहीं होती। वह हर प्रकार से सुखी व सम्पन्न होता है। मंत्र-तंत्र साधना में इसको धारण करके साधक सहज ही इष्ट की प्राप्ति कर सकता है।

पारद शिवलिंग :

संसार में सबसे दुर्लभ वस्तु पारद शिवलिंग कहा जाता है। विज्ञान के अनुसार पारा जमता नहीं। इसमें कोई चीज घुलती नहीं और न स्थिर रूप से एक स्थान पर इसे रोका जा सकता है। ठोस होते हुए भी यह द्रव है। हाथों में से फिसल जाता है। पारद वैसे द्रव धातु है। —४० डिगरी सेन्टोग्रेड पर इसे ठोस जमाया जा सकता है। पानी से अधिक तापमान पर गरम किया जा सकता है। ३२१ डिगरी सेन्टीग्रेड पर यह उबलता है। कहते हैं अत्यन्त उच्चस्तरीय योगी ही अपनी प्राण ऊष्मा से इसको गरम कर चांदी का मिश्रण कर "शिव लिंग" का निर्माण करते हैं और उसी को "पारद शिवलिंग" कहते हैं। वह अमूल्य व चमकीला होता है। वजनदार व ठोस होता है। धूप में रखने पर इन्द्रधनुषी किरणें निकलती हैं। पानी से गीला नहीं होता है। इस प्रकार के पारद शिवलिंग को पहुँचे हुए तान्त्रिक अपनी तंत्र साधना के काम में लाया करते हैं।

दक्षिणावर्ती शंख :

यह समुद्र से विभिन्न रंगों व आकारों में प्राप्त होता है। शंख या तो वामावर्ती होता है या दत्रिणावर्ती। पर अधिकतर वामावर्ती ही होते हैं। दक्षिणावर्ती शंख महत्वपूर्ण एवं दुर्लभ माना गया है। जिसका मुंह दक्षिण भाग की ओर खुलता है उसे दक्षिणावर्ती शंख कहते हैं। तंत्र साधना में इसके द्वारा दी गई घोष का बड़ा महत्व माना गया है। इस शंख के तीन भेद हैं। नर, मादा व तीसरा नपुंसक। नर शंख उसे कहते हैं जिससे सुन्दर घोष निकलता हो, मादा शंख उसे कहा जाता है जिसमें छिद्र तो हो परन्तु किसी कारणवश घोष न किया जा सकता हो और नपुंसक शंख उसे कहते हैं जो ठोस हो तथा जिससे ध्वनि नहीं निकले। इस प्रकार नर दक्षिणावर्ती शंख अमूल्य माना गया है। नर शंख विभिन्न प्रकार के होते हैं। बड़ा, मध्यम और छोटा। इनका रंग स्फटिक के समान सफेद होता है और जगह-जगह

पर बादामी चक्र से बने हुए होते हैं। ये शंख तंत्र साधना में काम आते हैं और विधिवत् नित्य ही इसका चाँदी के पत्र पर रखकर पूजन किया जाता है। जिसके पास इस प्रकार का दक्षिणावर्ती नर शंख होता है उसके घर में सदा लक्ष्मी का वास होता है। मैंने बम्बई में एक गुजराती व्यापारी के पास इस तरह का नर शंख देखा है। उसको कान लगाकर ध्यान से सुना जाए तो ॐ की ध्वनि सुनाई देती है। यह इस शंख की विशेष विचित्रता है।

एकांक्षी नारियल :

नारियल की जटा ऊपर से हटा देने पर दो गोल चिह्न आँखों के सामने तथा एक कुछ लम्बा सा नाक के सामने दिखलाई पड़ता है। प्रायः सभी नारियलों में यही आकार होता है। बहुत कम बिरले नारियलों में केवल एक गोल चिह्न बना मिलता है। इस प्रकार केवल एक ही गोल चिह्नवाले नारियल को "एकांक्षी नारियल" कहते हैं। इसका तन्त्र पूजा में बड़ा महत्व है। यह दुर्लभ है और इसको लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है। जहाँ यह होता है वह घर धन-धान्य से पूर्ण होता है। तांत्रिक इसे शिव का अतिरिक्त यानि तीसरा नेत्र मानते हैं। तांत्रिक इसको सिद्ध कर लेते हैं और पूजन पर बैठने के समय इस "एकांक्षी" में झाँक कर के इस बात को देख लिया करते हैं कि कौन उनके पास आ रहा है या आस-पास क्या हो रहा है।

रामनामी केले का पत्ता :

हवन स्थल व मांगलिक कार्यों में इसके पत्ते का प्रयोग होता है। यह बड़ा स्वच्छ व पवित्र माना गया है। जिस प्रकार श्वेतार्क की जड़ में, शतावर के पत्ते में, सीजरी नामक पत्थर में, गणेश, हनुमान, महाबीर की मूर्तियों के चित्र स्वतः प्रकृति निर्मित बनते हैं, उसी प्रकार इसके पत्ते में "राम" लिखा हुआ मिलता है। इस प्रकार के केले के पेड़ कामरूप के जंगली इलाकों में और वहाँ भी कम मिलते हैं। इसका वृक्ष बहुत छोटा होतटा है और केले भी बहुत छोटे होते हैं। इनमें स्वाद नहीं होता है। गूदा काले बीजों से भरा होता है। इस प्रकार के केले का पत्ता जैसे जैसे सूखने लगता है, वैसे-वैसे उस पर "राम" शब्द अपने आप दिखाई देने लगता है। इस प्रकार का पत्ता यज्ञ कार्य में सद्यः फल देने वाला माना गया है। इस पर रखकर चढ़ाया गया अर्घ्य इष्ट को तत्काल प्राप्त हो जाता है। जब पत्ता स्वयं पेड़ पर ही सूखता है, तभी इस प्रकार के शब्द उभरते हैं।

शतावर का पत्ता :

हिमालय की पर्वत मालाओं में शतावर का वृक्ष होता है। करीब-करीब ५ फुट के इस पेड़ के पत्ते हलके श्याम रंग के करीब चार इंच चौड़े, छः इंच लम्बे आकार में बड़ के पत्ते से मिलता जुलता होता है। इस शतावर के सूखे पत्ते के सिरे पर द्रोण पर्वत उठाये हुए हनुमान का चित्र स्पष्ट रूप से अंकित रहता है। महीनों पानी में इस पत्ते को रखा जाय तो भी चित्र नहीं मिटता। जब तक यह डाली पर लगा रहता है, इस पर कोई आकृति नहीं होती। सूखकर गिरने के उपरान्त ही इस पर आकृति उभरती है। "बलाबल साधना" में शतावर का पत्ता काम में आता है। इस प्रकार की साधना से साधक अतुल बल का धनी हो जाता है।

पारदर्शी शालिग्राम :

सम्पूर्ण तन्त्र साहित्य में आराध्य शिव हैं। इनका एक रूप शालिग्राम का भी है। पारदर्शी शालिग्राम एकदम सुचिक्कन, गोलाकार, काले रंग का, सामान्य नींबू के आकार का होता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें एक लहराते सर्प की आकृति दिखलाई पड़ेगी। इसका पूजन तंत्र साधना में बड़ा महत्वपूर्ण माना गया है। यह गंगोत्री के आस-पास करीब-करीब नौ भरी वजन में प्राप्त होता है। बड़े भाग्य से ही यह मिलता है। इसको अपने पास रखने वाले साधक अनेक प्रकार की सिद्धियां सहज प्राप्त कर लेते हैं। उन पर मां काली की विशेष कृपा रहती है। प्रायः तांत्रिकों के पास यह सब मिलता है। विधिपूर्वक रोज वे इसका पूजन करते हैं। इसको रखने वाले व्यक्ति के पास किसी प्रकार का संकट कभी भी नहीं आ सकता है। यह सर्व रक्षा कवच का कार्य करता है। इसमें लहराते सर्प की आकृति स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। इसके बीचो-बीच लहराते सर्प की आकृति दिखलाई पड़ना आश्चर्य की बात है।

हत्थाजोड़ी :

मध्य प्रदेश में अमर कंटक की पहाड़ी तथा नेपाल के लुम्बिनी अंचल के जंगली इलाके में "बिरवा" नाम का एक जंगली पौधा होता है। इसमें नीले सफेद रंग के फूल भी खिलते हैं। यह प्रायः धतूरे के पौधे के समान होता है। रविवार के दिन सावधानी के साथ जमीन खोदने पर दो छोटी-छोटी जड़ शाखाएं जिस स्थान पर मिलती हैं, वहीं पर पांच अंगुलियों सहित

पूरे पंजे की आकृति प्रत्येक शाखा पर मिलती है। कुल मिलाकर देखने पर ऐसा लगता है कि जैसे दोनों हाथ प्रार्थना में जुड़े हों। इस प्रकार की द्विशाखी जड़ का हिस्सा काटकर अलग कर लिया जाता है। इसको तंत्र शास्त्र में हत्थाजोड़ी कहा गया है। प्रायः यह हत्थाजोड़ी दो अढ़ाई इंच लम्बी व करीब-करीब इतनी ही चौड़ी होती है। डेढ़ से दो भरी करीब वजन होता है। इसमें अंगुलियों के निशान एकदम साफ नजर आते हैं। निकालने के बाद इसको तिल्ली के तेल में रखा जाता है। कहते हैं यह एक माह में करीब एक किलो तिल्ली का तेल सोख जाती है। इतना तेल पी जाने के बाद भी इसका वजन नहीं बढ़ता। जब यह तेल सोखना बन्द कर देती है तो साधक उसको विधि पूर्वक सिद्ध कर सिन्दूर में रख देते हैं। "तैल शोध" के उपरान्त ही यह तांत्रिक कार्यों में लायी जाती है। विशेष रूप से तांत्रिक खप्पर (मुरदे की खोपड़ी) सिद्धि में इसका प्रयोग करते हैं। इसके बिना तांत्रिक कहते हैं कि खप्पर सिद्ध नहीं की जा सकती। तंत्र शास्त्र में इस हत्थाजोड़ी का अनेक प्रकार से अनेक कार्यों के लिये बड़ा महत्व बतलाया गया है। तांत्रिक इसके माध्यम से भक्तों को चमत्कृत किया करते हैं। अपने शुभचिंतकों की मनोकामना पूरी करते हैं। इसे प्राप्त करना व सिद्ध करना दोनों ही दुर्लभ है।

मीन मुक्ता

उकत्या नामक मछली के मस्तक में यह मोती होता है। यह मछली यौवनावस्था में ही मुक्तक पैदा करती है। यह बाजरे के दाने के बराबर श्वेतवर्ण, दल की निलाभ लिए हुए आकार प्रकार में छोटा होते हुए भी विशेष सिद्धिप्रद माना गया है। तंत्र शास्त्र में मीन मुक्ता "दिव्यचक्षु" साधन के रूप में प्रयुक्त होता है। तांत्रिक इसको सिद्ध कर अपनी आँख में संजो लेते हैं। इस प्रकार संजो लेने से वह कहीं का भी दृश्य बैठे-बैठे प्रत्यक्ष देख लेते हैं। किसी स्थान या व्यक्ति विशेष के बारे में पूछने पर वह सजीव रूप से सारा वर्णन कर देते हैं। इसको मुँह में रखकर पानी में प्रवेश करने से पानी के भीतर की संपूर्ण वस्तुएँ दिखाई देने लगती हैं। एक तो इसकी प्राप्ति दुर्लभ है दूसरे इसकी सिद्धि भी अत्यन्त कठिन है। कहते हैं कि ३६ दिन की तंत्र पूजा के बाद अपनी दाहिनी आँख स्वयं निकालकर फिर उसके स्थान पर इस मुक्ता को रखना पड़ता है। दोनों आँखों पर २२ दिन लगातार पट्टी बाँधकर रहना पड़ता है। इसके बाद पट्टी खोलने पर बायीं आँख सामने के दृश्य दिखलाती है और दाहिनी आंख के माध्यम से कहीं भी इच्छित दृश्य या व्यक्ति देखा जा सकता

है। तंत्र शास्त्र में मीन मुक्ता का बहुत बड़ा महत्व बतलाया गया है। वास्तव में यह अद्भुत रहस्यमय व रोमांचक वस्तु है। तंत्र शास्त्र में यह अनोखी एक बड़ी सिद्धि है।

अमरकंटकी

यह हिमालय के ऊपरी इलाकों में विशेषकर यमुना के मार्ग में पायी जाती है। इसका पौधा २ फुट से ज्यादा ऊँचा नहीं होता। इस पर फूल और पत्ते नहीं होते। यह हरे रंग का पौधा होता है। इसकी जड़ ७-८ इंच से ज्यादा गहरी नहीं होती। निकालने पर लकड़ी के सामान दिखाई देती है। इस जड़ की एक अद्भुत विशेषता है कि इसे पानी में रखते ही घुलने लगती है। इसके घुलने से पानी का रंग पीला हो जाता है। इसकी जड़ एक गैलन पानी में डाल दी जाय तो सम्पूर्ण जड़ एक दम घुलकर पानी में मिल जाती है और पानी का रंग एकदम पीला हो जाता है। पीले रंग का यह घोल पीने से श्वांस सम्बन्धी सभी प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं। साधक मात्र थोड़े से जल में अमर कंटकी की जड़ पल भर को हिलाकर उसका रंग पीला कर उसी से आचमन एवं अभिषेक आदि शुभ कार्य करते हैं।

स्यारसिंगी

प्राणी विज्ञान की यह मान्यता है कि सियारों के सींग नहीं होते। पर यह प्रकृति का आश्चर्य ही है कि जब यह गरदन झुकाकर हुआँ-हुआँ करता है तो उसके सिर पर एक छोटा सा सींग निकल आता है। यह करीब करीब दो इंच के लगभग होता है। इसके चारों ओर २ इंच करीब के भूरे बाल होते हैं। कहते हैं जब गह हुआँ-हुआं करता है तब यह सींग बाहर निकल आता है। उस समय इसको तत्क्षण मार दिया जाता है तो एक छोटा सा सींग बाहर ही निकला रहता है और इसको काटकर निकाल लिया जाता है। इसो को स्यार सिंगी" कहते हैं। इसकी पहचान यह है कि सींग को जो हड्डी के समान होता है तथा ऊपरी भाग एकदम नुकीला भूरे बालों से भरा रहता है को सिन्दूर में रख दिया जाता है। सिंदूर पाकर इसके चारो ओर के बाल बढ़ने लगते हैं। यही इसकी असली पहिचान है। तांत्रिक ग्रन्थों में कहा गया है कि इसके बाल कभी काटने नहीं चाहिए, क्योंकि बाल काटने से इनका तांत्रिक प्रभाव समाप्त हो जाता है। तंत्र साधना में इसका बड़ा महत्व है। यह रक्षा कार्यों में अद्भुत सफलतादायक माना जाता है। इसको हमेशा सिन्दूर में अपने पास रखने वाला

व्यक्ति कभी भी जीवन में उसे चोट की कौन कहे, शरीर में खरोंच भी नहीं आ सकती। जीवन रक्षक के रूप में इसको अनमोल कवच माना गया है। तंत्र द्वारा इस दुर्लभ व रहस्यमय वस्तु की साधना कर साधक लोग अपनी जांघ को चीर कर इसमें रखकर ऊपर से टांके लगा देते हैं। उसके प्रभाव से साधक दुर्गम स्थानों पर जाकर खतरनाक जगहों पर निवास कर निश्चिन्त होकर अपनी साधना करते हैं। इसको रखने वाले साधक पर कोई जंगली जीव विषैला जन्तु हमला नहीं करता। किसी व्यक्ति के प्रहार का निशाना भी निश्चय ही चूक जायेगा। वास्तव में इसके प्रभाव से सामने वाले जीव का स्तंभन होता है।

कालीतुंबी :

साधुओं के पास जो जलपात्र होता है, वह एक विशेष फल का खोखला भाग है। इसे तुम्बी कहते हैं। इसका रंग पीला या मटमैला सा होता है। राजस्थान के घने जंगलों, मणिपुर के पहाड़ी स्थानों एवं गंगोत्री के पास ताड़ के समान एक तुम्बा वृक्ष होता है। इस पर फल लगते हैं। नारियल के समान और सूख कर नीचे गिरते हैं। कई बार इनमें एक काली तुम्बी पैदा हो जाती है। ऐसा बहुत ही कम होता है। इस कारण इसको दुर्लभ माना गया है। तंत्र के क्षेत्र में इसका बहुत महत्व है। काली तुम्बी की गिरि को दस वर्ष पुराने गुड़ में घिसा जाता है, जिसके वह एकाकार हो जाता है और लेप सा बन जाता है। अनेक तांत्रिक अपने हाथ-पैर या जिह्वा काटकर मां भगवती को अर्पित कर देते हैं और बाद में इन अंगों को पूजा से उठकर इसी लेप के सहारे पुनः जोड़ लेते हैं। चोट के स्थान पर इसका लेप लगाते ही रक्तस्राव बन्द हो जाता है। तंत्र शास्त्र में इसका बहुत महत्व है।

काली हल्दी :

हल्दी की खेती जमीन में होती है। इसका रंग पीला होता है। इसका प्रयोग सब्जियों में होता है। बुजुर्ग लोग दर्द के लिए इसका साल में एक बार कल्प भी करते हैं। शुभ मांगलिक कार्यों में पीली हल्दी का प्रयोग होता है। इसका उबटन सौंदर्यवर्द्धक माना गया है। जहां धार्मिक कार्यों में पीली हल्दी का महत्व है, वहां तांत्रिक क्षेत्र में काली हल्दी अद्भुत मानी गयी है। यह काली हल्दी मध्य प्रदेश में नर्मदा नदी के किनारे बसा मंडला डिडौंरिका के मैदानी इलाके में मिलती है। वस्तर के मैदानी इलाकों नेपाल के मकवान पुर जिला के भीतरी इलाकों में भी मिल जाती है। यह दुर्लभ पदार्थ है। तांत्रिक प्रयोगों में

इसकाप्रयोग किया जाता है। आयुर्वेद में भी काली हल्दी को दमारोग का उत्तम इलाजमाना गया है। इसको घिसकर नित्य एक चम्मच पानी के साथ इसका घिसा हुआ लेप पी लिया जाय तो मात्र एक सप्ताह के भीतर पुराना से पुराना दमा ठीक हो जाता है। तांत्रिक ग्रन्थों में इसका उपयोग इसको घिसकर चन्दन की तरह मां काली के मस्तक पर लगाने में भी किया जाता है। सिद्ध तांत्रिक काली को प्रसन्न करने के लिए इसका उपयोग करते हैं। तांत्रिक प्राय: इसको अपनेपास रखते है।

काला चावल :

आसाम के पहाड़ी इलाकों में यह जंगली चावल अपने आप पैदा होता है। बरसात की मौसम में मिलता है। धान के रूप में भी इसका रंग काला होता है। इसकी बालें अधिक संख्या में नहीं मिलतीं। मुट्ठी दो मुट्ठी ही किसी स्थान पर मिल जाते हैं। यद्यपि इसका रंग काला होता है पर स्वाद में आकार प्रकार में बिल्कुल चावल के समान होता है। इसमें यह विचित्र विशेषता है कि अगर इसको मुँह में लेकर कच्चा चबाया जाय तो सारा मुंह लाल गहरे रंग से भर जाता है। इसी कारण इसको खूनी चावल भी कहते हैं इनको पीसकर यदि पानी में डाल दिया जाय तो सारा पानी रक्त के समान लाल हो जाता है। इसी जल का तांत्रिक अभिषेक करते हैं। दुर्गासिद्धि" के समय यह अक्षत विशेष रूप से पूजन के समय चढ़ाये जाते हैं। वह विशेष मन्त्रों का उच्चारण किया जाता है। तंत्र साधना में इन चावलों का बड़ा महत्व है। सिद्ध तांत्रिक हर मूल्य पर इसको अपने पास रखते हैं। इसलिए तांत्रिक इसको काला चावल कहते हैं।

चितावर की लकड़ी :

यह चितकबरे रंग की, कड़ी छाल वाली लकड़ी है। साधारणतया यह नीम की सूखी पतली टहनी के समान होती है। पपड़ीदार होने के कारण लपेटी गई सी लगती है। इसमें नाखून गड़ाने से लाल रंग की बूंदे अपने आप छलछला आती हैं। अमर कंटक (मध्य प्रदेश) के घने जंगलों में तथा तिब्बत की सीमा पर इसका वृक्ष होता है। इस पेड़ की एक या दो टहनी जो सबसे ऊपर होती है उसी में गुण होता है। यह अपने आप सूखकर गिरने पर ही अपना चमत्कार दिखलाती है। कच्चे या हरियालेपन में नहीं। इसके स्पर्श मात्र से ही लोहा कट जाता है। तन्त्र शास्त्र में चितावर की लकड़ी अनेक

प्रकार की सिद्धियों के लिए काम में आने वाली बतलाई गई है। इसकी सबसे बड़ी पहचान यह है कि इसको यदि पानी की धारा में डाल दिया जाय तो यह विपरीत दिशा में एकदम सर्प के समान लहरायी हुई दौड़ने लगती है। बेहिचक इसको पकड़ लेने पर यह अपने वास्तविक रूप में आ जाती है। तांत्रिक विधान के अनुसार इसकी सिद्धि कर इससे ताले, तिजोरियां, छड़, हथकड़ियाँ व बेड़ियां काटी जा सकतीं हैं। बिरले ही लोगों के पास चितावर की लकड़ी होना सम्भव है।

नागचन्द्रा :

नेपाल के विराटनगर शहर में एक घुक्मकड़ तांत्रिक के पास मैंने एक लकड़ी देखी जिसका नाम उन्होंने चन्द्र बतलाया था। कत्थई रंग की यह छोटी सी सूखी हुई लकड़ी थी। पानी में डालने पर सर्प की तरह फुंकारों के साथ यह भंवरनुमा चक्कर लगाती है। उस तांत्रिक के अनुसार साखू के पेड़ की सूखकर गिरी हुई टहनियों पर जब नाग और नागिन मैथुन के समय दोनों पूछों के बल सीधे खड़े हो जाते हैं उस समय दोनों के स्खलन की एक छोटी सीं बूद किसी टहनी पर गिर जाने से वह टहनी "नाग चन्द्रा" बन जाती है और उसका रंग कत्थई हो जाता है उस पर छाल नहीं रहती। इसको पास में रखने वाले व्यक्ति को किसी किस्म का सर्प नहीं काटता। सर्प के काटने पर इसको घिसकर लगा देने से वह व्यक्ति तुरन्त ठीक हो जाता है। तांत्रिकों के अनुसार यह लकड़ी दुर्लभ है। तन्त्र पूजन सामग्री में रखने से भगवान शिव प्रसन्न होते हैं और इसके प्रभाव से सभी प्रकार के सर्प वश में किये जा सकते हैं।

खप्पर।

वाम मार्गी, अघोरी कापालिक श्मशानसेवी तांत्रिकों के पास एक खोपड़ी व हड्डी अवश्य होती है। कइयों के गले में हड्डी की माला होती है। कई साधक कई खोपड़ियों को इकट्ठा कर गोबर से लीपकर चौकी बनाकर उस पर बैठते हैं। तारापीठ के श्मशान में मैंने एक बार एक १०८ मुन्डी आसन पर बैठे तांत्रिक को देखा है। मानव खोपड़ियों को ही खप्पर कहते हैं। मां काली के पूजन के समय नर मुन्ड अवश्य रखे जाते हैं। तांत्रिक इन्ही खप्परों में भोजन करते हैं। मदिरा भी पीते हैं, इन्हीं खोपड़ियों व हड्डियों के द्वारा उच्चाटन, वशीकरण, स्तंभन के प्रयोग किये जाते हैं। तंत्र मार्ग में एक

विशेष जाति की खोपड़ी को जगाने का एक अलग बड़ा महत्व है। यह खोपड़ी वश में हो जाने पर सर्व सिद्धिदाता मानी गई है। कुछ पहुंचे हुए तांत्रिक जीवित खप्पर भी रखते हैं। बन्दर की खोपड़ी भी सिद्ध करते है जिसको हनुमान की खोपड़ी कहते हैं। खप्पर साधना की सैकड़ों विधियां तन्त्र शास्त्र में बतलाई गई हैं। कहा जाता है कि इसके माध्यम से तांत्रिक अपने स्थान पर बैठेही अद्भुत कार्य सम्पन्न कर लिया करते हैं। जीवित खप्पर में मांस चमड़ा वगैर बराबर बना रहता है। गलता नहीं-दुर्गन्ध भी नहीं आती है। इन खप्परों व ताँत्रिक--मांस, मदिरा, मल-मूत्र-रक्त का सेवन करते हैं। पास में रखने वाली हड्डियों के सिरों पर गांठ होना आवश्यक माना गया है।

मृगछाल

तांत्रिक कार्यों में व्याघ्र छाल, मृग छाल, गेंडे की छाल काम में आती है। धार्मिक कार्यों में कुश-आसन का प्रयोग होता है। कुछ तांत्रिक भैंसे की खाल भी रखते हैं। इन सबमें कस्तूरी मृग-छाल मूल्यवान मानी गई है। तंत्र शास्त्र में चर्म आसनों का अपना अलग महत्व है। इन सबको शोधन व सिद्ध करने के बाद ही उपयोग में लाया जाता है। साधक अपने ढंग से इनको काम में लेते हैं। मृग छाला पर बैठने पर बवासीर नहीं होती।

ये हैं तंत्र मंत्र में प्रयोग आने वाली अद्भुत, अलभ्य, रहस्यमय वस्तुएं न विश्वास करने योग्य ये साधनाएं—रहस्य के आवरण में छिपी ढकी पड़ी है। यदा कदा कोई साधक भूला भटका अपनी साधना का प्रयोग सर्वसाधारण में कर देते हैं, तब एक चमत्कार हो जाता है। आवश्यकता इस बात की है कि इस विज्ञान पर अविश्वास न कर इसको अन्धविश्वास व ढकोसला न मानकर वैज्ञानिक कसौटी पर इसकी परख करने के लिए इसकी खोज की जाये तो नये आयाम खुल सकते हैं। तंत्रों में प्रयोग होने वाली इन वस्तुओं का कहीं-कहीं वैज्ञानिक आधार अवश्य है। हो सकता है साधना व पूजा पद्धति का कठिन रूप देकर इसको दुर्लभ बना दिया गया है। वनस्पतियों में जीवन है। यह वैज्ञानिक सत्य हैउनकी अलग-अलग ऊर्जा है अलग-अलग उनका महत्व है। उन्हें किस समय में लाया जाय यह भी वैज्ञानिक आधार है। कई ऐसे भी फूल होते हैं जो रात्रि में खिलते हैं। कई सुबह खिलते हैं और कई दिन में मुरझा जाते हैं तो इन सबमें वैज्ञानिक आधार है निश्चय ही है–जरूरत है तो केवल खोज की और उसके लिए आवश्यकता है जीवन के समर्पण की।

पुस्तकालय
ग्रन्थ सं. 3914
भवनम् लखनऊ
3914

तन्त्र - ग्रन्थ - सूची

तन्त्र ग्रन्थों को तीन भागों में बाँटा गया है, उन ग्रन्थों की सूची :—

रथक्रान्त के तन्त्र ग्रन्थ

चिन्मय
मातृकोदय
महानीला
देवडामर
वासुदेव रहस्य
छायानिल
गरुड़
पुरश्चरणचन्द्रिका
पिच्छला
नारदीय
योगसार
यक्षिणीतंत्र
आकाश भैरव
सारस
कंकालमालिनी
सरस्वती
शक्तिकागमसर्वस्व
चीना सार
शोध
कुलसद्भाव
काल भैरव
भूत भैरव
मत्स्यसूक्त
हंसमहेश्वर
महानिर्वाण
विजयचिन्तामणि
वृहद्गौतमीय
वृहद्योनि
वर्ण विलास
पुरश्चरणरसोल्लास
प्रपन्चसार
नवरत्नेश्वर
दक्षिणामूर्ति
स्वरोदय
राजराजेश्वरी
इन्द्रजाल
कालोत्तम
शारदा
सम्मोहिनी
षडाम्नाय
महालक्ष्मी
सिद्धितद्धरी
उड्डामरेश्वर
महिषमर्दिनी
मेरू
भूतडामर
एक जटा
वर्णोद्धृति
वृहमज्ञान
बालाविलास
पंचदशी
परमेश्वर
नागार्जुन
योगस्वरोदय
ज्ञान भैरव
रेवती
कृकलासदीपक
यक्ष धर्म
शक्तिसंगम
आचार सार
कराल भैरव
कैवल्य
कीर्तिसार
महाकाल

विष्णु क्रान्त के तंत्र ग्रन्थ

सिद्धिश्वर	काली	कुलार्णव
ज्ञानार्णव	नील	फेत्कारी
देव्यागम	उत्तरा	श्रीक्रम
सिद्धियामल	मत्स्यसूक्त	सिद्धिसार
सिद्धिसारस्वत	वाराही	यंगिनी
गणेशविमर्शिणी	नित्या	शिवागम
चामुण्डा	मुण्डमाला	हंसमहेश्वर
निरुत्तर	कुलप्रकाशक	देवीकल्प
गन्धर्व	क्रियासार	निबन्ध
स्वतंत्र	सम्मोहन	तंत्रराज
ललिता	राधा	मालिनी
रुद्रयामल	वृहत्श्रीक्रम	गवाक्ष
सुकुमुदिनी	विशुद्धेश्वर	मालिनीविजय
समयाचार	भैरवी	योगिनीहृदय
भैरव	सनत्कुमार	योनि
तंत्रान्तर	नवरत्नेश्वर	कुलचूड़ामणि
भावचूड़ामणि	देवप्रकाश	कामाख्या
कामधेनु	कुमारी	भूतडामर
यामल	ब्रह्मयाल	विश्वसार
महाकाल	कुलोड्डीश	कुलामृत
कुब्जिका	यंत्र चिन्तामणि	कालीविलास
मायातंत्र		

अश्व क्रान्त के तंत्र ग्रन्थ

भूतशुद्धि	गुप्तदीक्षा	बृहत्सार
तत्वसार	वर्णसार	क्रियासार

गुप्त तंत्र	गुप्तसार	बृहत्तोडला
बृहन्निर्वाण	बृहत्कंकालिनी	सिद्धतंत्र
काल तंत्र	शिवतंत्र	सारात्सार
गौरी तंत्र	योग तंत्र	धर्मकतंत्र
तत्वचिंतामणि	बिन्दुतंत्र	महायोगिनी
बृहद्योगिनी	शिवार्चन	सम्बर
शूलिनी	महामालिनी	मोक्ष
बृहन्मालिनी	महामोक्ष	बृहन्मोक्ष
गोपीतंत्र	भूतलिपि	कामिनी
मोहिनी	मोहन	समीरण
कामकेशर	महाबीर	चूड़ामणि
गुर्वर्चन	गोप्य	तीक्ष्ण
मंगला	कामरत्न	गोपलीलामृत
ब्रह्मानन्द	चीन	महानिरुत्तर
भूतेश्वर	गायत्री	योगार्णव
भैरण्डा	मंत्रचिन्तामणि	यंत्रचूड़ामणि
विद्युल्लता	भुवनेश्वरी	लीलावती
बृहत्चीन	कुरंज	जयराधामाधव
उज्जासक	धूमावती	शिवा
विशुद्धेश्वर		

चौरासी सिद्धों की सूची

* हठयोग प्रदीपिका में निम्न रूप से सिद्धों के नाम बताए गए हैं :–

आदिनाथ	मत्स्येंद्रनाथ	शाबरानंद
भैरव	चौरंगी	मीन
गोरक्ष	विरूपाक्ष	विलेशय
मंथान भैरव	सिद्धिबुद्ध	कंथडि
कोरंटक	सुरानंद	सिद्धिपाद

चर्पटि	कानेरी	पूज्यपाद
नित्यनाथ	निरंजन	कपाली
विंदुनाथ	काकचंडीश्वर	आलाम
प्रभुदेव	घोड़ाचोली	टिंटिणि
भानुकी	नारदेव	खडकापालिक

वर्ण रत्नाकर में निम्न रूप से सिद्धों के नाम बताए हैं :–

सीलनाथ (मीननाथ)	गोरक्षणनाथ	चौरंगीनाथ
चामारीनाथ	तंतिया	हलिपा
केदारिया	ढोंगपा	दारिपा
विरूपा	कपाली	कमारी
कान्हकन	खल	मेषल
उन्मन	कांतलि	धोबी
जालंधर	डोंगी	म-वह (सरहं)
नागार्जुन	दौलो	भिषणी
अचिति	चंपक	मेदिनि
चेंटस	भूसुरी	धाकली
कूंजी	चर्प्पटि	भादे
चांदन	कामरी	करवत
धार्मपापतंग	भद्र	पातलिभद्र
पालिहिह	भांड	मीनो
निर्दय	सबर	सांति
भर्तृहरि	भीसन	भटी
गगणपा	गमार	मेंडरा
कुमारी	जीवन	अधोसाधर
गिरिवर	सीयारी	नागवाली
धिमरह	सारंग	विविकिधज
मंगरध्वज	अचित	विचित

नेवक	चाटल	नायन
भीलो	पाहिल	पासल
कमल	कंगारी	चिपिल
गोविंद	भीम	भैरव
भद्रभमरी	भूरूकुटि	

* राहुलजी द्वारा सस्क्यविहार (तिब्बत) की सूची में ८४ सिद्धों के नाम निम्न रूप से हैं :—

लुइपा	लीलापा	विरूपा
डोंबिया	शबरपा	सरहपा
कंकालिया (कंकरिपा)	मीनपा	गोरक्षपा
चोरंगिपा	वीणापा	शांतिपा (रत्नाकर शांति)
तंतिपा	चमरिपा	खड्गपा
नागार्जुन	कराहपा (चर्यपा)	कर्णरिपा (आर्यदेव)
थगनपा	नारोपा	शालिपा (शीलपाया-शृगालीपाद)
तिलोपा	क्षत्रपा	भद्रपा
दोखंधिपा (द्विखंडिया)	अजोगिनपा	कालपा
धोंभिपा	कंकणपा	कमरिपा (कबलपा)
डेंगिपा	भेदपा	तंधेपा (तंतेपा)
कुकुरिपा	कुचिपा (कुसूलिपा)	धर्मपा
महिपा (महिलपा)	अचिंतिपा	भलहपा (भवपा)
नलिनपा	भुसुकुपा	इंद्रभूति
मेकोपा	कुठालिपा	कर्मरिपा (कंपरिपा)
जालंधरपा	राहुलपा	धर्वरिपा (धर्मरिपा)
धोकरिपा	मेदनीपा (हालीपा)	पंकजपा

घंटापा (वज्र)
गुंडरिपा (गोरूर)
जयानंत
भिखनपा
चवरिपा (याजवरी-अजपालीपा)
मेखलपा (योगिनी)
कलकलपा
उधलिपा (उधरिपा)
किलपा
सर्वभक्षपा
दारिकपा
पनहपा (उपानहपा)
अनंगपा
समुदपा
कंतालिपा (कंथालीपा)
जोगीपा (अजोगीपा)
लुचिकपा
चर्पटीपा (पचरिपा)
भलिपा
चेलुकपा
निर्गुणपा
चंपकपा
कुमरिपा
मणिभद्रा (योगिनी)
कनखलापा (योगिनी)
धहुलीपा (धहुरिपा)
कपालपा (कमलपा)
सागरपा
नागबोधिपा
पुतुलिपा
कोकालिपा
लक्ष्मीकरा (योगिनी)
भलिपा (व्यालिपा)

साक्षी-आधार

महानिर्वाण तंत्र
ज्ञानार्णव तंत्र
भैरवी तंत्र
सरस्वती तंत्र
भूतडामर तंत्र
लीलावती तंत्र
सम्मोहन तंत्र
ज्वालामालिनीकल्प
कुलार्णव तंत्र
पिच्छिला तंत्र
वामकेश्वर तंत्र
मुंडमाल तंत्र
उड्डामरेश्वर तंत्र
रुद्रयामल तंत्र
नवस्मरण
मंत्राधिराजकल्प
गौतमीय तंत्र
भूतशुद्धि तंत्र
सनत्कुमार तंत्र
यक्षिणी तंत्र
मूलावतार तंत्र
शिव तंत्र
भैरवपद्मावतीकल्प
भक्तापरस्तोत्रयंत्र आदि

निर्वाण कालिका
मंत्र महोदधि
कक्षपुटी
मंत्र चिंतामणि
विद्यानुशासन
पुरानी पड़तें, गुटके
मंत्र महार्णव
कोष
विज्ञमनीषी

जिनसे आध्यात्म-संपृक्त स्नेह मुझे मिला

उस

महामानव के श्री चरणों

में

शत-शत वन्दन

करणीदान सेठिया

*

सुभाषित

दुर्बोधा वैदिकाः शब्दाः प्रकीर्णत्वाच्च ते ऽखिलाः

तथैव एव स्पष्टार्थाः स्मृतितंत्र प्रतिष्ठिता

(ब्रह्मचिन्ताप्रणालो)

असंख्याः मूर्तयस्तस्य निष्पतन्ति शरीरतः

उच्चावचानि भूतानि सततं चेष्टयन्ति याः

(मनु)